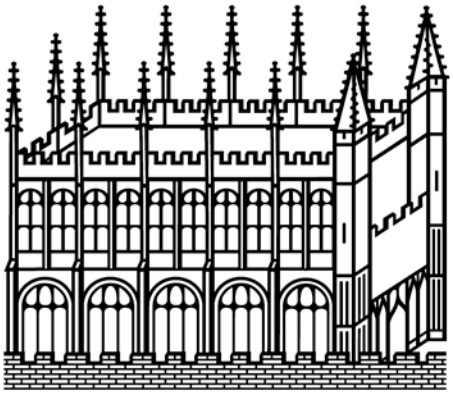


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Misc
B 135

13.E.21.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Ḥātim Ṭā'ī kā qiṣṣah.

Kisah Halimtay

हातिमताई का क़िस्सा

قصۂ حاتم طائی

जिस में

तय के पुत्र हातिम नामक सत्यवादी सत्पुरुष परोपकारी
के द्वारा इस्लवानू के सात प्रश्नों के उत्तर देने और
उस के अन्तर्गत अनेक विचित्र कहानियों
का इत्तान्त वर्णित है

जिसको

रसरसिक विलासियों और विद्यानुरागियों के अनुरोध से

बहराम घाट निवासि जीवाराम जाट ने उर्दू से
देवनागरी भाषा में उल्था किया

दूसरी बार

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापा गया

मार्च सन १८८२ ईसवी

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मार्च सन १९०२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस के हरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा का लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
क़िस्सा वग़ैरह	विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	९ - शल्य पर्व्व गदा	४ - किष्किन्धाकाण्ड
नानार्थनी संग्रहावली	भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	५ - सुन्दरकाण्ड
ब्रह्मसार	३ - तीसरे हिस्सा में	स्त्री पर्व्व योषिक	६ - लंकाकाण्ड
शिवसिंह सरोज	कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	व विशोक व स्त्री पर्व्व	७ - उत्तरकाण्ड
भक्तमाल	गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	१० - शान्ति पर्व्व राज	रामायण शब्दार्थ कोष
इन्द्रसभा	योषिक पर्व्व विशोक	धर्म्म व आपद धर्म्म	रामायण का इतिहास
विक्रम विलास	पर्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति	व मोक्ष धर्म्म व दान	रामायण मानसदीपिका
बैताल पच्चीसी	पर्व्व में राजधर्म आप	धर्म्म	रामायण कविता वली
सिंहासन बत्तीसी	द धर्म्म मोक्ष धर्म्म	११ - अश्व मेध आश्र	रामायण गीतावली
पद्मावती खंड	४ - चौथे हिस्सा में	म वासिक मुशल प	सटीक
शुक बहत्तरी	शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	र्व्व महा प्रस्थान स्व	विनय पत्रिका बा-मो
बकावली मुनन	अश्व मेध आश्रम वा	र्गा रोहन	विनय पत्रिका बा-शि
चहार दर वेश	सिक पर्व्व व मौसल	१२ - हरिवंश पर्व्व	विलु पुराण भाषा
मर्द औरत का क़िस्सा	पर्व्व व वारा प्रस्थान	रामायण रस विलास	लिंग पुराण
आपूर्व कथा	स्वर्गा रोहन पर्व्व हरि	रामायण तुलसी कृत	अष्टोत्तर खण्ड
क़िस्सा गुल सनोवर	वंश पर्व्व	रामायण सटीक सम	शुक नीति
सहस्र रजनी चरित्र	महा भारत पर्व्व अले	लानस दीपिका कोष	रस वृष्टि व रस चन्द्रोदय
रविसन्सन् का इतिहास	हदा भी हैं	आदि	सुदामा चरित्र
सीता हरण	१ - आदि पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	कृष्ण गीतावली
सतीविलास	२ - सभा पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	श्री अनुराग रस
भाषा (इतिहास)	३ - वन पर्व्व	मस्त रसवीर सक्षेपक	सौदागर लीला
महा भारत	४ - विराट पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	**नाटक**
१ - पहिले हिस्सा में	५ - उद्योग पर्व्व	सातों काण्ड	बोध चन्द्रोदय
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	६ - भीष्म पर्व्व	१ - बालकाण्ड	रामाभिषेक
वन पर्व्व	७ - द्रोण पर्व्व	२ - अयोध्या काण्ड	आनन्द रघुनन्दन
२ - दूसरे हिस्सा में	८ - कर्ण पर्व्व	३ - आरण्य काण्ड	हनुमान्नाटक

भूमिका ॥

धन्य है उस परब्रह्म परमेश्वर सच्चिदानन्द निराकार को जिसकी कृपाकटाक्ष से सम्पूर्ण सृष्टि में अनेक प्रकार के विचित्र चरित्र लीलाविलास होरहे हैं और प्रत्येक जीव अपने २ कार्य्य में तनमन से आरूढ़ हैं इस परमात्मा की अद्भुत लीलाविलास में ऐसे२ भी मनुष्यवर्त्तमानहैं कि जिनकी अनुपम मति सर्व्वदा परोपकार और सर्वजनों के लाभ और भलाई में तत्पर रहती है परमेश्वर ऐसे सत्पुरुष महात्मा लोगों को धनसमृद्धि आयुरारोग्य और कुल बर्द्धन करे ॥

प्रकटहो कि जबसे श्रीमहाराणी राजराजेश्वरी स्वीक्षानन्ददायिनी श्रीमतीविक्टोरिया का राज्य इस भरतखण्ड में हुआ तबसे विद्या का प्रचार विशेष करके है कि ग्राम २ में हिन्दी उर्दू आदि और जिलों में अंगरेजी पाठशाला हैं जिन में अत्युत्तम रीति से विद्या का पाठहोता है और अनेक प्रकार की पुस्तकें अँगरेजी फ़ारसी नागरी आदि में बनी हैं जिसके पढ़ने से सुगम रीतिसे विद्या की वृद्धिहोती है जो कि उर्दू फ़ारसी, अंगरेजी में बहुत सी पुस्तकें ऐसी हैं कि उनके अवलोकन से चतुराई बुद्धिमता विशेषहोती है और परमेश्वर की सृष्टि की विचित्र लीलायें विदित होती हैं, परन्तु जो लोग अपनी मातृ भाषा नागरी के सिवाय उर्दू, फ़ारसी, अंगरेजी, नहीं जानतेहैं वे इस अलभ्य लाभसे निराश रहतेहैं इस कारण परोपकारी गुणिगण मण्डलीमण्डन स्मार्त्त धर्मप्रवर्त्तक विद्यानिधि बर्द्धक श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी अवध समाचार सम्पादकने देवनागरी के जाननेवालों के उपकारार्थ ऐसा बिचार किया कि ऐसी २ पुस्तकें जिनसे बुद्धिमत्ता, चतुरता, ईश्वर की सृष्टि की लीला, रस, काव्य, आदि में निपुणता और जानकारी होती है देवनागरी भाषा में सरल रीतिपर होजावें निदान अलिफ़लैला, फिसानाअजायब, बाग़बहार, गुलबकावली, गुलसनोबर आदि पुस्तकों को बहुत सी द्रव्य व्यय करके सरलभाषा अर्थात् क्लिष्ट शब्दों को निकाल-

कर बोल चाल की रीतिपर कराके अपने यन्त्रालय में छपवाईं जिनसे कि अनेक विद्यानुरागियों और रसरसिक बिलासियों को लाभहुआ, अब यह पुस्तक आरायश महफ़िल अर्थात् हातिमताई का क़िस्सा जिसमें तय के पुत्र हातिमनामक सत्पुरुष की सत्यता और दयलुता और परोपकारता का वृत्तान्त और उक्त हातिम के द्वारा हुस्नबानू के सात प्रश्नोंका उत्तरदेना और और उसके अन्तर्गत अनेक विचित्र कहानियों का वृत्तान्त है, सकलगुण-निधान परमसुजान बहरामघाट निवासी जीवाराम जाटसे उर्दू से सरल भाषा में कराय अपने श्रीसाच्चर यन्त्रालय में छपवाया आश है कि विद्वानलोग क्षमापूर्व्वक ग्रहण करें॥

(रामरत्नशर्म्मा)

इति

——०——

श्रीगणेशायनमः ॥

अरायश महफ़िल ॥

अर्थात् हातिमताईकाक़िस्सह ॥

प्रथम कहानी—बरज़ख़ सौदागर की बेटी हुस्नबानू को शहर खुरासान से निकाले जाने और किसी जंगल में असंख्य जवाहिरादि द्रव्यमिलने और मुनेरशामी शाहज़ादे के ऊपर मोहित होने और हातिम की सहायता करने के बिषय में ॥

सुनाहैकि खुरासानके देशमें एक बादशाह ऐसाथाकि लाखों प्यादे और सवार उसके साथ सदा वर्त्तमान रहा करते थे और न्याय और दण्डभेदमें भी ऐसाथा कि बाघ और बकरी को एक-ही घाटपर पानी पिलातायाथा और न्यायसमय अपने पुत्रका भी पक्षपात नहीं करता था उसके राज्य में एक सौदागर बरज़ख़-नामक अत्यन्त द्रव्यवान प्रतिष्ठित और माननीय रहता था वह अपने गुमाश्तों को प्रति देशमें माल असबाब देदेके भेजा करता और आप आनन्द पूर्व्वक उसी शहर में रहाकरता था और उसने बादशाहसे भी भली भांति मेल मिलाप करलिया था और बादशाह भी उसपर अत्यन्त दयाकरता था कुछ कालबीते वह सौदागर मरने के निकट पहुंच अपनी श्वासों की संख्या पूरी करनेलगा और उस सौदागर के एक हुस्नबानू नामक बेटी के सिवाय और कोई न था जो उसके पश्चात् उसके धनका मालिक होता निदान वह सम्पूर्ण धन उसकी बेटीहीको मिला और उस समयवह बारहबर्षकी थी परिणाम यहहुआकि सौदागर उसी पुत्रीको अपने धनदौलतका मालिक कर और बादशाहको सौंप आपस्वर्ग को पधारा बादशाह ने हुस्नबानू को अपने पुत्रों के स-मानपाला और उसके धनकी आधिक्यता देखके कुछलोभन किया किन्तु सम्पूर्ण धन उसीको दे दिया कुछ दिन बीते जब हुस्नबानू युवा हुई तब अपनी धायको बुलाय यों कहने लगी कि हे माता यह संसार पानीके बबुलाके तुल्य है इसका टूटजाना कुछ बड़ीबात नहीं है इतना धन लेकर मैं अकेली क्या करूंगी इसलिये मैंयहां

उचित समझती हूं कि उसको परमेश्वर की राहपर बांट दूं और विवाह न करूं जिसमें अपनेको सृष्टिके विकारसे पवित्र रक्खूं इसलियेहेमाता मैंतुझसे पूछतीहूं कि तू समझके मुझे उचित सिखापन दे तब दाई बोली की बेटी मेरी अनुमति यह है कि तसात प्रश्न लिख के अपने द्वारपर चिपकादे और उनके नीचे लिखदे कि जो कोई इन सातोंप्रश्नोंके उत्तर देगा उसीके साथ मैंविवाह करूंगी॥

[पहला प्रश्न] यह है कि एक बेर तो देखा है और दूसरी बेर देखने की हौस है [दूसराप्रश्न] भलाई कर और नदी में फेंक दे [तीसराप्रश्न] किसी से बुराई न कर जो करैगा तो बड़ी पावेगा [चौथाप्रश्न] सत्यबादी सदा सुखी है [पांचवांप्रश्न] कोहनिदा अर्थात् शब्दवान् पर्व्वत की खबर लादे [छठाप्रश्न] एक मोतीजो जल पक्षी के अण्डे की समान वर्त्तमान् है उसका जोड़ा मिला दे [सातवांप्रश्न] हम्मामबाद गिर्द की खबर लादे] ज़ुरनबानू ने अपनी धायकी बात मानी और हर्षितहोके कहनेलगी कि कोहे को कोई ऐसा मनुष्य होगा जो इन सातों प्रश्नों का उत्तर देगा इसी विचार से वह परमेश्वरके पूजा पाठमें लगी रहती एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि यह अपने कोठेपर बैठी बाज़ारका तमाशा देख रही थी कि इतने में एक साधू देखने में बड़ा सिद्ध चालीस चेला जिसके साथ थे इसके मकान के पास होकर निकला और ऐसादम्भकिये कि पृथ्वीपर पांव न धरे किन्तु सोने चांदीकी ईंटें उसके चेला उसके पावों तले धरतेजावें वह दम्भी उन्ही ईंटोंपर पांव धर२ के चले यह सुन्दरी उसको देख बहुत प्रसन्नहुई और अपनी दाई को बुलाके पूछा कि हेमाता यह कोई बड़ा सिद्धसा लगता है जो इस प्रकार मार्ग में जाता है उसने कहा हां बेटीयह बड़ा सिद्धहै और बादशाह का गुरू है बादशाह महीनेमें कई बेर इसके दर्शनों को जाता है और कभी २ यह भी आता है यह बात सुनके ज़ुरनबानने अपनी धायसे कहा कि जो माता तू मुझेआज्ञा देवे तो मैं इस साधका न्योता करूं और घड़ीपहरके लिये अपने घर बुलाके इसके चरण चूंबों और इसका सत्संगकरूं उसनेप्रसन्न होके कहा कि बेटी बहुत उत्तम है निदान ज़ुरनबानू ने सिद्ध जी को संदेशा दिया कि आप दया करके मेरे घर अपने चरणारविंद पवित्रों को धारिये तो मैं भी लोक परलोक में पवित्र होऊं और आपके दर्शन कर नेत्रों को पवित्र करूं साधू ने संदेशा मानलिया और कहा मैं अवश्य आऊंगा क्योंकि यह काम सिद्ध लोगों का

है जो कोई किसी का न्योता नहीं मानता वह दोषी होता है परन्तु आज तो नहीं कल्ह सवेरे अवश्यही आऊंगा क्योंकि आजके दिन मुझे काम है जब यह समाचार ज़ुल्फ़नबानू ने सुना कि कल्ह सिद्धजी अपने चालीसों शिष्योंके साथ कुछ दिन चढ़े आवेंगे तब उसने भांति २ के षटरस व्यञ्जन और अनेक प्रकार की मेवा मिष्ठान बनवाये और रुपया मोहर जवाहिरों के बहुत से थार भरायके धरे कि जब सिद्धजी आवेंगे तो उनको भेंटदेके उनके चरण धूमूंगी और बहुप्रकार दीनभाव प्रगटकरूंगी इतने में सवेरा होतेही वहदम्भी अपने चालीसोंशिष्योंको साथलिये यथापूर्वक चांदी सोनेकी ईंटोंपर पांव रखताहुवा ज़ुल्फ़नबानू के द्वारपर आनपहुंचा अब बड़ाई मैं उसकी तुमसे क्याकहूं कि बाहर तो सिद्ध और भीतर लोभकिंकरथा और आपसे जो उसकेछलकोकहूं तो निशारों से भी अधिक था निदान बालक बुद्धका विचार तज वह पाखंडाल बधने योग्य था ज़ुल्फ़नबानू ने पाटम्बर के पावड़े प्रथमहीं बिछवा रक्खेथे वह छली उन अमौल्य वस्त्रोंको लांघताहुवा मसनदके ऊपर जायके बैठगया तब खाजासराय उसके सम्मुख बहुतसे थाररुपया मोहर और रत्नोंके भरेहुयेलाये पर उसने कुछ न लिया और कहा कि यहद्रव्य मेरे किसकामकी है फिर भीतर बहुतसे भार भांति२ के वस्त्रोंके भेंटदिये पर उसने एकभी न लिया फिर दूसरे मकानमें गया वहां भांति २ के षटरस व्यंजन सोनेचांदीके बासनों में परोसिके आये और सोनेचांदीके तारों के विनेहुयेवस्त्र बिछायेगये तिसपर वे थार रक्खेगये और वहां रेशमी कपड़ा सोनेचांदी के तारों के विनेहुये तिनकेपर्दा दालानोंमें पड़ेहुये और रेशमकी डोरियों से बँधे हुये थे और एक नमगीरा मोतियों की झालर लगा हुवा दालानोंके आगे आंगनमें झमझमा रहाथा नौकरचाकर अच्छे २ वस्त्र जरबफ्तादि के पहरे शीघगामी चिलमची साहतावा लिये सोनेके गडुवा में पानी लेके हाथ पांव धुलाने के लिये आये और हाथ मुह धुलायके शीलयुत खड़ेहोके प्रार्थना करनेलगे कि हेदयानिधि हमारी मालिक प्रार्थना करती है कि आप दयाकरके कुछ भोजन कीजिये और इसदीनके घरको अपनी जूठन डारके पवित्र कीजिये यह सुनके वह दम्भी भोजन करनेलगा और सोने चांदी के बासन और रत्नादिको भापनेलगा और प्रतिग्रास के साथही शोचता जाय कि बरअख सौदागर कोई बड़ा धनाढ्य था कि जो बादशाहों के समान ऐसी माया छोड़के मरगया है कोई ऐसी

यत्न किया चाहिये कि जिसमें सम्पूर्ण असबाब आजही रातको ले चलूं निदान उसने थोड़ा बहुत भोजन विषके समान किया और अपना हाथ खींचा तब नौकरों ने हाथ मुँह धुलाया फिर जड़ाऊ अतरदान लेआये और उसने अपनी दाढ़ी और अपने कपड़ों में इतर लगाया और ऊपरी मनसे आशीर्वाद देके विदाहुवा और जितने नौकर चाकर थे सो तो उसके न्योतेकी तैयारी करनेमें थक गयेथे इसकारण सन्ध्याहोतेही अचेतहो सोगये और सम्पूर्ण असबाब जहांका तहां पड़ारहा न तो बासन सोनेचांदीके अलगरक्खे और न रत्नादिकोंको ठिकानेसे धरा और घरके किवाड़भी खुलेही रहगये जब पहररात बीती तो वह सिद्ध अपने चालीसों चेलाओं को लेकर घरमें घुसआया और अपनासा माल उठाय२ के धरने-लगा इतने में जब आहटहुई तो नौकर चाकर जागे और उनके साथ लड़ने को उद्यत हुये तब बहुतेरों को तो उसके साथियों ने घायलकिया और बहुतेरों को जीव से मारडाला और हुस्नबानू कोठेपरसे खिरकीकी राहसे यहचरित्र देख २ पहिचान२ के कहै कि हे छली बाघडाल पाखण्डी तू ऐसा दम्भी है कि ऊपर ऐसा भेषबनाये और भीतर ऐसी छुरीकटारी हैं और यह तेरी प्रतिष्ठा मर्य्यादा निदान हुस्नबानू हाथ मलमलके कहनेलगी कि अबतेरा क्या यत्न करूं निदान रात तो ऐसीही कटी जो सवेरा हुआ तो हुस्नबानू ने उन मृतक और घायलों को चारपाइयों पर डालके बादशाह के द्वारपर लेके पहुंची और चिल्लाय के दुहाई देनेलगी कि मैं लुटगई जब बादशाहने सुना तब पूछा कि यह कौन है और किसने दुःखदिया है तब प्रतिहारों ने जाके कहा कि महाराज बरजख सौदागर की बेटी चारपाइयोंपर कितने एक मृतक और घायल लेके आईहै और रोय २ के दुहाई देतीहै जो आप उसको अपनेपास बुलावें तो वह अपना वृत्तान्त आपसे कहै बादशाह ने यहसुनतेही उसको बुलायके पूछा तबवह बोली कि महाराजके जीवको जय और जबतक पृथ्वी आकाश रहै तब तक राज्य करो मेरी ओर न्याय और दयाकी दृष्टिसे देखके सुनो कि कलहकोदिन मैंने उससाधूका निमंत्रण कियाथा उसने पहररातबीते मेरेघरमें अपने चालीसों चेलाओंको लेके आघुसा और सम्पूर्णधन ग्यारह बारह लाख रुपयोंका उठालेगया और दश बीस को मारा और दश बीस को घायल किया परमात्मा उसका मुख काला करै जिसने मुझे अनाथ जानके लूटाहै इसबात के सुनतेही बादशाह के

क्रोध की ज्वालाउठी औरकहनेलगा कि ऐ मर्खा तुझे कुछबुद्धि है तेरी मति भृष्ट होगई है जो ऐसे सिद्ध को तू वृथा दोष देतीहै वह सम्पर्णसृष्टि की वस्तुवों से घणाकरताहै तब ज़ुस्नबानू ने फिरकहा कि वह नास्तीकपाखंडीहै और छलमें यमदूतों सेभीअधिकहै और आप यह क्या कहते हैं उसके बराबर तो दुष्ट कोई सृष्टिमें नहीं है इस चाण्डाल को कोई मनुष्यनकहै क्योंकि वह तो राक्षसों से भी अधिक दुष्टात्मा है इस बात चीत के सुनने से बादशाह और भी अधिक क्रोधातुर हुआ और कहने लगा कि और कोई है नहीं जो इस हतभाग्य लड़की को मेरे सामने से हटावे और पत्थरोंसे इसका मूड़फाड़े तो यह अपने फलको पावे और दूसरों कोभी इसकी बुरीदशा देखके ज्ञान होजाय जिसमें फिरकोई ऐसी ढिठाई न करै कि जो यह ऐसे साधकी निन्दा इस प्रकार करती है इतने मेंएक मंत्रीउठके प्रार्थना करनेलगा कि महाराज यहबड़ीबरजख सौदागरकी बेटीहै कि जिसके ऊपर सदा आप दयादृष्टि रखतेथे और अपने पास बैठालते थे और अपना करुणामय हाथ इसके शीश पर धरते थे और आज उसको बध करने की आज्ञादेते हैं इसके देखने से हमसबभी आपकी दयालुता से निराश होतेहैं सकल सभासदों को यह आपकी आज्ञा अधीर करती है कि वेसबके सब आपका देश छोड़ के भाग जावेंगे और शत्रुवों से मिलजावेंगे क्योंकि वे अब देखते हैं कि जिसको बादशाह ने बेटे की बराबर पाला पोषा उसको तो उसके पिताकी मृत्युके उपरान्त यहदशा की है तो हमारे पीछे हमारे बालबच्चोंके साथ बादशाह कौन भलाईकरेंगे इससेविदित होताहै कि आपके सम्पूर्ण नौकर चाकर आपके शत्रुहोजांयगे इसलिये जो मेराकार्य्यथा सोमैं प्रार्थनाकरचुका अब आपका जैसा जीचाहै सोकीजिये आपकी आज्ञा सर्वोपरि है इस बात को सुन के बादशाह कहनेलगा कि अच्छा तेरे कहने से और बरजख सौदागर की पूर्व मैत्री से इसको जीवदान दिया परंतु जो यह अपना भला चाहै तो अजही हमारे देश से निकलजाय और राजद्वारसे सिपाही जयके इसको देशनिकालादेआवें और इसके घरके सम्पूर्ण धन जवाहिरादि द्रव्यसे लेकर घरके तिनका तक सकल पदार्थ सरकारी खज़ानेमें लेआवें निदान बादशाहकी आज्ञानुसार सिपाही गये और जोकुछ धनउस चाण्डाल साधूसे बचरहा था सो सबका सब बादशाहके कोषमें धरागया और ज़ुस्नबानू केवल अपनी धायको साथलेके एक जंगल में

गई और चारोंओर घबड़ाई२ फिरतीथी और अपनीधायसेरो २ के यों कहती थी कि हे माता मुझसे कौनसा अपराध हुआ जो मैं ऐसी आपदा में आनपड़ी हूं तब वहदाई छाती से लगाय के कहती कि ऐ बेटी ब्रह्माके लिखे को कोई मेटनेहारा नहीं है तू काहेको अपनामन छोटा करती है ईश्वर बड़ा कौतुकी है जिसने तुझे आपदामें डालाहै वहीइसे निवारण करैगा इसप्रकारहुस्न-बानू रोती २ अपनी दाई समेत और एकजंगलमें जापहुंची और एक छायादार वृक्षकेनीचे कई दिनकी भूखी प्यासी थकी थकाई जोनींद आईतो उसीके नीचे पृथ्वी में सोगई तो क्या स्वप्नदेखती है कि एकपुरुष शीलवान श्वेतवस्त्र धारणकियेहुये आसा हाथमेंलिये और गलेमें बहुतसी मालापहने सिरहानेकी ओर खड़ाकहता है कि बेटी खेदमतकर क्योंकि ईश्वरऐसाकौतुकीहै कौनजाने तेरेको पहलीदशासे भी अधिक भलाईमेंसौंपै अबतू उठ, और इस वृक्षके नीचेसात बादशाहतका खजानादबाहै ईश्वरने तेरेही लिये रक्खा है सोतूइसको अपने खर्चमें ला तब हुस्नबानू ने कहा कि मैं अनाथ स्त्री इसको किसभांत खोदके अपनेपास रक्खूं तब उसनेकहा कि ईश्वरकी मायाका प्रभाव तो देख कि वह किसप्रकार कठिन को सरलकरता है तू एक लकड़ी लेके इसके नीचेखोद यहबात सुनके हुस्नबानू चौंकपड़ी और उठके अपनी धायसे कहनेलगीकि मैंने ऐसा स्वप्न देखा है तब उसने कहा कि अच्छा ईश्वर का लीला तो देखोनिदान एकलकड़ी ले उसकेनीचे खोदा और दोनोंने उसकी जड़पकड़के अपनी यथा सामर्थ्य हिलाई तो रुपया मोहरके चहबच्चा और रत्नोंकी संदूक़ें दृष्टिपड़ीं और वही मोती जो जलमुर्गी के अण्डाकी बराबर है सोभी दिखाई पड़ा हुस्नबानू इस ईश्वरी द्रव्यको देखके बहुत हर्षितहुई और कहनेलगी माता तू शहरकी ओर को जा और हमारे कुनबेके लोगोंको जायके बुलोला और कुछ खानेपीने की वस्तुभी मोललेआ यह सुनके धायबोली कि मैं जाऊंतो सहीपरंतु तुझेअकेली किसभांति छोड़जाऊं जो तेरे पास दूसराकोई और होता तो मैं चलीजाती इतने में हुस्नबानू का कोका योगी का भेषबनाये आनपड़ा उसको देखके हुस्नबानू गलेमें लगके बहुत रोई और कहने लगी कि अब तू घबड़ा मत क्योंकि ईश्वरने इतना खजाना दिया है कि उसकी संख्या नहीं होसक्ती इसलिये अब तू कुछथोड़ा सा रुपया लेके शहर को जा और वहां से हमारे कुनबे के लोगों को बुला ला और कुछ खाने

पीनेकोभी थोड़ीसी वस्तु लेआ औरकारीगर घवई आदि कोभी बुलाला जिसमें एक बड़ासा मकानरहनेके लिये तैयार करें औरमैं यहां एकशहर बसाया चाहतीहूं उसकानामशाहाबादधरूंगीयह भेद किसीसे अभीनहीं कहना निदान वहकोका कुछरुपयालेकेशहरकोगया और उसके कुनबेके लोगोंकोजोजहांतहांमारे२ फिरते थे सबको इकट्ठाकरके ज़ुरनबानूके पासलेआया वेसब आपसमेंमिले चुले फिरएक बड़ाभारीतम्बू खड़ाकियागया और वे सबलोगरहने लगे एकदिन फिर वह कोकाशहरमेंआया और राजाओं केयूथप को बुलाके कहाकि हमको कुछकामबनवाना है इसलिये मेरेसाथ चलो और बहुतसेघवई अपनेसाथलेचलो उसनेउसकीबातमानली औरउसके साथजंगलकी ओरचला, औरसबको जिसकामके लिये लायाथाउसकाममें लगायाजब छः मासमेंएक बड़ामकान बनचुका तबज़ुरनबानू ने आज्ञादी कि अब इसमकानके आसपास एक शहर बसाओलेडालोतब घवईलोगोंने कहाकि बिनाबादशाह कीआज्ञा केहमशहर नहींबनासकते यहबातसुनतेहीज़ुरनबानू मरदाना भेष बनाय घोड़ेसेप्यादे साथलेएक अबीं घोड़ेपर चढ़ और जवाहिरों का एक थारभर और एक याकूतका मोर लेके शहरकी ओरसिधारी यह समाचार बादशाहको मिले कि एक सौदागरबचाआप के दर्शनों की अभिलाष से द्वार पर खड़ा है बादशाह ने सुनतेही कहाकि शीघही उसको प्रतिष्ठायुतमेरेसन्मुखले आओ द्वारपाल बादशाह कीआज्ञानुसार उसकोबड़े आदरसे बादशाह केपासले गये और यह बादशाहोंके समानदण्ड प्रणाम कर भेंटआगेधरकर खड़ी होरही इसको देखके बादशाह बहुत प्रसन्न हुवा और इस प्रकारपछनेलगा कितुमकिसदेशके निवासीहो और तुम्हाराक्या नामहै यहां कौन काम कोआयेहो यहसुनकेज़ुरनबानू कहनेलगी किमैं उस शहर का रहनेवालाहूं यहांइस शहरकेनिकट मेरेपिता प्रारब्धानुकूल जहाज में डूबके मरगये मैं आपके दर्शनों की लालसासेआपकीड्योढ़ीपरआयासोईश्वरनेमेरीअभिलाषपरीकीऔर आपसेकेवलयही प्रार्थना करताहूं किमैं अपनी आयुर्बलकेशेषदिन आपकी शरणमे काटूं यदिआपकी आज्ञाहोतो उस जंगलमेंएक शहर बनाऊं और उसकानाम शाहाबाद रक्खूं क्योंकि द्रव्य का खर्चलोकपरलोक दोनोंमें मनुष्यको पवित्र करदेताहै यहबातसुनकेबादशाह बहुत प्रसन्नहोके कहने लगा कि हेप्यारे जहांतेराजी चाहेवहांरह और तुम्हारीजोइच्छाहो सोकरो और जोचाहो

सोलेजावो तुम्हारेभाता पिताती मरगये आजसेतू मुझेअपनेपिता की जगह मान और तूमेरा पुत्रहुवा तब ज़ुस्नबानू ने हाथजोड़ के कहाकिजो आपनेमुझेअपना पुत्र बनायातोमुझे कोईउपनामदीजिये जिससेमेरीविशेष प्रतिष्ठाहो और यहप्रसिद्ध नाम मेराभला नहीं बादशाहयह सुनकेबहुतप्रसन्नहुवा औरउसकानामशाहरूशाहरक्खा और कहनेलगा कि हे पुत्रयह जंगलयहांसे बहुतदूरहै इसलियेएक शहरमेरे शहरके निकट बसा और आनंदसे रह तब उसनेफिर कहाकिमहाराजयहजंगलबहुतरमणीकहै और दूसरा शहरकुस्तुन्तुनियांकेनिकट बसाना बड़ी ढिठाईहैइसलियेप्रार्थना करता हूं कि यवद्वयोंकोआज्ञाहोजिसमेंवेवहां शहरबसावेंबादशाहने आज्ञा दी किराजलोग जाकेमकान शहरकेबनावें फिर तो ज़ुस्नबानू महीनेमेंदोतीन बेर बादशाहके पास आयाजायाकरती और यवद्वयोंको बहुतसा इनाम देदेके प्रसन्न करती और कहती कि शीघ्र काम करो बिलम्ब न करो और रातिदिन उस शहरके बनवानेमें लगीरहती निदान दो वर्ष के अन्तर में एक शहरआबाद होगया तो ज़ुस्नबानू उस शहर के बनाने वाले और नौकर चाकरोंके पारितोषिक आदिसे प्रसन्नकरके बिदा किया फिर तो ज़ुस्नबानू बहुधा बादशाही सभामें वर्तमान रहा करती एकदिन ज़ुस्नबानू बादशाह की भेटको गई उस समय वह बादशाहउसी छली साधूके दर्शनों को जाताथा तो इसे देख कहनेलगाकि हेपुत्र आज चित्त चाहता हैकिउसयोग्यसाधूके दर्शनोंको दोनोंजनेचलें क्योंकि संतके दर्शनोंकेसमान सृष्टिमें दूसरा सुख नहींहै और ऐसे सिद्धों के दर्शनमुक्तिदायक हैं इससेतुमभी चलोज़ुस्नबानूबेकहाकि महाराज एकतो ऐसेसिद्धकेदर्शन दूसरेआपकासाथ इससे अधिक भाग्य किसकी बलवान् होगी जोमैं ऐसे पदार्थसे मुख फेरूं परन्तु मनमें कहै कि ऐसे छलीके दर्शनकरना बहुत अनुचितहै और उस के द्वारका जाना यमपुरी के तुल्य है परंतु क्या करूं परवश हूं और बादशाहकेसाथ मुझेजाना अवश्यहै निदान बादशाह के साथ उस ढंगीके पासगई और बादशाह शाहरूशाह की बड़ाई उसकपटी मुनिके सम्मुख करनेलगा कि यह शाहरूशाह के नामसे प्रसिद्ध है ज़ुस्नबानू अपना शिर नीचाकिये सुनाकी और मनमें कहने लगी कि यह केवल प्रशंसा धनकीहै नहींतो मैं वहीबरजख सौदागर की बेटीहूं जिसको अपने देशसे निकालदिया और सम्पूर्णधन लेलिया इतने में बादशाह उससे विदाहुवा तब शाहरूशाह ने हाथ बांधके

कहा कि हे दीनदयाल जो मेरे घरमें भी एक दिन पद पखारिये तो मैं भी अपनेको धन्यमान और यह भी निश्चय है कि आप सिद्ध लोगसहजदयालु होतेहैं इसलिये मुझे भी अपनी दयासे विमुख न करेंगेयहसुनके वहअन्तर कपटीबोला कि बच्चा मैं तेरे घरअवश्यही चलूंगा तब बादशाहसे माहरूशाह कहनेलगा कि मेरा मकान यहांसे दूरबहुतहै इसलियेइनको जानेमें बड़ा दुःखहोगा जो आप बरअख सौदागर का घर जो बादशाहों के रहने के योग्य है दो चार दिनको मांगे दीजिये तो मैं इसमें इस सिद्ध का न्योता करूं यह सुनके बादशाह बोला कि हे पुत्र तैंने उसकी खबर कैसे पाई तब वह कहनेलगा कि बहुधा नगर निवासी उसकी प्रशंसा करते हैं और उसका नाम लेतेहैं तब बादशाह ने कहा कि हमने वह मकान तेरेही को दिया यहबात सुन माहरूशाह उस मकान के पासआया और उसको टटाफूटा देखके रोनेलगा फिर थवइयों को आज्ञादी कि इस मकानको साफ़करो और आप अपने नगर को चलागया और एक महीने पीछे सम्पूर्ण सामान न्योतेकी वहां भेजी और बहुतसे बर्त्तन थार आदि चाँदी सोनेके भेजे और एक याकूत का भोर और बहुतसे अमोलिक जवाहिर लेके उसमकान में धरकर अपने नौकर चाकरोंको वहांपर छोड़ आप बादशाह के पासगया और हाथ जोड़के कहनेलगा कि मेरी अभिलाष है कि उस सौदागर के मकान में कुछदिन रहूं जिसमें आप की सेवा में भी नित्त आसकूं और कलके दिन मैं उस सिद्धका निमंत्रण किया चाहताहूं बादशाह ने सुनके कहा कि बहुत शुभहै औरप्रसन्नहोके कहा कि हमारीबादशाहत भी तू अपनीही जान यहसुनके माहरूशाहने कहा कि यह केवल आपकी दयाहै जो मुझऐसे नीचको ऐसा अधिकारदिया निदान बादशाहके पाससेविदाहो घरआया और एक नौकर के हाथ उस साधु को सँदेशा भेजा कि आप माहरूशाहके घर पद पखारिये और उसको बड़ाई दीजिये यहसुनके वह छली अपने चालीसों चेलाओं को साथ लिये यथापर्वक सोने चांदी की ईंटों पर पांव धरता हुवा माहरूशाह के द्वारे पर आय पहुँचा माहरूशाहने पहलेहीसे पाटम्बरके बिछौना और तकिया मसनद आदि लगवारक्खी थी वह भीतरआया तो माहरूशाहने उसको राजसी मसनदपर बैठाला और बहुतसे थार जवाहिरोंके और अनेकथान बहुमौलिक वस्त्रोंके उसके आगे धरे उसने कुछ न लिया तब माहरूशाह ने सब जवाहिर ठौर २ ताखों में धरादिये

जिसमें सम्पूर्ण पदार्थ देखे तो उसको लोभ अधिक होय फिरभांति २ के भोजन और अनेक प्रकारकी मेवा मिठान सोनेचांदीके बासनों में धरके उसके आगेधरे और सुनहरे गेडुआसे चरण धुलाके कहा कि सिद्ध जी कुछ भोजन कीजिये और जूठन डालके इस दासको घर पवित्र कीजिये निदान वह अपने चालीसों चेलाओं को साथ बैठालके खाने लगा दशपांच ग्रास खाके हाथबन्द करलिया और कहनेलगा कि बस बच्चा अब बहुत भोजन पेट भरके खाना अच्छा नहीं क्योंकि जो पेटभर भोजनकरें तो ईश्वर की पूजा पाठमें विघ्न होगा तब माहरूशाह ने कहा कि दयानिधि मेरा चित्त तो संतुष्ट नहीं हुवा थोड़ा भोजन और करिये यहसुनके वहबोला बच्चा मैंने तो तुम्हारा प्रेम देखके इतने दशपांच ग्रास भोजन भी किये नहीं तो आठपहर में दोचार दाने खाता हूं और निशिदिन ईश्वर के ध्यानमें रहता हूं और जो पेटभर भोजन करूं तो भजन फिर क्या करूंगा परन्तु घरमें धनको देख २ कर पेटमें खलबली पड़ी कि हाय यह धन और रत्न मुझे कैसे मिलें फिर मुरस्सा का जड़ाऊ अतर-दान उसके आगे लायधरा उसनेकपड़ों और डाढ़ीमें मला और घड़ी दोघड़ी बैठके चलागया जब मकान में गया तो अपने चेलोंसे कहनेलगा कि यह भोजन तो तब खारथ हो जब वह सम्पूर्णमाल मेरेघरमें आजही रातको आजावे यहांकुत्बशाह ने अपने नौकरों से कहदिया था कि सम्पूर्ण पदार्थ जो जहां है उसे उसीठौर पड़ा रहनेदो और तुमसबकेसबलड़नेकीतैयारी कियेबैठे रहो और कोतवालकोभीसमाचारदिया कि आजकीरातकोडाका आनेवाला हैसो तुमअपनेलोगोंको सायलेकेकिसीठौरसमीपही मेरेहोऔर इस मकान में जब हल्लागुल्लाहोउसीसमयतुम आनके पहुंच जाइ-योनिदान कोतवाल ने सौसिपाही उसमकानके दायेंबायेंलगार-क्खेजब पहररात बीतीतो वहसाधु और उसकेसाथी चोरोंकाभेष बनायके माहरूशाहकी हवेलीमेंआयघसे और सबमाल उठाय २ के बांधने लगे और वह मुरस्साका मोरउस छलीने निजहाथमेंले लिया निदान जब बांधके चलने लगे तबचारोंओरसे मनुष्योंने कूद के उनको मुसके बांधली इतनेमें कोतवाल भी अपनी फौज लेकर आन पहुंचा माहरूशाहनेवैसबचोर कोतवालको सौंपदिये और नौकर चाकरोंसे कहा कि अब निःसन्देह सोवें, जबप्रातःकालकोतवाल उनसबोंको लेके बादशाहके द्वार परपहुंचा और जबबाद-शाह सभामेंमंची और सभासदों समेतबैठा तो कोतवाल ने जाके

शीशनवाया बादशाहने पूंछा कि रातको नगरमें कोतवाहल कहां होता था कोतवालने कहाकि महाराज बरजख सौदागरकी हवेली में डाका पड़ाथा परंतु यह दासबोलके साथही पहुंचा और सब चोरोंको बांधलाया इतने में माहरूबाह भी आया बादशाह को शीशनायके बैठगया तब बादशाह ने पूंछा कि पुचरात तुम्हारे मकानमें डाका पड़ाथा माहरूबाह ने उत्तर दिया कि हां महाराज परंतु कोतवाल न होता तो निस्सन्देह लूटा भी जाता और इसके सिवाय मारापीटाभी जाता यहसुनके बादशाहने आज्ञादी कि वे चोर मेरे सम्मुख आवें जब वे सम्मुखबुलायेगये तो बादशाह ने कहा कि यह तो हमारे अरजकबाह मालूम होतेहैं जबनिकट से देखा तो सत्यही सिद्ध जीही हैं जब उनकी तलाशी लीगई तो सबके पास फांसी और कमन्दथे जब उस सिद्ध की तलाशी लिया तो उसके पास भी बहुतसी फांसी निकलीं औरछुरस्सा का मोर भी निकला तब बादशाह ने आज्ञा दी कि इन सबको शूली दीजाय जिस्में फिर कोई ऐसा छल न करे फिर तो केवल कहने की ही देरथी तुरन्त बधिकोंने फांसी देदीतब माहरूबाहने खड़ेहोके कहा कि महाराज मैं आपकी बांदी हुस्नबानू बरजख सौदागर की बेटीहूं उस समयभी इस दासीका कुछ अपराधन था सम्पूर्ण धन मेरे पिताका यही छली उठायलेगया जो आपको निश्चयनहों तो इसका घरखोदा जाय यहसुनके बादशाहने हुस्नबानूका बहुत आदरकिया औरअपनेदांतोंसे अँगुली दबाई फिर उसकाघरजो खोदागया तो सम्पूर्णधन बरजखसौदागरका उसीछलीके घर निकला तब हुस्नबानूने बादशाहसे कहा कि यह सम्पूर्ण धनआपही की भेट मैंनेकिया और मेरेपास बहुतद्रव्य है सो भी आपकोदिखाऊंगी अब केवल आपसे यहीप्रार्थना हैकि एकदिन मेरेघरको अपने चरणकमलोंकी रजसे पवित्र कीजिये बादशाह ने कहा कि अच्छा मैंआऊंगा फिर हुस्नबानू अपने घरकोगई और अपनेनगर के सजनेके लिये आज्ञा दी और सम्पूर्ण सामान बादशाही इकट्ठी की फिर बादशाह के आने का संदेशा सुनके कितने एक सिपाही लेके बादशाहकेआगे लेनेगई और लाके मसनदपर बैठाला और दूसरा मोर छुरस्सा का और कितेक थार रत्नोंसे भरके बादशाह के भेंटकिये बादशाह देखकेप्रसन्नहुये फिरहुस्नबानूने सातोंचहबच्चे मोहरों के भरे हुये दिखाये और हाथजोड़के बादशाहसेकहा कि आप अपने नौकरों को आज्ञादीजिये जिस्में यह सम्पूर्ण धन लेके

बादशाही खजानमें धरें तब बादशाहने मंत्रीको आज्ञादी कि यह सम्पूर्णधन बादशाहीकोषमें धरो आज्ञा पाके मंत्री बहुतसे नौकरों को साथ लेकेगया तो देखा कि चहबच्चा ऊपर तक मोहरोंसे भरे हैं परन्तु ज्योंहींचाहा कि हाथलगावै त्योंहीं सबमायासांप और बिच्छू बनगई मंत्रीने यह समाचारबादशाहसे कहा बादशाहसुन के बहुत विस्मित हुआ तबतो हुस्नबानू घबराई फिर बादशाह ने हुस्नबानूसे कहा कि हेपुत्री यह द्रव्य तेरी भाग्यमें ईश्वरने दी है औरकोई न पावैगा तू आनन्दसे इसको भोगकर तब हुस्नबानूने बादशाहसे कहाकि मैंचाहतीहूंकि इसकोईश्वरकीराहमेंलगाऊं बादशाहने कहा तू मालिक है जो चाहे सोकरे फिर समझाबुझा के बादशाह तो अपने घरको गये और हुस्नबानू ने एक मुसाफिर खाना बड़ाभारी बनवाया औरनौकर नियतकरदिये कि जोकोई पथिकआवे उसका आदरहोय भोजनकरे जबजानेलगे तो उसको हुस्नबानूके पास लेजावे और उसको कुछ द्रव्यदेके विदाकरे इस दान सन्मान से उसका यश देश देश और नगर नगरमें फैला कि एक नये शहर में एक लड़की ऐसीहै कि न तो कभी ऐसी देखीहै और न कभी सुनी है और इतनी द्रव्य उसके पासहै कि जोकोई उसके नगर में जाताहै उसके साथ ऐसी भलाई करती है कि उसको रुपया और मोहरोंसे निहाल करदेतीहै और उसकानाम इस दान और सन्मान से इस सृष्टि में सूर्य्य और चन्द्रमा से भी अधिक प्रकाशित है निदान यह यश उसका खारजिम के देश में पहुंचा वहांकाभीबादशाह बड़ाऐश्वर्यमानथा औरउसकेएकपुत्र मुनीरशामीनामक चौदहवर्षका था दैवयोगसे उसनेभीहुस्नबानू की कीर्त्तिसुनी वहशाहजादा सुनतेही उसकेविरहमें फँस, और एक चित्रकारको बुलाय के कहा कि मैं तुझे इतनारुपया दूंगा तू शाहाबादमेंजाके जैसेबने तैसे हुस्नबानूका चित्रखींचलेआ वह चित्रकार उसकी आज्ञानुसार कितने एक दिनों में शाहाबादमें जा पहुंचा वहांतो हुस्नबानू के नौकर इसीकाम के लिये नियतथे कि जोकोई पथिकविदेशी उसके नगरमें आवे उसको वेलोगअपने२ घरलेजाते और बड़े आदरभावसे उसकी सेवाकरते और जबवह चलनेको होता तो उसेविदा करनेकेसमय हुस्नबानूकेपास लेजाते तब वह उसकाहाल पूछके उसको जैसाउचितजानतो वैसीद्रव्यदेके विदाकरती निदान उसकोभी हुस्नबानूके नौकर अपने मकानपर लेगये और उसका बड़ाआदरकिया और सबेरे हुस्नबानूके पास

लेगये उसनेअपनी चिलमनके पास बुलाया और उसकाहाल पूछा तो उसने कहा कि मेरी अब यह इच्छा है कि अपनी आयुर्बल के शेष दिनयहींआपकीशरणमेंपारकरूं तबऊस्नबानूनेपूछा कितुझमें क्यागुणहैउसनेकहाकिमैंऐसाचिचकारहूं कि बिनदेखेचिचखींचता हूंऊस्नबानूनेउसको नौकररखलियाथोड़े दिनपीछेऊस्नबानूकेमन मेंआईकिमैं अपनाचिचखिंचाऊं और उसकेझूठसांच कीपरीक्षाभी लूंतोऊस्नबानूनेउसचिचकारकोबुलायके कहाकिमेराचिचखींचदे तबउसनेकहा कि आपकोठेपरसे पानीमेंझांकें तोमैंआपकास्वरूप पानीमेंदेखलेऊंफिरआपकाचिचखींचूं यहसुनके ऊस्नबानूनेआज्ञा कीकिपात्रमें पानी भरके दीवारके नीचेधराजावे निदान पानीधर दियागया ऊस्नबानूने ऊपरसे जलमेंझांका तो उसनेदेखके उसका चिच अपने घरमें आके दोचिच खींचे उनमेंसे जो अच्छा चिच था सोतोअपने पासरक्खा और जोमध्यमथा सोऊस्नबानूको दिया उसने उसीको बड़ीप्रसन्नतासे लेलिया और उसको बहुतसा इनाम दिया फिरवह चिचकारवहांसे बिदाहोकरचला और थोड़ेदिनों में मुनीरशामी केपासआया और वहचिचदिया और पारतोषिक काआशावानऊआमुनीरशामीउसकेदेखतेही मूर्छितहोगयाऔर जबचेतऊआ तबठंढी श्वाससेहायमारनेलगा और एकसंगयहीमन मेंठहराईकिनिकलचलो निदानबिनामातापिताकी आज्ञाकेआधीरातकोयोगीकाभेषकर ग्राहाबादकी ओरकीराहलीऔरकितने दिनों में दुःख सुख भोगता ग्राहाबादमें आयपहुंचा परंतुवहां भोजन नकिये तबसन्देशियोंने आयकेऊस्नबानूसेकहाकिएकपथिक ऐसाआयाहै किनतो कुछखाताहै औरनकिसीसेबोलताहैऊस्नबानूने उसको अपनेपास बुलाया और पूछाकि हेपथिकतुमने अन्न क्यों छोड़ाहै और यहद्रव्यक्यों नहींलेते यह कहीं नकहीं तुम्हारे काम आवैगी भलाकुछतोहमारे पाससेलोतबउसने उत्तरदियाकि मैं रुपयापैसाकाआकाँक्षी नहींहूं मैंभीखारि जिमकेदेशकाशाहजादाहूं तबऊस्नबानूने पूछाजोतूशाहजादाहैतोयोगीका भेषकाहेको कियाहै तबउसने कहाकि मैंकेवलतेराचिचदेखके बावला हुवाहूं सोकेवल तेरेसाथ व्याहकरनेकी इच्छाहै ऊस्नबानूने यहसुनकेथोड़ीदेर शोचके कहाकि हेजवान ऐसे अनुमानको अपनेमनमें नबैठनेदे क्योंकिजोतू रेतहोके वायुकेसाथआवै तोभीमेरे एकरोमको न पावैगा और सुखतो कौनदेखताहै परंतु जोकोई मेरेसात प्रश्नोंके उत्तरदेगा वही मेरापति होगा तब मुनीरशामीने कहा कि मैं तेरे

द्वारपर मङ्गातवहुस्नबानूने हंसकेकहाकि जीवदेनातोबहुतसरल है परंतु मेरामिलना बहुतकठिनहै फिरसुनीरशामीने पूछाकिवह प्रश्नकौन२ हैं भलामैं सुनूंतो तबहुस्नबानूने कहाकि पहला प्रश्नतो यहहैकि (एकबेरतोदेखाहैपरदूसरीबेरदेखनेकीइच्छाहै) यहसुनके बादशाहजादेने पूछाकिवह कहांहै और उसका क्यानामहै और यहकहावत कबसेप्रसिद्धहैयहसुनहुस्नबानूहँसकेबोली कियहतुमने खबकही जोमैंहीं जानतीहोती तोतुमसेक्यों पूछती यहसुनके सुनीरशामीने गर्दन नीची करली और उठकर चलदिया तब हुस्नबानूनेकहा कि प्यारे इसमेंयहीतो कठिनताहै इससेउचितहै कितूयह बिचार मनसे से उठादे जहां मनमाने तहां जा तब उसने कहा तेरे नगरका रहनाऔर घर२की गलियोंमें फिरकेमरजाना यहीशुभहै यहसुनकरहुस्नबानूनेकहाकि हमऐसे मद्यपको अपने नगरमें नहीं रहनेदेते इससेतुझे उचितहैकि तूचलाजानहींतो परवशउपहास्यके साथ निकाला जायगा शाहजादा इसबातके सुननेसे निपट निराश होकेएकवर्षकी अवधि बढ़के चलातो हुस्नबानूनेदेखाकि यहअपनी जानयहांखोचलाहै तब उसको कुछरुपये राहके खर्चकोदिये और उसका नामपूछा तोउसने कहाकि मेरानाम सुनीरशामीहै इतना कहके रोताहुवा एक जंगलकी ओरको चला और कभी हंसे औ कभीरोवे इसीप्रकार कितने एकबादशाह और मचियोंकेपुत्र उसके घरआये और प्रश्नसुन २ कितनेहीं तो भागगये और कितनेहीं मरमिटे पर किसीने उसके प्रश्नका उत्तरन दिया निदान सुनीरशामी हुस्नबानूका चिंतो अपनी बगलमें दाबेजंगल जंगल बगुला की भांति उड़ा २ फिरे परंतु उसके मतलबका कहीं खोजन मिले निदान इसी प्रकारफिरते २ एक जंगलमें पहुंचा और एकवृक्षके नीचेबैठके रोनेलगा दैवयोग से उस जंगल में उसदिन हातिमभी अहेरकेलिये आयाथा जबउसनेरोनेका बोलसुना तब अपनेनौकरों से कहनेलगा किदेखो तो इसजंगल में कौन ऐसादुखित है जो इस प्रकार फूट२केरोरहाहै नौकरोंने उसकोदेखकर हातिमसे जाकर कहाकि महाराज एक चंद्रमुख युवा पुरुष योगी का भेषकिये एक वृक्षके नीचे रोरहाहै और न तो वह किसी से बोलता है और न किसीकीओर आंखखोलके देखताहै हातिमयहबातसुनके उसकी ओर चला और जायके उससे दूरपर एकवृक्षके नीचे खड़ा देखा कियाकिवह रोरोकेअपनाजी खोताहै हातिमदेखकेबहुत अधीर हुवा और आखोंमें आंसू भरआये निदान अपने घोड़ेसे उतरके उस

के सिरहाने जाके खड़ा होरहा और कहनेलगा कि हे ईश्वर इसपै ऐसीकौन आपदा पड़ीहै जिससे ऐसादुखीहोके अपना जीवखोता है थोड़ीदेर सिरहाने खड़ेहोकर उसकी दशादेखाकिया फिरहा-तिमने पूछाकि हेजवान ऐसीतेरे ऊपरकौन आपदा आनपड़ी है जिससेतेरी यहदशाहुईहै जबउसने आंखखोलके देखातो एकयुवा पुरुषअत्यन्तसुंदर बादशाहोंकीसी पोशाकपहरे सिरहानेकीओर खड़ापूछताहै तोएकसंग ऊपरको सिरउठाके देखा और बोलउठा किहेभ्राता क्याकहूं नतो मुझमें सामर्थ्य कहनेकी है न लिखने की और कोई ऐसाइष्टमित्र अपना नहींजो मेरादुःखसुनके कुछउसका यत्नकरे यह सुनके हातिमबोला कि धीर्य्यधर अकुला मत और मुझसेकह मैंने ईश्वरकी राहमें कमर बांधीहै और यहीनियतकर-चुका हूं कि मैं सबका काम करताफिरूं इसलिये तभीकह मैं तेरे भी काममें यथासामर्थ्य परिश्रमकरूंगा यदि तुझको धनदौलतकी चाह है तो अभी लेले और जो तुझको किसी शत्रुने सताया है तो उसको बतादे यातोमारूंगा या आपहीमर रहूंगा और जो किसी प्यारीकी बिरहमें दुखीहै और वह बिना सहायताके नहीं मिल-सकती तो मैं उसकी भी यत्नकरके तुझसे मिला दूंगा और जो तू मेरा शिर चाहता है तो यहतो यहीं वर्त्तमान है जब सुनीरशामीने ऐसी बातें सुनीं तो कहा कि हे सत्पुरुष तू धन्य है ईश्वर तुझको आयुष्मान् करे जो मुझसे दीनको ढाढ़स बँधाता है यहकहके वह चिच अपनी बगलसे निकालके दिया और कहनेलगा कि तूही बता मैं इसके विनादेखे कैसेजीऊं हातिम उसचिचको देखकर चुपके रह-गया और कहनेलगा कि ईश्वर चाहताहै तो तुझे मिलेगी परन्तु इतना अधीरन हो संतोष कर ईश्वर की दयासे किसीको निराश न होना चाहिये और जहांतक होसकेगा वहांतक यथा सामर्थ्य तेरेकाम करनेमें ढील न करूंगा और जबतक तेरीप्यारीतुझसेनहीं मिलती तबतक तेरा साथभी न छोड़ूंगा ऐसीऐसी बातोंसे उसका ढाढसबँधाय के यमनको लेगया और वहां स्नानकराय के पोशाक पहराई और दोचारदिन नाच रंगमें बिताये तब एकदिन उसको उदास देखके कहनेलगा कि हे मित्र मैं तेरेको टालता नहीं किन्तु तेरे मतलब की यत्न करता हूं तब बादशाहजादे ने कहा कि मेरे काम का कुछ आदि अन्त नहींहै इसलिये मैं नहीं चाहता कि तू अपना सुखछोड़के मेरेलिये दुखभोगे और नानाप्रकार के कष्टोंमें पड़े तब हातिमने उत्तरदिया कि चाहे तू मान चाहे न मान मैं तो

जो अपनी जिह्वासे कहचुका उसका प्रतिपाल करूंगा फिरहातिम ने सबसम्बन्धी और नौकर चाकरोंको बुलायके समझाया कि जब तक मैं न आऊं तबतक पथिकों को मकान और दीन दुखी और नंगे भूखोंको भोजन वस्त्र और दीनों को राहकेलिये खर्च जैसे मेरे सामने मिलताहै उसीभांति सबका दान सन्मान होता रहै ऐसा नहो कि कोईकहे यहां अब हातिम नहींरहता अब कौनदेवे और कौन आदरभाव पथिकोंका करै निदान यहकाम यथापूर्वक वैसा-ही चलाजाय इस भांति सबको समझाय के आप सुनीरशामी के साथ शाहाबादको चला और कितने एक दिनोंमें वहां जापहुंचा हुस्नबानूके लोगतो इसकामकेलिये नियतहीथे हातिम को सराय में लेगये और भांति २ के भोजन और रुपयाभीहर बहुतसी उसके सम्मुखधरी और कहा कि आप कुछ भोजन कीजिये जितने रुपया मोहर आपको चाहिये सो लेलीजिये तब हातिमनेकहा कि भाई मैं धन और भोजनों का भूखा नहीं आयाहूं ईश्वरने मुझेभी बहुत द्रव्यदीहै और बहुतसे देशोंका स्वामी बनायाहै मेरीतो अभिलाष औरही है यह बात सुनके नौकरलोग हुस्नबानू के पासगये और कहनेलगे कि एक कोई हातिम नामक आपके नगर में आया है और आपके प्रश्नोंका उत्तरदेनेको कहताहै और सुनीरशामी भी उसके साथहै हुस्नबानूने सुनतेही उनको बुलवालिया और चिल-मनके पास बैठके पूछनेलगी कि तुम्हारा क्या हाल है हातिम ने कहा कि ईश्वरका धन्यवाद करताहूं हेसुन्दरी तू अपने बिरही को तो अपना मुखारविन्द दिखला कि उसके मनको सन्तोषहो और अपने जीवन का फल पावे तब उसने कहा कि मैं अनचीन्हे मनुष्यके सम्मुख नहींनिकलूंगी परन्तु हांजो कोई मेरेसातो प्रश्नों के उत्तर दे वही मेरा मुख देखेगा तब हातिम ने कहा कि तुमभी मुझे बचनदेवो कि जबमैं तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर देचुकूंगा तो जि-सको मेरामन मानेगा उसको तुम्हें देदूंगा उसने यहबात मानली तब हातिमने कहा कि तुम अपनी जिह्वासे प्रश्नोंको कहोतो सही उसनेकहा कि प्रथमप्रश्न यहहै कि (एकबेरतो देखाहै और दूसरी बेर देखनेकी हौसहै) इसका उत्तर दे कि वह कौनहै और कहां है और उसने ऐसी कौन वस्तु देखी है जो फिर देखने की हौस लगीहै यह बता फिर दूसरेको पूछियो सुनतेही हातिम ने कहा कि मैंतो जाताहूं और सुनीरशामी को तुम्हें सौंपताहूं यहमेरा भाई है जबतक मैं न आऊं तबतक इसे अपने घरमें बड़े आदरभाव

से रखियो यह कहके हातिम विदा हुआ और सुनीरशामी को वहां छोड़के एक ओरको चला॥

प्रथम कहानी हातिमके जाने और प्रथम प्रश्नका उत्तरदेनेके विषय में॥

निदान जब हातिम थोड़ीदूर गया तब कहनेलगा कि अब मैं कहांजाऊं और किससे पूछूं अदेखबात को कैसेजानूं परन्तु मैंनेतो परमेश्वरके भरोसेपै दूसरे की आपदा अपने शिरधरीहै तो वही इसको सरलभी करैगा और मुझमें तो कुछभी सामर्थ्यनहींहै यह कह आगे बढ़केदेखाकि एकभेड़िया एक हिरणीको पकड़केभोजन करनेके विचारमें है यहदेखके हातिमने ललकारके कहा कि देख ऐ निर्दयीचायडाल तू क्या करताहै यहदीन बच्चेकी माताहै और इसके थनोंसे दूध बहता है यह सुनके वह भेड़िया डरके चुपखड़ा होरहा और बोला कि कदाचित् तू हातिम है जो तू उसके ऐसे समय सहायक हुवा तब उसने कहा कि तैंने कैसे जाना भेड़िये ने उत्तरदिया कि मैंने तेरी धीरता और दयालुता को देखके पहिचाना परन्तु यह भी प्रसिद्ध है कि तू किसी जीव को दुःख नहीं देतातो मेरे भोजन छीनलेनेका क्या हेतु है तब हातिम ने पूछाकि अब तू क्या चाहता है तबउस भेड़ियेने कहा कि मैं तो मांसाहारी जीव हूं जो मांस खानेको मिले तो भोजग करूं नहीं तो भूखाही रहूंगा तब हातिम ने कहा कि तुझे जहां के मांस की रुचि हो तहांकामांस मेरीदेहमेंसे लेकर भक्षण कर तब भेड़िये ने कहाकि चूतरौ का मांस मैं खाऊंगा क्योंकि उस में हड्डी नहीं होती है हातिम ने सुनतेही तरवारसे अपना चूतरकाटके उसके आगेडाल दिया उसने पेट भरके भोजन किया और तृप्त होके पूछने लगा कि हे हातिम तुम्हें ऐसी कौन विपत्तिपड़ी है जो यमने ऐसेनगर को छोड़ इस कठिन बनमें आये हो यह सुनके हातिमने कहा कि सुनीरशामी हुस्नबानू नामकएक चन्द्रमुखीके प्रीतिफन्दमें फँसाहै और उस कुटिलने सात प्रश्न कियेहैं और कहती है कि जो कोई मेरे सातो प्रश्नों के उत्तरदेगा उसीकेसाथ विवाहकरूंगी और उसके प्रश्नों मेंसे पहला प्रश्न यह है कि (एकबेर तो देखा है और दूसरीबेर देखनेकी मनमें अभिलाष लगरहीहै) मैं उसके बदले उन प्रश्नोंके उत्तरदेनेपर उद्यतहुवा हूं परन्तु यह कौनजाने यहकौन सा पुरुष है और कहां रहताहै और कौन ऐसी अचम्भे की बात देखी है जो उसको दूसरीबेर देखने की अभिलाषहै यहसुनके वह भेड़िया बोलाकि हेजवानमैं बहुधा उसठौर जाताहूं और प्राची-

नोंसे भी इसका पता मिलता है कि उस ठौरका नाम दश्तहवेदा है जो कोई वहां जायतो सम्पूर्ण दिन उसको यहीबोल सुनाईदेगा तब हातिमने पूछाकिवह दश्तहवेदा अर्थात् प्रकटबन कहांहै तब उस भेड़ियेने कहाकि यहांसे तू जा और थोड़ीदूर आगेचलके तुझे दो राह मिलेंगी उसमें से बायें हाथ की राहको छोड़के दाहने हाथकीराहको चलेजाना ईश्वरचाहे तो उसीजगह में पहुंच जायगा और अपने मनोर्थ को पायजायगा तब वह हिरणी उसको आशीर्बाद देती और जय २ कहतीचली और भेड़िया भी विदा हुवापरन्तु दोनों उसकी बीरता और दात्यकी प्रशंसाकरते जाते थे और हातिम ने भी अपनी राहली परन्तु हातिम दोचार पैग चला कि मारेचूतर की पीड़ाके न चलागया तब लाचार होकर एक वृक्षके नीचे जा बैठा और कराहनेलगा, उसवृक्षके नीचे एक स्यारकी भाठिथी वेदोनों स्त्रीपुरुष अपने अहेरको गयेथे जब संध्या समय दोनों आये तो हातिम को अपनी भाठिके पास पड़ापाया तो उसकी स्त्रीने कहा कि यह मनुष्य कहांआया अबमेरे निकट यहांकाबास उचितनहीं क्योंकि स्वजातियोंका संयोग भला बनता है मनुष्य और पशुओंका साथ कैसेनिबहैगा यहसुनके स्यारबोला कि यह हातिमहै और चूतरकी पीड़ासे बिकलहै और यहदश्त-हवेदाकी ख़बरको जाताहै तब उसकी स्त्रीने पूछा कि यह तैंनेकैसे जाना कि हातिम है स्यारने उत्तरदिया किमैंने अपने प्राचीनों से सुनाथा किएकदिन हातिम इसबनमें आकर इसवृक्षके नीचेदुःख सहेगा सो आज वही दिन आनपहुंचा है तब उसकी स्त्रीने पूछा कि तू इसकेकुछ समाचार मुझेबतला तो सही तब वहस्यार कहने लगाकि इस यमनदेशाधीश्वर ने जब इसजंगलमें आनके यह देखा कि एक भेड़िया एक हिरणीको मारेडालता है तब इसने भेड़िये को अपना मांस देके उस दीन हिरिणी को छुड़ाया और अपने ऊपर आपदाउठाई तब उसस्यारकी स्त्री ने कहा कि मनुष्यों में ऐसे दानी शीलवान कहांहैं तब उस स्यारने कहाकि तू चियामूर्ख हुईहै ईश्वरने मनुष्यको सृष्टिमें सर्वोपरि अधिकार दियाहै और मनुष्यहीको सब जीवों में बुद्धिमान बनाया है और फिर हातिम सा वीर, दाता, शीलवान, ईश्वरका भक्त जिसने अपना मांस देके दूसरेका जीव बचाया जब उसने हातिमकी ऐसी भलाई सुनीतो कहा कि यह ऐसे कष्टके मारे इतनी दूर कैसे जायगा तब उस स्यारने कहा कि परीरूप एकजीव है जो उसके शीशका गूदा इस

के घाव पर लगाया जाय तो बात की बात में इसका घाव अच्छा होजाय परन्तु यह बड़ी कठिनता है कि वहएक ऐसाजीव है कि जिसका सम्पूर्ण शरीरतो मोरकासा है और शीश मनुष्यकासाहै और बज़त से मनुष्य उससेस्त्रीका भावमान उसकेसाथ भोग करते हैं और वह माज़िन्दान के बनमें रहती है जो कोई उसके पास जाताहै और शरबत पिलाताहै तोवह मदांधहोके नाचने लगती है तब उसस्यार की स्त्रीने यह सुनके कहाफिर कौन ऐसा है जो उसका शीशकाटके लावै और हातिम को अच्छाकरै तब स्यारने कहा कि जो तू सातदिनतक न सोवे और न कहींकोजाय किन्तु इसीकी सेवा में लगी रहै तो मैं जाय के लेआऊं यह सुनके उस स्यारिन ने कहा कि इससे कौन बात भली है कि जिस में मनुष्य पर पशु भलाई करै निदान वह स्यार वहां से माज़िन्दान के बन की तरफ कोगया और वहां जाके उस जीव को एक वृक्षके नीचे सोता पाया तब उसका शीश काट वहां से पलटा फिर अपनी भाठि पर आन पहुंचा और उसकी स्त्री भी उसी प्रकार हातिम की सेवा करतीथी उसने उसजीवकी खोपड़ी तोड़के उसका गूदा हातिम की चोट में लगाया वह घाव बात की बात में जैसा का तैसा होगया तब हातिम उससे कहनेलगा कि तैने पशु होके मेरे साथ ऐसी भलाई कीहै कि इसका पलटा नहीं है परंतु तैंने इस जीव को मेरे लिये बध किया मैं ईश्वर के आगे क्या उत्तर दूंगा तब उसनेकहा कि यह हत्या मेरे माथेहै तू निःकेवल है क्योंकि हम भी अपने ईश्वर को जानते हैं ए आपस में ऐसी बातें करते रहेथे कि इतने में हातिम ने कहा कि अब तू मुझे कोई काम बता तो मैं भी उसको करूं तब स्यार बोला कि हे बीर इस बनमें एक प्रकार के जीव गुफ्तारैं होतेहैं सो हमारे बच्चों को प्रति सम्बत खाजाते हैं और हमारा कुछ बश नहीं चलता जो तू उनको बधकरै और हमारे बच्चा बचावे तो हम तेरे बिन मोल चेरे होजावें तब हातिमने कहा कि वे कहांहैंतुम मुझे बतावो यह सुनकेस्यार हातिम को वहां लेगया और उसको बताके आप किसी झाड़ में छिपके बैठगया हातिम उसठौरको खालीपाके वहां जाबैठा और जब उनका जोड़ा आया तो हातिमको वहांबैठा देखके बोलाकि यह मनुष्य कौन है यह कहते हुये आगे बढ़े और कहने लगे कि यह तेरा घर नहीं जो तू मालिक बन बैठा है इसलिये जो तू अपना भला चाहता है तो अभी चलाजा नहीं तो हम तुझेमारके भोजन

करलेंगे तब हातिम ने कहा कि हेमूर्ख मैं न तो दुःखदाईहूं न अहेरिया हूं तुम इतना काहेको डरतेहो जोयह तुम्हारा घरहै तो आनन्दसे रहो तब वे बोले कि बात तो बनावेमत मनुष्य को तो शीलही नहींहोता अब तू चलाजा औरहमको छलमत तब हातिम ने कहा कि ईश्वरकेलिये जैसा अपना जीवजानो तैसेही और का भी जानो देखो तो यह कैसा अन्याय है कि स्यार के बच्चों कोखाके अपने बच्चोंको पालतेहो यह सुनके वे बोले कि अब हमने जानीकि तू स्यारों की सहायता को आयाहै अब हम उनको तो खातेहीहैं और तुझेभी भोजनकरेंगे तबहातिमने कहाकि अच्छा उसकेबच्चों के बदले मुझे खालो और तुम्हें उस ईश्वर की सौगन्द है जिसने सम्पूर्ण सृष्टिको उत्पन्न कियाहै कि उनकेबदलेमें मुझेखाओ और उनको छोंड़ो क्योंकि ईश्वर अन्नदाताहै तुम्हें किसी प्रकारसे भोजन पहुंचावेगा तबउन नीचोंने नमानाकिन्तु हठकरके कहाकि उनको भी न छोंड़ेंगे और तुझेभी सजीव न जानेदेंगे तब हातिमने शोचा कि ये चाण्डालबड़े कठोरचित्तहैं कि परमेश्वर कीभी आनि नहीं मानते तब हातिमने क्रोधकरके उन दोनों की गर्दन पकड़ पृथ्वीपर पटक मारने के हेतु अपनीकमर से खड्ग निकाली परन्तु उसने शोचा कि अब तकमैंने कोई जीव वधनहीं किया और न किसीकोदुःखदियाहै परन्तु उन्होंने ईश्वरकोभी आन नहीं मानी इसलिये इनको कुछदण्ड देना अवश्यहै तब उसने तलवार के कब्जे से तो उनके तीक्ष्ण दांत तोड़े और उसकी बाढ़से उनके नखों को काटा और उनको खोलकेईश्वरसे प्रार्थना करनेलगा किहेईश्वर इन पशुवों की पीड़ा जातीरहै परमात्माने उसकी प्रार्थना सुनी तो उनकी पीड़ा जातीरही तब वे रोय २ के कहने लगे कि हमतो मांसाहारी हैं अब हम अपने भोजन कैसे पावेंगे हातिम ने कहा कि वह ईश्वर ऐसा अन्नदाता है कि सम्पूर्ण सृष्टि को अन्न देता है तुम्हेंभी किसी न किसीभांति भोजनदेवेगा इतनेमें वह स्यारबोला कि अब तुम निश्चिन्तरहो हम जबतक सजीवहैं तबतक जहांसे बनेगा तहांसे इन्हें भोजनदिया करेंगे यहसुन हातिम उनसे विदाहुवा और थोड़ीदूरचला त्योहीं उसेस्यारकीस्त्रीने कहा कि यह कौन शील और मनुष्यत्वहै कि हातिम अकेला बनको जाता है और तू उसके साथ नहींजाता तबस्यार यहबात सुन दौरके हातिम के पास जाके कहनेलगा कि मैंभी तेरे साथ हवेदाके बनको चलूंगातब हातिमनेकहा कि एकहीकामसेमैं तेराचेराहोरहाहूं

अब दूसराबोझ मेरीगर्दन परकाहेको लादताहैऔर मैं यहनहीं उद्यत कि तुझे अपने साथ लेजाऊं हां जो तू मेरेसाथ चलनेही को चाहता है तो इतनाही कर कि मुझे सूधी राहबतादे तब स्यार ने कहा कि एक राह से तो बज़ुत शीघ जायगा परन्तु उसमें नाना-प्रकार के कष्ट हैं और जिस राहसे बज़ुत दिनों में पहुंचेगा वह उसकी अपेक्षासुगमहै तब हातिमनेकहा कि तू मुझे वहीराह बता जिससे शीघ पहुंचूं ईश्वर उसको भी सुगमही करदेगा तबस्यारने कहा कि यहीराहहै जिसपै तू खड़ाहै बज़ुत सीधीहै तबहातिमने उसको विदाकिया और आप आगे को बढ़ा चलते २ आगे एक चौराहा मिला वहां खड़ा शोचरहाथा कि अब किससे पूछूं और कौनसी राहकोजाऊं और वह बन केवल रीछोंकाथा और रीछ ही वहांका राजाथा इतनेमें सौदोसौ रीछ घूमते फिरते उसतरफ को आ निकले वे हातिम को देखके बज़ुत प्रसन्नहुये और उसको अपनेराजाकेपासलेगये वहभीदेखतेही बज़ुतप्रसन्नहुवा और कहने लगाकि तुमसुझे हातिमसे मालूमहोतेहो तबहातिमनेकहाकियह सत्यहै मैं तयका पुत्र हातिमहूं संस्कारानुकूल इसवनमें आनिकला तब रिच्छपतिने कहा किमैं तुम्हारे आनेसे बज़ुत प्रसन्नहुवा और अबमैं अपनी पुत्रीका विवाह तुम्हारे साथकरूंगा क्योंकि इसबनमें कोई मेरा जामाता होनेके योग्य न था यह सुनके हातिमने अपनी गर्दन नीचीकरली और कुछ उत्तर न दिया तब उस रिच्छपतिने कहाकि तुम्हारे चुपरहने का मुझे यही हेतु मालूम होताहै कि कदाचित् मैं तुम्हारे ससुर होनेके योग्यनहीं यह सुनके हातिम ने कहा कि हां तुम पशु और मैं मनुष्य मेरा तुम्हारा संयोग कैसे बनेगा तबउसने उत्तर दिया किहेजवान रतिका सुखमनुष्य और पशु दोनोंको समान है इसका कुछशोच मतकरो और मेरीपुत्री भी तुम्हारेही समानहै इतनेमेंरिच्छपतिने रीछोंको आज्ञादी कि पुत्री को व्याहके कपड़े पहरायके और भली भांति सँवार के एक स्थानमें लेआवो वे उसलड़कीको उसकी आज्ञानुसार एकस्थान मेंलाये वहां हातिमको भेजा हातिमने जाकेदेखा तो एक सुन्दरी चम्पक बदनी मृगनयनी चन्द्रमुखी कटिक्षीण यौवन पीन सबसाज शृंगार किये लघुबैस दीर्घबारबैठीहै हातिमदेखबज़ुत बिस्मितहो फिर सभामें लौट आया और बोलाकि तूराजाहै और मैं योगीहूं जो मैं इसको अपनी भार्य्या बनाऊं तो बड़ी ढिठाईहै तब रिच्छ पतिने कहाकि इसमें तू बहाना मतकर क्योंकि तू भी तोयमन का

अधीश्वर है हातिम यह सुनके चुप होरहा और शोचनेलगा कि मैं किसकाम को आयाहूं और यहां यह काम करके बैठूंतोमुनी श्वरभी मेरा आसरा देखकेमरजायगा तोमैं ईश्वरकेआगेक्याउत्तर दूंगा तब रिच्छपति ने कहा कि हेजवान तैंने कुछ उत्तर न दिया जब तकतू मेरीबेटी से बिवाह नकरेगा तबतक तू किसी भाँति छुट्टी न पावेगा और कठिन बन्दिसेवना पड़ेगी हातिमइसकोभी सुनके कुछ न बोलातबतो रिच्छेश्वरअत्त क्रोधातुर होके बोला कि इसको उसखोह में लेकेबन्दकरो और उसके द्वारपै एकभारीशिलादाब-देवो उन्हों ने आज्ञानुसार हातिम को लेजाय गुफा में बन्दकर-दिया हातिमउसीमें कईदिनतक बिनअन्नजलपरारहा जबरिच्छ-पतिने उसको निकसवाया और अपने सम्मुख बुलाकेपूछा तब भी उसने इनकार किया तोफिरउसी खोहमें बन्द करादिया उसमें मारे भूखप्यासके अधमरा होके नींदबशहुवा तो क्यादेखताहै कि एक सुन्दर पुरुष मुखपर बुर्का अर्थात् सिया हुवा बस्त्र जिसको अरब आदिदेशों के यमनोंकी स्त्री घूंघटकाढ़नेके बदलेमुखसेओढ़-तीहैं छोड़े सिरहानेकी ओर खड़ाहोके कहताहै कि हे हातिम जबतकतू उसीबेटीके साथबिवाह न करेगा तबतकतू नछूटेगा और जो बिवाह करलेगा तो उसीसे तेरा सम्पूर्ण काम बनजायगा और वही तुझे अपनेपितासे कहके छुड़वायदेगी वहपुरुष तो यहकहके लोपहुआ और प्रातःकाल को राजाने उसको निकसवा के अपने सम्मुख बुलवाया और कहाकि हेजवान अभी भलाहै मेराकहना मानले तब हातिम ने हार झकमार के उसका कहना मानलिया तब रिच्छपतिने मेवा मँगवाके उसके अगेधरा उसने भूंख के मारे-पेट भरके भोजनकिये फिर रिच्छेशने अपने सजाती लोगोंको बुला-या और हातिमका बिवाह अपनी पुत्रीके साथकिया और उसको एक मकान एकान्तमें रहने कोदिया हातिम बड़ेआनन्दसे उसस्त्री के साथ भोगबिलास करता और केवल मेवाही भोजन करता जब मेवा खाते २ उसका मनऊबा तो राजाके पासजाके कहा कि अब मेवाखानेसे तो मनऊबगया इसलिये अन्नहोय तो भलीबात है तब रीछोंके बादाशाहने आज्ञादी कि गांव और शहरोंसे भांति २ के भोजनोंकी सामग्री और बासन औरजो जो बस्तु आवश्यकहो सो लावो वे आज्ञापातेही क्षणभर में सकल पदार्थ लेआये फिरराजा ने नाना भांतिके व्यंजन बनवाये और हातिमने अपनी भर्य्यासंयुक्त तृप्तहोके भोजन किये इसीप्रकार भोजन करते और भोगबिलास

करते तीनमास व्यतीतहुये एक दिन हातिम ने आनन्द के समय अपनीस्त्री से कहा कि हे प्यारी मैं अपनेघर से कुछ कार्य्य करनेके लिये निकला था यहां तेरे पिताने मेरा बिवाह तेरेसाथ करदिया इसलिये जो तू प्रसन्नहोके अपने पिताकी आज्ञानुसार मुझेबिदा करदेवे तो जब मैं उस कार्य्यसे छुट्टी पाऊं तो फिर तुझसे मिलूंगा यह सुनके वह अपने पिताके पासजाय कहनेलगी कि हेपिता वह इसप्रकार कहताहै तब वह बोला कि बेटी वह तेरा पति है और तू उसकी स्त्रीहै जो तू प्रसन्नहै तो क्या मैं इन्कार करताहूं जैसे तेरे मन आवै वैसे कर तब उसकी बेटीने कहा कि यह पुरुष सत्यवादी मालूमहोताहै इससे निश्चयहै कि वहअपनी अवधि न बितावै तब उस रीछने बुलाय के हातिम को बिदाकिया और कितेक रीछ उसके साथ भेजे कि अपनी सीमातक कुशल पूर्वक पहुंचाय आवैं निदान जब हातिम इनदोनों से बिदाहुवा तो चलते २ एक ऐसे रेतले मैदान में पहुंचा कि जहां अन्न जलके दर्शन नहीं मिलते थे परंतुएक पुरुष मुखपै बुक्का डाले संध्यासमय दो रोटी और एक गिलास पानी का दे जाता था वही रोटी खाता और वही गिलास पानी का पीता और निशि दिन राह से ध्यान लगाये चला जाताथा एकदिन एकसर्प भूधराकार सामने दृष्टिपड़ा परन्तु यह आगेही को बढ़ा चला गया इतने में उसने जो स्वास खींची तो हातिम ने बहुतेरा अपनेको संभाला परन्तु न संभलसका निदान उसके पेटमें हो रहा और जब उसके उदर में अपने को देखा तो ईश्वर का धन्यवाद किया और कहा कि यह भली बात हुई जो मेरा दोषी शरीर एकजीवके नेगेलगा नहीं तो यह माटीहत्याही थी अब सत्यतो यहहै किजो कोई ईश्वर की राह में पांवधरै और उसका स्मरण करै तो उसको बिगाड़ता नहीं है उसकी परीक्षा के लिये उसको कुछ कुछ दुःख देता जाता है जो परीक्षा में पूरा उतरा तो निस्संदेह अपनी अभिलाष के वृक्षके फल खाताहै इसी भांति अपने मनको समझाय रहाथा और अयूब पुरुष की विपत्तिका स्मरण करता और कहता कि परमेश्वर बड़ा दीनदयाल है उसी भांति मेरे भी कष्ट को दूर करैगा निदान तीन दिनतक उसके पेट में फिरा किया और चारों ओर राह खोजा किया राहतो कहीं नमिली परन्तु आप उसके पेटकी गन्दगीमें लिथड़ गया और सांप का विष जो उसको नहीं व्यापा उसका कारण यह था कि चलतीबेर उसकी स्त्रीने एक मुहरा उसकी पगड़ी में

बांधदियाथा और उसमें यहगुण था कि जिसके पास वह मुहरा होय वह न तो अग्निमें जले और न जलमें डूबे और न उसको विषव्यापै इसीहेतुसे वह उसके पेटमें सजीव बनारहा और उसे उससर्पका विषनहीं व्यापा और वह सर्पअपने मनमें कहैकि मैंने आज कौन ऐसी वस्तु खाईहै जो पचती नहीं और पेटमें दौड़ती फिरतीहै निदान वह सर्प तो अपने पेटके दुःखके मारे अधीर होरहाथा और हातिमउसके पेटमेंक्षणभर भी नहीं थँभताथा किंतु चारों ओर दौड़ा २ फिरता था और उसकी आंतोंको अपने पावोंसे कुचिलता था निदान उस सर्पने जाना कि यहग्रास सब दिनके भोजन निकालेगा इसबात को मनमें ठहराय के उससर्प ने बातकी तो हातिम निकलपरा और अपने कपड़े उस रेतमें खड़े होके सुखानेलगा जब कपड़ा सूखगये तब आगे चला थोड़ीहीदूर गया था कि इतने में एक तालाब दृष्टिपड़ा हातिम दौड़के उसके किनारे पर बैठकर अपने कपड़ा धोने लगा इतने में एक मछली किनारेपर निकल आई तो हातिम ने देखा कि नीचे का धर तो मछली का और कमरके ऊपरसे स्त्रीकाशरीरहै यहदेखके ईश्वरकी माया और उस की कारतव्यता को बारम्बार धन्यवाद कर रहा था और उस की ओर टकटकी लगाये देख रहा था इतनेमें वह मछली उसका हाथ पकड़ के तालाब के भीतर अपने मकान में ले जाके एक सुथरे बिछौने पर बैठाला और आप एक सुन्दर स्त्री का स्वरूप बनके आई और हातिम से रति की इच्छा की तोहातिम ने कहा कि मैं अपना घरबार छोड़कर एक काम करने को निकला हूं और तू मुझे बटपारी करके इसी ठौरमें रखना चाहती है सो मुझसे यह काम न होगा हां एक बात परमैं तेरी बात मानूंगा कि जहांसे तू मुझे लाई है वहांहीं मुझे पहुंचा देतो जो तू कहै सोई मैं करूं और तेरे मनकी अभिलाष पजूं तब उसने कहा कि तीन दिन उपरान्त जहां से मैं तुझे लाई हूं वहांहीं पहुंचादूंगी तब हातिम ने उसकी बात मानी और तीन दिनतक उसके साथ बिहार किया जब तीन दिन बीते तब हातिम नेकहा कि हे मछली अब तू भी अपने बचन का प्रतिपाल कर यह सुनके उस मछली ने हातिम का हाथ पकड़ पानी में डुबकीमारी और क्षणमाच में किनारे लाय खड़ाकिया फिर वह मछली बोली कि हे प्यारे तू मुझसे बिलग क्यों होता है तब हातिम ने उत्तरदिया कि मुझे एक काम करने की बड़ी जलदीहै यदि मुझको वहकाम

न करना होता तो मैं तुझसे काहे को बिलग होता मछली तो यहसुनके अपने भीतरको चलीगई और हातिमने भी कपड़े धोय के अपनी राह पकड़ी और कुछ दिन में चलते २ एक ऐसे पर्वत पर जा पहुंचा कि उसपर भांति २ के वृक्ष मेवाके फलेहुये कोसों तक चलेगयेहैं और सैकड़ोंमकान सुन्दर २ बनेहुये थे और चारों ओर नहरें बह रहीथीं और फुलवारियां लहलहा रहीथीं और सब मकान हवादार थे यह मकानोंदा तो याही बहांजाके सोय रहा इतनेमें उसमकानका स्वामी आयपहुंचा और देखाकि एक युवा पुरुष दिव्य मूर्ति सोय रहाहै वह उसके पास आयकेबैठरहा जब बड़ीदेर पीछे हातिम जागा तो उसने एक पुरुष अपने पास देखा तब उठके सलामकिया तो उस मनुष्यने पूछा कि तू कौन है कहांसे आताहै और कहां जानेका विचारहै और तेरा नाम क्या है तब हातिम ने उत्तरदिया कि मेरा नाम हातिम है यमन से आताहूं और दश्तहवेदाको जाताहूंमेरी भाग्य उदयहुई जिससे इसबनमें आपके भी दर्शन हुये तब उसने कहा कि हे जवान तूइस विचारको चित्तसे निकाल क्यों वृथाजीव खोता है और मुझे यह खेद होता है कि कोई तेराइष्टमित्र भी न था जो तुझे बरजता हातिमनेकहा कि मैंनेतो यह आपदादूसरेके लियेओढ़ीहै क्योंकि मुनीरशामी खारज़िम का शाहज़ादा हुस्नबानू बरज़खसौदागर की बेटीके विरह में दुःखीहै और उसने कहा है कि जो कोई मेरे सात प्रश्नों के उत्तरदेगा उसीके साथ अपना बिवाह करूंगी जब मुनीरशामी में उत्तर देनेकी सामर्थ्य न ठहरी तब उसने मेरे पासजाके यह समाचार कहे इसलिये मैं उसके बदले उत्तर देनेको उद्यतहुआ हूं और यहभी मनुष्य को उचित नहीं है कि अपनी बातका प्रतिपाल न करै इसलिये ईश्वरके भरोसे पै निकलाहूं जो करै सो परमेश्वर अबतो घरसे निकलाहूं यहबातसुनके उसनेकहा कि मालूम होता है कि तू तय का पुत्र हातिम है क्योंकि वर्त्तमान कालमें ऐसा कौनहै जो बिराने लिये इतनी आपदा भोगे अच्छा कुछ शोचकी बातनहीं है ईश्वर सकल कार्य्य सिद्ध करैगा परन्तु एकही शोच मेरे मनमें है कि आजतक कोई दश्तहवेदा से फिरा नहीं और फिराभी तो आपमें नहींरहा निदान कुशलपूर्वक कोई नहीं लौटा इसलिये तू मेरी शिक्षाको मनमें धरले कि जब तू उस बनमें पहुंचेगा तो तुझे स्त्रियां अँधेरेमें लेजायंगी तू उनके साथ चुपके चलाजाना कहीं ठहरनामत और बहुतसी मृगनयनी चन्द्रमुखी

मनोहर स्त्रियांतेरीदृष्टिपड़ेंगी कि जिनकेदेखतेहीतेरेमनका तोता हृदयके पींजरासेनिकलजायगादूसलिये तूमनको अडोल राखियो और जैसेही तेराहाथ वे परीयादपकड़ैंगी वैसेही तू दश्तहवेदा में पहुंच जायगा और जो एक अठवारेतक तू उनसे कुछ कामको कहेगा तो जन्मभर पश्चात्ताप रहैगा ये दोनों आपस में ऐसीही बातों करतेथे कि इतनेमें एक मनुष्य दो कटोरा खीर और दो कटोरा पानीके लेकेआया दून दोनोंजनोंने खीर का भोजनकिया और आचमन करके राचीकोतो बिश्रामकिया प्रातःकालको एक ओरकी राहली थोड़ेदिनोंमें एक सुन्दर तालाबके ऊपर हातिम जापहुंचा त्योंहीं उसमेंसे एक बरांगना वस्त्रहीन निकली और हातिमका हाथपकड़के फिरउसी तालाबमेंचलीगई और ज्योंहीं हातिमका पांव पृथ्वीमेंलगा त्योंहीं जो आंखखोली तो आपको उस स्त्री समेत एक फलेफूले बाग़ में देखा वह नंगी स्त्री तो किसी ओरको चलीगई और हातिम उसीमें जहांतहां शोभा देखनेलगा इतनेमें एक बरांगनों का झुण्ड सोरहों शृंगारकिये एक दूसरेके कन्धापर हाथधरे आया और हातिमको हरएक अपनी २ ओर खींचनेलगीं हातिमने न तो किसीकी ओरदेखा और न किसीसे बोला क्योंकि उसपुरुषकी शिक्षाका स्मरणथा कि ऐसानहो कि मेरा मनडिगे तो जादूके कुवांमें वृथाजीका घातहो निदान वे सब हातिमको बरबसएक ऐसेमकानमें लेगईं कि जो सम्पूर्ण लालहीरा पन्नाआदि रत्नोंसे जड़ाथा और एकदालानमें एक रत्नजटित सिंहासन बड़ेठाटसे बिछाया जब हातिम वहांपहुंचा तब वे सब उन चित्रोंमें जो उस मकान में लगेथे जामिलीं हातिम देखनेलगा कि हजारोंपरी उसमकानकी दीवारसे लटकती हैं यह देख हातिम बड़े आश्चर्य्यमें था कि हे ईश्वर यहकौन मायाहै कि पहले वे परी आईं और फिर चित्रकी भांति सबकी सब दीवारों में जाचिपटीं यह क्या कारणहै इसका कुछभेद दिखाईनहीं देता निदान इसी शोचमें उस तख्तके पासतो खड़ाहोया अपने मनमें शोचनेलगा कि हे हातिम अबतो तू यहां आयाही है भला इस सिंहासनपर तो बैठले ज्योंहीं हातिमने तख्तपर पांवधरा त्योंहीं उससे एक शब्दाघात हुआ तो हातिमने जाना कि मानों तख्त टूटगया परन्तु जब तख्तके ऊपर से नीचेकी ओर झांका तो उसको अखण्डित देखा फिर हातिम उसपर बैठगया तब फिरएक शब्दाघात होने के उपरान्त एक चन्द्रमुखी उन चित्रों मेंसे सजीव स्त्री का स्वरूप धारण

करके हातिमके पासआई यहदेखके हातिम बड़े आश्चर्य में हुआ कि हे भगवान् अभी तो यह चिचया और अब यह किसप्रकारसे स्त्रीका स्वरूप धारण करके ऐसे हावभाव कटाक्षसे मेरेपास आई है उसको देखतेही हातिमने अधीरहोके चाहा कि उसका हाथ पकड़े और उसका घूंघटखोलके उसके चन्द्रमुखावलोकन से अपने नयन चकोरों को सुखदेवे परन्तु उसपुरुष की शिक्षा का स्मरण हुआ कि इसका हाथ पकड़ा तो फेर इस अन्धकारसे किसीभांति बाहर न जाऊंगा इसलिये इसका तमाशाही देखना उचितहै देखूं तो यह मेराहाथ आपसे पकड़तीहै और मैं इससे बाहर निकलता हूं अथवा नहीं, इसी अभिलाषमें तीनदिनरात उसतख्तपर बैठा रहा जब सांझहोती तब आपहीआप कपूर की बाती चारोंओर जलजाती और चारोंओरसे बाजा सुनाईदेता और वेही चिचखी का स्वरूप बन २ के नाचतीं औ वह चन्द्रमुखी शृंगार किये तख्त के नीचे खड़ीहोती और तिरछी २ आंखोंसे हातिमको देख मुसकराय और भांति २ के मेवा हातिमके आगेधरै हातिम बहुतेरा खायभी परन्तु मेवाके भोजनसे तृप्तनहोय इससे हातिमको बहुतही आश्चर्य होताथा कि मैं इतना भोजन करताहूं परन्तु पेटनहीं भरता यहक्या कारणहै इसीभांति तीनदिन रात और व्यतीतहुये तब चौथेदिन हातिम ने सोचा कि जो मैं सदामान यहांरहूं तो भी न तो इस मेवा से पेट भरेगा और न इससे बाहर निकलूंगा और वहां मुनीरशामी मेरे आसरे में बैठा है जो उसको कुछहो गया तो मैंईश्वरकेआगे क्या उत्तरदूंगा यह सोचके हातिमने उसका हाथ पकड़ के ज्योंहीं तख्त के ऊपर खींचा त्योंहीं उसतख्तके नीचे से एक वरांगना निकली और हातिम के एक लात ऐसी मारी कि हातिम कहीं का कहीं होरहा जो वहां आंख खोलके देखे तो न तो वहां वहघरहै न वे वरांगनाहैं किन्तु एकमैदान ऐसा सफ़ाचट्ट है कि जिसका कहीं ओर छोर नहीं दिखाईदेता तब हातिमने जाना कि होय न होय तो यही दश्तहवेदाहै और यहांहीं वह मनुष्यभी होगा जो इस शब्द का उच्चारण करता है कि एक बेर तो देखाहै और दूसरी बेर देखने की अभिलाष है उस को यहां खोजना चाहिये यह सोच के हातिम जहां तहां उसकी खोजमें फिरताथा कि इतने में एक ओरसे उसके कान में यह शब्द पड़ा कि एक बेर तो देखा है और दूसरी बेर देखनेकी अभिलाष है फिर दिन भरमें तीन २ बेर यह शब्द सात दिन तक

निरंतर सुनाई दिया आठवें दिन जब यहशब्द हातिमको सुनाई दिया तो उसी ओर को हातिम दौड़ागया तो क्या देखताहै कि एक वृद्ध पुरुष रेत में बैठा है हातिमने उस के पास जाके सलाम किया तो उसने प्रतिउत्तर के उपरांत पूछा कि हे जवान तू कहां से आताहै और इस बनमें तेरा कौन कामहै तबहातिम ने कहा कि मैं इस बातके पूछनेको घर से निकलाहूं कि तुमने ऐसी कौन बस्तु देखी है जिसको फिर देखने की अभिलाष है तब उसने कहा कि अच्छा मैं तुझे यह बताऊंगा यहसुन के हातिम बैठगया जब रात भई तब दो रोटी और दो गिलास पानी के आपही आप आगे आये तब उसने एकरोटी और एक कटोरा पानी का तो हातिम को दिया और दूसरा भाग आप लिया जब भोजन कर-चुके तब हातिम ने पूछा कि अब तू मुझेवह बात बतादे तब वहवृद्ध इसप्रकारकहनेलगा किएकदिनमैं चित्तबहलानेके लिये फिरता२ एक तालाबके ऊपर आनिकला तो मेरेपहुंचतेही एक स्त्री अत्य-न्त शोभायमान वस्त्रहीन मेरे सामने उस तालाब मेंसे निकलकर मेरा हाथ पकड़के उसके भीतर लेगई जब मैंने आंखें खोलीं तब अपने को उस स्त्री समेत एक बाग़में जो अतिही फलाफला और रमणीक था देखा इतने में वह नंगीस्त्री तो को जानै कहां को गई परन्तु चारों ओर से बरांगनों के यूथ के यूथ आये और मुझे बरबस लेजायके एक मकान में जड़ाऊ तख्तपर बैठाला और एक चन्द्रमुखी घूंघटकाढ़े मेरेसामने तख्तके पास आयखड़ीहुई और मेरे मन मोतीको सीपतनसे निकाललिया तब मैंने उसका घूंघट खोला तो उसकेदेखतेही मर्छित होगया पर थोड़ी देर में सँभल के मैंने उसको अपनीओर पकड़के खींचा तो खींचतेही एक स्त्री और उस तख्तके नीचेसे निकली और मेरे एक लात ऐसीमारी कि मैं इस विकटवन में आय पड़ा न तो वह मकान न वह मेरा चित्त चोर फेरि दृष्टि पड़ा उस दिनसे मेरायह हाल है कि मैंतो बज्रतेरा चाहताहूं कि किसी भांति उसको भुलादूं परन्तु मेरा चित्त तो मेरे पासही नहींहै मैं किसको समझाऊं यह कहकेएक हायमारी और उसी रेतमें बबूरेकी भांति दौड़नेलगा और यह शब्द उच्चारण करनेलगा कि एक बेर तो देखा है और दूसरीबेर देखने को अभिलाष है यह सुनके हातिमने जाना कि यह मनुष्य बिरही है तबहातिमने उससे पूछा कि जो तू फिर उस जगहमें पहुंचजाय तो कुछ प्रसन्न भी होगा यह सुनके उसने कहा कि हे

जवान यह बड़तकठिनहै और निशिको इष्टी पर श्रीशधरके यह मैं नित्यही यह मन्त्र जपा करताहूं (जामिउलमुतफर्रक़ैन) अर्थात् बिछुरों को मिलाने वाले हेईश्वर मुझे भी मेरे चित्त चोर से मिला दे परन्तु कुछ इसका भी प्रभाव न देखा तब हातिम ने कहा हे इद्ध तू मेरे साथ आ मैं तुझे वहां पहुंचाऊं यह सुनके वह बिरही हातिम के साथ होलिया तब दोनों ने चलते २ एक इच्छ के तले जो उस तालाब से थोड़ी दूर था जा पहुंचे तब हातिमने कहा कि हेमित्र जातू चाहताहै कि मैं सदामानअपने चित्त चोरकोदेखा करूं तो तू उसका हाथ न पकड़ना और उसका घूंघटभी न खोल ना वहतेरेसामने सदाहाथबांधे खड़ीरहेगी नहीं तो इसी बिकट बनमें आपड़ेगा और फिरअंतके दिनभी वहांन पहुंचेगा और मैं तो यहां एक सिद्धके आशीर्वाद से पहुंचा था नहीं तो मेरी क्या सामर्थ्य थी इसलिये अब तू जा इसके आगे वह तालाबहै निदान वह बूढ़ा हातिमके पतेसे उस तालाबपर पहुंचा उसके पहुंचतेही एक नंगी स्त्री निकली और उसका हाथ पकड़के पानीके भीतर लेगई और हातिम शाहाबादकी ओर सिधारा चलते२कुछदिन में उस साधूके पास आया और दो चारदिन रह के वहांसे चलकर उस मछलीके पासआया वहां एक महीने रहके बिदा हुआ औरकुछ दिनमें रीछोंकेबनमेंपहुंचा दोमहीनेउस रीछकीपुत्रीके पास रहा और वहांसे बिदाहोके उनस्यारोंके पासआया उनको कुशलक्षेमदेखके चलता२शाहाबादमेंकुशलपूर्वकपहुंचावहांहुस्नबानूके नौकरउसको हाथोंहाथ लेगये और हुस्नबानूके पासजाके हातिमके आनेका संदेशदिया हुस्नबानूने सुनतेहीउसको बुलाया और अपने पर्दाकेपास कुर्सीपै बैठालके उससे पूछनेलगी किउत्तर लाया तबहातिमने कहाकि वह एकवृद्ध बिरहीथा और वहएक द्वीपै जो जुल्मात अर्थात् अंधकार में थी उसपर मोहित था वही उस बनमें बिरहके दुःखसे पुकारताथा किएकबेर तोदेखाहै दूसरी बेरदेखनेकी अभिलाषहै और उसीमें मारा फिरताथा उसको मैंने उसके प्यारेसेमिलादिया यहशब्द वहां अबनहीं सुनाईदेता यह सुनके हुस्नबानू और उसकी दाई दोनों हातिमको धन्य२पुकारने लगीं तबहातिमने कहाकिहे हुस्नबानूअबतूअपनादूसरा प्रश्नबता तब हुस्नबाननेप्रसन्नहोकेबड़ी दयालुतासे कहाकि हेहातिम अब तू बड़तथका मांदा अनेकभांतिके दुःखभोगता आयाहै इसलिये कुछ दिन सुस्तायले तब फिरजाना तब हातिम ने कहा कि मुझे

आराम अभीहोगा जबमैं तेरेसातों प्रश्नोंके उत्तरदेदूंगा यहकहके सरायमें मुनीरशामीके पासआया और सम्पूर्णवृत्तान्तकहा और नवेंदिन ज़ुल्नबानू से कहा कि अबतू अपना दूसरा प्रश्नबता॥

दूसरा प्रश्न हातिमके जाने और उसपुरुषके लिखेकी खबरलाने के विषयमें॥

ज़ुल्नबानू ने कहाकि दूसरा प्रश्नयह है कि एक मनुष्यने अपने द्वारपर यहलिखकेलगा दिया है कि (नेकीकर और नदीमें डाल) इसका भेदनहीं खुलता कि इसलिखनेका क्या हेतुहै और उसने ऐसी कौन भलाईकरी है इसके समाचार लाइयह सुनके हातिम उठ खड़ाज़ुआ और पूछाकिवहकौनहै और कहां रहताहै ज़ुल्नबानूने कहाकि मैंने अपनी धायसे सुनाहै कि वहउत्तरकी दिशामें रहताहै इतना पूछके हातिम ईश्वरके भरोसेपर उठके चलदिया जब कुछदिन बीतेएक बिकट भयानक बनमें जापहुंचा तब संध्या समय एकवृक्षकेनीचे चुपका होके बैठरहा तोवहांसे एकशब्दऐसा दुःखमय रोनेकेसाथ उसके कानमें पड़ा किजिसके सुनतेही इसकी आंखोंमें आंसू भरआये और मारेदयाके कलेजा दलकउठा और कहने लगा कि यह बात मनुसाई से दूर है कि एक कोई मनुष्य आपदामेंपड़ा रोदनकरै औरतू उसकाबोलभी सुनेतबभी उसकी सहायता नकरै यहबात अपने चित्तमें ठहराके जहांसेवह बोल सुनाईदेताथा उसीओरकोचला और थोड़ी देर में उसीजगह जापहुंचा तोक्या देखताहै कि एकयुवापुरुष अत्यन्तशोभायमान पृथ्वी परबैठा रोरहाहै और हायमार२ के यहकहरहाहै कि हेमिचो मैं कहांजाऊं और किससे कहूं तुम्ही मेरे दुःखको देखो और जो मुझपैबीततीहै उसके प्रकट करनेकी तो मुझमेंसामर्थ्य नहींहै तब हातिमने पूछाकि हे जवान तुझपै ऐसीकौन बिपत्तिपड़ीहै जो तू ऐसा रोरोके अपनाजीव खोताहै यहसुनके उसनेकहाकि हेपथिक मैंतो सौदागर हूं परयहांसे दश बारह कोसपै एकबड़ा शहर है जिसमें एक हारसनामक सौदागर रहताहै और उसकी पुत्री अत्यन्त शोभायमानहैमैंएकदिन सौदागरीका माललियेफिरता२ उसशहरमेंभी आनिकला औरमारेधूपकेहारसके मकानके छापा में बैठगया तो इतनेमें मैंने उसमकान की ओर जो देखा तोएकस्त्री चन्द्रमुखी मेरीदृष्टिपड़ी मैं उसके देखतेही उसके चन्द्रमुखपैचकोर हूवलोभगया तब मैंने वहां के निवासियों से पूछा कि यह मकान किसका है उन्होंने कहा कि यह मकान एकहारस नामक बड़े धनाढ्यसौदागरकीबेटीका है फिर मैंने उनसेपूछाकिइसका ब्याह

होगयाहै कि कुमारी हीहै यहसुनके उन्होंने उत्तरदियाकि यह अभीतक कुमारीहै इसका बिवाह इसकेपिताके आधीनमें नहीहै क्योंकि वह कुमारी स्वाधीन है और कहती है कि जो कोई मेरे तीन प्रश्नोंके उत्तर देगा उसके साथ बिवाह करूंगी यह सुनके मैं उसकी ड्योढ़ीपर गया तो द्वारपालकोंने मेरीपहुंच के समाचार भीतर जनाये तब उसनेमुझे बुलाकेकहा कि जो तू अपने बचनका प्रतिपाल करसके तो मैंतुझे अपने प्रश्नसुनाऊं यहसुनके मैंने कहा कि बताओ मैंतो तनमन से उद्यतहूं तबउस ने कहा कि जो तू मेरे प्रश्नका उत्तरदेगा तबतो मैंतेरीही होकेरहूंगी नहींतो तुझेअप-ना जानूंगी मैंने यहभी माना तब उसने कहा कि पहिला प्रश्न तो यहहै कि इसशहर के निकट एकपहाड़की खोहहै आजतक कोई नहींजानता कि इसकाआदि और अन्तकहां तकहै इसकी थाह लादे और दूसरा प्रश्नयह है कि इसबनमेंसे यहशब्द सुनाईदेताहै कि मैंनेवह काम न किया जो आजकीरात मेरेकाम आता और तीसरा प्रश्नयहहै कियहमुहरा जोलाल सांपकेपेटमेंहै सोमुझेलादे यह सुनतेही मेरीसुधबुध जातीरही जबमैंने इसकार्य्य के करने का इनकारकिया तोउसनेमेरा सम्पूर्ण धनछीनलिया और मुझेअपने नगरसे निकालदिया मैं हारके इसबनमेंआपड़ा एकतो धनगया दूसरे सबनेनामधरा तीसरे बिरहकी गांसीनेकलेजेमें छेदकरदिया यहसुन के हातिम ने कहाकि धीरज धर और मुझे तू उसशहरमें लेचलतो तेराधनभी दिलादूं और तेरेचित्त चोरसेभी तुझे मिलादूं यह सुन हाय मारके उसने कहाकि हे प्यारे मुझे तो कुछ धनका शोक नहीं किन्तु अपने चित्तचोर के मिलनेहीको मैं अमित द्रव्य समझता हूं निदान हातिम उस बिरह के रोगी की चिकित्सा करने शहर में आया और उसको सराय में बैठाल के आप उस-के द्वारपर गया और कहा कि मैं इस स्त्री के साथ बिवाह करने को आया हूं द्वारपालों ने यहसंदेश भीतर दिया उसने सुनतेही अपने परदे के पास हातिम को बुलाया और जो सौदागरके पुत्र से कहाथा सोई हातिम से भी कहा तब हातिम ने उसकी बात मानी और कहा कि तू हारस सौदागर की बेटी है जो इसबात को माने कि जब मैं तेरे प्रश्नों के उत्तर देदूं तब मैं तेरा मालिक हूं जिसे चाहूं उसे देदूं यह बात मेरी माने तब तो मैं इस काम के करने को कमर बांधूं नहीं तो अपनी राह लूं उसने उत्तर दिया कि मैंने यह बात तनमन से मानी तब हातिम ने उसके पिता

हारससौदागर कोभी बुलायके यहबात सुना दी उसने भी इसको पुष्ट किया तब हातिम ने उससे कहाकि तू अपना प्रश्न बता तो सौदागर की बेटी ने कहा कि पहिला प्रश्न यह है कि (इस शहर के निकट एक खोहा है उसको इस शहर के सब निवासी स्त्री और पुरुष जानते हैं तू इसका पता लगादे कि यह कितना गहरा है और कितना लम्बा चौड़ा है और इसके भीतर क्या है)यह सुनके हातिम वहां से बिदाहुआ और कितने मनुष्य उसके साथ खोहतक आये और उसको दिखाके फिर लौटगये और हातिम उस खोह में कूद पड़ा तो एक दिन और एक रात तक चलाही गया इतने में उसको प्रकाश दिखाई दिया तो हातिम ने जाना कि बस इसका अन्त होचुका अब यहांसे फिर चलूं परन्तु उसने सोचा कि जोकोई मुझसे यहांका कुछ हाल पूछेगा तो क्या उत्तर दूंगा यह सोचके आगेबढ़ा तो एकमैदान उसको दृष्टि पड़ा और एक तालाब बहुत स्वच्छ जलसे भरा देखा तो उस तालाबके पास गया और हातिम अपने पास एक सुराही पानी और थोड़े बादाम लेता गयाथा जब भूख लगती तो दोचार दाने बादाम के खाके पानी पीता और रातदिन चलने से ध्यान रखता निदान अपनी सुराही में पानी भरा और आगे को बढ़ा तो थोड़ी दूर जाने पै एक दीवार ऐसी ऊंची दृष्टि पड़ी कि जिसको अपनी पगड़ी थांभके जो देखा चाहेतो भी उसकी चोटी तक दृष्टि न पहुंचै और न पक्षी किसी भांति वहांतक उड़सके परन्तु जबआगे बढ़के देखा तो उसमें एक दरवाजा दिखाई दिया हातिम उसके भीतर घुसगया तो एक नगर दिखाईदिया जब उसके भीतरगया तो अगणित देव हातिम के खानेको दौड़े और चाहा कि इसको खावें इतने में उन में से कोई बोला कि इसको मारो मत यह मनुष्य है इसका मांस बहुत स्वादिक होता है जो हम इसको खावेंगे और कोई बादशाह से यह बात कहदेगा तो बादशाह हमसबको मरवाडालेगा इससे उत्तमयहीहै कि इसको बादशाह के पास ले चलें तब वे कहने लगे कि ऐसा कौन हमारा शत्रु है जो बादशाह से जाके कहदेगा उसने कहा कि तुम यह क्या कहतेहो हमारेही साथियोंमेंसे कोई कहदेगा इसलिये यही उचितहै कि तुम इससे मत बोलो यह सुनके वे सब अपने २ घरको सिधारे हातिम ने आगे को पांव बढ़ाया तो उसको एक गांव दिखाईदिया तो हातिम ने जाना कि कदाचित् इस गांव में मनुष्य रहते हैंयह

समझके आगे बढ़ा तो उसको चारोंओर से देवोंने घेरलिया और खाने का विचार किया तो उनमें से भी एक ने कहा कि इसको खावोमत किन्तु सजीव ही बादशाह के पास ले चलो क्योंकि उसकी बेटी बहुत मांदीहै को जाने इस मनुष्य की चिकित्सा से वह अच्छी होजाय तबउनमें से भी एकने कहा कि हमतोसैकड़ों आदमियों को लेगये और फिरलज्जित भी हुये इससे हम क्यों ले-जांय अबतो यह हमारे देशमें आही पहुंचा है कहांजायगाकोई न कोई इसका बादशाह के पास तक लेही जायगा यहकहकेसब अपने घरकोगये और हातिम आगेको चलातो दूसरेगांव के देव उसे पकड़के अपने स्वामीके पास लेगये वहां उसकी स्त्री की आंखें दर्द करती थीं और आठोपहर पानी बहता था इसी शोचमें वह सिर झुकाये बैठा था इसको देखतेही उसने कहा कि तूस अपने बापका क्यों पकड़ लायेहो छोड़दो जहांचाहे तहांजाय हातिम ने उसको शोच ग्रसित जो देखा तो पूछाकि हे देव तुझे क्या शोच है तब उसने उत्तरदिया कि भाई मेरी स्त्री की आंखें दुखतीहैं सो इसी शोचमें रात दिन रहता हूं तब हातिम ने कहाकि तू घबड़ा मत मैं तेरी स्त्री की आंखें अच्छी करदूंगा यह बात सुनतेही वह देव उठा और हातिम का हाथ पकड़के अपने घरमें लेगया और अपनी स्त्री के पासबैठाल के कहने लगा कि हे सत्पुरुष जो यह तेरी चिकित्सा से अच्छी होगई तो यह तो जब तक जीवेगी तब तक तेरीचेरी रहेगी परन्तु मैं भी यथा सामर्थ्य तेरी सेवा करूंगा तब हातिमने कहाकि इसकी आंखें अच्छी करता हूं पर एक बातपर कि जब तेरी स्त्री की आंखें अच्छी होजावें तो तू मुझेबाद-शाहकी सभामें ले चले और मेरी चिकित्सा की प्रशंसा करे यह सुनके देवने सुलेमान की आनकी कि मैं तुझे बादशाह के सम्मुख लेचलूंगा और बादशाह से मिलाऊंगा तब हातिम ने अपनीपग-ड़ीसे मुहराखोलपानी में घिसउसकी आंखोंमें लगाया तोउसी सायत उसकी आंखोंकीपीर जातीरही उसीभांति दोतीन बेरल-गायातो उस स्त्री कीआंखें आंबकीसी फांकें खुलगईं यहदेखकेदेवों का मालिकबहुत प्रसन्नहुवा दोतीन दिनतो उसकी पहुनाई करी फिर अपनेबादशहके पासलेगया और उससेमिलायके बादशाहसे उसकी प्रशंसा करनेलगा कि महाराज यहपुरुष वैद्यकमें अद्वैत है क्योंकिमेरी स्त्रीकी आंखेंकईसालसे दुखनेआईंथीं और सैकड़ों प्र-कारकी औषधेंलगाई गईं परंतु अच्छीनहुईं और इसने क्षणमात्र

में ज्योंकीत्यों अच्छीकरदीं यहसुनके बादशाह फरोकाशने कहा कि हे पथिक मेरेपेटमें पीररहाकरतीहै जात इसकीकोई यत्नकरै और अच्छाहोजाऊं तो जोकुछसेवासुझसे होसकेगीउससेमैंबाहर नहूंगा तबहातिमने पूछाकि जिससमय आप रसोई खानेको जाते हैं उससमय कितनेलोग आपके पास रहतेहैं तब उसने उत्तरदिया कि जितने छोटेबड़ेहैं वह सबमेरे साथभोजनकरतेहैं यहसुनके हातिमनेकहाकिआजरोसोईंकेसमयमैंभीचाहताहूं कि आपकेपासरहूं बादशाहने कहा कि बहुतअच्छा निदानजिससमय रसोई तैयार हुई और बादशाह के सम्मुख थारआया और ज्योंहीं बादशाह ने ग्रासउठाना चाहा त्योंहीं हातिमने एक कटोरा भोजनके थार मेंसे उठालिया और उसको ढकदिया और थोड़ीदेरमें जोखोला तो सम्पर्ण भोजनकटोरामें कीड़ेहीकीड़े दृष्टिआये तब बादशाहने पूछाकि यह क्या कारणहै हातिमने प्रार्थनाकी कि महाराज यह इनदेवोंकी दृष्टिका प्रभावहै इसलिये आपएकान्तमें बैठके भोजन कियाकरो जिसमें इनदेवोंकीदृष्टि नपड़ै बादशाहने वैसाहीकिया तो उसदिन पीर बहुत थोड़ीहुई फिर धीरे२ पांच चार दिन में भलाचंगाहोगया बादशाहउसकीइसचतुराईसे अत्यन्तप्रसन्नहुवा और अपनेगलेमें लगाकेकहा कि मांग जोमांगेगा सोईदूंगा हातिमने कहाकि आपकेयहां मनुष्यबहुतसे बन्दीहैं मैं यहीचाहता हूं कि सबछोड़दियेजांय,बादशाह फरोकाश ने सुनतेहीआज्ञादीकि जितने मनुष्य बन्दीगृहमेंहैं छोड़दियेजांय और सबको सिरोपांव पहरा२और कुछराहका खर्चदेकर बिदाकरदो फिर बादशाहने कहा हे जवानमेरी एकप्रार्थना और है जोमानतोकहूं हातिमने कहाकि आपकी आज्ञामेरेसिरमाथेपरहै तबबादशाहने कहाकि मेरीबेटी बहुतदिनसे रोगग्रसितहै जो उसकीभी कोई यत्नकर देतो मुझे मोल लेलेवे यहसुनके हातिम ने कहा कि बहुत अच्छा मैं सब प्रकारसे आपकासेवकहूं चलिये फिर बादशाह फरोकाश उसको अपनी बेटीकेपास लेगया तो हातिमने देखाकि बहुतहीदुबली हो रहीहै हातिमने कहाकियोड़ाशरबतलावो बादशाहने शरबतबन-वायाहातिमने उसमेंवही मोहराघिसके उसको पिलाया थोड़ीदेर केपीछे उसकोदस्तआनेलगे और फिरदिनभरबहुतदस्त आये और सांझसमय उसको कईबारकैहुई तब वहलड़की मूर्छितहोगई यह दशादेखके बादशाह बहुतघबराया और हातिमसे कहने लगाकि ऐसानहो कि कहीं मरजाय तब हातिमने समझाया कि अधीर न

हूजिये यहईश्वरकी दयासे भलीचंगी होजायगी उसदिनतो वह उसीभांति अचेतपड़ीरही जबसबेराहुवा तबउठी और भोजनकी तृष्णाहुई तो कुछभोजनकिये निदान पन्द्रहदिनमें उसकामुख चमकनेलगा और भलीचंगी होगई तब हातिमने बिदामांगी और कहाकिमैं अपनेघरसे एककामकेलिये निकलाथा इसलिये अबमुझे जाना अवश्यहै तबबादशाहने बहुतसे रत्नथारोंमें भरकेउसके आगे धरे हातिमने कहा कि ये मेरेकामके नहीं हैं और मैं कुछ द्रव्यके लालचसे बाहर नहीं निकलाहूं किन्तु ईश्वरकी राहपर सबका कामकरता फिराहूं तब बादशाहनेकहा कि अबतोहमारी प्रसन्नता इसीमेंहै कितूइसमें से कुछलेले यहसुनके हातिमने कहा कि मैं अकेला इतनाबोझा कैसे लेजाऊंगा तब बादशाह ने आज्ञा दी किकई देवजांय और अपने कन्धोंपर धरके इसको पहुंचा आवें निदान एकमासके अन्तरमें वेदेवसब द्रव्यसमेत उसखोहके सुँहपर पहुंचायके लौटआये और वहां कई जासूसहारस की बेटी ने हातिमके लिये लगारक्खेथेवे देखतेही डरकेभागेतबहातिमनेउनसे पुकारके कहाकि भागोमत मैंवहीहूं जोइसखोहकी शोधकोगया था अबईश्वरकी दयासे कुशलपूर्वक फिराहूं जब उन्होंने देखातो हातिमनिकला वेदेखके बहुतहर्षको प्राप्तहुये हातिम वहसम्पूर्ण धनसरायमें उठालाया और हारस सौदागर से मिला और वह सम्पूर्णधन उसीको देदिया वहसौदागर हातिमके पांवोंपरगिरा फिरउसको अपनीछाती में लगालिया फिर हातिम उसलड़कीके पासगया उसने उसखोहका हालपूछा हातिमने ज्योंका त्यों उस लड़कीसे कहसुनाया और कहाकि मैंनेतेरे एकप्रश्नका उत्तरदिया अब अपना दूसराप्रश्न बता तबउसने कहाकि शुक्रवारकी रातको एकआवाज आतीहै कि (मैंनेवहकाम नकिया जोआजकी रातमेरे कामआता)इसकीखबरलादे यहसुनके हातिमउठखड़ाहुवा और एक बनकीओर सिधारा और रातदिन उसके खोजमें फिरनेलगा निदान चलते२ एकगांवमें पहुंचा तो क्या देखता है कि सब छोटे बड़े उसगांवके रोदन करते हैं हातिम ने पूछा तो एकने कहा कि इसगांवमें कोई ऐसी बलाय सातवारीख शुक्रवारके दिन आतीहै कि एक आदमीको खाजातीहै और जो वहां किसीको न पावे तो सम्पूर्णनगर एकही दिनमें उजाड़करदे सो अबकीबारी इसनगर के स्वामीके बेटाकीहै उसीसे सब रोदन करतेहैं यहसुनके हातिम उसनगरके स्वामीके पासगया और उसको धीर्य्यदिया कि तू घब-

ड़ामत तेरेपुचके बदले अबकीबेर मैंजाऊंगा यहसुनके वह अधीश्वर बहुत प्रसन्नहुवा और इसकी मनुसाईको धन्यमाना तबउसअमीरने कहाकि हे जवान उसके आनेके चारदिन बाकीहैं तबहातिमने पूछा कि जो किसी ने उसको देखा हो तो मुझे उसका स्वरूप बतादे बादशाहने उसका चित्रएथ्वीमें खेंचके दिखादिया तो हातिमने कहाकि इसकानाम हलूकाहै इसके कोई अस्त्रशस्त्र न बेधेगा और न किसीके मारे मरेगा इसलिये मैं तुमको एक बात बताता हूं जो तुमकरो तो जैसेतैसे मैं इसकोमारूं और तुम्हारेशिरसे यह आपदा टालूं यहसुनके उस अमीरने कहा कि जो तुमकहो सो करूं तब हातिमने कहाकि तुम्हारे नगरमें शीशागरभी कोई है तब उसनेकहा कि बहुतहैं तब हातिम और उसनगरके स्वामी शीशागरों के पासगये और कहा कि एक आईना दोसौ गजका लम्बा और सौगजका चौड़ा बनादो तो मैं उसबलाको मारूं नहीं तो सबको खाजायगी उस नगरके स्वामीने शीघही उतनेबड़े आईना बनानेके हथियार और असबाब मँगवादिया और शीशागरों ने तीन दिनमें वह शीशा बनायके तैयारकिया तब हातिमसे कहा कि वह आईना तैयारहै फिर हातिमने कहा कि इसगांवके छोटे बड़े उसको उठाके उसठौरपै धरो कि जहां वह आताहै निदान हातिमकी आज्ञानुसार उसीठौरपै खड़ा करदिया तब हातिम ने कहा कि अब एकचादर इतनीबड़ी लावो जिसमें यह ढकजाय उन्होंने उतनीहीबड़ी एकचादरभी लायदी और उस आईनेको ढांपदिया तब हातिमने कहाकि अबतुम सबलोग आनन्दसे जाके रहो और जो किसीका जी तमाशा देखनेको चाहे तो मेरे साथ रहै यहसुनके कोई न बोला परन्तु वहीलड़का जिसकी उसदिन बारीथी कहनेलगा कि मैं तुम्हारेसाथ रहूंगा तब उसके पिताने कहा कि हे पुत्र तेरेहीलिये तो इतनीद्रव्य खर्चकीगई और तूही यहां रहताहै और जानबूझ के अपने को मृत्युके मुखमें डालता है तब उसनेकहा कि हे पिता तुमतो मुझे पहलेही उसके भोजन के लिये ठहराय चुकेथे अबक्या कहते हो मैं इसीमें प्रसन्नहूं देखोयह परदेशी दीन आपको जानबूझके अग्निमें डालता है और सबोंके बचानेकी यत्न करताहै और तुम इसको अकेला छोड़ेजातेहो निदान उसने बापकी बात न मानी और हातिम के पास रहा जब दिन व्यतीतहुवा और रातहुई तब उनसबको यथापूर्वक शब्दसुनाईदिया यह सुनतेही सबकेसब डरगये तिसपीछे हलूका गयन्द

के समान दृष्टिपड़ा जिसके नौ मुख और नौ हाथ और नौ पांव और प्रत्येक मुख से ज्वाला निकलता हुवा ऐसा भयानक स्वरूप सम्मुख चलाआता देखपड़ा जो नगरनिवासी कोस दोकोससे देख रहेथे वे डरके भागगये जब हातिम ने देखा कि अब हलूका आन पहुंचा है तो उस आईनापरसे चादर खेंचली और उसको खोल दिया जब हलूका ने अपनी सूरत उस आईना में देखी तो मारे क्रोधके ऐसी खासखींची और तड़पा कि सम्पूर्ण पृथ्वी उसगांव और जंगलकी दलकउठी और वहांके निवासियों को मूर्छाआ-गई फिरउसने ऐसी खासखींची कि आपहीआप उसकापेट फट गया और मरतीबेर फिर वैसाही भयानक शब्दाघात किया कि जिसके सुन्नेसे सबके सब मूर्छामें मतकसमान होगये जब चेतहुवा तो क्या देखतेहैं कि हलूका मरापड़ाहै और उसके पेटकेबिलसे सब जंगल बूड़गयाहै और नदीके समान नीलापानी बहता है तबवह अमीर और उसका पुत्र दोनों हातिमके पावोंपर गिरपड़े और पूछनेलगे कि हे जवान तू उसके हाथसे कैसे बचा और वह किस प्रकार मारागया तब हातिमने कहा कि उसका नाम हलूकाहै उसके कोई अस्त्र शस्त्र नहींबेधता पर यहीबलहै कि जब वहकिसी दूसरेको नदेखे और अपनीही सूरतदेखे तो वह मारेक्रोधके ऐसा दमखींचताहै कि आपही पेटफूलकर मरजाताहै यहसुनके सबके सब यथासामर्थ्य अपने २ पाससे रुपया मोहर और रत्नलेके हा-तिमसे बड़ी दीनताके साथ बिनय करनेलगे कि आप इससे कुछ लेलीजिये तो कुछ हमारीभी मनुहारि हो जाय तबहातिमने कहा कि मैंने कुछ यहकाम रुपयोंके लालचसे नहीं कियाहै मैंतो इसी भांति सबकाकाम परमेश्वरकी राहमेंकरता फिरताहूं तबउन्होंने पूछाकि इसतरफको आपका आगमन किसहेतुसेहुवा तबहातिम ने कहाकि आज शुक्रवारहै और इसजंगलमेंसे एकआवाज ऐसी सुनाईदेतीहै कि (मैंने वह काम न किया जो आजकीरात मेरेकाम आता) सो मैं इस बातके शोधने को घरसे निकलाहूं राहमें जाते इसतरफ भी आनिकला अब अपनी राहलूंगा तब उस रईसनेभी कहा मैंभी बहुत दिनों से इसआवाज को योंहीं सुनताहूं परयह न मालूम हुआ कि यह किसकी आवाज है और कहांसे आतीहै यह सुनके उसदिन तो हातिम वहांही रहा जब रातहुई तबवही आवाज सुनाई दी फिर हातिम उसी ओर को चलदिया चलते२ कईदिन के उपरान्त एक टीला दृष्टिपड़ा और मालूमहुआ कि

पांचसौ सवार और प्यादे वहां परचलेजाते हैं जब हातिमने निकटसे निरताके जो देखा तो नतोसवार हैं और न प्यादेहैं किन्तु मृतकों की कबरें दृष्टि आती हैं तब हातिम बेशोचा कि ये क़बरें सिद्ध लोगों की हैं और हाय न हाय तो यह आवाज़ भी यहां ही से सुनाई देती है इसलिये यहांहीं ठना चाहिये इतने में रात हुई तो वही आवाज फिर सुनाई पड़ी हातिम परमेश्वर के ध्यान में था जब एक पहर रातबीती तब प्रत्येक क़बरसे एकएक पुरुष सिद्ध कीसी सूरत निकला और अपना २ बिछौना बिछाके बैठा इतने में एक मनुष्य किसी फूटीसी कबर से निकला और बहुत मैले कपड़े माटी में लथड़े पहरेहुये रेतमें बैठगया और सब लाग अपने बिछौनों पर बैठेहुये कहवा पियाकिये न तो उससे कोईबोला और नकिसीने देखा और न किसी ने एकभी प्याला कहवा का उसकोदिया तब उसने हायमारके बड़ेजोरसे पुकारके कहाकिहाय मैंने वहकाम नकियाजोआजकीरातमेरेकाम आता हातिम ने परमेश्वरका धन्यवाद किया और कहाकि मेरा काम पूरा हुआ इतने में एक एक थार उन सबके लिये आपही आप आया और उनथारोंमें एक २ प्याला खीरका और एक २ गिलासपानी धरा और एकथार उनसबसे बड़ा अलगधरा तब एकने उनमेंसेकहा कि आजकी रातको हमारे यहां एक पाहुन आया है सो यह थार उसीका भागहै उसको लाओ यह सुनतेही एक उनमेंसे हातिम के पास आया और लेजाके एक मसनदपै बैठाला और वह थार उसके आगेला धरा तब हातिमने उसपुरुषकीओर जोदेखा तो मैले कुचैले कपड़ा पहने रेत में बैठाहै और एक थार उसकेभी आगे धराहै परन्तु प्यालेमें खीरकी जगह तो थूहर का दूध और पत्थर के टुकड़े भरे हैं और पानी के बदले पीब धरा है हातिम ने उसकीओरदेखके अपनीआंखें नीचीकरलीं फिरभोजन करने और बार २ उसकी ओर देखने लगा जब सब भोजन करचुके और सबके आगे से थार उठगये तब हातिमने उनसे कहा कि मुझे आपसे एक प्रार्थना करना है जो आप लोगों की आज्ञा पाऊं तो कुछ विनय करूं तब उन्होंने कहा कि कहो हातिम ने कहा कि आप लोग ऐसा भला और स्वादिक भोजन करते हैं और ऐसीप्रतिष्ठाके साथबैठेहैं और यह दीन रेत में बैठा है और खीरके बदले थूहर का दूध औरपत्थरके टुकड़े औरपानीके बदले पीब इसके थार में धराहै इसका क्या कारण है उन्हों ने कहा कि

हमको इसका कुछ कारण नहीं मालूम तू उसीसे पूछले तब हातिम वहां से उठके उसके पास गया और पूछनेलगा कि हे मित्र तूने ऐसा कौन पाप कियाहै जो ऐसा दुःख भोग करता है तबवह आंखों में आंसूभरके बोला कि हे प्यारे मैं इन सबका सरदारहूं और यूसुफ़ सौदागर मेरा नाम है एक बेर व्योपारके लिये शहर खारजिम को जाताथा औरमैं सूमभी ऐसाथा कि न तो आपदेता और न किसीको देनेदेता और कौड़ी पैसा की तो कौन चलावै कभी एक दाना भी किसी भिक्षुकको ईश्वरकी राहपै न देता था और जो मेरे नौकर चाकरों मेंसे कोई कभी देदेता तो मैं उसको भी बरजता और कहता कि क्यों तू अपना धन खोता है जब वह कहता कि हम परमेश्वर की राह में देतेहैं जिसनें अन्तके दिन हमारे काम आवे तबमैं उनकी बात सुनके हँसता और बहुधा अपने दासोंको इसी कामके लिये दण्डदिया करता था दैवयोग से राहमेंडाका पड़ातो धनबित्तजो था सोतो सम्पूर्णलूटगया और हमको इसीठौर मारके गाड़दिया सो औरजितने नौकर चाकर मेरे आधीन थे सो तो अब आनन्द करते हैं और मैं इसदशा में हूं जो तू वर्तमानदेखताहै तब हातिमने पूछा कि भला अबकोई ऐसी यत्न है जिससे तू इस आपदा से छूटे तब उसने कहा कि हे प्यारे मैं तो इसीलिये चिल्लाया करताहूं परन्तु कोई मेरा दुःख पूछने को न आया तू आज आयाहै जोतुझसे होसके तो तू चीनमें जा और वहांमेरे मकानके पास एक वृक्षके नीचे बहुतसा धनगड़ा है और मेरी सन्तान घर२ दो २ कौड़ीको मारे२ फिरते हैं सो तू उस शहर चीन में जाके यूसुफ़ सौदागर का मकान सौदागरों के टोला में प्रसिद्ध है पूछलेना और मुझे निश्चय है कि जब यहहाल मेरे लड़के सुनेंगे तो तेरे पास आवेंगे तू उस संपूर्ण द्रव्यको खोदके तीनभाग तो ईश्वर की राह पर पुण्य करदेना और चौथा भाग मेरे लड़केबालों को देदेना यहसुनके हातिम ने कहा कि हे प्यारे अब मैं तेराकाम करनेको जाताहूं और जो मैं तेरा काम न करूं तो जानियोकिमैं तयका पुत्रनहींहूं निदान हातिमरातको तो वहींरहा और देखाकिया कि वे तो सबसुख चैनकरते हैं और यह दीन उसी भांति रोया किया जब सबेरा हुआ तो सब शहीद अर्थात् मृतकतो अपने२स्थानोंको सिधारे और हातिमने चीनकी राहली चलते २ कुछ दिनोंमें एक ठौर जा पहुंचा तो क्या देखता है कि एकपथिक एक कुवें पर पानी भररहा है तब हातिम उसके

पास गया और चाहा कि इससे डोललेकर पानीपीऊं त्योंहीं उस कुयेंमेंसे एकसाँप हाथीकी सूंड़के समान मुख निकाल के उसदीन पथिक को भीतर खींच लेगया तब हातिमने पुकारके कहा कि हे चाण्डाल निर्दयी यहतू क्या करता है वहां इसके लड़के बाले आसरा देखते होंगे कि बाबा परदेशसे कुछखर्चभेजेंगे अथवा आपही आतेहोंगे औरतने इसे यहां मूलही से मिटा दिया फिर मनमें इसभांति कहने लगा कि हेहातिम तू ऐसा हाल किसीका देखे और फिर उसकी सहायता न करै तो ईश्वरके आगे क्या उत्तर देगा और तेरा नाम इस सृष्टिमें क्या पत्थर रहैगा यह शोच के आप कुएंके भीतर कूद पड़ा जब थोड़ी दूर गया और धरती में पांव पहुंचा तो आंख खोलके जो देखा तो न तो वह कुवां है और न पानी है केवल एक लम्बाचौड़ा मैदान है और हरे २ वृक्षों से भरा लहलहा रहाहै और एक मकान बहुत सुन्दर उनवृक्षों के पास चमकता है हातिम यह शोचता कि उस मुसाफिर को वह कहां लेगया उसमकान के पास जा पहुंचा तो क्या देखता है कि उस मकान में ताखें बहुत शोभायमान और बैठ के ठौर२ बने हैं और उसमें एकतख्त बिल्लौर का बिछा है उसकेनीच एक मनुष्य वृक्ष के समान सो रहाहै तब हातिमने शोचाकि यह कौन है इस कोदेखा चाहिये तो हातिम उसके शीश की तरफ खड़ाहोके देखनेलगा और कहने लगा कि जब यह उठेगा तो सबहाल इससे पूंछूगा इतनेमें वहीसांपउस मुसाफिरको बाग़में किसीठौर छोड़ के हातिम की ओर लपका हातिम तो उस पथिक के पकड़ने के कारणक्रोध में भराही था उससांप को पकड़के ऐसा बल करके दाबाकि मारेदाब के वह सर्प चिल्लानेलगा तो उसका चिल्लाना सुनके वह देवभी जागपड़ा और पुकारनेलगाकि हेप्यारे यह क्या करता है यहतो मेरा सेवक है इसे छोड़दे तब हातिमने कहा कि जबतक यह उसमुसाफिरको न छोड़ेगा तबतक मैं इसको न छोड़ूंगा यह सुनके उस देवने पुकारा कि यहकोई बलवान् हमसेभी अधिक है तू सँभले रहना अब निश्चय है कि यही तेरे पेट में घुसजायगा और हमारी मायाका भेदखोले यह सुनतेही हातिम झट उसके पेटमें घुसगया तोक्या देखताहै कि सर्पका तो चिन्हभी नहीं है परन्तु एक अँधियारा मकानहै उसमें चारोंओर हातिम मारा २ फिरता था इतनेमें हातिम कोएक आवाज़ ऐसी सुनाई दी कि हे हातिम इस अँधेरे में जो कुछ तेरे हाथमें आजाय उसे

तरवार से काट और इस मायावी के पेट में से निकल नहीं तो सदामान इसीको अपना घर जानना क्योंकि जबतक तू उसबस्तु को न तोड़ेगा तबतक इसके बाहर न निकलेगा और उसके टूटने पै यह मायाका बिस्तार आपसेआप खुलजायगा हातिम ने वैसेही जो कुछ हाथमें लगा उसको चट तलवार से खंडन किया त्योंहीं हातिम को एक सोतानदी समान लहराता दृष्टिपड़ा हातिम उसमें बढ़नेलगा परन्तु दो तीन डुबकियोंके पीछे जोउसका पांव पृथ्वीमें लगा और आंख खोलके जो देखे तो न तो वहसांपहै न वह मकान है न वह बाग़ है और न वह सोता है किन्तु एक मैदान बहुत बड़ा दृष्टिपड़ा और हजारों आदमी उसमें खड़े हैं जिसमेंसे बहुतेरे तो मरने के निकट पहुंचे हैं और बहुतसे सूख के कांटा होरहे हैं और उन्हीमें वह पथिक भी खड़ाहै तबहातिम ने उसके पास जाके पूछा कि तुझे यहां कौनलाया है तो उसनेकहाकि मुझेतो एक सांप खाकर छोड़गयाहै और अबनहींमालूम कि कहांगया जब औरोंसे पूछाता वेभी कहने लगे कि हमकोभी वहीसांप लाया है पर यहता बताइये कि आप क्योंकर आये हैं तब हातिमने सम्पूर्ण वृत्तान्त उस मायाका कहसुनाया औरकहा कि मैंतुम्हारे शत्रुको मारआया अबतुम सब अपने२ घरकोजावो यहसुन वह सबके सब हातिम से कहनेलगे कि हम बन्दीजनों में से बहुत से तो मारे भखों प्यासोंके मरगये और बहुत से अधमरे होगये हैं आपके द्वारा ईश्वरने हम सबको इस चाण्डाल के हाथ से छुड़ाया यह कहके वे सब अपने अपने घरको गये और हातिम उनसे बिदा होके चीनकी ओर चला थोड़े दिनों में चलते २ एक बड़े शहर के फाटकपर पहुंचा और चाहा कि भीतरजायँ त्योंहीं द्वारपालों ने हातिम का हाथ पकड़ लिया और कहा कि कहां जातेहो पहले यहांके बादशाहसे प्रश्नोत्तर करलो तब कहींजाना यह सुनके हातिम कहने लगा कि भाई तुम्हारे नगर की कैसी रीति भांति है जो पथिकों को सताते हो और तो सब यथा सामर्थ्य पथिकों की सेवा करते हैं तब द्वारपालों ने कहा कि भाई यहांके बादशाह के एक बेटी है उसके सामने पथिकको ले जाते हैं वह उससे कुछ प्रश्न करती है जब वह उत्तर नहीं दे सक्ता तो सबेरे के समय उसको शूली देते हैं इस हेतुसे इस शहर का नाम बेदाद नगर अर्थात्(अनीतिपुरा)पड़गयाहै और राहचलनेसे बन्द होगईहै निदानहातिमकोभी द्वारपाल बादशाहके पास लेगये

तब बादशाहने पूछाकि तेराक्या नामहै और कहांसे आताहैऔर कहां जानेकाविचारहै हातिमनेकहाकि मैं मनुष्यहूं और चीनको जाताहूं और नाम पूछनेसे आपका क्या प्रयोजन है और कहा कि हेबादशाह सब बादशाह पथिकों पर दयाकरतेहैं जिसमें उनका नाम इस सृष्टि में सदा वर्तमान रहै यह सुनके बादशाह रोनेलगा और हातिम से कहा कि हे जवान पहले इसशहरका नाम न्यायपुराथा परन्तु थोड़े दिनोंसे इस हतभाग्य लड़कीके कारण यहां पथिक बध किये जातेहैं इसीसे इसकानाम अब अन्याय पुरा पड़गयाहै तब हातिमने कहा कि फिर तू उसको मार क्यों नहीं डालता जिससे तू इस हत्या से बचे तब बादशाहने कहा कि किसीने अपने लडकी लड़काको माराभी है यह सुनके हातिम आंसू भरलाया और कहनेलगा कि तेरा कुछ बश नहींहै तू परबश है देखो ईश्वर बड़ा दयालु है तुझे इस हत्यासे बचावेगा निदान फिरबादशाह हातिम को भीतर लेगया और लड़की को सँवार के लेआये और उसके पास बैठालदिया तब हातिमने कहा कि अब तो इस चन्द्रमुखी के समान दूसरा स्वरूपवान नहीं है और वह भी हातिमके स्वरूपको देखके इसकी प्रीतिमें फँसी और अपनी धाय को बुलाके कहनेलगी कि हेमाता मैं तो आज इस पथिक की प्रीतिमें फसी परन्तु बड़े शोच की बातहै कि सबेरा होतेही यह भी स्वाभाविक रीतिसे फाँसी दियाजायगा यह सुनके वहधायबोली कि बेटी तू बड़ी हतभाग्य है कि हजारों दीन दुःखी तेरे हाथ से मारे गयेहैं और उनकी हत्या तेरे माथे है तेरीभाग्य तो ऐसी प्रबल नहीं मालूमहोती परन्तु यह मालूम होताहै कि जो ईश्वर चाहे तो इसीसे तेरा काम निकल जावे तब हातिमने कहा कि भला मैं भी तो सुनूं कि वह कौन बातहै जिसके लिये ये दीनपथिक मारे जातेहैं तब दाईने कहा कि हेजवान जबरातहोतीहै तो यह लड़की बावली होजातीहै और जो मुखमें आताहै सोबकतीहै और मैं भी उस समय इसके पास नहीं होती हूं उस दशा में यह उस पथिक से प्रश्न करती है जब वह मुसाफिर उत्तर नहीं देता तो उसको आपही मारडालती है अथवा सबेरेके समय उसको शूली दिलादेती है यही इसकी रीति है यह सुनके हातिम ने कहा कि देखिये मुझे भी यहां मृत्यु लेआईहै इतने में जब रात हुई तो वह दाई भोजनलेके आई और कहने लगी कि हे पथिक तू भोजनकर तब हातिमने कहा कि मैं तो भोजन तभीकरूंगा जब पहले इसका

काम करलूंगा और अभी भोजन करना योग्यनहींहै यह भोजन काहेका है किन्तु जीवका देनाहै तब उसदाईने कहा कि अबमुझे मालूम होताहै कि तू इसका काम करेगा क्योंकि तू भद्य भोजन करताहै इतने में जब रात हुई तब दाई लौंडी बांदी और नौकर चाकर सब मकानके बाहर गये और मकानके किवाड़ भलीभांति बन्द करदिये जब पहर रात गई तो वह लड़की बावलोंकी भांति कूदने लगी और निरर्थक बकने लगी और हातिम की ओर मुँह करके कहनेलगी कि तुझे अपना जीव प्यारा न था जो बिना जाने बूझे हमारेपास आया है अच्छा जो तू आयाहीहै तो हमारे प्रश्नों का उत्तरदे तब हातिमने कहा कि तेरा प्रश्न क्या है तब उसने कहा कि वहआनाकी बूंद कौनसीहै जोसजीवहैहातिमने कुछदेरसोचने के उपरांत कहा कि वह बूंद मनुष्य का वीर्य है फिर थोड़ीदेरमें बोली कि वह मेवा कौनसा है जो सब मेवों से मीठाहै हातिम ने कहा कि वह मेवा पुच है कि वह सम्पूर्ण फलों से मीठा है फिर तीसराप्रश्न किया कि वह कौन वस्तु है जो सबकी दृष्टि गोचरमेंहै और कोई उससे अलग नहीं है यहसुनके हातिमने कहा कि वह मृत्यु है जोकिसीको नहीं छोड़ती यह सुनके वह लड़की कांपने लगी और कुर्सी से उतरके धरतीमें लोटने लगी और अचेत होगई, इतने में एक सांप अत्यन्त भयानक हातिमकी दृष्टिपड़ा और फनफनाके हातिम की ओर चला तब हातिमने सोचा कि जो इसको मारूं तो दुःखदाई ठहरताहूं और छोड़दूं तो मुझी को डस जाताहै निदान यह सोचके हातिमने वहमुहरा जो रोझको लड़की ने दियाथा उसको पगड़ीसे खोलके मुखमें रख उससांपको हाथमें पकड़लिया और एक बासनमें बन्दकर कमरसे कटारनिकालके पृथ्वी खोदके उसको गाड़दिया और उस तख्तपर जाबैठा जब पछिली रातको उस लड़की को चेत हुआ तो घूंघटकाढ़ के बोली कि तू कौनहै जोअनजान इस ठौर आज बैठाहै तब हातिम ने कहा कि हे अज्ञानी इतनीही देरमें भूलगई मैं वहीहूं जिसको तेरे पिताके नौकर इसठौर पहुंचाय गयेथे तब उसने दाईको पुकारा और पूछा कि आज क्या कारणहै जो यह पथिक जीता है उसदाईने उत्तरदिया कि यह ईश्वरकीकृपाहै उसने इसेबचायाहै तुम अपना हालकहो कि तुमकैसीहो तबउसने कहाकि आजमेरा बदन बहुत हलका लगताहै नहींतो सदा बहुत भारी रहाकरता था फिर दाईने हातिमसेपूछाकि तुमनेयहांक्या देखाऔर कैसेजीते

बचे तब हातिमने कहा कि मैं तुझे न बताऊंगा पर जब बादशाह इसकापिता आवेगा उसीसे यहसम्पूर्णहालकहूंगा जबसवेरा हुवा तो बादशाह आया और पूछनेलगा कि हे मुसाफिर तू कैसेसजीव बचाहै हातिम ने उत्तर दियाकि जब पहररात बीती तब आपकी बेटी बावलीहुई और निरर्थक बकनेलगी और मुखमें फेनभरे मेरी ओर को दौड़ी और कहने लगी तेने इतनी सामर्थ्य कहांसेपाई जो विन जाने मेरे घरमें आया है और जो तू आयाही है तो मेरे प्रश्नका उत्तर दे तब मैंने कहाकि प्रश्नकर यहसुनके उसने तीनप्रश्न किये मैंने ईश्वर की दया से तीनों के उत्तर दिये तब वह कांपने लगी और कुर्सी से धरतीमें अचेतहो लोटनेलगी इतनेमें एकसांप उसके कूलसे निकलके मेरी ओर लपका मैंने उसको पकड़केउसी अँगनाई में गाड़दिया है जो न मानें तो खोदकेदेखलो फिर वह लड़की चेतमें आई तो लाज करनेलगी तबबादशाहने पूछा कि हे प्यारे यह क्या था तब हातिमने कहाकि तुम्हारी बेटीपर एक जिन्द आशिक था सो वही सांप बनके आदमी को खा जाताथा अबमैंने ईश्वर की दयासेमारा आपके मूड़से बलाय टली यह सुनके बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और कहाकि मेराययही प्रणथा कि जोकोई इसको इस हत्या से बचावेगा उसीकेसाथ इसका विवाह करूंगा सो अब तुमभी इस बात को मानों और इसके साथ विवाहकरो तब हातिम ने कहाकिमैं एक बातपर इसकोमानूंगा वह यह है कि विवाह के उपरान्त जहां मेरा जी चाहैगा तहां ले जाऊंगा बादशाह ने कहा कि तू अपने मनका मालिक है निदान बादशाह ने निज कुलरीति अनुसार उसका विवाह हातिम के साथ करदिया और हातिम तीनमासतक उसकेसाथ विहार करतारहा जब वह गर्भिणी हुई तो उससे हातिमने कहा अब मुझे विदाकर और मैं रहनेवाला शहरयमनकाहूं और तय मेरे पिता का नामहै जातेरे पुत्र उत्पन्न हो तो इसी पतेसे भेजना और जो लड़की हो तो किसी अच्छे सुशील पुरुषके साथ विवाह करदेना और जो जीऊंगा तो तुझसे भली भांति आ मिलूंगा और तेरा पोषण करूंगा इसीभांति की दोचारबातें उससे करके विदाहुआ और चीनकीओर चला परमेश्वरकी कृपासे थोड़ेदिनोंमें चीनमें आपहुंचा वहांके निवासियोंसे पूछनेलगा कि यहां सौदागरोंका टोला कहांहै किसी ने बतादियो तब वहां पूछने लगा कि यहां कोई यूसुफ़सौदागरकीभी हवेली है और उसकेवंशमेंसे भीकोईहै

लोगोंने जाके उनसे कहा तो वे दौड़आये और उससे पूछने लगे तो हातिमने कहा कि हेलड़को तुम्हारे बापने मुझे भेजाहै और तुम्हें एक संदेशा दिय है इस बातके सुन्तेही सब हँसपड़े और कहनेलगे कि हेपथिकतू बावला होगया है उसको बहुत कालबीता कि मरगया और हमको भी यही हँसी आती है और आश्चर्य होताहै कि उसने तेरेहाथ संदेशा कैसे भेजाहै तब हातिमने कहा कि भाई मैं जानता हूं कि यूसुफ़ सौदागर को हमेलो सौदागरों के टोलामें और एकपता उसनेमुझे औरभी दियाहै जोतुम सुनों तोमैंकहूं सभोंने कहाकि कहो तब हातिमने कहाकि एकमकान में जहां उसके सोनेकी जगहथी वहां एक टच्चके नीचे बहुतसेरत्न और रुपया गड़े हैं उसको खोदो और उसके चार भागकरो उनमें से एकतो तुम लेलो और तीनभाग ईश्वर की राहपर पुण्यकरदो यह बताके सम्पूर्ण वृत्तान्त आद्योपान्त उनसे कहा और कहाकि उस बनमें मैंनेयह सब तमाशा देखाहै नहीं तोयहां आने कामेरा कोईकाम नहींथा उन सबने कहा कि यह काम बिन बादशाहकी आज्ञा के कोईनहीं करसक्ता निदान उसको सब बादशाह के पास लेगयेतब बादशाहने पूछाकि हेपथिकतैंनेक्या देखा है वह तू सत्य२ कह हातिमने कहाकि महाराज मैंने यूसुफ़ सौदागर स मुलाक़ात की है और उसनेमेरे हाथसन्देशा भेजाहै यह सुनके बादशाह भी हँसा और कहनेलगा कि तेरे शहरमें कोई वैद्यनहीं मिलाजो तू यहां फस्द लेनेको आया है ततो भला चंगा बावलाहै क्योंकि उसको मरे सौबर्षहुये और तू कहताहै कि मुझ से मुलाक़ात हुई है अरे मूर्ख कहीं मृतक भी किसीसे मिलने को आते हैं कोई इस बावले को नगरके बाहर नहीं निकालता तब हातिमने कहा कि हे नीतिरत दीनबन्धु यह ईश्वरकी माया है और बुद्धिवान् इसको खोजते हैं और क्या आप नहीं जानते कि अकाल मृतकों की गति नहीं होती और प्रेतयोनि भोग करते हैं और यह प्रसिद्ध है कि यूसुफ़ सौदागर अत्यन्त सूधा इससे वहबड़े कष्टको प्राप्तहै जो मेरी बातको मानों तो वहदीन इसकष्ट से निवृत्त होजाय और मैंनेभी माना कि मैं बावलाहूं परन्तु उस खज़ाने की खबर कैसे लाता निदान बादशाह ने बड़ा आश्चर्य किया और हातिमके साथ २ यूसुफ़ सौदागरके मकानपरआया और उस जगह के खज़ाने को खुदवाया तो अमित धन निकला बादशाहने उसके चारभाग किये उनमें से एक तो उस के लड़के

बालों को दिया और तीन भाग हातिमको दिये और कहाकि ऐसा सत्पुरुष तूहीहै इसलिये तूही इसको ईश्वरकी राहमेंपुण्य कर जा हातिम ने सम्पर्ण धन भूखे नंगे दीन दुखी और पथिकों को बांटदिया और बादशाह से बिदाहोकर शहर आदिलाबाद जिसका अन्यायपुरा कहचकहैं उसमें आयपहुंचा और अपनी स्त्री से मिला और जो लड़का पैदाहुवाथा उसको देखके बहुत प्रसन्न हुवा और उसका नाम सालिम धरा और दोचारदिन रहके वहां से बिदाहो जंगलकी राहली थोड़ेदिनोंमें शहीदों के पास आय पहुँचा औरतीनदिन पीछे जबशुक्रवार का दिनआया तो सबसतक अपनी २ कबरसे निकलके सबकेसब सफ़ेदबिछौनोंपरबैठे और उसीप्रकार सबके आगे भोजन चुनेगये तबउस सौदागरसे मुलाक़ात की तो देखा कि सबके समान भोजन उसके भी आगेहैं तब उससे समाचारपूछे उसनेकहा तेरीहीभलाई औरमनुसाई और कृपालुता से मुझभी इनसबके समान भोजन मिलताहै और इनलोगों से याचना करनेसे बचा और उसदासे छूटा केवल मेराबिछौना उनके बिछौने के समान नहीं है क्योंकि उन्होंने जीतेजी पोशाकें और बिछौना दियेहैं और मैंने इतनेही दिये निदान यह समाचार पूंछपांछके हातिम उससे बिदाहुवा तो एकबनमें पहुँचा तो देखा कि एकबूढ़ीस्त्री भीखमांगतीहै उसको हातिमने वह अंगूठी जो आप निजहाथमें दूलमासकी पहरेथा उतारकेदी तब वह बुढ़िया पुकारके कहनेलगी कि आगेदेखियो पीछेपरो ऐसेका राम रखवारा है यहसुनके हातिम के दायेंओरसे सातपुरुष हथियार बांधे निकलआये और हातिमके साथ होलिये और वेसातोंचोर उसीबूढ़ीके बेटेथे जबउसने सोनेकी जड़ाऊ अँगूठीदेखी तब उनसे कहाकि आगे सोनेकीचिड़िया गईहै निदान वेसातों उसकेसाथ होलिये और पूर्व पश्चिम की बातें करनेलगे और कहनेलगे कि हे जवान हमतेरेसाथ चलकर चाहतेहैं कि तेरेद्वारा किसी बादशाह की नौकरीकरें तब हातिमने कहाकि अच्छा मेरेसाथचलो और खानेपीनेका कुछ सन्देहनकरो जब हातिम उनके धोखेमें आगया तब पीछेसे फाँसीडालदी और हाथपांव बांधके सब असबाब छीन लिया और तलवारोंसे घायल करके कुएंमें डालदिया केवल एक पगड़ी जिसमें वहरीछकी लड़कीवाला जहरमुहरा बँधाथा वही लपटीछुई रहगई निदान हातिमने उसी कुएंमें दोतीन दिनतक अचेत पड़ारहा जबउसको चेतहुवा तोहातिमने वह मुहरा पगड़ी

से खोलके किसी कोने में एक पत्थरपर रगड़ के अपने घावों में जो लगाया त्योंही उसकादर्द जातारहा और घावभी अच्छे होगये तब हातिमने कहा कि बड़ेशोचकी बातहै उन कायरोंने मेरेसाथ धोखा किया और जो वे मुझसे ईश्वर की राहपर मांगते तो मैं उनको सबदेदेता और जो अभीमिलें तो इतनाधन देऊंकी जीतेजी आनन्द कियाकरें इसीशोच में था कि इतनेमें हातिम की आंख जो लगगई तोक्याखप्नमें देखताहै कि एकपुरुष खड़ापुकारके कहताहै कि हे हातिम तू क्यों शोचताहै जो ईश्वरने तुझे इसकुआमें गिरायाहै तो यहभी कुछ उसकी बुद्धिमानीसे अलग नहींहै और वह बड़ादयालुहै देख इसकुंआमें एक बड़ाभारी खजानाहै ईश्वर ने केवल तेरीही भाग्यमें लिखाथा अबतू उठ और यह द्रव्यले तब हातिम ने कहा कि मैं अकेला कैसे निकालूं और कहां लेजाऊं तब वह पुरुषबोला कि कल्ह दो आदमी यहां आवेंगे और तुझे इसकुंवासे निकालेंगे तू उनकी सहायता से इसधनको निकाललेना हातिम ने यहसुनके परमेश्वर का धन्यवाद किया निदान इतनेमें सबेराउवा तो दो आदमी उस कुंआपर आये और बोले कि हे हातिम जो तू सजीव है तो बोल हातिमने कहा कि अभी ईश्वर की अनुग्रहसे जीताहूं तब उन्होंने कहा कि हमारे हाथपकड़के चढ़िआउ हातिम उनके हाथके सहारेसे बाहरआया और उनसे मिलके कहनेलगा कि इस कुंआ में बड़ाभारी कोषहै जो तुम निकालो तो हाथलगे तब उन्होंने कहा कि तुमयँभो हम निकालते हैं यहकहके एकतो भीतरसे देनेलगा और दूसरा बाहर ढेरकरने लगा जब सब निकालके हातिमके आगेधरा तो आप एकओरको सिधारे तब हातिम उसमालके ढेरको देखके अपनेजीमें कहनेलगा कि जो इस समय वे चोर मेरेपास होते तो यह सम्पूर्णधन उनको देदेता जिसमें वे फिर दीनदुखियों को न मारते और आनन्द से रहते यहमनमें ठहराय एक जोड़ा कपड़ा उनमेंसे पहर और कुछ रुपया और जवाहिर लेके उनचारोंको ढूंढ़नेचला और ईश्वर से बारम्बार प्रार्थनाकरे कि हे परमेश्वर मुझे उसबुढ़ियासे मिलादे इतनेमें वह बुढ़िया दृष्टिपड़ी कि बज़त फटेहाल भीख मांगती है कहतीहै हेदाता राहचलनेहारे कुछ मेरीभी सुध लेतेजावो हातिम देखतेही बज़त प्रसन्न होके उसको मुट्ठीभर के रुपया और मोहरें अपनी जेबमेंसे निकालके दिये और आगेको बढ़ा तो उस बुढ़िया ने फिर पुकारके कहा कि इस घटोही का राम रखवारा है यह

सुनतेही वेही सातों चोर यथापूर्वक शस्त्र बांधे और फांसी लिये निकल आये और हातिम से मिलके बातें करनेलगे तब हातिम उनको चीन्हके कहनेलगा किभाइयो तुमसे मुझेकुछ कहनाहै जो मानो तो कहूं यह सुनके वे कहनेलगे कि कहो क्या कहते हो तब हातिमने कहा कि जो तुम बधिकका कर्म छोड़देवो और मनुष्यों को नमारो और इसके लिये सौगन्द खावो तो मैं तुम को इतना धन देता हूं कि वह तुम्हारी सातपीढ़ी तक न चुके तब उन्हों ने कहाकि हमतोकेवल इसपेटहीके लियेयह अपराध करतेहैं और जो इतना धन पावें तो काहेको ऐसाकाम करैंगे हमतो आजहीसे इसका प्रणकियेदेतेहैं तबहातिमने कहाकि अच्छातुम परमेश्वर कोसाक्षीदेकेकहो तब उन्होंने कहाकि पहलेहमको धनदिखादेा तो हमइस कामको छोड़ेंनहींतो ऐसानहो कि हमसे सौगन्दभी लेलो और फिरधनभी नदो तबहातिम उनका हाथ पकड़ उस कुऐंपर लेगया और वह अमित धनदिखाके कहनेलगा कि अबजो कुछ तुमने कहाहै उसका प्रतिपालकरो वेचोर इतनीसम्पदा देख-तेही बहुतप्रसन्न हुये और हाथबांधके कहनेलगे कि अब जो कुछ तुमकहो सोईकरें तबहातिम ने कहाकि अबतुम ईश्वरको साक्षी देके यहकहोकि ईश्वर सर्व्वव्यापीहै और सबके चित्तका हालजा-नताहै जोहम आजसे किसीको धनकेलालचसे मारें अथवा चोरी करैंतो ईश्वरकी क्रोधाग्नि में जलजावें हातिमने जब उनसे यह सौगन्दसुनी तबवह सम्पूर्ण धन उनको देदिया और आप एकवन की ओर चलदिया थोड़ेही दूरपहुंचाहोगा कि इतनेमें एककुत्ता हाँफताहुवा मुखफैलायेहुये इसको दृष्टिपड़ा तब हातिम ने जाना किकदाचित् इसवनमें कोईसौदागर पड़ाहै और यहकुत्ता होय नहोय तो उसीकाहो निदान पासजाके वहकुता हातिमने गोदमें लेलिया और उसप्यासेको पानी पिलानेके लिये सोता ढूढ़ने लगा इतनेमे उसको एकगांव दिखाईदियातबवह उसकीओरचलावहां के निवासी मुसाफ़िरों को रोटी और मट्ठा देतेथे जब वहां हातिम पहुंचा तब उसकोभी मट्ठा और रोटी दी हातिमने वे रोटी और दहीउसकुत्ताके आगेधरदिया उसकुत्तेनेपेटभरकेखाया और पानी पियातब हातिम कहनेलगा किदेखोयह कैसा दिव्यकुत्ताहै और परमेश्वरका स्मरणकरके कहता था कि यह तेरीही कृपा कटाक्ष और प्रवीणताहै कितनेचौरासीलक्षयोनिउत्पन्नकिया और सबके एकसेअंग और सबएक दूसरेसे बिलगहैं और उसकुत्तेके ऊपरहाथ

फेरने लगा तो कुछसींगके समान कठोरवस्तु उसकेशिरपर मालूम हुई तो हातिमने भलीभांति निरतायके जो देखा तो एक लोहकी कीलउसके शिरमें दिखाईपड़ी हातिमनेचट वहकील उसकेमूड़में सेनिकाललो उसकीलकेनिकालतेहीवहएकदिव्यस्वरूपपुरुषबन-गयातबहातिम बड़ेआश्चर्यमें हुआ और पूछनेलगाकि हेप्यारेइस-काक्या भेदहैकिपहलेतू एकपशुकी सूरतथा और इसकीलकेनिका-लतेही मनुष्यहोगया जबउसमनुष्यनेदेखाकि इसनेमेरेसाथभलाई कीहै इसलिये इससे अपना हालछिपाना भलीबातनहींहै तब वह पुरुषहातिमके चरणोंमे गिरपड़ा और कहनेलगाकि हेसत्पुरुष मैं मनुष्यहूं तेरीदयासे फिरमनुष्यहुआ तबहातिमपूछनेलगा किइस काक्याकारणहैजोकुत्तावनाया यहसुन वहजवान इसप्रकारकहने लगा किमेराबाप एकबड़ा सौदागर था वहबहुतसा व्योपारका मालले के चीनकोगया और वहांवहमाल बेचकेवहांसेदूसरामाल भर खताको लेगया और वहां बड़ालाभहुआ तबमकानपर आय बड़ीधूमधामसे मेराबिवाहकिया और कुछकाल गतहुयेपितापर-मधामको सिधारे और मैं उसीमालको बेच२केसुखचैनकरतारहा जब वहमालचुका तो कुछमाल खतादेशका मोलले के चीनकोचला और यहांवह मालबेच और दूसरा मालभर अपने देशकी राहली इसबीचमें मेरीस्त्री एक हबशीदाससे फँसीथी और यहलोहे की कील एक जादूगर से बनवारखी थी जब मैं मकान में आया तो एकदिनमैं अचेतसोरहा था उसने यहकील मेरेशिरमे ठोंकदी उस के लगतेही मैं कुत्ता बनगया तो मुझे दुरदुरकेघरकेबाहर निकाल दिया मैं कानफटफटाता बाजारमें आया तोबजारके कुत्ते मुझे अन चीन्हाजानके काटनेकोदौड़े मैंउनके डरकेमारे इसबनमें तीनदिन से भूखा प्यासा मारा फिरता था दैवयोग से तू आज मिला तेरी दयासे मैं फिरमनुष्य होगया यहसुनके हातिमने बड़ा शोचकिया और कहनेलगा कि हेप्यारे तेराघर यहांसे किस ओर को और कितनी दूरहै और क्यानाम है तब उसने उत्तरदिया किमेरेनगर कानाम सूरत है और तीनदिनकी राहहै तब हातिमने कहा कि हेप्यारे तेरेशहरमें कोई हारस सौदागरभी रहताहै और उसके एकबेटीहै और उसकेतीन प्रश्नहैं उनमेंसे मैं इस बातके शोधने को गयाथा कि मैंने वह कामनकिया जो आजकीरात मेरे काम आता तब उस जवानने कहा कि मैं जानताहूं और वह तो मेरेही शहर में रहतीहै तबहातिम ने कहाकि तू उसकीलको अपनेपास रहने

देजातू बदलालिया चाहेतो तूभीउसके मूड़मेंठोंकदेना वह कुतिया बनजायेगी येदोनों इसी भांति की बातेंआपस में करते चले और तीनदिनमें उसशहरमें आपहुंचे वहजवान हातिमको अपनेघरमें लाया और हातिमको बरोठेमें खड़ाकरके आपभीतरगया तो सब लौंडीबांदी पांवोंपर गिरपड़ीं और उसकी स्त्री उसीहब्शी दास के साथसोती थी इसने तलवार से उसहब्शी कोमारा और कील उस स्त्रीके मूड़में ठोकदी वह कीलके लगतेही कुतिया होगई तब उसको रस्सो में बांधके हातिमके पास आया और लेजायके मसनद पर बैठाकेकहनेलगा कि यहकुतिया वही स्त्रीपुंश्चलीहै जिसने मुझे कुत्ता बनायाथा और यह हब्शी मेरा दासहै तब हातिम ने कहा कि हेप्यारे तैंने इसको क्योंमारा तब उसने कहाकि इसका यही दण्डथा और यह काम मैंने अधिक तो इसलिये किया कि जिसमें औरोंकेआंखेंहोजावें औरऐसाकाम नकरें औरजोकरता भी होगा वहभी यह हाल देखकेअलग होजायगा यहकहके उस मृतकको अपने आंगनमें गाड़दिया और सबलौंड़ी औरदासोंको दान सन्मान से परिपूर्ण करके सबको अधिकार दिया और उस दिन रातभर हातिमकी पज़्नाई करी और जब सबेराज़्आ तो हातिम उससे बिदा होके सरायमें आया और उस सौदागर से मिलके कहनेलगा कि कहो क्याकरतेहो प्रसन्न तो हो उसने कहा कि हेदीनदयाल आपकेजीवकी जयमनायरहाहूं औरकुछदिनसे अब वह आवाजनहीं सुनाईदेती इसीसे हारससौदागर की बेटी तुम्हारे आनेका आसरादेखतीहै तबहातिमनेकहा कि कुछसंदेह की बातनहींहै मैं ईश्वरकी दयासे उसकोशोधआयाहूं यह कहके हातिम हारससौदागर की बेटीके द्वार पर गया तो द्वारपालोंने भीतर जनाया उस लड़कीने सुनतेही हातिम को बुलवायाऔर आप दालान में परदा के भीतर बैठी और परदा के बाहर हातिम के लिये कुरसी बिछवादी और फिर अपने प्रश्नका उत्तर पूछनेलगी तब हातिमने ज्यों का त्यों जैसा सुना और जैसा देखाथा और जो २ काम उसने किये सो सब आदि से अन्त तक कह सुनाया तब उसने कहाकि हे सत्यवादी पुरुष तू सत्य कहता है अब वह आवाजभी नहीं सुनाईदेती और अब तूजा और माहरू परी का शाहसुहराला हातिम सुनतेहीउठखड़ाज़्आ और सौदागर बच्चाके पास आकर कहनेलगा कितू धीरज धरे बैठारह मैं अब माहरूपरीका शाहसुहरा लेनेजाताहूं जो ईश्वर उसके इस प्रश्नको

भी पूरा करे देताहै तो तुझेतेरी प्यारीसे मिलायेदेता हूं यहकह केउससे विदाहो एक ओरके बनकी राहली और कुछ दूरचलके एकवृक्षके नीचे बैठ शोचने लगा कि अब उत्तम यही है कि देवों से जो मिलूंतो वे इसका पतादेंगे यह मनमें ठहरायके उसीखोहा में धसा जिसमें प्रथमहीं गयाथा और चलते २ कुछ दिनों मेंवही मैदान और जंगल दृष्टि पड़ा उसको पार करके उस गांव में गया जिसमें पहले गयाथा उस गांव के निवासी चारों ओर से धाये और हातिम को चीन्हके बड़े सन्मान से गांव में लाये औरबड़ी प्रतिष्ठा से मसनद पै बैठारा और बड़े हर्ष से पज़नाई करी और अधिक क्या कहूं उसीभांति प्रत्येक पुरुष अपने २ घरलेगया और हातिम की पज़नाई कर हातिम को दूसरे नगरमें पज़ंचादेता था अन्त को बादशाह फरदकाश के मकान पर पज़ंचा उसने हातिम को आगे आयके लिया और एक प्रतिष्ठित आसनपर बड़े सन्मान से बैठारा और बड़े हर्ष से पूछा कि आपके आनेका क्या हेतु है तब हातिमने कहाकि जो माहरूशाह के हाथमें सुहराहै मैं उसके लेने को आया हूं यह सुनके फरदकाश ने कहा कि हे जवान उसके हाथ मेंसे वह सुहरा लेने की किसको सामर्थ्य है देवोंकी तो यह सामर्थ्य हैही नहीं जो वहां जायके कुशल पूर्वक फिरआवैं और तेरीतो भला कौन बात है और काहेमें गिनती है तबहातिम ने कहाकि कुछसन्देहकी बात नहींहै जिसने मुझेयहां तक पज़ंचाया है वही वहांभी पज़ंचावेगा परन्तु आपसे एक देव की याचना है जिसमें सुझेराह दिखाताजाय तब फरदकाश बादशाहने कहाकि हे जवान तू इसकामको मतकर तब हातिमने कहा कि यह मेरा काम नहीं है जो अपने प्रणको भंगकरूं यह सुनके बादशाह फरदकाश चुप होरहा फिर हातिम तीन दिनतक वहां रहा और चौथे दिन कहनेलगा कि अब मैं रह नहीं सक्ता क्योंकि यहां मैं सुख चैनकरूं और वह बिरही मेरा आसरा देख के मर गया तो यह हत्या मेरे माथे पर ज़ई और यह भी न हो तो मैं ईश्वर के आगेक्या उत्तर दूंगा तब फरदकाश बादशाह ने कई देव हातिमकेसाथको दिये और कहाकि तुम इनको माहरू परी बादशाह की सीमा पर पज़ंचा देवो और जबतक यह वहां से फिर के न आवें तबतक तुम इनके आसरे में बैठे रहियो निदान हातिम उससे बिदाहो देवों को साथ लेके अपनी राह ली और एक महीने में परीरू बादशाह की सीमा पर पज़ंचा वहां

वे देव कहनेलगे कि बस यहांसे उसकी राज्य है अब हमारी सामर्थ्य नहीं है जो उसकी राज्य में जांय क्योंकि जो कोई उसकी राज्य में जाता है उसको जीव से मारडालता है निदान हातिम उनसे विदाहोके परीकू बादशाह के राज्यमें घुसा और कुछ दिन में चलते २ एक पहाड़ ऐसा ऊंचा दृष्टिपड़ा कि मानों आकाशसे बातें करता है और अमित वृक्ष उसपै मेवा के फले लगे हैं हातिम उसकी ओर चला जब निकट पहुंचा तब हजारों परीजाद उसकेचारोंओरसे दौड़आये और कहनेलगे कि यह मनुष्य है इसको छोड़ना उचितनहींहै क्योंकि यहपहाड़पर चढ़नेकाअनुमानकरता है इतनेमें और भी पहाड़परसे उतरे और हातिम का हाथ पकड़के पहाड़ पर लेगये और जंजीरों से बाँधके पूछने लगे तू सत्य २ बता तुझे यहां कौन लाया है और कहां से आता है तब हातिमनेकहा कि मुझे यहांपरमेश्वरलायाहै और शहर सूरत से आताहूं तब वे कहनेलगे कि मालूम होताहै कि तू परीकूशाह के हायका मुहरा लेनेको आयाहै भला सत्य२कह यहबात है किनहीं तब हातिमने शोचा कि जोमैं यहां सत्यबोलताहूं तो जीवसे मारा जाताहूं और इन्कार करताहूं तो झूठ बोलताहूं इससे चुपरहना ही उचितहै यहशोचके हातिम कुछ न बोला तब उन्होंने शोचके कहाकि इसको अग्निमें छोड़देना चाहिये निदान उन्होंनेअग्नि जलाई और जब ज्वालाउठी तो हातिमको उसी जलती अग्निमें डालके वे सबचलेगये जबतीनदिन पीछे वह अग्निबुझी तो हातिम उससे निकला और एकओरको राहली जबथोड़ादूर पहुंचा तो फिर हजारों परीजादों ने उसे घेरलिया और पूछनेलगे कि हे जवान तेरीही सूरतका एकमनुष्य हमनेअग्निमें छोड़दियाथा सो जलके राखहोगया होगा अबतू बता कि तू वहीहै अथवा दूसराहै तबहातिमने कहाकि अरेमूर्खोंजो अग्निमेंपड़ा वहफिर कैसेजीता बचैगा यहसुनके उन्होंने उसको घुमायके जो फेंका तो उस पहाड़ से एकसमुद्र अठारह कोसथा उसमेंगिरा वहां उसको घरियालने लीललिया उससमय तो हातिमको मूर्छामें न कुछ मालूमहुवा कि मैं कौनहूं और कहांहूं जब चेतहुवा तो अपनेको घरियालके पेट में देखके बहुत घबराया और दौर२ के उसकेपेटकी आंतोंको खूंदनेलगा तबतो वह घड़ियाल बहुतदुःखीहुआ और देखा कि अब यह न बचेगा तो रेतमें आयके वान्त करनेलगा हातिम उसके मुँह से निकलपड़ा और एकतरफको चलदिया परन्तु बिना अन्नजलके

सामर्थ्य ना थी हीनहीं थोड़ीदूर चल रेतमें गिरपड़ा और चारों ओर देखनेलगा इतनेमें एकझुण्ड परीज़ादोंका हँसता खेलता उस ओरको आनिकला और हातिम से पूछनेलगा कि हे मनुष्य तुझे यहांकौन लायाहै तब हातिमने कहाकि मुझेपरमात्मा जिसनेमुझे और तुम्हेंबनायाहै वहीयहां लायाहै और आज दूसरेदिन घड़ियालके पेटसे ईश्वरने जीता निकालाहै जो तुमको परमेश्वरने कुछ दियाहै तो मैं भूखाबज़तहूं मुझेखानेको भोजनदो तबउन्होंने कहा कि हमारे बादशाहकी आज्ञाहै कि जहां मनुष्यको देखो वहांहीं मारडालो जो हमतुझे भोजनदें तो बादशाहकी आज्ञाभंगकरने कादण्ड कौनभोगे इतनेमें उन्हींमेंसे एक बोला कि हे मित्रो देखो तो परमेश्वर की लीला कैसीहै कि घड़ियाल के पेटसे उसने इसको सजीव निकालाहै और कुछ आपसे आयानहीं कोजाने घड़ियाल कहांसे इसकोलायाहै और कहांबादशाह औरकहांयहभिखारी कुछ परमात्माकोडरो कि जिसने कालकेमुखसे इसेबचायाहै और यह मनुष्यहै और सृष्टिमेंसर्वोपरि गिनाजाताहै इससेइसको अपने घरलेचलो और पालो तबफिर किसीनेकहा ऐसानहोकि कहीं बादशाहसुने तो हमारा वृथा जीवजाय तबहातिमने कहा कि जो तुम्हाराभला मेरे मारेजानेहीमें होयतो तुमभुझे मारडालो निदान जब हातिमकी यह मजबूती देखी तो आपस में सलाहकरके कहा कि हमारा बादशाह यहांसे सातदिनकी राहपर रहताहै ऐसाकौनहै जो उससे यह समाचार कहेगा यह सब आपसमें सम्मत करके हातिम को अपनेघर लेआये और भांति २ के भोजन हातिम को खिलाये जब हातिम तृप्त होके बैठा तो परीज़ाद भी उसके चारों ओर आयबैठे और हँसीमसखरी करनेलगे औरउसके रूपपर मोहित होगये तब कईदिनपीछे जबके हातिमने कहाकि हे मित्रो अब मुझे विदाकरो और मैं जिसकामको आयाहूं उसे करनेकी यत्नकरूं तब उन्होंने पूछा कि तेरा कौनकामहै और तुझे यहां कौनलायाहै तब हातिमने कहाकि मुझे फरदकाश बादशाह के देव परीरू बादशाह के राज्यकी सीमापर पहुंचाय गयेथे और तुम्हारे भाइयोंने मुझेतीनबेर अग्निमें डालदिया वहांभी परमात्माने सजीवरक्खा फिरउन्होंने समुद्रमें फेंकदिया वहां घड़ियाल ने लीललिया जब वह न पचा सका तब उसनेभी उगलदिया इतने में तुमको ईश्वरने वहां पहुंचायदिया तुमभुझपर दयालुहोके अपने घरलाये और मेरी सेवाकरी तब उन्होंने पूछा कि हे जवान ऐसा

कौनसा कठिन काम है जिसके लिये तैने इतनी विपत्ति झेली तब हातिमने कहा कि मुझे माहरूपरी बादशाहसे कुछ कामहै यह सुनके उन्होंनेकहा कि अरे अज्ञान तू हमारे सामने माहरूपरी बादशाहका नाम न ले क्योंकि वहदेव और मनुष्य को अपनीराज्य में नहीं आनेदेता और जो वहसुनेगा कि यहांकोई मनुष्यआयाहै तो हमेंतुम्हें किसीकोभी जीता नछोड़ेगा क्योंकियह आज्ञाहै कि इसदेशमें कोईआने न पावै और जो कदाचित् भूलसेकोई आयभी जायतो फिरजीता न फिरै तब हातिमने कहाकि हंमिचो जो मेरी आयुर्बलहै तबतो कोईभी नहीं मारसक्ता और तुम डरतेहो तो तुम मुझेबांधके उसकेपास लेचलो तबउन्होंनेकहाकि यहभीहमसे नहींहोनेका क्योंकि जिसकोबचाया और पालाउसको मारनेको कैसेदें तब हातिमने कहाकि तुममेरे मारेजानेपर कुछशोच न करो क्योंकि मुझेतो परीरूबादशाहके पासजाना है चाहेवहमारे चाहे छोड़े यहसुनके उनसबने सलाहकी कि इसको बन्दिमेंराखो और बादशाहको यह संदेशादेवो जैसीउसकी आज्ञा होगी उसी अनुसार कियाजाय इसबातको सबनेमाना तबउनमेंसे एकके हाथ एक अर्जी लिखकेभेजी और उसमें यहलिखा कि महाराज एकमनुष्य लालसमुद्रके किनारे हमकोमिला है सो उसको अपने यहां क़ैद कियाहै जो आपकी आज्ञाहोतो आपके सम्मुख भेजें निदान सातदिनमें वह बादशाहकी ड्योढ़ी परजापहुंचा तब द्वारपालोंने बादशाहसे जनाया किमहाराज एकपरीज़ादलालसमुद्रके चौकीदारोंमेंसे वहांकेहाकिमकी अर्जी लेकेआयाहै बादशाहने आज्ञा दी कि सम्मुख लावो चोपदारोंने उसको बादशाहके सम्मुख लेके खड़ाकिया उसने जयजीवकहके वहअर्जीदी माहरूपरी बादशाह ने अर्जीपढ़के आज्ञादीकि शीघउसे हमारेपास लेआवो वहधावन कईदिनमें वहांसे उत्तर लेकेआया और सबसे कहा कि बादशाह ने अपने सम्मुख बुलायाहै यहसुनके सब हातिम को बादशाहके पासलेके चले और यहसमाचार चारोंओर पहुंचा कि एकमनुष्य लालसमुद्रके किनारेपर पकड़ागयाहैसोबादशाहकेपासलियेजाते हैं यह समाचार मीनापरीज़ाद की बेटी जिसका नाम हसना था उसनेभीसुना तबउसने अपनी सखियोंको बुलाके कहाकि सुनतीहैं कि एक मनुष्य अत्यन्त शोभायमान पकड़ाहुआ बादशाहके पास जाताहै किसी भांतिसे उसको देखना चाहिये तबसखियोंने कहा कि जोदेखनाहै तोराहमेंही देखलो और जब बादशाहके सम्मुख

गयातो किसकी सामर्थ्यहै जो देखपावैयह सुनके वह अपनी माता केपासगई और उससे बाग़देखने केलियेजानेको कहा वहांकीयह रीतियी कि जोकोई बाग़देखनेजाय वह चालीस दिनतक वहां हीं रहै निदान यहउससे पूछके बाग़मेंआई और अपनीसखियोंसे कहनेलगीकी किसढबसे देखें इतनेमें क्या देखती है कि एक बड़ी फ़ौजपड़ीहै तब उसने एक परीको आज्ञा की कि तू जाके देख तो यहभीर काहेकीहै तब वहपरीजाके पूछनेलगी कि तुम कौनहो और कहांजातेहो तब उन्होंनेकहा किहम लालसमुद्रके चौकीदारहैं एकमनुष्यको पकड़के बादशाहके पास लियेजाते हैं तब उसने कहाकि वहकौनसा मनुष्यहै जिसकोतुम लियेजातेहो हमको भी देखनेदो उन्होंने हातिमको दिखादिया और कहाकि यही है जिसकीमृत्यु निकटआईहै उसने देखाकिएकयुवापुरुषफूलसमान खिला और चन्द्रमाके समान मुखारविन्द चमकताअत्यन्तशोभायमान क़ैदियों की सूरत बनाये बैठा हायरे कररहा है यह देखके वहांसे फिरआई और हसनापरी से उसकी सुन्दरता का बखान करनेलगी हसनापरी उसके रूपकी बड़ाई सुनके उसके देखने को बहुत अतुराई और अपनी सहेलियों से कहनेलगी कि उसको अबकैसे देखूं तब उसके साथकीपरी कहनेलगी कि जब रातहोगी और सिपाही पहरवा सोजावेंगे तब हमउसको चुरायके उठायलावेंगी तबतुम उसको देखलेना निदान इतनेमें रातहुई तो परी उड़ के उस सेना की ओरगई और हातिम को सोताही उठाय लाई और उसको बाग़ में रखके हसना परीके पास आकर कहने लगी कि हमउसको उठाय लाई हैं और आपके बाग़ में धरके आपके पास आई हैं यह सुनतेही हसना परी बाग़की ओरआई तो क्या देखती है कि एकयुवा पुरुष चन्द्रमुख कमलनयन अचेत सोरहाहै वह उसके देखतेही प्रेमसे विह्वल होगई और प्रीतिकी गांसी उसके कलेजे में वारपार होगई उस परी ने जातेही उस अचेतसोते को जगायातो हातिमने आंखखोलके जो देखा तो एक अत्यंतस्वरूपवान मृगनयनी सिरहाने की ओर खड़ी दृष्टिपड़ी यह देखहातिम घबरायकेकहनेलगा कि तू कौनहै और मुझेयहां कौन लायाहै उसने यह सुनके बड़े प्यारसे मधुर वचन मुख फेरके कहने लगीकि यद्यपि यह घरमेराहै तेरानहींहै परंतुअब यहघर मेरा न हीकिन्तु तेराहै हातिमअपने मनमेंसोचाकि यहतो परियोंकायूथहै और मैंमरदोंके हाथमें क़ैदथा फिरइसबाग़में कैसेआया अन्त

को घबड़ाके पूछा कि तुम सत्यकहो तुमकौनहो और मैं यहां किस भांति आयाहूं तबहसनापरीने कहा कि हेजवान यह बाग़मीनापरीशादने बनवायाहै और मैंउसकीबेटीहूंजबतेरेआनेकासमाचार सम्पूर्ण नगरमें फैलेतोमुझे तेरेदेखनेकी अधिक अभिलाषहुई तबमैंने परियोंके हाथ तुझेयहां मँगवालियाहै यहसुनके हातिमने कहा-किमेरेलानेका क्याहेतुहै इसमेरे काममें बाधालगाई तब वहपरी कहने लगी कि भलावह कौनसा कामहै जो तू उसके लिये ऐसा घबड़ायाहै तबहातिमनेकहाकिमैं माहरूपरी बादशाहके हाथका शाहसुहरालेने को आयाहूं तब उसपरीने कहाकि हेजवान उस सुहरा का पाना बड़ाकाम है क्योंकि जहां धर्म्मराजके दूतोंकाभी निबाह नहीं वहां मनुष्य की कौन कहे जोतेरीभाग्य से मिले तो मिले नहीं तोकुछआसरानहींहै हां यथासामर्थ्य मैंभी अपनीओर से बहुत कुछ करूंगी यह सुनके हातिम को कुछ हर्षहुआ और फिर दोनों जने मिलके बिहार करनेलगे इतनेमें जब सेनाके लोग सोनेसेजागे और हातिमको न देखातब बड़ेशोचमें हो चारोंओर खोजने लगे और कहने लगे कि होयनहोय तो परी उसके रूपके कारण चुराय लेगई और यहां बादशाह ने हमारी खाल खिंचवाई इसलिये अबयही उचितहै कि किसी कोनेमें छिपके उसका खोज लगावें जबपावेंगे तो उसको बादशाहके पास पकड़ लेचलेंगे यही शोचके वे सबभागे और किसीखोहमें छिपरहे जब रातिहुई तब उसको ढूंढने लगे इसीभांति दिनको तो छिपेरहते और राति को उसेखोजते निदान इसबातको बहुत दिनबीते एकदिन बादशाहको सुधिआई तो कहनेलगा कि अबतकवह मनुष्यनहीं आया कोई जाकेवहांके समाचारतो लावे यह आज्ञापातेही एकधावन पलकेपलमें वहांजाके कहनेलगा किबादशाह आजतक उसमनुष्य के आसरेमेंहैं उसके न भेजनेका क्या कारणहै तब वहबोला कि मैंने कितनेही दिनबीते किअपनी सेनाकेसाथ उसकेबादशाहके पास भेजदिया यह सुनके वहधावन बादशाह के पासफिर आया और सम्पूर्ण समाचार कहे यह सुनके बादशाह मारे क्रोधके ज्वाला समानप्रज्वलितहो एक यूथपको बुलाके कहनेगा किजावो उनको खोजो तो वे उस मनुष्यको कहां लेगये निदान वह अपनी फौज लेकर बादशाह की आज्ञानुसार उनको खोजने लगे इतनेमें दैव योगसे एकदेश उसभगीहुई फौजका इस सरदारके आदमियों को मिला तो उसको बांधके बादशाह के सम्मुख लेगये तब बाद-

शाहने पूछा किसत्य२ कहवह मनुष्य कहाँहै नहीं तो जीवसे मार-डलूंगा इसबातके सुनतेही उसने कहाकि जोजीवदान पाऊंतो कु-छकहूं बादशाहने कहा अच्छा क्याकहताहै तबवहकहनेलगा कि महाराज हमसब लोग उसको लिये आतेथे एकजगह रातको अ-चेतसोगये वहांसे उसको कोई चुरालेगया वहतो आपही आपके दर्शनों की बड़ी अभिलाष रखताथा इससेमालूम होताहै किवह आपसे नहींगया जबहम सबेरेजागे और उसको नदेखा तो आप के डरके मारे जहां तहां सब छिपरहे और रातिको खोजकरतेथे यहसुनके बादशाहने उसको तोबन्दिमें भेजा और पांच छःहजार परीज़ादों को आज्ञादी कि जहांहो तहां से खोजकेलावो इतने में एक परीज़ाद मीनापरीज़ादके बाग़में जानिकला और दिनको छिपके बैठरहा जबरातहुई तब हसना परीहातिम के गलेमें बांह डालेहुये आई और उसकेसाथ बिहार करनेलगी तबइसने भली भांति चीन्हकेकहा कि हम इसको बादशाह के पासलिये जातेथे और तुमने इसको चुरवाय लिया इसलिये जो तुम अबभी अपनी भलाई चाहोतो इसमनुष्य को हमेंदेदो तो हमइसको बादशाह के पासलेजावें यह सुनतेही हसनापरी क्रोधके मारे आग होगई और कहने लगी कि रे हतभाग्य निगोड़े तेरामेरे बाग़में कौनकाम है ऐसी ढिठाई करताहै कोईयहां है नहीं जो इस मौत मारेको मारे यह सुनतेही बज्रतसी परी उसके ऊपर टूटी ज्योंहीं चाहा कि पकड़ें त्योंही वहमारे डरके भागा और बादशाहके द्वारपर जाय पुकारा बादशाहने कहाकि देखोतो यहकौनहै और इसको किसने दुःखदियाहै यहां बुलावो जब उसे बादशाहके पास लेगये तब उसनेकहा कि महाराज हमसब उसमनुष्यकोआपके पासलिये आते थे रातको मीनापरी जादकी बेटी हसना नामक उसेचुराके अ ने बाग़में लेगई अब उसके साथबिहार करतीहै मैं ढूंढते२ एक दिन उसके बाग़ में जा निकला तब उस मनुष्यको चीन्हके कहने लगाकि हम इसको बादशाह के पास लियेजातेथे और तुमइस को चुराय लाई अब मुझे यहदेदो तो मैं बादशाह के पासले जाऊं यह सुनके वहमदिराके मदमें भरीथी अपनी परियों कोआज्ञादी कि इसको पकड़के मारो महाराज मैं मारेडरके वहांसे भागके आपकी शरण में आयाहूं यह सुनतेही बादशाह आग होगया और तीस हज़ार परीज़ादोंको आज्ञादी कि मीना परीज़ाद को उसकी स्त्री बेटी और उसमनुष्य समेत शीघ्र मेरे पास लेकेआवो

यह आज्ञा पातेही सबलोग दौड़परे और मीना परीज़ादके घर को घेरलिया वह दीब इस बातको जानताही नथा यह सुनतेही भौचक्कासा रहगया और कहने लगाकि यह क्याकारणहै तब उन्होंने कहाकि तेरी बेटी एक बादशाहके क़ैदीको चुरालाई है और अपनेबाग़में उसकेसाथ विहारकरतीहै यहसुनतेही वहडर-गया और जो बाग़में आयके देखातो सत्यही हसना एक आदमी केसाथ विहारकरती है यह देखतेही घबड़ाया सा होगया और दोनोंहाथ अपनीबेटीके मुंहपरमार के कहनेलगा कि हेचाण्डली तूनेयह कैसा काम कियाकि माता पिताका नाम धराया और तेरे पकड़नेको बादशाह की फ़ौज आन पहुंची अब सचेतहो यह सुनतेही वह सहमगई और मारे डरके थर २ कांपने लगी और आंखोंमें आंसूभरलाई इतनेमें बादशाह कीसेनाआयपहुंची और सबको पकड़ बादशाह के पास लेगये तब सेनापति बादशाह के सम्मुख खड़ाहोके प्रार्थना करनेलगा किमहाराज मीनापरीज़ाद आपकी आज्ञानुसार अपने लड़केवाले समेत हाथबांधे बिनारोक टोक चलाआया बादशाहने आज्ञादीकि मीनापरीज़ाद कोमेरे सम्मुख लावो जब मीनापरीज़ाद बादशाह के सम्मुख आया तब कहनेलगा कि महाराजके जीव कीजय मुझे इसबात का कुछ भी हाल नहीं मालूम था औरमैंतो आपका सबप्रकार आज्ञाकारी हूं बादशाह ने दयालुहोके अपराध क्षमा कियाजब उनलोगों ने हातिम को बादशाहके सम्मुख खड़ाकिया तब बादशाहने देखा कि अत्यंत दिव्य स्वरूप और युवापुरुष है बड़ी प्रीति से निकट बैठार कुछ बातें करके पूछनेलगा कि हेजवान तू मनुष्य होके मेरे राज्यमें क्योंकर आया और कौनसा काम तुझेथा जिसके लिये इतना कष्ट और दुःख भोगता यहां आया है तब हातिम ने कहा कि महाराज फरदकाश बादशाह ने आपके यश और कीर्ति का ऐसा बखान किया कि मुझमें उसके फिर कहने की सामर्थ्य नहीं है वह सुनतेही इस दासका चित्त आपके दर्शनों को बहुत ही ललचा इसीसे आप के पास तक पहुंचा यह सुनके बादशाह ने पूछाकि हमारे देशमें तुझे कौन लाया हातिम ने कहा कि मुझे फरदकाश बादशाहके देव यहां लाये फिर बादशाहने पूछा कि हे जवान तेरी जान में कोई वैद्य मनुष्यों में प्रवीण है तब हातिम ने कहा कि आपको वैद्यसे क्या प्रयोजन है क्या आपके देशमें वैद्य नहींहैं तब बादशाहने कहाकि हमारी जातिके वैद्योंकी चिकि-

इससे कुछआराम नहीं होता मैंनेबहुत औषधि का सेवन कराया है क्योंकि मेरे बेटेकी आंखे बहुत दिनों से दुखती हैं सो मारे दुःख के व्याकुल रहता है और अन्धा होने के निकट पहुंचाहै तब हातिम ने कहा कि जो आप के बेटे की आंखें अच्छी होजावें और पीर भी जातीरहै तो मुझे उसके बदलेमें क्या पारितोषिक दीजियेगा बादशाह ने कहा कि मुंह मांगा पावेगा तब हातिमने कहा कि इस बात को प्रण करके सौगन्द खावो तो मैं बादशाहजादे की आंखोंकी चिकित्सा करूं और जैसी आंखें थीं वैसीही होजायँ बादशाहने कहामैंने तेरी बात मानी तब प्रातःकाल होतेही हातिम ने वह सुहरा अपनी पगड़ी से खोल पानी में घिस उसकी आंखों में लगाया तो सांझ होते होते उसकी आंखों की लाली-जातीरही और पीरभी मिट गईपरन्तु दृष्टि न हुई तब बादशाह नेकहाकि हेप्यारे पीर तो जातीरही पर दृष्टि नहींहै तब हातिम नेकहाकि अन्धकार में एक वृक्ष है और उसको नूरेज अर्थात् दृष्टि प्रकाशककहतेहैं जो दोतीन बूंद पानी उस वृक्ष का मिले तो इसकी आंखों में दृष्टि यथापूर्वक होजाय इस बात के सुनतेही बादशाह ने कहा कि हेपरीजादो सत्यकहो तुममेंसे कौन ऐसा है जो वहां जाके उस वृक्षका पानी लावे यह सुनतेहीसबनेकानों पर हाथ धरे और गरदन नीचीकर कहनेलगे कि महाराजवह राह ऐसी विकट है कि जीव जाने का डर है और वहां भूतप्रेत पिशाच रहते हैं वहां हम मेंसे कोई नहीं जासक्ता और वे लोग ऐसे बलवानहैं किहमको किसीभांति सजीवनछोड़ेंगे आगेआपके आधीन है जैसी आपकी आज्ञा हो सो करैं इतने में हसना परी बोली कि महाराज जो आपमेरा अपराध क्षमाकरैं और इसमनुष्यकोभी मुझे देवें तो मैं उसवृक्षका पानीलाऊं बादशाहनेकहा किहमने तेराअपराध क्षमाकिया और वहसीमातेरे पिताकोदी और इसमनुष्यकोभी तेरेपिताके आधीनकिया तब हातिमबोला किहे हसनापरी जो तू चाहे कि सदातेरेही पासरहूं तोमैं नहीं मानताहूं परहां इस बातको तू मानेकि जबतक मेरामन माने तब तकतेरे पासरहूं और जब चाहूं तब चलाजाऊं तो होसक्ता है तब हसनापरी ने कहा कि हे जवान मुझेभी कुछ काम और नहीं है परन्तु इतनाहैकि कुछदिनतेरेसाथ विहार करके अपने चित्तको प्रसन्नकरूं फिरजहां तेरामन मानेवहां जानातुझे कोई नरोकेगा तब हातिमने कहा कि तौतो कुछडरनहींहै मैंनेभी माना अब तू

शीघ्रता यह सुन हसनापरी कितेक परी अपने साथ लेके वहां से बिदा हुई और चलते २ चालीस दिनमें जुलमात अर्थात् अंधकार में जापहुंची तोक्या देखतीहै कि एकवृक्ष ऐसा बड़ाहै कि उसकी चोटी आकाशतक पहुंचीहै और पानी उससे टपकता है हसना परीने एक शीशाउसकेनीचे धरदिया थोड़ीदेरमें वह शीशा पानी से भरगया वहउसका मुहबांध चटवहांसे लेउड़ी इतनेमें हलफ़ास देवोंका चौकीदार जो हजारदेवोंको साथलेके उसवृक्षकीचौकी देताथा आपहुंचा और हसनापरी भी बहुत शीघ्रगामीथी ऐसी भागी कि उसकेहाथनलगी चालीसदिनमें बादशाहके सम्मुखआ विराजी और कहनेलगी कि महाराज आपके प्रतापसे यह दासी पानीले आई और वहां के चौकीदारोंके हाथ न आई यह कहके वहपानीका शीशाबादशाहके आगेधरदिया बादशाहने बड़ेप्रेमसे हसनापरीको अपने गलेमें लगालिया और वह पानीहातिम को दिया हातिमनेचटवह मुहरा उसपानीमें घिसके उसकी आंखोंमें लगाया और पट्टी चढ़ादिया सात दिन तक आंखों में पट्टी बांधी रही जबआठवेंदिन उसकीआंखोंसे जोपट्टीखोली तो जैसीआंखें लेकेमाताके पेटसेपैदाहुआथा उसीभांतिकी आंखेंहोगईं तबबादशाहजादेने अपनेमाता पिताके दर्शनकिये और अति हर्षितहोके हातिम के पांवोंपर गिरपड़ा हातिम ने उसको अपनी छाती में लगालिया तबबादशाहने उसकेबदलेमें अमितधन हातिमकेसामने धरायहदेख हातिमनेकहा कि हेप्रजापालकनीतिरत मैं निहंगहूं इतने जवाहिर और मोहर और रुपया लेके क्या करूं औरकहां लेजाऊं हां जो आपअपने परीजादोंकेहाथ फरदकाश बादशाहके यहां पहुंचवादें तो वहमेरे मकानपर पहुंचवादेगा तबबादशाहने अपनेपरीजादोंसे कहा कि जबयह जवान अपने शहरको जानेलगे तब यह सम्पूर्ण धन इसके साथ लेजाना तब फिर हातिम प्रार्थना करनेलगा कि महाराज यह जो धन आपनेदिया सोतो आपकी दयाहै पर जो आपने देने को कहा है सो दीजिये तब बादशाहने पूछा कि तू कौनवस्तु मांगता है तब हातिम ने कहा कि जो यह मुहरा आपकेहाथमेंहै सोमैं मांगताहूं औरजोआपअपनीबातका प्रतिपाल करतेहैं तो मुहमांगा पाऊं यह सुनके बादशाह ने कहा कि मालूम होताहै कि यहमुहरा तुझसे हारससौदागरकी बेटी ने मांगाहै अच्छा मैं भी तुझसे कहचुकाहूं ले जब बादशाह ने वह मुहरा हातिम को दिया तो कहा कि हेजवान अब तू यह मुहरा

उसको देगा तो मैं उसके पास यह मुहरा रहने न दूंगा जैसेबनेगा तैसे मँगवालूंगा तब हातिमने कहा कि जब बिरही का काम बन-गया और अपनीप्यारीसे मिलगया तब इसका जोचाहेसोलेजाय निदान जबहातिमने उसमुहरेको अपने भुजापर बांधा तब सम्पूर्ण सृष्टिको दबीछुई द्रव्यठौरही ठौर दिखाई देनेलगी तब हातिमने अपने मनमें कहा कि हारससौदागरकी बेटीने इसीलियेमांगाहै निदान जबहातिम बादशाहसे बिदा होनेलगा तो अपने नौकरों से कहा कि तुम हातिम के साथ जावो जब हारस सौदागर की बेटीका बिवाहहोजाय तबतुमइससुहरेको जैसेबनेतैसेचुरायलाना जब हातिम बादशाहसे बिदाहुआ तब कुछ दिन हसनापरीकेघर बिहारकिया उससे जब बिदाहुआ तब वह सम्पूर्ण द्रव्यपरीजादों ने अपने ऊपर लादली और हातिमके साथचले औरअपनीसीमा पर पहुंचाके लौटगये तब वे देव जो हातिम के साथ आये थे देख-तेही दौड़े और हातिमको देखके बहुत हर्षित भये और हातिम को सब धन समेतथोड़े दिनोंमें बादशाहफ़रदकाशके पास लेआये वह उठके हातिमसे मिला और उसकी मनुसाई की बड़ी बड़ाई करनेलगा हातिम रातभर वहां रह सबेरे उससे भी बिदा हुआ और थोड़े दिनोंमें उसखोह पर आन पहुंचा तब वह सम्पूर्ण धन उन देवोंको देके बिदा किया फिर शहर सूरत में आपहुंचा और हारससौदागरकी बेटीके पासगया और वहसुहरा उसकोदिया वह उसके पानेसे बहुत प्रसन्न होके कहनेलगी कि ऐ सतपुरुषबीर अब मैं तेरी हूं जो चाहो सो करो तब हातिम ने कहा कि मेरी कुछ यह इच्छानहींहै कि तेरेसाथ बिहारकरूं परन्तु वहजोपुरुष बहुतदिनोंसे तेरे बिरहमें दुखीहै उसको अब तू अपना पतिसमझ तब उसनेकहा कि मैं तो तेरेवशमेंहूं जिसको चाहे उसकोदेदे तब हातिमने उसके पिता हारस को बुलाया औरउसके सामने उस सौदागर बच्चाके हाथमेंउसकी बेटी का हाथ देदिया और हारस से कहा कि अब तू इसका अपना बेटा समझ हारस ने भी शीघ बिवाहकी तैयारीकी और अपनीबेटी का बिवाह उस सौदागर बच्चासेकरदिया फिरदशदिनके उपरान्त वहसुहरा उसलड़कीके पाससेखोगया तबवहरोनेपीटनेलगी तो हातिमने कहा कि काहे को ऐसाबिलाप करतीहै मैंने तेरे पतिको इतनीद्रव्यदीहै कितवह सातपीढ़ी तक न चुकैगी इसीभांति दोचार बातें कहफिर वहांसे बिदा हुआ और हुस्नबानूके प्रश्नका उत्तरढूंढ़नेलगा कुछ दिनमें

नानाभांतिकेकष्ट औरविपत्ति भोगताहुआ एक नदीकेकिनारेपर आपहुंचा तो वहांएकबड़ाभारीमहल बादशाहोंके रहनेके योग्य दिखाईपड़ा औरदेखा तो उसमहलके द्वारपर लिखाहै कि नेकी कर औरनदीमेंडाल हातिम उसको पढ़केबहुतहर्षितहुआ और ईश्वर का धन्यवाद करके कहनेलगा कि अब मेरा काम बनगया यह कहता हुआ थोड़ा और आगेबढ़ा तो देखा कि बहुत से दास और दासी उस घरसे निकले और हातिमको उसकेभीतर लेगये तो हातिम क्या देखता है कि एक पुरुषवृद्ध सौवर्ष की अवस्थाका तख्तपरबैठाहै हातिमको देखतेही उठकेमिलाऔरभांति२ के षट-रसव्यंजन मँगाकेहातिमको भोजनकराये जबहातिम खाचुका तब उसबूढ़ेसे पूछाकि आपने अपने द्वारपर यहकाहे को लिखरक्खा है कि नेकी कर और नदी में डाल तबवह बूढ़ा इस प्रकार कहने लगा कि मैं बटपारथा और रातको पथिकों को लटाकरता और दिनको मेहनत कियाकरताथा और साँझके समयदोरोटी घीसे चुपरके उनपर शक्करधरके नदीमेंछोड़के यहकहता कि यहकाममैं परमेश्वरके लिये करताहूं कुछदिन इसीभांति बीते इतनेमें मैं रोग ग्रसितहो मरनेके निकटपहुंचा जबएक दिनमैं बहुतअचेत होगया तोयहजीव शरीरसे निकलगयातो क्या देखताहूं कि एकआदमी मेराहाथ पकड़ेनर्कको दिखाताहै और कहताहै कि तेरे रहनेका ठौर यहहै ज्योंहीं मुझे उसने गिरानाचाहा त्योंहीं धर्म्मराज के दूत आपहुंचे और मेराहाथ पकड़ के कहनेलगे कि हम इस को नर्कमें न जानेदेंगे क्योंकि यहनर्कके योग्यनहीं किंतु यह वैकुण्ठका अधिकारीहै यहकहतेहुये मुझे वैकुण्ठ को लेगये इतनेमें एकबड़ा अधिकारी सा उठके कहनेलगा कि इसको क्योंलायेहो इसकी आयुबलके अभीदोसौवर्ष बाकीहैं इसीनामका जो दूसरा मनुष्य है उसकोलाओ यहबात सुनकेवेदोनों जनमुझे यहांपहुंचा गये और कहनेलगे कि हम वेदोनों रोटीहैं जोतू ईश्वर की राह पर पानीमें छोड़ाकरताथा इतनेमेंमुझेचेतआयातो उठबैठा औरपर-मेश्वरकी स्तुति करनेलगा कि हेपरमेश्वर तूही सृष्टि का पालन करता और हरताहै और तूहीमुझे चाहे जिस प्रकारसे भोजन दे अबमैं निःकर्महोकर बैठताहूं मेरे अपराधों को क्षमाकर निदान जबमैंदिनको अपनी स्वाभाविक रीतिकेअनुसार वेदोरोटी नदीमें छोड़नेकोगयातो एकसौ दीनार (अर्थात् एकप्रकारका सिक्काजो अरबके देशमें चलताहै) मेरेसामने पानीसे निकलआये मैंने उनको

उठालिया औरनगरमेंढँढोरापिटवादियाकि जिसकिसीकालाल खोगया हो तो मैंने पायाहै मेरेपास से लेजावे पर किसीने उत्तर न दिया फिरदूसरे दिनजब रोटीछोड़नेको गयातो फिर एकसौ दीनार निकले उनकोभी मैं उठालाया जबदिनबीता और रात हुईतो स्वप्नमेंदेखा कि एक पुरुषखड़ा मुझसेकहताहै कि हेपरमेश्वरके दास तैंविदोरोटी आड़ेआई अब मुझे परमेश्वरने आज्ञा दीहै कि एक सौदीनार तुझेदियाकरूं और तू उनको कुछपरमेश्वरकी राहमें खर्चकर और कुछ अपने खर्चमेंला इतनेमें मेरीआंख खुलगई तोमैंने परमेश्वरका धन्यवादकिया और यहमकान बनवायाऔर उसकेद्वारपरयही लिखदिया किभलाईकर और नदी मेंछोड़औरमुझेअबभी सौदीनार निरन्तर मिलेजातेहैं सोमैंदीन दुखी औरपथिकोंको देताहूं और भोजनकरताहूं और परमेश्वर का भजन करताहूं अबमेरी आयुवर्ष के सौवर्ष और रहेहैं और सौवर्ष इसमकानको बनवायेहुये उससमय से हे प्यारे मुझेनिश्चय होगयाकि ईश्वरनेमेरा अपराध क्षमाकिया और इतनीउमर बढ़ाईऔर बिनमांगे भोजनदेताहै उससमयसेमैं बहुतहर्षित रहता हूं कुछहर्ष विस्मय नहीं करता ईश्वर सबको ऐसाही उपदेशकरै हातिमने यह सुनके ईश्वरका धन्यवाद किया और तीनदिनवहां रहके चौथेदिनवहांसे बिदाहो शाहाबादकी राहली थोड़ेदिनों के पीछे एकबनमें आनिकला तो क्या देखताहै कि एक कालासांप किसीश्वेत सांपकेसाथ एकवृक्षके नीचेलड़ताहै और ऐसा मालूम होताहै कि कालासांप श्वेतसांपको मारडालेगा इतने में हातिम ने डाटाता कालासांप डरके मारेछाड़के भागगया और यहदीन थकगयाथा सो भागने की तो सामर्थ्यथी नहीं उसीवृक्ष के नीचे ठहरकर चारों ओर घबड़ायासा देखनेलगा तब हातिम ने कहा कि हेसर्प तू धीरजधर जबतकतू संतुष्टनहोगा तबतकमैं तेरे पाससे न जाऊंगा जबथोड़ी देरमें वहसँभला तो उसवृक्ष के ऊपर चढ़के मनुष्य का स्वरूप धरके हातिम को झुक २ के सलाम करने लगा हातिम यह देखके बड़े आश्चर्य में हुआ और सोचने लगा कि हे परमेश्वर यह कौन मायावी है तबवह सांप बोला कि हे हातिम तू आश्चर्य न कर मैं जिनहूं और इसशहरका बादशाह मेरेपिता का दासहै जो मेरे साथ युद्धकरताथा यह कितनेही दिनोंसे दृढ़ा मुझसेशत्रुता रखता है आज घात पाकेमुझे मारनेकी यत्नमें था कि त्योंही ईश्वरने तुझेयहां पहुंचाके तेरेद्वारा मेरा जीव बचाया तब

हातिम ने कहा कि अच्छा अब मैंने भी जाना जहां तेराजी चाहे वहां जा क्योंकि मैं भी कामसे हूं बज़त देरनहीं घमसक्ता तबउस ने कहाकि हे दीनदयाल मेराघर यहां से बज़त ही निकट है जो आप दया करके मेरे घरपर चलिये तो मैंभी पावनहोऊं निदान हातिम उसके साथ २ उसके घरचला थोड़ीदूर चलके एक सेना मिलीतो हातिमने पूछाकि यह किसकी सेनाहै उसनेउत्तरदिया कि आपहीकीहै जब मकानपर गयातो हातिमको एकरत्नजटित सिंहासनपर बैठाल भांति २ के षटरस भोजनकराये और रातभर नाचरंग में बिताई सबेरा होतेही उसने उस दासको बध किया और हातिम ने बिदा मांगी तब बज़तसी द्रव्य हातिम के आगे लाधरी हातिमने कहा कि मेरेकुछ काम की नहीं है यह कहके शाहाबादकी ओरचला ढाईबर्ष और पन्द्रहदिन पीछे शाहाबाद में पहुंच सीधासराय में मुनीरशामी के पास चलागया यह समाचार किसीने ज़ुल्नबानूको पहुंचाया उसने ततकालही हातिमको बुलवालिया और एकमकानमें परदेके बाहर हातिमकी कुरसी डलवादी और चिलमन के द्वारा हातिमसे पूछनेलगी कि हे जवान तू कुशलपूर्वक आया कह कौन समाचारलायाहै तब हातिमने जोकुछ उसबूढ़ेसे सुनाथा सोसबआद्योपांत ज़ुल्नबानूसेकह सुनाया कि इस हेतुसे उसने यहअपने द्वारपर लिखके लगादिया है ज़ुल्नबानू यहसुनके बज़तप्रसन्नहुई और हातिमकी बज़तबड़ाई करनेलगीकी हेजवान तेरेसिवा यहकिसीको समार्थ्य नहींहै कि कोई इसको शोधता तिसपीछे बज़तसे यारमेवा और मिष्टान्न के हातिम के पास सरायमें भेजदिये वहां मुनीरशामी के साथ बैठके हातिमनेभी भोजनकिये और ईश्वरका धन्यबादकरके कहनेलगा किहे मुनीरशामी तू घबड़ामत ईश्वरकी दयासे मैं थोड़ेही दिनों में तुझे तेरीप्यारीसे मिलाये देताहूं इसभांति मुनीरशामीको समझाबुझा के ज़ुल्नबानू के पासगया और कहनेलगा कि अब बता तेरा कौन सा प्रश्नहै मैं उसको भी शोधूं तब ज़ुल्नबानूने कहा कि तीसरा प्रश्न यह है कि कोई बनमें खड़ायह कहता है कि किसी से बदी न कर जो करेगा तो वहीपावेगा इसबात को शोध ला॥

तीसरा प्रश्न हातिम के जाने और इस बात की ख़बरलाने का कि किसी से बुराई मतकर जो करेगा तो वहीपावेगा॥

निदान इसबातकोसुन हातिमवहांसे बिदाहो ईश्वरके भरोसे पर एक बनकी राहली तो एक महीना पीछे एक पहाड़ आस-

मानसे बातें करता दिखाई पड़ा और जब उसके नीचे पहुंचा तो एक बोल रोनेका सुनाईदिया यहसुन हातिम दायें और फिर उठायके देखनेलगा परन्तु कुछ दृष्टि न पड़ा जबउसके निकट गया तोक्या देखताहै कि एकवृक्ष छायादार जिसकेनीचे संगमरमरकी सिलकेऊपर एक युवापुरुष दिव्यस्वरूप रोगियों कीसीसूरत उस वृक्ष की डाली पकड़े खड़ा है और आंखें बन्द किये हाय मार २ बारम्बार रोय२के यही कहताहै कि शीघ्र आवो अबतेरी बिरहमें धीरजनहींरहा यहदेख हातिम बहुत विस्मितहो कहनेलगा कि यह क्या भेदहै जब निकटगया तो पूछा कि हे जवान तेरी यह दशा कैसेहुई है तू अपना वृत्तान्त कह वह अपने उसीध्यानमें था उसने हातिमकी बातका उत्तरनदिया तब हातिमने दूसरी बेर पुकारा तबभी वह कुछनबोला तबफिर हातिम ने तीसरी बेर पुकारा कि हे मनुष्य मेरे जान तू बहरा है मैंने तुझे तीनबेर पुकारा और तैने उत्तरनदिया यहसुनके उसने आंखेंखोलके पूछाकितूकौनहै कहांसे आयाहै और तेरा कौन काम है यह सुनके हातिम ने कहा कि मैं मनुष्यहूं और फिरते२ यहां भी आनिकला अबतू अपना हालकह कि तू क्यों रोताहै और यहांकाहेको खड़ाहै तब उसनेकहा कि हे पथिक तेरेसमान यहां कितेकआये और मेरादुःख भी पूछा परन्तु किसीने मेरेरोगकी चिकित्सा नकरी इसलिये अपनाहाल कहना कुछ कामनहीं और तू काहेको वृथा दुःखदेताहैतब हातिमने कहा कि जबतैने बहुधा मनुष्योंसे अपनाहाल कहाहै तो दयाकरके एक बेर मुझेभी सुनादे क्योंकि मुझेभी सुननेकी अभिलाष है तब उसने कहाकि अच्छा तू मेरेपास बैठजा मैं तनकचेत में आऊंतो तुझ से अपना हालकहूं जब हातिम उसवृक्षकेनीचे बैठातब वहइसभांति अपनी कहानी कहनेलगा कि हे पथिक मैं दीन एक सौदागर हूं मेरा यूथ हूमको जाताथा और मैं उसके साथ यहां आन पहुंचा और सबेरे उससेबिछुरके इसपहाड़पै आया वहां मैंने अपना नित्तनिमित्त किया फिरइस वृक्षकेनीचे आया तो एकचन्द्रमुखी स्त्री मेरीदृष्टि पड़ी मैं उसके देखतेही मूर्छित होगया और अचेतहोके गिरपड़ा तबउसने मेराशीशउठाके अपनी जंघावों परधर मेरेमुख पर गुलाब छिड़कनेलगी जबमैं चेतमें आया तो अपनाशीश उसके जांघपर देखके बहुत प्रसन्नहुआ और उसके नेत्रोंकी कटाक्ष मेरे कलेजे में वारपार होगई उसी घाव की पीर के मारे उठके पूछने लगा कि हे प्यारी तू कौन है और इस जंगल उजाड़में अकेली तू

क्यों आईहै तबउसने कहाकि मैं परीहूं और यहपहाड़ और किलामेरा घरहै मैं तेरे समान पुरुष ढूंढ़तीथी सो ईश्वरने आज मिलायदिया हेभ्राता मैंऐसी २ मीठी प्रीतिबर्द्धक बातेंसुनके अपने धन और गेहकी सबसुरति भूलगया निदान उसी भांति वह मेरे साथबिहार करनेलगी और मेरेनयन चकोर उसप्यारी मनहारी के मुखारविंद इंदुको निहार सुखलेने लगे और मनमधुकर उस के कमलनयनों के मकरन्द पर लोभ गये निदान इसीभांति जब तीन महीने बीते तबमैं कहनेलगा कि हेप्यारीयहांवनमें काहेको रहती है किसी नगर में चलकर रहैं तब उसने कहा कि अच्छा जैसी तेरी मतिहो मैंभी उसमें प्रसन्नहूं परन्तु जो तू इसीमेंप्रसन्न है तो मैं अपने घरके लोगोंसे मिलआऊं और जब तक मैं न आऊं तब तक तू कहीं जानामत तब मैंने उससे पूछा कि अच्छा मैं तो कहीं न जाऊंगा परन्तु यह तू मुझसे ठीक बतादे कि कब आवेगी तब उसने कहा कि मैं सात दिन पीछे आऊंगी और जो कदाचित् तू मेरे आने के पहिले चला जायगा तो जीतेजी पछितायगा इसलिये हे भ्राता मुझे अब उसके आसरे में सात बर्ष बीतिगये हैं और वह आजतक नहीं आई और मैं उसके खोजमें कहीं जाभी नहीं सक्ता क्योंकि वह कहीं मेरे पीछे आवे और मुझे न पावे तो कोजाने मेरा कौन हालकरै यद्यपि यहभी न हो तो मुझमें कहीं खोजनेकी सामर्थ्य भीनहींहै और मेरेखाने पीनेकायहहालहै कि इसी वृक्षके फलखाता हूं और इसीसोतेका पानी पीताहूं और क्या करूं न पृथ्वीमें ठौर है और न आसमान निकटहै जो समाय जाऊं और पांवों में सामर्थ्य नहीं हैं जो कहीं जाऊं इसलिये यही शब्द कहा करता हूं क्योंकि पृथ्वी तो कठोर चित्त और आसमान शून्यहै किससेकहूं जो मेरीसहायताकरै यहसुनके हातिम आंखों में आंसूभरके कहनेलगा कि हे दीन बिरही जो तुझे उसने अपने घरका पता बताया है तो मुझसे कह तब उसने कहा कि मैं केवल इतनाहीं जानता हूं कि उसके कुनबाके लोग अलकापर्वतपर रहते हैं परन्तु यह नहीं मालूम है कि अब कहां हैं तब हातिम ने पूछा कि तुझसे बिदाहोके किसतरफको गईथी तब उसनेकहा कि जाने के समय थोड़ीदूर तो दाहिनी ओरको गई फिर नहीं दिखाईदी कि कहां लोप होगई तब हातिमनेकहा कि जो तू उसके बिरह में दुखी है तो मेरेसाथ चल कहीं न कहीं उसको ढूंढ़हीलेंगे तब उसने कहा कि मैं तेरेसाथ जाऊं और वह यहां आवे और मुझे

न पावे अथवा तुझीको यह ठौर फिर न मिले तो मैं दोनोंओर से गया जैसी कि कहावत प्रसिद्ध है कि (दोनों दीनसे गुज़रे पांड़े न यहांके हलुवा न वहांके मांड़े) इसलिये मैं यही उचितजानता हूं कि जो उसको मिलना है तो यहांहीं मिलैगी नहीं तो उसीके आसरेमेंयहांहींमरजाऊंगा यहसुनकेहातिम आंसूभरकेपूछनेलगा कि हेप्यारे जो तू उसका नाम जानता है तो बता उसने कहाकि उसको अलगनपरी कहते हैं तब हातिम बोला कि हे जवान अब तू धीरजधर मैं अलकापर्वत पर जाताहूं कि तो उसको तेरेहीपास लाऊंगा अथवा तुझीको तेरीप्यारीके पासलेचलूंगा परन्तु पहिले उसका घरखोजके तेरेपास आता हूं यहसुन वह बोला कि वाह आजतक तो मैंने ऐसा आदमी नहीं देखा कि अपना छोड़ दूसरे का कामकरै काहेको भले मनुष्य बात बनाता है जो अपना काम कर यहसुनके हातिम ने कहा कि हेप्यारे मैंतो अपना शीशहथेलीपर लिये फिरताहूं कि जिसमें किसीकेकामआवे औरजिसका जी चाहे सोलेवे और चाहे जीवमेरा जातारहै परन्तुकामजिसका कहा उसकाकरहीके छोड़ूंगा तुमचाहो मेरे कहनेको सांचजानो चाहो झूठ निदान इसी तरहकी दो चार बातैंकर हातिम उससे विदा हुआ और जिस तरफको वह परी गईथी उसी ओरको चल दिया थोड़े दिनमें उस पहाड़को नांघके दूसरे पहाड़ पर जा पहुंचा जो उस पर चढ़ा तो क्या देखता है कि बहुतसे वृक्ष मेवाके और बहुतसे फूलोंके लहलहा रहेहैं और उनके आगे एक जगह बहुत स्वच्छ दृष्टि पड़ी जब वहां गया तो देखा कि चार वृक्ष हरे और बहुत घने लगे हैं तो शीतल छाया देख वहां एक मकान में बड़ी खुशीसे गया और वहांजाके जो लेटा तो जातेही सोयरहा जब सन्ध्या हुई तो चार परी आईं जब मसनद बिछा के बैठीं तब हातिमको देखके कहनेलगीं कि यहकौनहै और यहां कैसेआया है इससे पूछना चाहिये यह आपसमें बतलाके हातिम को जगायके पूंछने लगीं कि हे मनुष्य तू यहां किस तरह से और काहेको आयाहै हातिमने ज्योंहीं उनका बोलसुना त्योंहीं चौंक पड़ा तो क्या देखता है कि चार परी आभूषण भांति २ के पहरे उसके सिरहाने खड़ीहैं यह उनको देखके उठबैठा और कहनेलगा कि यहां मुझको मेराईश्वर लायाहै और मैं अलका पर्वत पर अलगन परीको देखनेको जाताहूं और मेरे जानेका भी यह हेतु है कि वह एक आदमीसे सात दिनकी अवधि बदके आई थी सो सात

बर्षसे आज तक नहीं गई और वह अनाथ दीन उसके बिरह में मरनेके निकट पहुंचा है इसलिये मैं जाताहूं कि उसको समझाऊं क्योंकि किसीसे अवधि बदना और फिर उसका प्रतिपालन करना इस कामका परिणाम अच्छा नहीं इस बातको सुनके वे हँसके कहनेलगीं कि अलगनपरी तो अलका पर्बतकी शाहज़ादी है उसे भला कौनसा कामथा जो किसी मनुष्य से मिलनेकी अवधि बदती हमको तो तू बावला सा लगता है जो तू अलका पर्बत पर उसके देखने को जाताहै और यहभी नहींता तू वहांसे सजीव नहींलौटेगा तबहातिमने कहाकि होनीहोगी सो तोहोगी मैं तो बिनागये नहींमानूंगा तबउन्होंने कहा कि जोतू आजकी रात हमारेघरमें बिहारकरै तो सबेरे हमतुझे अलकापर्बतकी राह बता दें हातिमनेकहाकि बहुतअच्छा जैसेचाहं तैसेयहकामबने निदान उसरातको तो उनकेसाथ बिहारकिया और सबेरा होतेही उन परियोंको साथलेके अलकापर्बतकी राहली जबसातदिनतक उनके साथ चलागया तबएक जगहसे वे कहनेलगीं कि बस आगे हमनहीं जायंगी क्योंकि अबआगे हमारी सीमानहींहै अबतू सीधाचलाजा कईदिनमें अलकापर्बत पर पहुंचजायगा हातिम उनसे बिदाहोके आगे चलातो एकमासबीते एक दुराहेपर जापहुंचा और रातको वहांहीं सोरहा जबचारघड़ी रातबीते एक गांवकीतरफसेरोनेका बोलसुनाई दियातो वहसुनके हातिम अपने मनमेंकहनेलगा कि हे हातिम तू ईश्वरकी राहपर कमर बांधके किसी के दुःखको सुनके उसकी सुध न लेवे तो ईश्वर के आगे क्या उत्तर देगा और इससृष्टि में तेरानाम कौनलेगा इसलिये अपने सुखको छोड़ और इस दुखितकी सुधले और जो तेरेहाथसे इस संसारमें किसी का काम बने तो तू भी निस्संदेह इस सृष्टिमें भलाईपावेगा यहसोच के उठखड़ा हुआ और रातभर चारों ओर ढूंढ़ता फिरा सबेरा होतेही जहां से वह बोल सुनाई पड़ाथा वहांजाय पहुंचा तो क्या देखताहै कि एक जवान स्वरूपवान नंगा रोयरहाहै हातिमने पूंछाकि हेजवान तूकौनहै और तुझेकिसदुःखदाईने सतायाहै और इसबनमें डाला है तू मुझेअपना हाल कहकर सुनावे जब उसने हातिमको अपनी ओर दयालुपाया तो और भी अधिक रोय २ कहने लगा कि मैं सिपाहीहूं अपने घरसे रोजगारके लिये निकलाथा सोराह भूलके यहां आयपहुंचा और इस नगरनिवासियों से पूछने लगाकि इस नगरके हाकिमका क्या नामहै इतनेमें किसीने कहा कि इसनगर

का हाकिम मायावीहै मैं इसबातके सुनतेहीभागा और एकओर बनकी राहली तो दैवयोग से राहमें एक बाग अतिही रमणीक दिखाई दिया हेभ्राता मेरामन उसके देखनेको बहुत चलायमान हुआ निदान मैं घोड़ासे उतर उसके भीतरगया तो क्यादेखताहूं कि एकझुण्ड परियोंका सुनहरे कपड़ेपहिने दिखाईदिया तब मैंने अपने मनमेंसोचा किहो न होतो किसी राजाबाबूकी स्त्रियां यहां फुलवाई देखने को आईहैं इसलिये यह बातभलीनहीं हैकि किसी की स्त्रियों को कुदृष्टिसे देखूं इस बातको शोचके मैं भीतरसे निकलनेलगा तो उनस्त्रियोंने अपनी मालिकनसे कहा और वह मसखर जादूकी बेटीथी वह अपने ठौरसे उठकेमुझे एकसजेहुयेमकान में लेगई और मेरेसाथ बैठके प्रेमकीबातें करनेलगी इतनेमें उस काबाप उसबागमें आयपड़ा तो पहिलेतो मेरेघोड़ेको देखकेपूछा कि यह घोड़ाकिसका है किसी ने मारेडरके उत्तर नदिया फिर आगे बढ़के मुझेअपनी बेटीकेपास जोबैठादेखा तो मारेक्रोधकेआग बबूला होगया और ज्योंहीं चाहाकि अपनी बेटीका शिरपकड़के देमारे त्योंहींवह मारे डरके चिल्लाई और कहने लगी कि मेरा कुछ अपराध नहींहै पहिले अपराध का निर्णय करलो तिस पीछे जो चाहोसो करो यह सुनकर वहठहर गया इतनेमें दाईने आयके कहा किमहाराजअबशाहजादी युवाहुईहै और इसशहरमें आप के दामाद होनेके योग्यकोई नहींदिखाई पड़ता और यहकिसी बड़ेआदमीका बेटाहै और बड़ाही सुशील दिखाईदेताहै क्योंकि वह मारेलाजके अभी बादशाहजादी सेबोलाभी नहीं इससेउचित है कि इनदोनों का बिवाह करदो और जो इन निर्दोषों को मारोगे तो लोकमें तो नाम धराजायगा और परलोकमें भी ठौर न पावोगे और इनकी हत्या तुम्हारे ऊपर रहेगी उससमय तुम ईश्वरको क्या उत्तर दोगे यहसुन उसने अपनीबेटीसे बिवाहके विषयमें पूछा तो उसने कहाकि मैंनेआज तककिसी अनचीन्हेकोनहीं देखा पहिले इसीको देखाहै इससे मैंने इसीको अपना पतिमाना यह सुनके उसनेकहा कि बहुत शुभ पर पहले यह मेरे तीन बचन पूरेकरै तबमैं बोला कि जो आपकी आज्ञा हो सो करूं तब उसने कहा कि एक तो यह कि एक जोड़ा परीछेजानवरों का मुझेलादे और दूसरे यह कि खालसांपका मुहराला दे और तीसरे यह कि खौलते घी की कड़ाही में स्नान करले तब मैं इसका बिवाह तेरे साथ करदूंगा मैं यह सुनके घबड़ाया और इसी बहाने से वहां से

निकल भागा और दो बर्षसे इसी बनमें रोताफिरताहूं नतो भूखों प्यासों के मारे इतनी सामर्थ्यहै जो अपने देशको जाऊं और न इतना हांसक्ताहै कि उसकोतीन बातपूरी करके अपनी प्यारी से मिलूं यहसुनके हातिम बोलाकि हेजवान तू धीर्यधर मैंउसकी तीनों बातें पूरी करके तेरी प्यारीसेतुझे मिलादूंगा क्योंकि ईश्वर नेतुझे इसी कामको पैदाकियाहै कि प्रत्येक पुरुषके दुःखमें काम आऊं यह कहके शोचने लगा कि वहस्यार मेरेघायअच्छे करनेको साजिन्दान के बनमेंसे परीक्ष जानवरका शीशलाया था अबयही उचित है कि उसीस्यारसे मिलाचाहिये यहशोचके उन स्यारोंके पासचला तो थोड़ी दूरचलके क्या देखताहै कि एक कोटकी खाईं के चारोंओर बहुतसे आदमी लकड़ीधरके अग्निलगानेकी यत्नमें हैं यहदेख के हातिमने पूंछाकि यहां आगलगाने का क्या कारणहै इतनेमें किसीने कहा कि एक जानवर किसीओरसे आयाहै और तीनचार आदमी निलखाताहै जो कुछेकदिनभी यहरहातो सब नगरथोड़ेह दिनोंमें उसकेभोजनहीं भरको होजायगा यहसुनके हातिमकहनेलगा किइसबलायको किसीभांति से इनके पास से टालना चाहिये यहशोच उसकेपास मैदानमें एकगढ़ा खोदवाके बहुतसीसूखी लकड़ियोंसेपटवाके उसके भीतरबैठा और जब पहर भररातगई तब उसजानवरको आतिदेखाकि पहाड़सा चलाआता है जब निकट पहुंचा तो हातिम ने पहिचाना कि इसजानवर का नाम शमनहै औरइसके आठपांव और सातशीश हैं उनमें से एक शीशहाथीका साहै औरशेषबाघकेसे और जोहाथी कासा शीशहै उसमें नौ आंखें हैं जो उनमेंसे बीचवाली आंखमें चोटलगे तोयह ऐसाभागे कि फिरकभी इसओरको न आवे इतनेमें वहमुखफैलाकर शहर की ओर चला जब नगर निवासियों ने देखा कि आनेचाहता है तो उस किलेके चारोंओर की लकड़ियों में आगलगा दीजब उसका जाला ऐसाऊंचा उठाकि नगरका कोट दिखाई न देनेलगा तब वह चारों ओर इधर उधर फिरने लगा तो उस हाथी के शीशसे एक ऐसा शब्दाघात किया कि सबनगर निवासी डर गये और चारोंओर की पृथ्वीथलक उठी और फिरते २ वह हातिम की ओर भी आनिकला तो हातिम ने तानके एकतीर बीचकी आंखमें ऐसामारा कि बारपार होगया तोवह मारेपीर के पृथ्वीपर लोटनेलगा और ऐसी चिंघार मारी कि जंगल की सम्पूर्ण धरती हालउठी फिरथोड़ीदेरमेंऐसाउठके भागा कि फिर

पीछे फिरके नदेखा और हातिम उस खोह से निकल रातभरतो वहांहीं रहा जब सबेराहुआ तो उस नगर के निवासी पूछनेलगे किहेप्यारे तू उसको देखके क्योंकर जीता बचा हातिम ने कहा किमेरे शिरपर ईश्वर देखने हारा था उसीकी दया से मैंने मारा और तुम्हारे शिरसे यहआपदा टाली और उसका नामशमनथा तब उन्होंने कहाकि इस बातको हमसत्य कैसेमानें तो हातिम ने कहाकि आजकी रात तुम सबके सब कोट की छतपर बैठे जागा करो जो वह आवे तबतो मैंझूठा नहींतोसच्चा जानियो जबसबोंने वैसाही किया और वहरातभर न आया तब सबेरा होतेही सब हातिम के पांवपर आनपड़े और बहुतसा रुपया मोहर और सैकड़ों यार जवाहिरोंके उसके आगे लाधरे तब हातिमने कहाकि मैं निहंग अकेला इतनाधन लेके क्याकरूंगाइससे यह उचितहै कि इसको दीन दुखियोंकोदेदो जिसमेंलोक परलोकमें बड़ाईपावो यह कह आपवहांसे बिदाहोके एकओर को चलदियातोराहमें देखाकि एकसांप और न्योलादोनों आपसमें लड़ते हैं और मालूम होताहैकि दोनोंमें कोईनकोई मारा जायगा इतनेमेंहातिम ने ललकार कर कहाकि हे जवानों तुमदोनोंमें ऐसीकौन शत्रुता है जो लड़े मरते हो तब सांपने कहा इसने मेरे बापको माराहै मैं इसको मारूंगा यहसुनके न्योला बोलाकि वहतो मेरा भोजनथा मैंने मारखाया और इसको भी मार खाऊंगा तब हातिम बोला किहे न्योलेजोतुझे मासही खाना है तो मेरी देहमेंसे खालेऔर सांपसे कहा कि जो तू अपने बापका बदलाही लिया चाहता है तो मुझेमार जो कितेक दिनसे परमेश्वरकी राहमें अपना शीश अर्पण कर चुकाहूं यहसुनके दोनों लड़ने से रहगये तब न्योले ने कहा कि तूने मुझे अपनी देह का मांस देने को कहाथा सो मुझे दे मैं भोजन करूं और अपनेघरकी राहलूं तब हातिमने कहाकि जहांका मांस तू मांगे वहांका मांस देदूं तब न्योलेने कहाकिअपने गालका मांसदे ज्योंहीं हातिमनेछुरीसे अपना गाल काटना चाहा त्योंहीं न्योला बोला कि ठहरजा हे जवान जल्दी मतकर यह सुनके हातिम रुकगया तब न्योला बोला कि मैंने तो यहबात केवल तेरी परीक्षा के लिये कहीथी धन्यहै तुझे और तेरे माता पिता को यह कहके दोनों मनुष्य की सूरत होगये तो हातिम ने पूछा कि हे मिचो यह क्या भेदहै कि अभी जो तुमदोनों पक्षि थे और अब मनुष्य होगये तब न्योलेने कहा कि हम दोनों जिन

हैं और मैंने इसके बापको इसलिये मारा है कि मैं उसकी बेटी के रूपपर मोहित हूं और वह अपनी बेटीका बिवाह मेरेसाथनहीं करताथा इसलिये उसको मारा है और यहभी अपनी बहनका बिवाह करने में अपने बापकी भांति इनकार करता है इससे इसे भी मारूंगा तब हातिम ने कहाकि हे जवान तू अपनी बहन का बिवाह क्यों नहीं करता है तब उसने कहा किमैं इसकी बहनको चाहता हूं जो यह मेरेसाथ अपनी बहन को ब्याह दे तो मैं भी अपनी बहन का बिवाह इसके साथ करदूं तब न्योलेने कहा कि मेरा बाप अभीजीता है वह नहीं मानता मेरा कुछ बस नहीं तब हातिम ने कहाकि तू अपने बापके पास मुझे लेचल तो मैं उसको समझाय बुझायलूंगा निदान हातिम और वे दोनों जिन शहर की ओर चले थोड़ी दूर चले कि न्योले ने कहा मैं अब महल में जाता हूं और तुझे यहांके लोग पकड़ के मेरेबापके पास लेजावेंगे वहां तुझसे जैसे बने तैसे करना हातिम ने वैसाही किया वहांके जिन उसे बादशाहके पास पकड़ के लेगये और उस बादशाहका नाम हयूनथा उसने हातिम से पूछा कि हे मनुष्य तू हमारेशहर में आनेका कारण बता तब हातिमने कहा कि मैं तो तेरे भले को आयाहूं यहसुनके बादशाहने कहा कि भला तू मनुष्यहोके जिनों के साथ क्या भलाई करैगा तब हातिम ने कहा कि मुझे मालूम होता है कि तू अपने बेटाका जीना नहीं चाहता यह सुन बादशाहने कहाहेप्यारे मेरेतो यहीइकलौतापुत्रहै और मैंतो इसको अपने प्राणोंसे भी अधिक मानताहूं तब हातिमने कहा कि जो तू अपने पुत्रके प्राणोंकी रक्षाचाहताहै तो मेराकहना मान नहीं तो आजकल्ह में माराहीसमझना यहसुनके बादशाहने कहाकि हे प्यारेतैने मेरेसाथ अतिही भलाई करी इसका भेददया करकेबता तब हातिम बोला कि तेरेबेटा ने किसी के बापको मारडाला है वहतेरेबेटाको मारा चाहताहै आज मैंने उनदोनों को जंगल में लड़ते देखा और निकटहोया कि दोनोंमें से एकमरे इतनेमें मैंने उसके हाथसेतेरे बेटेकोछुड़ाय परन्तु बकरे की मा कबतक खैरी बांटेगी कभी न कभी माराही जायगा क्योंकि उसकी बहनके रूप परतेराबेटामोहितहैऔर वहतेरीबेटीकी प्रीतिमेंफँसा है इसलिये तू उनदोनोंका बिवाहकरदे जिसमें आपसमें मैत्री होजाय हयूस ने हातिम की बातको माना और उसीसायत अपनी बेटी उसके साथ ब्याहदी और उसकी बहन अपने बेटेसे ब्याहली जब दोनों

की अभिलाष पूरीहुई तबहातिम बादशाह से बिदाहोनेलगातो बादशाहने कहाकि हेजवान इसभलाई के बदले मुझसे कुछद्रव्यले यहसुनके हातिमने कहाकि बदलालेना मेरा कामनहीं तब हयूज बोलाकि अच्छाजोतू द्रव्यनहीं लेता तोमेरा यहआसा अर्थात् दंडलेइसमें कईगुणहैं कि जोसांप और बिच्छूकाटे तो उनकाविष नव्यापै और न जलनि होय और जो उसकेनीचे होरहै तो आग मेंनजलेऔर जोकोईजादू अर्थात् मायाकरै तोभी इस आसावाले को न व्यापै और जो राहमें नदी आवे तोवह नावके समानहोके पार उतारदे और एक मुहरा तुझे देताहूं उसमेंयह गुणहै कि राहमें लालसेत अथवा कालासांप मिलै और उसको मुखमें धर ले तो कुछ भय नहीं है उनमें से किसी का विष न व्यापैगा हातिमने वे दोनों वस्तु लेलीं और उससे बिदाहो रातदिन चला गया कितेक दिनपीछे एक महानद दृष्टिपड़ा कि उसकी लहरैं सुमेरुगिरिके कँगूरों को दबानेकी अभिलाष करती हैं जब हातिमने चारोंओर आंखफैलाके देखा तोकिसीको आतेजाते नदेखा इतने में उसको हयूजके आसाका गुणसुधऊआ तो हातिम ने उसको नदीमेंडालदिया वह नावके समान होगया हातिम उसके ऊपर चढ़लिया और चलते २ जब माझधारमें पहुंचा तोएकघड़ियाल हातिमको पकड़के नीचेको लेगया और सातकोसतक चला गया कहींदम नलिया जब धरतीमें पांव लगा तो हातिमको एक घड़ियाल पहाड़ के समान दिखाई दिया वह बड़ी आधीनता से कहनेलगा किहे जवान यहमेरा मकानहै सोकेकड़ेने बरबस छीन लियाहै सो तू दिलादे तब हातिमने कहा किमालूम होताहै कि वहतुझसे बलवानहै और तू हीनहै तबउस घड़ियालने कहाकिमैं क्या कहूं इससमय वहहै नहीं नहींतो वहचाहेतो अपने आंकड़ों में पकड़के मारडाले इससमय वहचरनेको गयाहै इतनेमें वह मुह फैलाये आपहुंचा उसकोदेख घड़ियाल मारेडरके हातिमके पीछे जा छिपाहातिमको वह कोटकेसमान दिखाईदिया ऐसाथाकि एक आंकड़ा तो उसकापूरबको और दूसरा पश्चिमको पहुंचाथा इतनेमेंउसकी दृष्टि जो घड़ियाल परपड़ी तो उसने एक शब्दाघात कियातो वहघड़ियाल थरथरानेलगा और हातिमभी आगा पीछाकर ममेंमें कहनेलगा हेभगवन् इससे कैसेबचूंगा इतनेमें हातिम हयूजका आसालेके खड़ाहुआ वहकेकड़ा देखतेही जहांका तहां रहगया तब हातिमने पुकारके कहाकि किसीको दुखदेनाअच्छी

बातनहीं है क्योंकि जोकोई किसीको दुखदेता है वह अपनी रा-
हमें कांटे बोता है तू इसदीन घड़ियाल को काहेको दुखदेता है
क्या तेरे रहने को और कहीं ठौर नहीं है यह सुनके केकड़ा क-
हनेलगा कि हम दोनों जलकेजीव हैं आपसमें समझलेंगे मनुष्यसे
क्याकामहै जो हमारे बीचमें बोलेतब हातिमने कहाकि यहतो स-
त्यहै पर जिसईश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टिको बनायाहै उसने कुछ जीव
पानीमें राखेहैं वे जलचर कहाते हैं और कुछपृथ्वीपर उनकोथल-
चर कहते हैं और वायुमें रहते हैं उनको नभचर कहतेहैं परन्तु
सब उसके निकट समानहैं इसलिये वहपावन पुरुषयह नहीं चा-
हताकि एक दूसरेको दुःखदे तबउस केकड़ेने कहाकि अच्छा अब
तो मैं तेरे कहने से छोड़देता हूं फिर तुझे यह कहां पावेगा जो
तुम इसकी सहायता करोगे और मुझे और इससेतो क्या तुमनहीं
जानते हो कि यहकहावत प्रसिद्धहै(जलमें रहके मगर मच्छसेबैर)
तब हातिमने कहाकि रेनास्तीक अबजाना कि तू किसीपर दया
नहीं करता है और ईश्वरको भी नहीं मानता इस लिये अभी
तेरा कुछ नहीं बिगड़ा है और जो तू अपने प्राण चाहता है तो
किसीको सतानहीं नहींतो अभी मारके टुकड़े उड़ाये देताहूं यह
सुनके केकड़ा हँसकर कहने लगाकिअब इसको और तुझेजीता न
छोड़ूंगा यहकहके ज्योंहीं केकड़े ने चाहा कि हातिम को पकड़
के दो टूक करें त्योंहीं हातिम ने हमज़ा बादशाह का आसा ऐसे
जोर से मारा कि उसके आँकड़े कटके खीरा के समान गिरपड़े
जब केकड़े ने देखा कि मेरेपास कुछ हथियार नहीं रहा तो वहां
से भागा और मगर उसके पीछे दौड़ा तब हातिम ने उसे डाटके
कहा कि रे कायर अबकाहेको उसेदुःख देताहै और जोतू इसको
दुःख देगा तोमैं तुझे मार डालूंगा मगर यह सुनतेही डरके मारे
खड़ारहगया हातिमने अपनी आंखेंमूंदी और अपनेबेड़ेपर चढ़के
नदीके किनारे आयलगा और माजिन्दानबनके निकट जापहुंचा
तो एकवृक्षको छायामें बैठके शोचनेलगा कि ईश्वर की दयासे मैं
यहांतो आनपहुंचा परन्तु अबउसजानवरकाजोड़ाढूंढ़नाचाहिये
इतनेमें रात होगई जबरातको परीरू चरकरके आये तोएक वृक्षके
ऊपरबैठके आपसमें बातें करनेलगे कि एकमनुष्य बड़ा करामाती
यहां आयाहै और हमने उसका नाम हातिम तयकापुत्र सुनाहै
इसलिये हमें उचितहै कि उससे चलकेमिलें और उससे कुशलप्रश्न
पूछें क्योंकि वह सत्पुरुष और हरिदासहै यहकहके वे सब हातिम

के पास आये और मीठी २ बातें करनेलगे हातिम उनको देखके बज़्ज़त प्रसन्नज़वा और देखाकि उनके मुखतो मनुष्यकेसे और शेष शरीर मोरकासाहै और ऐसे खरूपवानहैं कि जो परीभीदेखे तो उसको भी उनके रूपपर लोभहोवे हातिमसे कहनेलगे कि मालूमहोताहै कि कोई मसखरजादूगरकी बेटीकी प्रीतिमेंफँसाहै इसीसे तू यहां हमाराजोड़ा लेनेको इतनी बिपत्ति भोगताआया है तबहातिमने कहा कि यहतोसत्यहै जो अपना एकजोड़ादो तो उसअधमरे बिरहीका प्राणराखलें यहसुनके वे आपसमें कहने लगे हममेंसे कोई ऐसाहै जो अपनेबच्चोंका एकजोड़ादे यहसुनके एकउठा और अपने बच्चोंका एकजोड़ालेके हातिमकोदेके कहनेलगा कि इनका तू मालिकहै जोचाहेसोकर और जहांचाहे तहांलेजा हातिमउसजोड़ा कोलेके उनसे बिदाहो मसखरजादूके नगरकी राहली थोड़ेदिनों में दुःखसुःख भोगता उसजवानकेपास आपहुंचा यहांवह मारेशोच के शिर नीचाकिये बैठाथा उससे मिलकर कहनेलगा कि हे जवान अब हर्षितहो तेराकाम पूराहोगया वह उस जोड़ाको देखतेही हातिमके पावोंपर गिरा हातिमने उसको उठाया और राहका सब दुःखसुखसुनाके कहाकि तू इनको मसखरजादूगरके पासलेजा और यहसम्पूर्णहाल उससुनाके कहना कि यहजोड़ा मैं लायाहूं निदान वहसिपाही उसजोड़ेकोलेके मसखर जादूगर के पासगया मसखरजादूगरदेखके बज़्ज़तप्रसन्नज़वा और कहनेलगा कियहतेरा कामनहींहै इसमेंकिसीकी सहायताहै और जोतूलायाहै तोवहां का सबहाल ठौरठिकाने का बतादे जिसमें निश्चयहो जबउस जवानने सबहाल बताया तो मसखर जादूगर सुनके बज़्ज़तप्रसन्न हो के कहनेलगा कि यहसब सत्यहै अबतूजा और लालसांपका मुहरा ला तबउस जवानने कहाकि एकदृष्टि मुझे उस चन्द्रमुखीको दिखा दे जिससेचित्तको संतोषहोजाय और चलनेकी सामर्थ्यहो यहसुनके मसखरजादूगरने अपनी बेटीसेकहा कि थोड़ीदेर खिरकीमें बैठके अपनेरूपकी छटा अपनी बिरहके रोगीको दिखादे तब वह खिरकीमेंसे झांकी निदान वहदिनतो देखादाखीहीमें बीता फिर उसनेकहा कि अब लालसांपका मुहरालेनेको जाताहूं जोतू कुछ जानताहो तोबतादे कि वह किसदिशा और किसदेशमें रहताहै तब उसने कहाकि मैंने अपने प्राचीनोंसे सुनाहै कि वह कोहकाफ़ के लालबनमें रहता है यहसुनके वह उससे बिदा हो हातिम के पास आ कहनेलगा कि हे प्यारे अब उसने लाल सांपका मुहरा

मांगाहै तब हातिमने कहाकि तू उसका कुछपताभी पूछआया है तबउसने जोकुछ सुनाथा सो कहदिया यहसुन हातिमने कहाकि हेप्यारे तू घबड़ामत मैं तेरेकामको तनमनसे करताहूं और जाता हूं ईश्वरकीदयासे तेरी अभिलाष बहुतशीघपूजैगी निदानऐसी बातें कहके कोहकाफ़की ओरचला चलते २ कईदिनपीछे दैवयोग से एकदिन प्रातःकाल दिशा जंगलको जाताथा तो क्या देखता है कि एक बिच्छू सतरंगा मुर्गा की बराबर चलाआता है यह उस कोदेखके मनमें कहनेलगा कि मैंने अपनी उमरमें ऐसा बिच्छू कभीनहीं देखाहै फिर वहबिच्छू जाके किसी कोनेमें छिपरहा हातिम उसको दिनभर खोजाकिया और बार बार मन में कहै कि देखना चाहिये रातको यह क्या करता है और जो उस जंगलके चारोंओर गांवबसेथे वहांके निवासियोंने उसराहीको देखके उस कीपहुनाईकरी हातिमने भोजनकिये और अपने ईश्वरके ध्यानमें बैठा औरउस मैदानमें बहुतसे पशु चररहेथेऔर पशुपालक सोररहेथे इतने में जब रातहुई तो वह बिच्छू पशुओं कीओर को चला और उचकके एक गौ के शिरपर बैठा और अपना डंकमारा वह तड़पके मरगई इसीभांति सबगायोंको उनके पालकोंसमेत मारके फिर उसी पत्थरके नीचे आछिपा सबेरे जब उस नगरके निवासी आये तोक्या देखतेहैं कि सबगायें और पशुपालक मरेपड़े हैं और प्रत्येक के पेट से नीला पानी बहता है तब उन्हों ने हातिम से पूछा कि हे पथिक तू कैसे बचाहै तब हातिम ने कहा कि मैंने एक ऐसी अद्भुत बातदेखीहै किऐसी कभीनहीं देखी वहयहहै किएक बिच्छू सांपके रंगका मुर्गाकी बराबर निकला उसीने इन सबको डसाहै इतनेमें वहबिच्छू पत्थरके नीचेसे फिर निकला और उनके मालिकके शिरपर डंकमारा वह तोतड़पने लगाऔरवेसबरोनेलगे और वह बिच्छू जंगलकी ओर चलदिया हातिम भी उसके पीछे होलिया आगे बढ़के क्यादेखताहै किएकशहर दिखाईपड़ा और वहबिच्छू लोट पोट के सांप होगया यह देखके हातिम और भी बिस्मितहो कहनेलगा कि हे परमेश्वरयहअभीतो बिच्छूथा सांप कैसेहोगया और बांबीमें कैसे जाबैठा यहशोचके हातिम वहांहीं बैठरहा और जबशहर रातबीतीतब वहसांप बिलसे निकलके उस शहरकी ओरको चला हातिमभी उसकेपीछे होलिया वह सांप भरोखोंकी राहसे बादशाही महलमें घुसगया और बादशाहको उसके मंत्रीके घरमें घुसा और उसकी बेटीको काटके फिर उसी

छेदमें जाबैठा सवेरा होतेही नगरमें कोलाहल मचाकि आजरात को बादशाह और मंत्रीकी बेटीको सर्पने डसा बड़ेशोचकी बातहै कि इन दोनोंकी अकाल मृत्युहुई इतने में जबसांझ हुई तो वह सांप फिर एक ओर कोचला तब हातिम भी आंख बचाये उसके पीछेहोलिया औरमनमें कहनेलगा कि देखें अब क्याकरताहै और कहां जाताहै इतनेमें सबेरा होतेही एक नदीके तटपर जा पहुंचा और वहां बाघकी सूरत बनगया वहांदशबारह आदमी पानीपीने को आतेथे उनमें एक लड़का जो पन्द्रह सोलह वर्षकाथा उसको उठालिया और एक कोनेमें जाके उसको चीर फाड़डाला और एकअंगलकी राहली हातिमभी उसकेपीछे२चला थोड़ीदूरचलके एक चन्द्रमुखी स्त्रीका स्वरूप धारण करके जाबैठा और हातिम भी एक किनारे ताक लगाये देखा किया इतनेमें दो भाई सिपाही अपने घरसे नौकरीको गयेथे सोविदेशसे कमायेलियेघरको जातेथे जब उसके पास पहुंचे तो वह रोनेलगी उसके रोनेका शब्द सुनके बड़ाभाईजो उसकेपासगयातोक्या देखताहैकि एकस्त्रीबैठीरोरहीहै उसको रोतेदेखके वहभी आंसू भरके पूंछनेलगा कि हे सुन्दरी तूइस विकटवनमें कौनहै और काहेको रोरहीहै तब उसने उत्तर दिया कि हेजवान मैं उसपुरुषकी स्त्रीहूं वहमुझे मेरी मा के घरसे लेके आताथा इतनेमें एक बाघ इसबनमेंसे निकला और उसेउठा लेगया और मैं अकेली बैठीरहगई नतो अपने बापके घरकी राह जानतीहूं और न अपनी ससुरालकी जानूं इसीशोचमें बैठीहूं कि कहांजाऊं और क्याकरूं और यहभी नहीं मालूम कि अब आगे कौन दुःखपड़ैगा और मेरा रंड़ापा कैसेकटेगा तबउसने कहाकि जो भाईतुझे अपने पासराखै तोत उसके पासरहेगी यह सुनकेउस स्त्रीने कहाकि हां क्योंन रहूंगी नहीं तो इसबनमें मेरा कौनहै जो मेरा दुःख पूंछेगा तब उसमर्द ने कहातुझेअपना पतिमानती है यह सुनके वहस्त्री बोलीकि हां मैं तीनबातों परतुझे अपना पति समझूंगी तब उसने पूंछा कि वह कौनसी तीन बातेंहैं उस स्त्री ने कहाकि एकतो यहकि तेरेघर में दूसरी स्त्रीनहो दूसरे यह कि मुझसे कुछ काम नले तीसरे यह कि तू मुझे दुःख नदेवे यह सुन के वह बोला कि मैंतो आप एक कुमार पुरुष हूं जबतक तू जीवेगी तबतक दूसरी स्त्री वरांगनाभी होगी तो मैं उसकी ओर आंख उठाके न देखूंगा और मेरे घरपर परमेश्वर की दया से बहुत से दास दासीहैं तुझे कुछकाम न करना पड़ेगा तू केवल बैठी रहना

सब तेरी आज्ञानुसार काम होता रहैगा और तूतो इसको आप जानसक्ती है कि किसी ने भी अपनी प्यारी सताई है तब उसने कहा कि इसबात को मैं तनमनसे मानती हूं यहकह उस मर्द ने उसका हाथ पकड़ लिया और आगे लेचला हातिमभी उसके पीछे २ चला थोड़ी दूर चलके उसस्त्रीने कहाकि मैं तीन दिन से भूखी प्यासीहूं जोकुछ भोजन न मिलेतो पानीतोपिलादे क्योंकि मारे प्यास और भूखके देहीं सन्सनाती है यहसुन मर्दने उस स्त्री को एक वृक्षकेनीच बैठाल दिया और छोटेभाईसे कहाकि तूइस की चौकसी कर और आपलोटा डोरलेके पानीको गया तब पीछे उसके छोटेभाईसे कहने लगीकिमैंतो तेरेहीलिये इसके साथआई हूं क्योंकि तेरी सलोनी सूरत मेरेहियेमें बसगई है नहींतो मैंऐसे बूढ़के साथकाहेको आती इससे अबतुझे भी उचितहै कि तूमुझे अपनी सेवामेंराख तब वहबोला कितू मेरीमाताके समानहै मुझसे ऐसा कामनहोगा फिर वहस्त्री बोलीकि यद्य पि मैंउसकी भार्य्या बनीहूं परतेरी प्रीतिमेंफँसीहूं केवल तेरीसूरत देखाकरूंगी यहसुन उस पुरुषने कहाकि यहभी नहींहोसक्ता तबउसस्त्रीने कहाकिजो नहीं मानेंगा तोमैं तुझेझूठा अपराध लगाऊंगी कियह मेरे साथ व्यभिचार करनेकोकहताथातबभी उसने कहाकितुम चाहैजितना कहो परन्तुतुम्हारी बातन मानूंगा और हातिम भी एक कोने में खड़ा उनकी बातेंसुन रहाथा इतने में बड़ाभाई आय पहुंचा जब उसस्त्रीने उसको निकट देखा तब अपने शिरकेबाल बखेर रेत डाल कारणकरके चिल्लानेलगी जब वह पानीलेके पास पहुंचा तेप कहनेलगा कि मैं तो प्यारी तेरेलिये पानी लेने को गया था न तो मुझेकिसी बाघनेमारा न बराहने तू काहेकोऐसीरोरहीहै तब उ-सनेकहा कि भलेआदमी कोईअपनीस्त्री ऐसे नीच व्यभिचारी के पासछोड़के जाताहै देख ज्योंहीं तू पानीकोगया त्योंहीं मेरा हाथ पकड़के अपनी ओर खींचा और मैंने अपनी ओरको परमेश्वर ने मेरीलाजराखी जब मैंने बहुतेरा उपायकिया परदेखा कि यहमुझे भ्रष्टही किया चाहताहै तब चिल्लानेलगी परन्तु कोई मेरी सहाय को न आया और यह कहता था कि तू मुझे अपना पति मान मैं तेरेयोग्यहूं क्योंकि तू भी चौदह पन्द्रह बर्षकी है और मैं भी सोलह सत्रह बर्षकाहूं और मेरा भाई तेरे योग्यनहीं है और जो घात पाऊंगा तो अपने बड़े भाईको मारडालूंगा यहसुनतेहीबड़ा भाई मारे क्रोध के थर थरानेलगा और कहनेलगा कि रेहतभाग्य

कोई अपनी माता के साथ ऐसा काम करता है जो तूने करने का अनुमान किया था उसने बहुतेरी सौगन्दें खाईं पर एक न मानी अंतको गाली गलौज की बात पहुंची और दोनों अपने२ शस्त्र लेके लड़ने को उद्यत हुये इतनेमें बड़ेभाईकी तो तलवारचली औरछोटे का कटार निदान दोनों उसी ठौर समाप्त हुये और वह स्त्रीभैंस बनके आगे चली हातिम भी उसके पीछे होलिया वह एक नगरके निकट पहुंची हातिम भी उसके साथ २ चलागया उस गांवके निवासी उसको पकड़ने दौड़े उसने कितनों को तो लातों से मारा और कितनोंको सींगोंमें छेद लिया और एक बनकी ओरचलदी और वहांजाके एक वृद्ध पुरुष का स्वरूप धारण कियातब हातिम ने शोचा कि अब इससे यह भेद पूछना चाहिये कि यह क्याकारण था निदान हातिमने पुकारके उस वृद्धको खड़ाकिया वहहातिम का बोल सुनके ठहरा और कहनेलगा कि हे हातिम तू अच्छाहै क्या कहताहै कह जबहातिमने पूछा कि तुमनेमेरा नामकैसेजाना तब उसने कहा कि तेरी तो कौन चलावे मैं तेरे बाप कोभी नाम जानताहूं पर इससे तुझे क्या कामहै जो तुझे पूछना हो सो पूछ क्यों कि इस समय मुझे दूसरे काम की जल्दी है अन्तको हातिम ने जो २ देखाथा सो सब पूछा यह सुनके वह हँसके कहनेलगा कि तुझे इसके पूछने से कौन प्रयोजन है एक दिन तेराभी ऐसा ही हाल होगा तब हातिम ने कहा कि जबतक मुझे सबसमझाय न देवोगे तबतक तुमको न छोड़ूंगा हातिम की यह बात सुनके बूढ़े ने कहा कि मेरा नाम मलकुल मौत अर्थात् मृत्युहै जैसी परमेश्वर की आज्ञा होती है वैसेही मैं उसको अक्षर करतीहूं यह सुनके हातिम बहुत प्रसन्नहो पूछनेलगा कि अब बतावो कि मेरी मृत्यु कहां है और किस प्रकार से मैं मरूंगा तब उसनेकहा कि अभी तो तेरी आयुर्बल आधी भी नहीं बीती है जब तू पचास वर्ष का होगा तब तू काठे परसे गिर पड़ेगा और तेरी नाकसे इतना रक्तबहेगा कि तू मरजायगा परन्तु अभीतेरीआयुर्बल बहुतहै इसलिये जो काम तेरे हाथसे भलाहो उसमें ढील न कर यह सुनके हातिमने ईश्वरको दण्डवत् किया और शिर उठाया तो वहबूढ़ा आंखोंकेआगेसेलोपहोगयाफिर हातिमनेभी लालबनकी राहलेली कई दिनमें कालेबनमेंपहुंचा और वहांके सांप मनुष्यकी बासपाके दौड़े हातिम हयूज का आसागाड़के बैठगया सांपों ने हातिमको चारोंओरसे घेरलिया रातभर उसको घेरे बैठेरहे सवेरा होतेही

अपने २ ठौर गये हातिम ने भी अपनी राहली फिर चलते २ श्वेत बनमें पहुंचा तोवहांके खेतसर्पभीउसी भांति हातिमको रातभर घेरेरहे और सबेरा होतेही सब सांप अपने२ बिलोंमें गये तबहातिम वहांसे हरे बनमें पहुंचा तो वहांसे भी हरे सांप हातिम को बासपाकर दौड़े और उसीभांति वहांसे भी बचा तिसपीछे लाल बनमें पहुंचा तो क्या देखता है कि वहां की पृथ्वी सिंगरफ से भी अधिक लालहै जब हातिम थोड़ी दूरचलागया तब शोचनेलगाकि आगे कैसे जाऊं न तो पावों में चलने की सामर्थ्य और न मुख से बोल निकलताहै हातिम यहखड़ाहोके शोचनेलगाकि यहां थँभने का तो समयनहीं और आगे बढ़नेकी सामर्थ्य नहीं निदानदोनों भांति मृत्यु हुई परन्तु बिराने हेतु मृत्यु भी उत्तमहै यह शोचके आगे चला तो कोसही दो कोस में उसके पावोंमें फफोला पड़गये और हातिम पृथ्वी पर गिरपड़ा तो गिरतेही सम्पूर्ण तनमें छाले पड़गये और मूर्छित होगया तब एक पुरुष ने उसको उठायके कहाकि हेहातिम धीर्यधर यहसमय अधीर होनेका नहीं है और रीछकी बेटीवाला सुहरा अपने मुखमें छोड़ले हातिम ने ज्योंहीं वहसुहराअपने मुखमें धरात्योंहींउसपृथ्वीकी उष्णता औरप्यास उसी घड़ी जातीरही तब हातिम ने उसके चरण छूके पूछाकिइस पृथ्वीके उष्णहोनेका क्याकारणहै तब उसने कहा कि यह गरमी उस लाल सर्प के विषकी है और इसपृथ्वीसे उसके मुखकी फुफकारकी अग्नि निकलती है इसी कारण इसपृथ्वीका रंगलाल है नहींतो प्रथम रंग हराथा यह सुनके हातिम आगे बढ़ा औरउस बनके आधीदूर पहुंचाहोगा कि इतनेमें लाल सांपने हातिम की बासपाई तो वहांसे फुंकारने लगा उनका मुखतो चट्टानके समान था और धड़ ताड़के वृक्ष समान था और उसके मुखकी फुफकार आकाश तक जातीथी और जो मुखसे विष की वायु छोड़ता था उसकी झारसे कोसों का बन राख होजाता था जब हातिम उस अग्निमें पड़ातो अधीर होके कहनेलगा कि अबमेरी तो इसअग्नि से हाड़ पसुरी कुछ न बचैंगी परन्तु वह जो सुहरा मुखमें पड़ाथा उसीसे थोड़ा २ ठंढापानी निचुर के उसके मुखमें जाता इसकारण कुछ उसके विषकीअग्नि उसको नहीं व्यापतीथी इतनेमें जब उस सर्पकी दृष्टिहातिमपर पड़ीतो इसकी ओरको विष उगलताहुआ चला यह उसीआसा के बलसे निडरथा और उसका विष इसको तनकभी न व्यापताथा निदान इसीभांति वह सर्प रातभरविषकी

बायुछोड़ाकियापर इसको कुछभी न व्यापी सवेराहोतेही उसने मुखसे मुहरा उगलदिया और अपनी बांबीमें चलागया तब हातिम उस मुहराके पासआया परंतु उठाने में डरा कि ऐसा न हो कियह तत्ताहो और मैं जलजाऊं इसलिये थोड़ीदेर पीछे उसने अपनी पगड़ीसे एकचिट फाड़के उसके ऊपरछोड़ी जब वह न जली तबउसनेउसको उठाके अपनी पगड़ीमें बांधलिया फिरउसवनकी सारीधरती भी ठंढी होगई और यह मुहरा इसीभांति ऊआकरता है कि जब उसको कोई लेजाय तब तीसवर्ष पीछे उसीभांति उसीप्रकार का मुहराफिर उसके पेटमें उत्पन्न होजाता है निदान हातिम उसमुहरा को लेकेउस जवान के पास आया और उसको वहमुहरा देकेसम्पूर्ण वृत्तान्तकह सुनाया तबवह हातिम के पैरोंपर गिरा हातिमने उसको हृदयमें लगाके कहाकि तू अब मसखर जादूगरके पासजा और उसकोदेवहहातिम कोलेकेशहर में आया और मसखर जादूगरसे मिल उसको वह मुहरा देकर कहाकि इसको मैंबड़ी बिपत्तिझेलके लायाहूं यहसुन मसखरजादूगर कहनेलगा कि पहले मैं इसकी परीक्षा लेलूं तीतेरी बात सत्यमानूं निदान जब परीक्षामें पूरा निकलाती ऊपरके मनसे तो प्रसन्नहोके प्रशंसा करनेलगा परन्तु अन्तःकरण में लज्जित होके कहनेलगा कि हे जवान अब तुझे एककाम करने को और रहगया तब उस सिपाही ने कहा किवहभी बताइये तब उसने अपने नौकरोंको आज्ञादी कि एक घीकेकराह केनीचे सात दिनतक आग जलाओ जब वह ऐसागर्म ऊआकि उसमेंसे पत्थरभी राख होके निकले तब मसखर जादूगर ने कहाकि हेजवान अबतू इसमें कूदके सजीव निकलेतो अपनी प्यारीसे मिलेगा यह देख के वह जवान डरकर हातिम से कहनेलगा हेप्यारे इस अग्निसे मैंकिस भांति बचूंगा तब हातिमने उसका समाधान किया औरकहाकि ईश्वरका स्मरणकर क्योंकि सम्पूर्ण कार्य्योंको वही सिद्ध करताहै इसप्रकार समझाके अपने पाससे रीछवालामुहराउसको दिया और कहाकि अबतू जा उसमें कूदके मारके निकल आ ईश्वर चाहेगा तोतेरा बारबांका नहोगा निदान वहजवान गया और डरते २ उसकड़ाह में कूदा अब उसने देखाकि सम्पूर्ण घी और कड़ाह पानी के समान ठंढा है तब तो उस में चारोंओर फिरने लगा और कहा कि अब आपकी आज्ञा पाऊं तो बाहर आऊं जब उसको मसखर जादूगरने देखाकि यह नहीं जलातब लज्जि

तहोके अपना शिर नीचा करलिया तब हातिमने कहाकि अब लज्जित क्यों होताहै अपनीबातका प्रतिपालनकर और जोतूकुछ माया करनेके विचारमें है तो उसके पासभी एक लाल सुहरा है तेरी मायाका प्रभाव उसके आगे कुछनहोगा इसबातको सुनके उसने उस जवान को अपने हृदयमें लगाब बहुत प्रशंसा की और विवाह की सामाकर प्रसन्नता से अपनी बेटी का बिवाहकरविनयकरनेलगा किमेरेअबइस बेटीके सिवा और कोईनहींहै इससे इससम्पूर्णराज्यपाट और धनकातूही स्वामीहै निदान जबदोनों आनन्द से अपने घरमें रहनेलगे तब हातिम उससे बिदाहो कहने लगा किमुझेअभी बहुत से काम औरभी करनेहैं तबउस जवान ने बहुतसी बिनय की और उसका सुहरा देके बिदा किया और हातिमने अलकापर्वतकी राहली तो चलते२ क्या देखताहै किएक पर्वत ऐसा ऊंचा है कि जहां पक्षीकीभी सामर्थ्य पहुंचनेकी नहीं है तब हातिम वहांके किसी निवासी से मिलने के विचार मेंबैठगया कि जिस्में उससे राह पूछलें इतनेमें एक झुण्ड परीज़ादोंका उसको दृष्टिपड़ा हातिमने उनसे मिलना चाहा परन्तु न मिलसका तब तक एक खोह देखा कि उसके किनारे पर एक शिला धरी हुईहै जब हातिम ने कहीं राह न पाई तोउसी शिलापरसे खसकने का विचारकिया निदान उसी पर खसकता २ कुछेकदेर में धरती में जा पहुंचा तो एक बड़ा लम्बा चौड़ा मैदान दिखाई दिया और उसको परमरम्य पाकर बहुत हर्षित हुवापर शोचने लगाकि वे परीज़ाद कहांगये मैंनेतो उनको इसी तरफआतेदेखा था यही शोचता हुआआगे बढ़ा तो एकमकान दृष्टिपड़ा हातिम उसको मनुष्यों का निवास समझ के आगे चला तो वहांके परीज़ाद इसको देखके दौड़े और कहनेलगे कि हे मनुष्य यह मकान तेरेयोग्य नहीं तू यहांसेजा और सत्य२ बता कि तुझे यहांकौन लायाहै और खोहाकीराह कैसेपाई तबहातिमने कहा मुझे यहां तो ईश्वरही लायाहै और जबमैंने तुमको आतेदेखा तोमैं बहुतेरा दौड़ा पर तुमसे न मिलसका और तुम दृष्टिसे लोप होगये जिस तरफहोके तुमसबआयेथे मैंभी उसीराहहोके तुम्हारे पीछे२ चला इतनेमें मुझेएकखोहा दिखाई दिया और उसीशिलासे खसककर तुम्हारे पासतक आपहुंचाहूं अब दयाकरके यह बताओ कि इस पर्वतका क्या नामहै और यहबाग़ किसका है उन्होंने हातिमसे कहा कि इस पर्वतका नाम अलका है और यह अलगनपरी की

फुलधाई है और अब वसन्त ऋतु का आगमन है इसी से हम सब उसको देखनेआयेहैं और निश्चयहै किकल्ह परसोंतकअलगनपरी भी यहां आवेगी परन्तु हमतुझे कहांराखें तू दृथा मारा जायगा हमको तेरी युवा अवस्था देखके बड़ा शोच होताहै तब हातिमने कहा कि मेराकोई यहां ठिकानानहीं परन्तु अहोभाग्य जिसके लिये मैं इतनी बिपत्ति झेल के यहां आया सो भी शीघ्रही आया चाहती है यहसुनके उन्होंनेपूछा कि तेरा उससे ऐसा कौनकाम है जो तू उससे मिलने आयाहै भला कहां तू मनुष्य और कहां वह परियों की बादशाह तेरी और उसकी परचै कैसीहै क्योंकि बुध जनतो इसप्रकार कहतेहैं कि बैरप्रीति और सगाई तो समानही की भलीहोतीहै यहसुन हातिमनेकहा कि परीकी चाह मनुष्य को होतीहै और परी मनुष्य की चाह करती है यहसुनके वे सब क्रोधातुर होकर कहनेलगे कि मालूम होताहै तू बावला होगया है क्योंकि जबकोई अपने प्राणोंसे हाथधोताहै तभी ऐसीठौरआके ढिठाई करता है ऐसी २ बातेंकरके वे इसके मारने को उद्यतहुये तब हातिमने अपनाशीश नीचा करदिया तो वे आपसमें कहनेलगे कि यह कैसा मनुष्यहै कि न भगानेसे भागे और न डरपानेसे डरै और न किसीसेलड़े कोईकैसे इसको सतावे तबफिर उन्होंनेकहा कि हमको तेरेऊपर दयाआतीहै इसलिये तू यहांसे चलाजा नहीं तो जीतानबचेगा तबहातिमने कहा कि मैंतो परमेश्वरकी राहमें अपनाशीश अर्पिचुकाहूं मुझेमरनेसे कुछडरनहीहै क्योंकि जोकोई अपनेको ईश्वरकी राहमें लगाताहै वहउसीकी प्रसन्नताको देखा करताहै उसको अपने मरनेजीनेसे कौन कामहै यहसुनके वे बड़ृत दयालुहो कहनेलगे किजो तुझे अलगनपरीके देखनेकी चाहहै तो हमारेसाथचल हमतुझेएककोनेमें बैठायेदेतेहैं परन्तु जुगुनूकी सूर्य से कौनसमता निदान एककोनेमें लेजाय भांति २ के भोजन करायें और तीनदिनतक उसको वहांरक्खा फिर वे पूछनेलगे कि सत्य २ बता तेरेआनेका क्याहेतुहै तबहातिमनेकहा कि मुझे अलगनपरी से यहकामहै कि वह एकपुरुषसे सातदिनकी अवधिबदके आईथी और सातवर्ष बीते कि आजतक वहदीन इसके आसरे में मरनेके निकटपहुंचाहै खासलेनेकीभी उसमेंसामर्थ्यनहींहै औरबारबार यहीउच्चारण करताहै कि वेग आ अबतेरी बिरहकी अग्निनहीं सहीजाती जबमैंने उसकी यहदशादेखी तब उससेपूछा उसनेअप-नी व्यवस्था आद्योपान्तसे कही यहसुनतेही अधीर होकर मेरी

आंखोंसे आंसू निकलआये इसलिये मैं उसको सुधि दिलवाने को आयाहूं कि जो वह इसीआशामें मरा तो बड़ी अनीतिकी बातहै यहसुनके वे बोले कि हमारी यहसामर्थ्यनहींहै जो तेरीबात उससेकहैं परन्तुहमसे इतना होसकेगा कि तुझेबांधके उसकेसम्मुख ले खड़ा करेंगे आगे जो तेरे मनमें आवे सो करना और जो हम अपनी ओरसे तुझे उसकेपास लेचलें तो ऐसा नहो कि वहहमारे ऊपरक्रोधकरै तबहातिमने कहा कि जैसेबनेसोईकरो किसीभांति मुझे उसकेपास पहुंचादो मैं अपनीसी करछूटों आगे जो कुछ उस बिरहीकी भाग्यमेंहोगा सोहोगा फिर कईएकदिनबीते कि एक दिन अपने महलसे निकलके उसबाग़कीओर बिधुबदनीसी चली आतीथी उसकोदेख सबकेसब उसको आगेलेनेगये और वह उस बाग़ में एकसुनहरे सिंहासनपर आयबिराजी और सब सखीसहेली चारोंओर यथायोग्य अपने२ आसनोंपर बैठीं तब वे आयके कहनेलगे कि अब हम तुझे अलगनपरी दिखादें जब उन्होंने एक झरोखासे दिखाया कि वह जो धानीजोड़ा और आंचरपल्लूकी सारीपहने सोनेकी चौकीपर बैठीहै वही अलगनपरी है हातिम देखतेही मूर्छित होगया और उसके नयनका बाण इसके कलेजेमें पारपार होगया औरउसपुरुषको भुलाय आपही उसके बिरह में फँसा अन्नजल भी छोड़दिया जब तीनदिनतक निराहार पड़ा रहा तब एकदिन सोतेमें यह सुनाईपड़ा कि हे हातिमउठ और धीर्यधर यही तू परायेहेतु कामकरने को कमर बांधेहै कि पराई वस्तु देखके लोभ को वश्यहोताहै और यहभी कहताहै कि जो मैं काम करताहूं वह परमेश्वर की राहपर करता हूं यह सुनतेही चौंकपड़ा और उठके परमेश्वर से प्रार्थनाकर बड़ी आधीनता से कहनेलगा कि हेपरमेश्वर मेरा अपराध क्षमाकर और परीजादों से कहा कि तुम मुझे बादशाहज़ादी के पास लेचलो मैं कबतक उसका आसरा देखा करूंगा क्योंकि वह दीन मेरे आसरेमेंवहां बैठा है यह सुन जब उन्होंने बादशाहज़ादी को प्रसन्न देखा तब इसके हाथ बांध के बाग़ के फाटकपर लेगये और एक उनमेंसे बादशाहज़ादी के पास जाके यों कहनेलगा कि एक मनुष्यबाग़ के किनारे पर हमको मिलाहै सो हम उसको बांधके फाटकपर लायेहैं आगे जैसी आपकी आज्ञा हो सो करें उसने आज्ञादी कि उसको मेरे सम्मुख लेआवो जब उस परीने हातिम को देखा तो उस जवान को भूलगई और इसका हाथ पकड़ केकुर्सीपर,

बठाल पूछनेलगी कि हे जवान तेरा आना कहां से होता है और क्या नाम है और किस काम को जाता है तब हातिमने कहा कि मैं तय का पुत्र हातिम हूं और यमन मेरी जन्मभूमि है ज्योंही परीने हातिमका नाम सुना त्योंही सिंहासनसे उतर हाथ जोड़ कहनेलगी कि मैंने तुम्हारा नाम सुना है कि तुम यमन के शाहजादे हो और मैं आप की बांदी हूं आप ने बड़ी दया करी जो हमारे धाम को पवित्र किया यह सुनके हातिम ने कहा कि यह तो आपकी दया है जो मुझे इतनी बड़ाई देती हो तब उस परीने पूछा कि आपके आनेका क्या हेतु है जो इतनी विपत्ति झेलके यहां आयेहो हातिमनेकहा कि मैं शाहाबादसे अहमरके बनकीओर जाताथा कि मैंनेराहमें एकजवानको वृक्षकेनीचेदेखा कि बहरो२ यही कहता कि जल्दी आ अब तेरी बिरह की आग नहीं सही जाती है तब मैंने उसको बहुत दुखी जान के उससे पूछा तो उसने अपना और तुम्हारी प्रीत का सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझे कह सुनाया और कहा कि मुझसे सात दिनकी अवधि बदि के गई थी तिसके सात वर्ष व्यतीतहुये कि आजतक नहीं आई और उसकी बिरह में ऐसा बलहीन हुआहूं कि मुझ में चलने की सामर्थ्य नहीं रही और उसने चलते समय कहाथा कि मैं सातदिन पीछे आऊंगी तू कहींयहांसे जानामत और जायगा तो पछितावेगा सो आजतक मैं उसके आसरेमें हूं कि मैं अपनी प्यारीकी आज्ञा कैसेटालूं जो मिलना है तो यहीं मिल जायगी जब मैंने उसको जानलिया कि इसकोसच्चा बिरहहै तब अपना काम छोड़के तुम्हारेपास आया हूं जो तुमउसदीन परदया करोतो मानों मुझेमोललेके औरउस अधमरे को भी जियाले यह सुन के उसने कहा कि हे यमनेश तेरे आगे मैं उसको भूल गई और न वह मेरे योग्य है और न उसका बिरह सच्चा है क्योंकि अपने प्राणों के डरसे अलका पर्वत पर पांव भी न धरा तब हातिम ने कहा कि जो वह सच्चा बिरही न होता तो आज तक तेरे आसरे में क्यों इतना दुःख सहता और यहसब मानी पर तूही उससे सातदिन की अवधि बदिके आईहै इसलिये वह अपनी प्यारीकी आज्ञा भंगकरना उचित नहीं जानता और कहताहै कि जो मिलना होगा तो मेरी प्यारी यहांही आ मिलेगी जो मैं यहांसे भूख प्यासके मारेकहीं चलाजाऊं और वहमेरे पीछे आवे और मुझे न पावे तो फिर गया समय हाथ न आवे यह सुनके उस सुन्दरीने कहा कि तू चाहे जितनी कह पर मैं तो अब

उससे प्रीति न करूंगी तब हातिम ने कहा हे सुन्दरी तेरे क्रोधका क्या हेतुहै देख जो वहबिरही अपने नयन चकोरोंसे तेरे चन्द्रानन को न देखे और इसी आशा में मरगया तो तुझे अपयश हुआ फिर ईश्वरके आगे क्या उत्तर देगी निदान उसने इसके भी प्रति उत्तर में इनकारही किया तब हातिमने कहा कि जो मेरी बात तू नहीं मानतीहै तो मैंभी तेरेद्वार पर अपने प्राणदूंगा क्योंकि तू मेरेपरि-श्रम और बिपत्तिकोतोदेख कि कितनी दूरसे परकार्य्यकोआया हूं तब उसने कहा कि अच्छा कि तेरे कहनेसे मैं उसे यहां बुलवा लूंगी पर उसकेसाथमें बिहार न करूंगी यह सुनकेहातिमनेकहा कि तूबड़ी कठोरहै अबमैं तेरे द्वारपर मरजाऊंगा औरमेरी हत्या तेरे शिर जावेगी यह कहके उसके द्वारपर जाके एक वृक्ष के नीचे जाबैठा और अन्नजल त्यागदिया इसीभांति हातिमको सातदिन बीते तब एकदिन स्वप्नमेंक्या देखताहै किमानों कोई पुरुष उपदेश करताहै कि हे हातिम यह अलगनपरी अति निर्दईहै इसने कि-तनोंको अपने चन्द्रमुखके पियूषकी प्यासमें मारडाला है इसलिये तुझे उचितहै कि पहले उसको बुलवाले तिस पीछे वह जो मुहरा तुझे रीछकी बेटीने दियाहै उसे उस बिरहीके मुखमें रखके पानी का कुल्ला कराके उसको दूसरेपानीमें मिलाकेकिसीभांतिइसको पियादे ईश्वरचाहे तो वह सुन्दरीही उसकी बिरहसे मरनेलगेगी यह सुनके हातिम चौंकपड़ा फिरकुछ देर पीछे सवेराहुआतोवह सुन्दरी हातिमके पासआके कहनेलगी हेजवान तैंने अन्नजल क्यों छोड़दियाहै जोतू मरजायगा तोतेरी हत्यामेरे माथेपर रहैगीतो मैं ईश्वरको क्यामुख दिखाऊंगी तब हातिमने कहा कि तू उसको बुलवाले जिसमें वह तेरे चंद्रमुखावलोकनसे अपने नयनचकोरोंको सुखदे तब उस सुन्दरीने कहा कि यह तो मैं तनमनसे करूंगी यह सुन हातिमने कहा कि मैंजाके बुलालाऊंतब वहबोलीकि मैंअभी परीज़ादों को भेजके बुलवालेतीहूं यह कहदो तीनपरीज़ादों को आज्ञादी कितुम उसठौर जावो और वहां किसीवृक्षके नीचेएक पुरुष आंखें मूंदे हाय मार२ पुकार रहा है सो तुम उसके पास जाके कहो कि हातिम उसठौर पहुंच गया और तेरीप्यारी से तेरादुःख जाकेकहा है सोतुझे अब अगनपरीने बुलायाहै यहकहके उसे शीघ्र लेआवो परीज़ाद अनुसासन पातेही पलक मारते ही उसके पास जा पहुंचे और उसे सब वृत्तान्त सुनाया तबवह अपने ठौर से उठा और हातिम को धन्य२ कह उनके साथ होलिया

उन्होंने एकही दिनमें बादशाहज़ादीके पास ला खड़ाकिया फिर उससुन्दरीने उसकोपास बैठालिया उसको देखतेही मुर्च्छाआगई तबउस सुन्दरीने उसके मुखपर अपनेहाथसे गुलाबछिड़का जबचेत हुआतो उससे धीरामेंकहा किअबमुझे भलीभांति निहारिले निदान वह दिन तो इसी भांति बीता सांझके होते अलगनपरी ने आज्ञादी कि आज हर्षकी गानमण्डली रचीजाय और रागरंगहो निदान परियां सबगाती बजाती थीं और ये दोनों बैठे देखरहे थे पर अलगनपरी उसजवानकी ओर कुछमनुहार नकरतीथी इतने में हातिमने कहाकि इस सुहरा को पानीमें घिसके मुखमें छोंड़ और फिर उसके पानीपीने की गगरीमें कुल्लाकरके चुपकेचलाआ वह जवान कुल्लाकरही रहाथा कि इतनेमें और परियोंने देखके कहा कि तेरा पानीके घड़ोंके पास कौनकाम था तब उसने कहा किमैं प्यासा अधिकथा इसलिये पानीपीने आयाथा परियोंने उस को पानी पिलाके फिर अपनी ठौरपर बैठाय दिया इतने में जब हातिमने देखाकि अबयह जवान अपना कामकर आया है तब हातिमने कहाकि इस समय गरमी बहुतहै इसलिये थोड़ाशरबत बनवावो बादशाहज़ादी ने शरबत बनाने की आज्ञादी परहातिमने अपनेही हाथ शरबत बनाया प्रथम बादशाहज़ादी को दिया उसने हातिमके हाथसे शरबत लेकेपिया और पीतेही उसजवान पर बावली होगई जब हातिमने रंगरूप और का औरही देखा तो कहनेलगाकि हेसुन्दरी इसदीन बिरहीको दयाकरके अपनी सेजामें क्यों नहींलेती तब उसने कहा कि यह मेरी समझ में नहीं आता कि यह अग्निकिस कौतुकीने लगाई जिसका ज्वाला मेरे चित्तमें धधकाहै जिसके बलसे इसपुरुषकी प्रीतिकी गांसी मेरेकलेजेको छेदतीहै और इसको आंखोंकी पुतली समान अलगकरने में महादुःख होता है और मैंने तेरी बातभी मानली परंतु अपने माता पिताकी आज्ञाबिना मैं कोई अनुचित काम नकरूंगी यह कहके चट उठके माता के महल में गई और शीशनाय चुप खड़ी होरही तब उसकीमाताने शीघ्रआनेकाहेतुपूछा किचालीशदिनके पहले क्यों आई तब उसकी सहेलियोंमेंसे एकने कहाकि हेमहारानी राजकन्या के बिरहमें एक सुन्दर पुरुष कितेक बर्षोंसे बिकलथा सो अब यहां आपहुंचा है और राजकन्या भी उसकीप्रीति के फंदमेंफँसीहै परंतु तुम्हारीबिन आज्ञाके बात करने को डरतीहै यहसुनके वह अपने पतिके पास आके कहनेलगी कि बेटी किसी

मनुष्यके बिरहमें व्याकुलहै सोउसकेसाथ बिवाहकरनेका बिचार करती है यह सुनके बादशाह ने कहा कि बज़त शुभ तब अलगन परीने हातिम सहित अपने प्रीतम को अपनी माता के सम्मुख बुलवाया उसकी माता देख के बज़त प्रसन्न ज़ई और आशीश देने लगी तब उसके पिताने व्याह की सामा करके बड़े धूमधाम से अपनी बेटी का बिवाह करदिया और वे दोनों प्रीतम प्यारी आनन्द से सुखलेनेलगे और हातिम को आशीश देतेथे कुछदिन पीछे जब हातिम ने बिदा मांगी तब अलगन परी पूछने लगी कि अब तेरा कहांजानेका बिचार है हातिमने कहाकि मैं अब अहमर के बनको जाऊंगा यहसुनके अलगनपरीने कईपरीज़ादों को आज्ञा दी कि हातिम को वहां पज़ंचावो वे उसकी आज्ञानुसार अहमरके बनमें पज़ंचाके आप वहांसे चलेआये और हातिम उस ओर को चला जहांसे बोलसुनाई देताथा कि किसीके साथ बुराई मतकर और करैगा तो वही पावेगा थोड़ी दूर चलके देखे तो एक मनुष्य कालीना एक पींजरामें बन्दहै यह उसके पास जाके पूछनेलगा कितूबारम्बार इसीशब्दका उच्चारण काहेको करता है तब उसने कहाकि जो तू कुछ उपायकरै तो मैं तुझसे अपना दुःख कहूं नहीं ऐसे बज़तेरे पूछा करते हैं तब हातिमने कहा कि अच्छा कहतो सही तब उस बूढ़ेने कहाकि मैं अहमर सौदागर हूं जब मैंने जन्मलिया तोमेरे पिताने यहदेश मेरेनामसे बसाया और मुझको इस शहर में छोड़के आप किसी दूसरे देशमें व्यापारके लियेगया और उसी बेर उसने स्वर्गबास किया मेरे पास भी बज़त सा धन था परन्तु और अनरीति और वृथा खर्च करनेके हेतु दीन और निर्द्धन होगया और थोड़ी सी द्रव्य मुझे दबी ज़ई मिली सो भी थोड़ीही अवधि में समाप्त किया इतने में एक पुरुष बाज़ार में आकर कहनेलगा किजिसकिसीका धन पृथ्वीमेंगड़ाहो और वह भूलगया हो उसको मैं निकाल देऊं तो मुझे चतुर्थांश देवे यह सुनके मैंने उसको चतुर्थभाग देने को कहा उसने दो तीन ठौर की माटी खोद के सूंघी तब एक कोने में उसने बताया वहां अमित धन निकला मैंने लोभवश उसको चतुर्थ भाग तो नहीं दिया किन्तुथोड़ी सी द्रव्य उसके आगेधरी उसने अपना कहा ज़आभाग मांगा मैंने उसको मारनिकाला वह दीन निराश होके मुझे कोसताज़वा चलागया थोड़े दिनोंमें आके मुझसे बड़ी मैची करी और कहनेलगा कि मेरी दिव्य दृष्टि है जितनी सम्पदा पृथ्वी में

गड़ी है सो सम्पूर्ण मेरी दृष्टिगोचरहै मैंने कहाकि भलाकोई ऐसी भी यत्नहै जिससे मेरीभी दिव्यदृष्टिहोजाय तबउसने कहाकियह तो बऊत सरल बातहै चलमैं तेरे एक सुरमा लगादेऊं उस अंजन के लगतेही तुझे सम्पूर्ण दृष्टि परने लगेगा यह कहके मुझे इस बनमें लेआया जबमैंने यहपिंजरा देखा तो पूछाकि यह किसने धरा है उसने कहाकि मुझेतोनहीं मालूम फिरएकअंजन कीसींकमेरी आंखोंमें फेरदी मैं ततकाल अंधा होगया तब मैंने कहा हे मिच अबतो मैं अन्धा होगया तब उसने कहा कि तेरी बुराईका यही फल है और जो नेचोंकी दृष्टि चाहताहै तोइस पींजरे मे बैठ और यह पुकार के कहाकर किबुराई मतकरोऔरजो करोगेतोवही तुम्हारे आगे आवेगी फिर मैंनेपूछा कि सत्यबता किमेरीआंखों की औषधि क्याहै और कहां और किसके द्वारा मिलेगी तब उसने कहाकि कुछदिन बीते यहांएक हातिम नामक सत्पुरुष परमार्थी आवेगा उससेजबतूअपनी विपत्ति कहेगातो वहकहींसे खोजके एक प्रकार की घास नूरेज अर्थात् दृष्टि प्रकाशक होती है सोउसका पानी तेरीआंखों मेंपरैगा तबनेचज्योंकेत्योंहोजायंगे सो उसीके आसरे मैंतीस वर्षसेइसपींजरामें बैठाहूं औरकभी २ अकुताय के जो इसके बाहर निकलताहूं तो रगैंरगैं दूखने लगती हैं तब फिरमैं इसी पींजरामेंआय घुसताहूं और हाय मार २ के यहीकहता हूं इसीभांति अनेकआये किसीने मेरे रोगकी चिकित्सानकरी तबहातिमनेकहा तू धीर्यधरमैंतेरी दृष्टिकी यत्नकरूंगा इतनेमें वे परीज़ाद हातिम को पऊंचाके अलगन परीके पास जब गये तो देखतेही वह बऊत क्रोधातुर होके कहने लगी कि अभी शीघजावो और हातिम के साथ रहो और उसको कुशल पूर्वक उस के घरपऊंचाके आओइसीमें तुम्हारी भलाईहै वेइसबातको सुनतेही हातिम के पास आकर कहने लगे अब आपका विचार कहांजानेकाहै हातिमनेकहाकिमैं अबनूरेज घासलेनेकोजाऊंगा मुझे उसघास के वनमें पऊंचादो तब उन्होंने कहाकि हम केवल उस बनके किनारे पर पऊंचादेवेंगे परउसके भीतर न जांयगे तुम जो भीतरसे कुशल क्षेम लौटोगेतो आपको लेआवेंगे नहींतो शाहज़ादी से तुम्हारे समाचार कहसुनावेंगे तब हातिम ने कहा कि तुम्हारे न जानेका कौन हेतुहै उन्हों ने कहा कि जिससमय वह घास जगती है तब सम्पूर्ण वनस्पति उसबनकी जगमगाने लगतीहैं और मारे सुगन्धके सम्पूर्ण बनमहकने लगता और वहघास

दीपक केसमान जलतीहै उससमय सम्पूर्ण जीवजन्तु उसके चारों ओर घेरके खड़ेहोतेहैं इससे वहांजाने को किसीको सामर्थ्यनहीं है यहसुनके हातिमने कहा कि अबतो चलता हूं राम करैगा सो होगा यह कह एक परीज़ादके कांधापर बैठलिया और शेषसाथ मेंरहे चलते २ कई दिनमेंएक मैदान दृष्टिपड़ा तब हातिमने पूछा कि वहघास कहांहै उन्होंने कहाकि अभी जगीनहीं है दोचार दिनमें जगेगी तब हातिम और वे परीज़ाद वहांहीं रहे जब वह घास जगी तब सम्पूर्ण बनकी बनस्पति जगजगाके दीपक केसमान जलउठी मारे सुगन्ध के सम्पूर्ण बनमें अरघान उठी और जितने बाघ बराह पशुपक्षी आदिथे सबउसके चारोंओरघेरके खड़ेहुयेतब हातिम उनसे बिदाहोके गया और वहांसे कुछपत्ती और फूल लेके उनकेपास आया तो वे अपनेमनमें कहनेलगे कि न जानेंकिस भांतिका मनुष्य है ऐसा मनुष्य नतो आगे हुवाहै न होनेवालाहै निदान वहांसेचले फिर कई दिन में उसबूढ़ेके पास आपहुंचेतब हातिमने पुकार के कहाकि मैं तुम्हारेलिये औषधि ले आया तबउस बूढ़ेने कहाकि हे प्यारे जो लयाहै तो उसको मलिके दो बूंद मेरी आंखोंमें छोड़दे हातिम ने मलिके उसका पानी उस बूढ़ेकी आंखोंमें छोड़ा तो पहिलेतो आंखें उबलआईं फिरनीली हुईं फिरपानी सूखगया और उसकी आंखें आंब कीसी फाकें खुलगईं तो वह हातिमके चरण परसने लगा हातिम ने उसको हृदय में लगालिया और कहा कि प्यारे मैंने तो परमेश्वर की राहमें कमर बांधी है और जो किसी काकाम मेरे हाथसे निकलता है उतनाही समय मैं स्वारथ जानताहूं यह सुनके उस बूढ़ेने कहा कि मेराघर यहांसे थोड़ीदूरहै और मेरे बहुतद्रव्यहै जितनी तेरामन माने उतनी तू लेजा तब हातिमने कहाकि द्रव्यमेरे किसकाम की है मेरेही पासअमित द्रव्यहै उसीको ईश्वरकीराहमें खरच करताहूं तेरी द्रव्य लेके क्याकरूं यहकह वहांसे बिदा हो शाहाबादके निकटपहुंचा तबपरीज़ादोंने कहाकि आपदया करके एकअपना पहुंचकापत्र हमको बादशाहज़ादी केचित्त संतोषार्थ लिखदीजिये जिसमेंहमारे प्राणबचैं हातिमने उनकोएक पत्रलिखदिया और आप शहरमेंआके मुनीरशामीको देखकेबहुत हर्षित हुवा फिर दोनोंजने हुस्नबानूके पास गये उसने रत्नजटित चौकियां बिछवादीं और आप चिलमनके भीतरसे अपने प्रश्नका उत्तर पूछनेलगी हातिमने जैसाथा वैसाही कहसुनाया हुस्नबानू

बज़त प्रसन्नहो हातिमकी प्रशंसा करनेलगी तिसपीछे भांति २ के व्यंजन दोनोंको करवाये उसदिनतो दोनों वहांहीरहे और सबेरे उठके ज़ुस्नबानूसे पूछा कि अब तेरा कौनसा प्रश्न है सो मुझे बता उसेभी ईश्वरकी दयासे खोजकाढ़ूं तब ज़ुस्नबानू ने कहा कि अब इसका शोधकर कि सत्यबादी सदासुखी उसने कौनबात ऐसीसत्य कहीहै कि जिससे उसकोसुख प्राप्तज़ुवाहै तब हातिमने पूछा कि तुम जानती हो कि वह कहांहै ज़ुस्नबानूने कहा कि मैंने अपनी धायसे सुनाहै कि वह शहर करममें रहता है केवल इतनाही जानतीहूं परयहबुद्धि मुझको नहींहै कि वह किसओरको है हातिम यहसुन उठ खड़ाज़ुवा और कहनेलगा कि अच्छा ईश्वर इसको भी सिद्धही करदेगा॥

चौथा प्रश्न हातिमके जाने और इसबातके शोधने के बिषय में कि सत्यबादी सदासुखी॥

निदान हातिम ज़ुस्नबानूसे बिदाहो शाहाबादसे निकल और कितेक शहर नांघने के उपरान्त एक पर्बतके नीचे जाके एक नदी रक्तकी बहतीदेखी उसकोदेख बज़त बिस्मित हो अनुमान किया कि इसका शोधलेना अवश्य है कि यह जल कहांसे आताहै और लालपानीके प्रबाहका क्या कारणहै निदान यहशोच उसके उद्गमस्थानकी ओरचला तो थोड़ीदूरचलके एक बड़ाभारीवृक्ष इस दशासे दृष्टिपड़ा कि उसकी प्रत्येक डारमें मनुष्योंके कड़ोरोंशिर लटकतेहैं और उसकेनीचे एक सुन्दर तालाब स्वच्छपानीका भरा है और उनशीशोंसे रक्तकेबूंद टपक २ के उसीपानीमें पड़तेहैं वही पानी रक्तसंयुक्त उसनदीमें जाताहै इसीहेतुसे उसनदी का पानी लालबहता था हातिम यह कौतुक देखके उसवृक्षके नीचे बैठगया इसके बैठतेही सबमूड़ हातिमकोदेख खिलखिलाके हँसे तो इसको औरभी सन्देह ज़ुवा और चारों ओर चकित हो निहारनेलगा इतनेमें उसकी दृष्टि सबसे ऊपरवाले शीशपरपड़ी यह उसके देखतेही मर्च्छितहोगया जबथोड़ीदेरमें चेतज़ुवा तबअपने मनमेंशोचा कि जो मैं इस अद्भुत चरिचको बिनाशोधे जाऊं तो औरों से इसके क्या समाचार बताऊंगा इसी शोचमें बैठे दिन ब्यतीत ज़ुवा और संध्यासमय आनपहुंचा तब हातिम एककोनेमें चुपचाप बैठा देखा किया कि वे शीश वृक्षसे छूट२ उसी पानीमें गिरपड़े और उस तालाबके बीचमेंएकबैठका बनाज़ुवाथा तिसपरराजसीबिछौनाबिछा एक रत्नजटित सिंहासन एकओरधरा दिखाईदिया और कितनी

एक देरपीछे उसजलसे अनेकपरी निकलीं उनमेंसे एक नौयौवना चन्द्रमुखी अनंग मदपिये छबिलिये बड़ेमान रूपके गुमान से उस सिंहासनपर आबिराजी इसीसे बिदितहुवा कि वही उनसबोंमे अधीश्वर थी और उसी का शीश उस वृक्षमें सबोंपरि था और कितेकपरी उसके सिंहासनके आसपास यथायोग्य अपनी २ चौकियोंपर बैठगईं और कितेक हाथ बांधे खड़ीही रहीं तिसपीछे गन्धर्व समाजसाजि नृत्यकरनेको आसन्मुख खड़ेहुये और आनन्द बचन सुनाकर मृदंगपर थापदे मधुर२ स्वरोंसे कामछ्यानु बढ़ावनहारे राग गानेलगे और हातिम बैठा देख २ मनमें शोचे कि हे भगवान् यहक्या कौतुकहै कुछभेद नहीं जानाजाता इतनेमें जब आधीरातबीती तब भांति २ के षटरस व्यंजन सोनेके थालोंमेंआये उससमय उस रूपराशिने एक अनुचरीसे कहाकि एकपथिक उस वृक्षके नीचे बैठाहै उसको एक थारमें भोजनलेके देआवो आज्ञा पातेही एकदासी थारमें भोजन लेके हातिम के पासआके कहने लगी कि हमारी स्वामिनिने तुमको भोजनभेजाहै यहसुन हातिम ने पूछा कि तू कौनहै और क्यानामहै औरतेरीस्वामिनि का क्या नामहै तब उसने कहा कि तुझे इससे कौन कामहै जो भूखाहो तो भोजनकरले हातिमने कहाकि जबतक तू मुझे यह न बतावेगी तब तक भोजन न करूंगा यह सुनके वह लौटके उस सुन्दरी के पास जाकर कहनेलगी कि वह भोजन नहींकरता और कहता है कि मुझे अपना और अपनी स्वामिनी का नाम और अपनी सभाका भेदबतादो तो भोजन करूंगा नहीं तो नहीं यहसुन उस सुन्दरी ने कहाकि तु उससेजाके कह कि आज भोजनकरले कल्हमैं तुझसे सबसमाचार कहदूंगी उसदासीनेउससुन्दरीकी बार्त्ताआकरहातिमसेकही तबहातिमने भोजनकिया और चाहाकि उसका हाथ पकड़े वहचट आगके पानीमें कूदपड़ी और उस सुन्दरीके पासजा खड़ीहुई निदानवेसब रातभरतो नाचरंगमेंरहीं और सबेराहोतेही पानीमेंकूदपड़ीं और उनकेशीश पानीपैउतराये और उछल२ के यथापर्वक वृक्षकीडालियोंमें जालटके औरहातिम उससुन्दरी केशीशपैटकटकी लगाये देख २ मनही मनकहै कि जो इस सुन्दरी को सजीवपाऊंतो जैसेबनैतैसे इसके साथ बिवाहकरूं परन्तु इस का कुछभेदनहीं खुलता कि यहक्या आश्चर्यकीबातहै कि रातको तो सजीवहोजाती हैं और दिनको इनके शीश आपसे आप वृक्ष की डालियों में लटकजाते हैं होनहो तो यहचरित्र मायाका है

निदान इसीशोच बिचारमें दिनकटा जबसांझ हुईतो फिर यथा पूर्वक वहीचरित्र होनेलगा नाचकेउपरान्त फिरसबके आगेभोजन जबधरेगये तबफिर उससुन्दरीने कहाकि एकथालमें भोजन उसे भी दे आवोजब वहहातिमके पासभोजन लेकेआई तब हातिम ने कहाकि तैंने आजबतानेको कहाथा सोमुझे पहलेबतादे तोमैं भोजन करूं तबफिर उसने बादशाहज़ादी के पासजाके कहा तो बादशाहज़ादीने कहाकि तू उससे कहदे कि पहले भोजन करले फिर मेरेसाथचल जब बादशाहज़ादी के पासपहुंचेगा तबयहभेद खुलजायगा उसने हातिमसे उसीभांति आ कहा जब हातिम भोजन करके उसकेसाथ चलातब वहतो तालाबमें कूद बादशाहज़ादीके पासजाखड़ीहुई पीछेसे हातिमने गोतामार आंखेंखोलींतोनवह तालाबहै न वह वृक्षहै केवलएक लम्बाचौड़ापटपरहै उसीमें अपने को खड़ापायातो एकसंग हायमारके पुकार२केरोदन करने लगा और मूड़पररेत छोड़के फिरनेलगा निदान इसीभांति सातदिन बीतेतो ख्वाजाखिजरको ईश्वरकी आज्ञाहुई कितू उसबनमेंजहां हातिम बावलोंकी सी सूरत बनायेफिरताहै जाकर उसकी सहायताकर क्योंकि वह बहुतसेमनुष्यों के साथभलाई करके इससंसार में अपनानाम बिदित करैगा आज्ञा पातेही ख्वाजेखिजर हरेबस्त्र धारणकिये हाथमें आसालिये हातिम की दाहिनीओरसे प्रकट हुआ तो हातिम उसको देखकर और भी अधिक रोने लगा तब उससिद्धने हातिमका शीशअपनेहाथसे छुआतब हातिमकी सुध बुध ठौरठिकाने हुईतो पूछनेलगा कि हे गुरुदेव इसठौरका क्या नामहै और मैं यहांकैसेआया तबउसने उत्तरदियाकि इसबनका नाम ख़बरपुर्स है और यहांआनेका यहहेतुहै कि तू उस तालाब में उसपरीकेसाथकूदाथा और वहतालाब और वृक्ष और मकानादि माया के प्रपंचसे रचेहैं और उस तालाब के बनानेका यही अभिप्रायहै कि जो कोई उसमेंकूदे वहइसबनमें निकले और अब वह ठौरयहांसे तीनसौकोसहै यहसुनतेही हातिम पृथ्वीमें लोटने और रोरोके कहनेलगा कि हायहाय मैं अब वहां कैसे पहुंचूं और जो मेरीअभिलाष न पूरी होगीतो मैं अपने प्राणखोयदूंगा तबखिजरनेपूछा कि तेरी अभिलाषा क्या है हातिमने कहा कि मैं जहां था वहांहीं पहुंचूं ख्वाजाने कहाकि अच्छा तू मेरा आसा पकड़के आंखेंबन्दकर वहीं अपनेको देख हातिमने उसके कहनेके अनुसार उसके आसाको पकड़ा तो क्षणमात्रमें उसीवृक्ष के नीचे

पहुंचा और अधीर होके उस दृक्ष के ऊपर चढ़नेलगा तो दृक्ष हिलनेलगा और गिरनेसेबचा परन्तु उसकी पींड में लिपटरहा और जब दृक्ष हिलने से बन्द हुआ तब फेर चढ़नेलगा उस समय एक शब्दाघात हुआ और दृक्षफटगया उसमें हातिम कमर तक समायगया जबकुछ बश नचला तब कहनेलगा कि यह क्या कारण है कि जब पहले इसके पासजानेका अनुमान किया तो वह दशा हुई और अब यह संकट आपड़ाहै निदान बहुतेरा बल मारा पर भीतरही को घुसतागया यहां तक कि केवल आंखोंसे देखे और सम्पूर्णधड़ उसमें घुसगया तबख़ाजाखिजर आयकर कहनेलगाकि हातिम तू काहेको बिपत्तिमें फँसके प्राणका घातकरताहै हातिम को उससमय उत्तर देनेकी सामर्थ्यनथी कुछनबोला तब ख़ाजाने अपना आसा उस दृक्षपर मारा वह मोमसमान होगया हातिम निकलके बाहर आया थोड़ी देरमें चित्त संतुष्ट हुआ तो ख़ाजेने हातिमसे पूछाकि हे हातिम तू काहेको इतना कष्टसहताहै तुझे इनसे क्या प्रेयोजनहै हातिमने कहाकि मैं इनका भेद जाना चाहताहूं तबख़ाजेने कहा कि यह शामअहमर जादूकी बेटीहै और यह तालाब और दृक्षमायाके प्रपंच करके इस हेतुसे रचागया है कि एकदिन इसने अपने पिता से कहा कि पिता अब मैं युवाहुई मेराबिवाह करदे यह सुनके उसने बहुत क्रोधित हो इसमाया के जंजालमेंलेकर डालदियाजबतक वहजीताहै तबतकइसकाबिवाह न करेगा और यह किसी के हाथ न लगैगी यह सुनके हातिम बोलाकिअबमुझे मालूमहुआकि मेरीमृत्युयहां मुझेलेआईहै इसी से मैं शामअहमरजादूकी मायामें फँसाहूं यह सुनके ख़ाजेने कहा कि हे हातिम तुझे जो उसकीबेटीके लेनेकी अभिलाषहै सो अनुमान अपने चित्तमें न कर और वृथा अपने को इस जंजाल में न छोड़ तब हातिमने कहाकि मैंतो अपने प्राणोंसे हाथ धोबैठा जो चाहे सोहो जबतक मुझेयह सुन्दरी न मिलैगी तबतकमैं पीछेपांव न धरूंगा तब ख़ाजाने कहा कि अच्छा तेरी क्या अभिलाष है हातिमने कहाकि मेरेमनमेंतोयही अभिलाषहै किमैं इसवृक्षकेऊपर चढ़काउनसे बातेंकरूं फिरख़ाजाने समझायाकि हे हातिम तू जान बूझकेकाहेको बिषखाताहै हातिमने उत्तरदिया कि मेरी इसीमें भलाईहै किमैं इससे अलगन होऊं तबख़ाजेखिजरने एकआसाउस वृक्ष परमारा और इसमेंआजम अर्थात् मुसल्मानोंके धर्मका महा मंत्र पढ़के फूकदिया और कहा कि लेअब इसवृक्षपर चढ़जा और

आप हातिम की दृष्टिसे लोपहोगया जब हातिम उसवृक्षकेऊपर चढ़केउस सुन्दरी के शीशकी बराबरगया तो वह शीशभी सबशीशोंके बराबर आ लटका और हातिमकाभी शीशकटके सबशीशों में आमिला और धर पानीमें गिरपड़ा और आकाश से मार २ धर२ सुनाई देनेलगा पृथ्वीसे भी कोलाहल उठा जबसांझहुई तब सम्पूर्ण शीश हातिमके शीशसमेत उस तालाबमें गिरपड़े फिरसब के धड़ लगगये और अपना २ काम यथा पूर्वक करनेलगे हातिमभी हाथबांधे एक कोनेमें सिंहासन के पासखाड़ा होरहा तब उस सुन्दरी ने पूछाकि तू सत्यवता कि कौनहै और तेराक्यानाम और तू कौन देशका निवासीहै और तेराक्या प्रयोजनहै हातिमनेकहा किमैंभी तेरे सेवकोंमेंसे एकहूं इसीजलसे निकलाहूं यह सुनउस सुन्दरीने जाना कि यहमेरीप्रीतिके फन्दमें फँसाहै कुछ न बोली और अपने नाचरंगमें लगीरही जब आधीरात हुई तब भोजनकरनेकी तैयारीहुई भांति २ केषटरस व्यञ्जन आयके धरेगये तबउस सुन्दरी ने बड़े प्यारसे हातिमको अपने पास बैठालकेकहा कि हे जवान कुछ भोजनकरहातिमने भोजनकिये पानीपिया परंतु यह न जाना कि मैं कौनहूं और कहां और किस कामको जाताहूं फिर नाचरंग देखते २ सबेराहुवा तोसबशीश हातिमके समेत उस वृक्षमें जालटके धड़पानीमें रहगये इसीभांति कईदिनबीते तबएक दिन ख़ाजा खिजरआये और अपने आसासे हातिमका शीश उस वृक्षसे उतार पानीसे धड़ निकालके उसको मंत्रद्वारा सजीवकिया तब हातिमने जो आंखेंखोलीं तो उसी सिद्धको अपने सिरहाने खड़ा देखा हातिमने उसके चरण परसे उसने पूछा कि हे जवान अबतक कहांथा हातिमने उत्तरदिया कि मैं उसी चन्द्रमुखी के मुखारबिन्दइन्दुकोनिहार२ अपने नयन चकोरोंको सुखदेरहाथा फिर उसने पूछाकि अबतक तेरेनेत्र उसके रूपको निहार के तृप्तनहोंहुये हातिमने कहाकि आपमुझे ऐसे दुःखमें देखतेहैं और कुछ उपायनहीं करते तब उससिद्धने कहाकि अच्छा तेरी क्या अभिलाष है हातिम ने कहा मैं तो जबतक यहसुन्दरी न पाऊंगा तब तक इसकापीछा न छोड़ूंगा और इसीशोच में मरजाऊंगा तब ख़ाजा खिजरने कहाकि जबतक इसका पिता शामअहमर जादू जो बड़ामायावीहै न माराजायगा तबतक इस फूलकी सुगन्ध तेरे नयन मधुकर को दुर्लभहै हां जबवह मायावी माराजाय तब निस्सन्देह तू इसके रूप समुद्रका मीनहोसक्ताहै और उसके जीतेजी

तो तेरीअभिलाष पूराहै इसलिये प्रथम तू उसके मारनेकी यत्नकर तिसपीछे इसके चन्द्रानन से अमृतपान करनेका बिचारकर चल अबमैं तुझे मंत्रसिखाये देताहूं तूपवित्रहोकरना नित्यस्नान और दिनमें व्रत रातको भोजनकरना हातिमने हर्षित होके अंगीकार किया तबख्वाजा खिजरने हातिमको इसमआजमसिखाके कहा कि अबतू अहमरके पर्वतकी ओरअभय होचलाजा हातिमनेकहा किमैं उसको कहां खोजूंगा तब उस सिद्धने कहा कि मेराआसा पकड़ औरआंखमूंदहातिमने आसापकड़आंखबन्द कियातोक्षण मात्रमें एक पर्वतपर जापहुंचा जोवहां देखेतो बरण २ केफूलबिना बसन्त ऋतुके बिकशितहैं यहदेख हातिम बहुतप्रसन्नहो उस पहाड़के ऊपरचढ़ा तो वहांके पत्थरों ने हातिम के पांव ऐसे पकड़े कि फिर पांवनउठे यथा चुम्बक लोहे को तब हातिमने जानाकि यहीकोहे अहमर अर्थात् अहमर जादूगरका पर्वतहै अब मंत्रका स्मरणकरना उचितहै जब हातिमने मंत्रका पाठकिया तो पत्थरों से पांवछूटे फिर उसीभांति पाठ करता हुआ आगेचला तो एक मैदान बहुत लम्बा चौड़ा दृष्टिपड़ा फिर आगेबढ़ा तो एक सोता पानीका जिसकेचारों ओरमेवाके फलितवृक्षलगेहुये दिखाईदिये हातिमने कपड़ा उतारके उसमें स्नान किया और दूसरा जोड़ा पहर के मंत्रका पाठ करनेलगा तो उसके प्रभावसे सब पशु पक्षी मायाकृत जोधे भागगये यह समाचार शाम अहमर जादूगर को पहुंचा तबउसने ज्योतिषकी पुस्तक निकालके जो देखातो जाना कि एकदिन हातिमताई इस पर्वतपर आके हमारीमाया कोभंग करैगा सो आजवही उससोता पर खड़ा मंत्रपढ़ता है और इस मंत्रके पढ़नेवालेको मायानहीं व्यापती इससे अबऐसी यत्नकरनी चाहिये कि जिसमेंउसका पाठछूटेतो कुछउपायचले यहसोचके उसनेऐसीमायारची कि चारोंओरसेबारांगणाओंके यूथकेयूथआये और उनमें एक सुन्दरी उसकी बेटी की सूरत की हाथमें मदिरा की सुराही और प्यालालिये दिखाईदी तब शामअहमर ने कहा कि तुम उस साते परजावो और हातिमको मदिरा पानकरा के वहीं मारडालो वे उसकी आज्ञानुसार हातिमके पास आईं तो हातिम देख बड़ेविस्मय को प्राप्तहुआ और शोचनेलगा कि येतो सब मैंने वहांछोड़ी हैं यहां कहांसे आईं फिर अपने मनको समझाया कि क्या सन्देह है उनके बापका घरहै कदापि आईहीहों इतनेमें वे हातिमके पासआके बैठके कहनेलगीं कि हेहातिमआज

मेरे पिताने मुझे इस बाग़के देखनेको बुलाया था सोजब मैंने तुझे देखातो तेरे मिलनेको यहां आईहूं तू बहुत परिश्रमकरके आया है सो थोड़ी मदिरापानकर जिसमें राहका श्रम उतरजाय यह कह मदिरा का प्याला भरके हातिमको दिया हातिमने उसके हाथ से लेके कहा कि आज मेरी भाग्य धन्य है जो मेरी प्यारी अपने हाथसे मुझे मदिरा पानकरानेको आईहै यहशोचमदिरा को पीलिया त्योहीं वह सुन्दरी महाभयंकरदेवकी सूरत होगई और हातिमको बांधके शामअहमरके पासले खड़ा किया शाम-अहमरने हातिमको देखके आंखें नीचीकरके कहा कि ऐसे युवा पुरुषको बध करना तो बड़ी मूर्खता है परन्तु यह शत्रुहै इसलिये कुछपै कुछदण्डदेनाचाहिये यहशोचकेआज्ञादी किइसकोअग्नि कुण्डमें छोड़के उसकेमुखपर एकसहस्रमनलोहकी शिलाढांपदो नौकरों ने उसकी आज्ञा का प्रतिपाल किया और थोड़ी देरमें आकरशामअहमरसे कहाकि अबतोवह अग्निकुण्डमें जलकेराख होगया होगा परन्तु उसकेमुखमें जो रीछकी बेटीवाला सुहरा था उसके प्रभावसेउसका बालभी नहींजलाथा जब शामअहमरने जो अपनी ज्योतिष की पुस्तक निकाली और बिचारा तोमालम हुआ कि हातिम एक सुहराके प्रभावसे अग्निकुण्डमें ऐसे सुखसे बैठाहै जैसे कोई शीतल अमराईमें बैठा हो जाकिसी भांति वह सुहरा मिले तो उसपै बशचले जबतक वह अपने आप वहसुहरा न देगा तब तक वह किसीकामका नहीं यह शोचके आज्ञादीकि उसको अग्निकुण्ड से निकालके फिरउसी सोता पर बैठाआवो उन्होंने उसकी आज्ञानुसार हातिमको उसी सोतापै जाबैठाला और यहां शामअहमरने मायाके बल उन्हीं स्त्रियोंका वय फिर उत्पन्न करके आज्ञादी कि तुमजाके हातिमसेवहसुहरा लेआवो वे उसकी आज्ञानुसार हातिम के पासजाके कहनेलगीं हे मित्र हातिमअबतेरे पास न बैठूंगी क्योंकिजबकी बेर मैंतेरेपासबैठी वह भेद शामअहमर जादूगर मेरे पिताने जाना तो तुरन्त कालादेव पठायके मुझेऔर तुझेदोनोंको उसके हाथसेपकड़वामँगाया और तुझे इतना दुःख दिया जिससे मेरा भी चित्त बहुतदुःखित हुआ इसलिये अबमैं दूरहीसे तेरे मुखारबिन्दको निहार२ अपनेनयन चकोरोंकोसुखदिया करूंगी जोमैं तेरेसाथ बैठूं और मेरेपिताको यह भेद बिदितहोजाय तो न जाने तेरे लियेकौन दण्ड नियत करे यह सुनके हातिमने उसका हाथ पकड़के अपने पास बैठाल लिया

तब वह मायारूपी सुन्दरी बोली कि हे मित्र सत्य बता कि तू अपने मनसे मुझे चाहताहै तब हातिमने कहा कि मैं तोसुन्दरीतुझे अपने प्राणोंसे भी अधिक जानताहूं यह सुनके वहबोली कि जो तू सत्यही मुझे प्राणसमान मानताहै तोमुझे अपने पास से वहसुहरा जो रीछकी बेटीने दियाथा सो देदे तब हातिमने पूछा कि तूनेकैसे जाना कि मेरे पास वह सोहराहै उसने उत्तर दिया किमेरे पिता ने ज्योतिषके बलसे जाना है तबहातिमने कहा कि वहसुहराकुछ मित्रसे अधिक नहींहै निदानज्योंहीं हातिमनेचाहा कि निकास के सुहरा मायारूपी बादशाहज़ादीकोदें त्योंही दाहिनीओरसे यह सुनाई दिया कि हेमूर्ख तुझे कुछ बुद्धि भी है सचेत हो और सुहराकभी न दीजियो नहीं तो दुःख की क्या चलावेअपने जीवसे जायगा यह सुनके हातिमने पूछा कि तुम कौनहो जोइस दानमें बाधालगातेहो तबउसने कहा कि मैं वहीहूं जिसनेतुझे इस्मआ-जमका मन्त्र बतायाहै यह सुनकेहातिमने उसके चरणपरस कहा कि हेगुरुदेवयहक्या भेदहै तबउसनेकहा कि यहतेरी प्यारीनहीं है यह वहीहै जो तुझे पहले मदिरा पानकराय देवकीसूरतबनके तुझे शामअहमरजादूकेपासपकड़लेगईथी और उसनेतुझेअग्निके कुण्डमें छोड़दियाथावहांकेवल इसीसुहराकेप्रभावसेबचायाऔर जाये मूर्तें तेरेपासआईहैं सोमायाकृतहैं तू इस्मआजममन्त्रकापाठ कर जो बादशाहज़ादी होगी तो बैठी रहेगी औरजो मायाकृत होगी तो जलजायगी यहसुनके हातिमने मन्त्र पढ़ने का आरम्भ किया त्योंही सम्पूर्ण मूर्तें कांपनेलगीं और रंग बदलनेलगाथोड़ी देरमें प्रत्येकके शिरसे ज्वालाउठा और क्षणमात्रमें जलकर भस्म होगईं ये समाचार शामअहमरके पास पहुंचे कि सम्पूर्ण मूर्तें जो मायाकृत भेजीथीं सो हातिमने भस्मकरडालीं तब उसने कामदेव को मन्त्रद्वाराआकर्षण किया और बड़ेमान सन्मान सेबैठाल निज दुख कहसुनाया तबकामदेव बोलाकिमैंकुछनहीं करसकताक्योंकि वह अभी दीर्घआयु है और मैं क्या किसी की भी माया उसको व्यापनहीं सक्ती इसलिये तुझे उचित है कि तू अपनी बेटीव्याहदे यहसुनके शामअहमर जादूने कहा कि जबतक मैं जीताहूं तबतक तो व्याह न करूंगा तब मदनबोला कि जोतेरेमनसेयहीहै तोमुझे बुलाकरक्योंदुःखदियातबशामअहमरनेकहा किउसनेहमारी बहुतसी मूर्तें जलादी हैं इसलिये आपसे यहीप्रार्थनाहै कि उस का पाठ छूटजाय तबफिर मनमथ बोलाकि यहभीमेरी समार्थ्य

नहीं है कि मैं उसके मंच का पाठ छुड़ा सकूं क्योंकि खाजे खिजर उसकी सहायताको ईश्वरकी आज्ञानुसार नियत हुयेहैं परन्तु हां इतना होसक्ताहै कि वह अचेतहोजाय तो उसकावीर्य पतित करके उसेअशौच करसक्ता हूं यहसुनके शामअहमर बहुत प्रसन्न हुआ और मनोभव उसकी दृष्टिसे अलक्ष हो हातिम को अचेत करके उसका वीर्यपतित करदिया हातिम एकसंग चौंकपड़ाऔर अपने को अशौच जानके सोता में स्नान करने को गया तो वहां मायावी बैठाहीथा चट मायाकृत देव प्रगटकिया वह हातिम को पकड़के शामअहमरकेपास लेगया उसनेइसदेखके कहाकि इसका मारनातो उचित नहीं क्योंकि जो माराजायगा तो वह सुहरा वृथाही जायगा जो यह अपनी प्रसन्नतासे देतो कामआवेगाइस लिये इतनाकरोकि इसेलोहेकी जंजीरों में कसके पत्थरके खम्भों में कसदो केवल मुखभर इसका खुलारहै और जबतक यहसुहरा नदे तबतक न खोलो हातिम उस बन्दिमें ईश्वरहीका आराधन करता था कि हे परमेश्वर तेरे सिवाय मेरा कोई सहायक नहीं और शामअहमरने उसके चारोंओरजादूगर बैठालदिये निदान सात दिन रात इसी प्रकार बांधा रहा हातिम मारे भूख और प्यास के बिकल होगया था तब शामअहमर आया और कहने लगाकि हे हातिम तू मुझे वह सुहरा देदे तो मैं तुझे छोड़दूं हातिमने कहाकि जो तू अपनीबेटी मुझेव्याह दे तो अभी ले ले यह सुनतेही वहक्रोधाग्निमें जलकर आज्ञादीकि इसकेऊपरपत्थरों का मेहवर्षावो जिस्में इसकी हाडपसुरी चकनाचूर होजायं निदान जादूगरोंने पत्थर उठाके ढेरकिय तब हातिम से कहने लगे कि जो तू अपने प्राणों की रक्षा चाहता है और शामअहमर के क्रोधाग्निमें सलभहोनेकी इच्छानहीं है तो सुहरा दे नहीं पत्थर तेरे शीशपर वर्षतेहैं यहसुनके हातिमने कहाकिजोईश्वर चाहता है तो निस्संदेह तुम्हारे स्वामीको मार उसकी पुत्री को अपनी स्त्री बना छोड़ूंगा यहसुनके वे अत्यंत क्रोधितहो हातिम के ऊपर यहांतक पत्थरबर्षाये कि उनपत्थरोंका ढेर एक छोटी पहाड़ी सी दृष्टिआनेलगी तबउन्होंने जाके शामअहमरसे कहाकि महाराज अबतो हातिमको पत्थरोंका मेहबर्षाके चरण करडालायह सुन शामअहमर ने अपनी पुस्तक निकाल के जो देखा तो उसको मालूमहुआ कि उसकी देहमें तो पत्थरोंकी आंच भी नहीं लगी तब शामअहमरने कहाकि तुमको जो मेरी बातकी प्रतीत नहीं

है तो चाहे तुम पत्थर टालके देखलो उन्होंने पत्थर टाल के जो देखा तो हातिम ज्योंका त्यों निकला तबफिर ऐसा मेह वर्षाया कि उसपहाड़से भी दूना होगया और पत्थरोंको जो सरकाया तो फिर हातिमको कुशल पूर्वकपाया तब हारके शामअहमर ने कहाकि तुमप्रतिदिन इसीभांति पत्थर वर्षायाकरो और आप महलके भीतरजाके अपने मंत्र यंत्र पढ़नेमेंलगा निदान इसीभांति सातदिन बीते तब हातिम मारे भूख और प्यासके व्याकुल होके कहनेलगा कि हे मित्रो तुमने इससुहरा का प्रभाव देखा कि न तोमैं अग्नि कुण्डमेंजला और न पत्थरोंके मारेमरा अबमैं कहता हूंकि जोकोईमुझे उसीसोतापर पहुंचादे उसीको मैं यह सुहरा देदेऊं यहसुनके सबचौकीदारोंने कहाकि हमको तेरा सुहरालेने की अभिलाष नहींहै परन्तु उनमें एकसरतक नामक मायावीथा उसने लोभवश हातिम को सैनबताई कि मैं तुझे उसी सोतापर पहुंचादेऊंगा तब हातिमने भी सैनसे कहाकि मैंभी तुझीको सुहरा दूंगा निदान जबसब सोगये और वही सरतक मायावी केवल लोभवश जागाकिया जबउसने देखाकि सबमायावी सोगये हैं तब हातिमके पासआके कहनेलगा कि चलमैं तुझे वहां पहुंचादूं तो हातिमने कहाकि मुझमेंइतनी सामर्थ्यकहांहै कि जो इनपत्थरों से निकलूं यहसुनके उसने मायाछत एक देव प्रकटकिया उसीने हातिमको उनपत्थरोंसे निकालके सरतकसमेत उसी सोतापरले खड़ाकिया हातिमने पहलेतो अपने वस्त्रधोये फिरस्नानकर थोड़ा सा जलपान किया जब औच्यङ्गआतो वहीं इस्म आजम का मंत्र पढ़नेलगातब उससरतक मायावीने कहाकि हातिम मैंने तो तुझे यहां पहुंचादिया अबतूभी अपनोवाक्यका प्रतिपालकर तबहाति-मने कहातू सुहरालेके क्या करैगा और किसकेलिये मांगताहै यह सुहरा एक मित्रका चिन्हहै भलामैं इसे तुझे कैसेदेदूं परन्तु हां पहले यहबता कि तू किसके लिये मांगता है उसने कहा कि मैं अपनेलिये मांगताहूं यहसुनके हातिमने कहाकि अबतुझे देताभी तोभी न दूंगा क्योंकि तू अपनेनिमित्त मांगताहै जो परमेश्वरकी राहमें मांगतातो अवश्यदेता उसने कहाकि हमारा ईश्वर तो कमलाक मायावीहै और वही शामअहमर का गुरूहै यहसुनके हातिमको बड़ाक्रोधहुआ और कहनेलगा ऐनास्तीकतू एकबापुरे दीनमलीन महाअपावन जीवकोअनादि पुरुष करकै मानता है क्या कहूं तैंनेमेरे साथभलाई करीहै और भलाई का बदला बुराई

नहीं है इसीसे तुझे जीता छाड़ता हूं नहीतो तू निस्सन्देह बधने योग्य है तब फिर उसने कहा कि हे हातिम उसकी ईश्वरता प्रत्यक्षहै उसने अपनेही तो चन्द्रसूर्य आकाश बनाये हैं और अपनी माया के बलसे चालीस शहस्र मायावी उत्पन्नकिये हैं और वेसब उसी का आराधन करते है और हम सब उसको छोड़के दूसरा ईश्वर नहींजानते यह सुनकेहातिमने कहाकिरे धूर्त पाखण्डी चुप रह फिर ऐसीबातनकहना नहीतो बिनामारेन छाड़ूंगा तबफिर सरतक मायावीनेकहाकि यहतो सबबार्ता जानेदो और सुहरा की चरचा चलावो जो देना होतो दे नहींतो तेरे जीवका हत्या घात होगा और मैंतो जैसेबनेगा वैसे तुझसे सुहरा लेहीलूंगा तब तेराजीका तो जी जायगा और बचनपलटकाबचन पलट ठेहरेगा तब हातिम ने कहाकि सुहरातो तुझेकिसी भांति न दूंगा परन्तु इतना है कि तेरी भलाई और सेवाके बदले में जब शाम अहमर को मारूंगा तब तुझे यहांका बादशाह बनाऊंगा यह सुनकेसरतक ने कहाकि मुझे राज्यकी इच्छा नहीं है केवल वही सुहरा देनाहै तोदे नहींतो देख क्या करता हूं यह कहके मंच पढ़ने लगा और बहुतेरा चाहाकिकुछ मायाका प्रभावकरके हातिमकोआधीनकरै परन्तु हातिम के मंचके आगे कुछबस नचला उलटा आपही डरकेमारे अपने स्वजातियों में जाके चुपकेसे सोरहा जिसमें कोई न जाने निदान सबेरा होतेही वहां हातिम को न पाकर शामअहमर के पास सब चौकीदार जाके कहने लगे कि हातिम दिखाई नहींपड़ता तबतो शाम अहमर कोबड़ाक्रोध हुआ और अपनी किताब लेके बिचारातो जाना कि हातिम उसी सोतापर है और उसको सरतक चोकीदार ने सुहरा के लोभसे रातको वहां पहुंचाया है इसलिये सरतक का मेरेपास लेआवो मैंउसको सजीव न छोड़ूंगा यहसुन सब सरतक केपकड़ने को चले वहभाग के हातिम के पास आके कहने लगा हेहातिम अबतेरे पीछे मेरे प्राणजाते हैं नतो मैंने सुहराही पाया न स्वामीका भलारहा मैंने तो तेरेसाथ भलाईही करीहै कि तुझे कठिन बन्दिसे छुड़ाया है तब हातिम ने कहा कि तू अभय रह कुछ डरकी बात नहीं है इतनेमें जब शाम अहमर ने जाना कि सरतक भागगया तब मंच प्रेरित ज्वाला भेजी वह सरतकनेदेखातो मारे डरके थरथरानेलगा और हातिम से कहनेलगा कि हेहातिम मैं तेरा चेरा हूं अबमुझे शामअहमर की माया से बचा नहीं इस ज्वाला में सलभ हुआ

चाहता हूं हातिमने कहा कि अधीर मतहो उसकी क्या सामर्थ्य है जो मुझसे बोलसके तू मेरे समीप आबैठ फिर हातिम ने मंत्र पढ़के फूंका तो वह ज्वालाजो दृष्टि में थी सो बुझगई और हातिम दूसरआलम कामंत्रपढ़ता हुआ शाम अहमर की ओरचलाऔर सरतक उसके पीछे होलिया जब शामअहमर ने जाना कि हातिम और सरतक मेरीओर चले आतेहैं तब वह अपनी सेनालेके नगरके बाहर निकला और माया करनेलगा इतनेमें पृथ्वीहाली आसमान घूमनेलगा अंधकार छागया मेघ गरजने लगे और बिजली चमकने लगी यहदेखके सरतक कांपने लगा और हातिम से कहनेलगा कि हे हातिम सचेत हो यह सम्पर्ण माया का बिस्तारहै हातिमने मंत्र पढ़के आसमान की ओरफूंका तो वहसब उसीकी सेना पर पड़ी यह देखके शाम अहमर कहने लगा कि हातिम बड़ा मायावी है कि जिसने हमारी मायाको झूठ करदिया इतने में उसने दूसरी माया ऐसी करी कि एक पहाड़ पृथ्वीसे ऊपर को उठा तो सरतक ने कहा कि हातिम यह भी मायाही का परपंचहै हातिम ने मंत्र पढ़के जोफूंका तो वह पर्वत उसीकी सेनापर टुकड़ा होके पड़ा और एक बड़ा भारी पत्थर शाम अहमर जादूगर के मूड़पर आया परन्तु वहआपतो जादू केबलसे बचगया और वह पत्थर किसी बनमेजापड़ा परन्तु सेना के चारहजार मायावी रनभूमिमेंढेर होगये फिर तीसरी माया करी कि चारों ओरसे महाविषधर सर्पधाये परन्तु हातिम की ओरसे फिरे और शामअहमर की सेना को खागये केवल तीन लोग आप समेत शेष रहे पर शामअहमर ने मंत्रके बलसे उनसांपोंके मुखसे सब निकाल लिये जब सेनाने यह दशा देखी तो तीन सहस्र मायावी अपना जीव लेके भागे शामअहमर ने उनको बहुतेरा फेरा परवे किसी भांति न मुड़े तबहारके उन सबको एक बनमें मायाके बलसे वृक्षकरदिया और अपना हातिम केसम्मुख जादू पढ़ २ के फूंकने लगा पर कुछ न बिसानी तबआप आसमान की ओर उड़ा और क्षणमात्र में आंखों से ओट होगया तब हातिम ने कहा अब वह क्या करैगा सरतक बोला कि अपने गुरु कमलाक के पास जो बड़ाभारी जादूगर है गया है और कमलाक मायावी का कुछ हाल कहा नहीं जाता कि उसने अपनी माया के बल से अपना आकाश सूर्य चन्द्र समेत तारागण संयुक्त बनाया है और एकबड़ाभारी शहर एकपहाड़ के नीचे बसायाहै

जिसमें चालीस सहस्र मायावी लड़ाये हैं और उनसे कहता है कि मैंने तुम्हें उत्पन्न किया है मैं तुम्हारा ईश्वर हूं वह नास्तीक आपही ईश्वर बनके बैठा है और यहां से उसका मकान तीन सौ कोस पर है तब हातिम ने कहा तू अपने मुखसे कहा कि ईश्वर अनादि अद्वैत है वह इस बातपर आरूढ़ होकर कहनेलगा कि मैंने इस आश्रम का प्रभाव देखा औरमायावियों का निश्चय मनमें से उठगया तब हातिम ने उसको धीर्य देकर कहाकि अब मेरा विचार कमलाक्ष पर्वतपर चलनेका है यहसुन सरतक बोला कि जो आपकीआज्ञापाऊंतो मैंभीआपकेसाथचलूं औरये जो इस इटियातेहैं सो शामअड़मरकी सेनाकेलोग हैं इनको उसने अपनीमायासे इसबनाया है जो आप दयाकरके इनको सजीव करदें तो एभी आपका यशगाते आपकेसाथ चलें यह सुनके हातिम ने पानी फूंकके सरतकको दिया कि इनसभोंपर छिड़कआ मेमानी परतेही मनुष्य का स्वरूप होकर पूछनेलगे कि हे सरतक बता अब शामअड़मरकहांहै उसने उत्तरदिया किवह तुमको इसबनाके कमलाक्षके पासभागगयाहै और अबतुमको हातिमने मनुष्यकिया है यह बड़ा प्रतापी बीरहै कि शामअड़मरको पराजयकिया यह कहतेहुये हातिमके पास आकर कहनेलगे कि हमतुमसे किसी भांति उऋण नहींहैं ईश्वर तुझे इसका बदलादे अब हमतेरेहैं जो आज्ञाकरो सोकरें यहसुनके हातिमने उनपर मंत्रपढ़के फूंकाकि उनके मनसे मायाका सम्पूर्ण विकार निकलगया तब उन्होंनेपूछा कि हे स्वामी अब आप कहां जानेका विचार करते हैं हातिम ने कहाकि मुझे शामअड़मर मायावीसे कुछकाम है जबतक वह मुझे न मिलेगा तबतक कहीं न जाऊंगा क्योंकि मैं उसकी बेटीके साथ विवाहकरूंगा जो वह आपकरदेगा तो भलीभलाहै नहोतो बिना मारे न छोड़ूंगा यहसुनके उन्होंने पूछाकि तुमने उसकीबेटी कहां देखी औउसकी प्रीतिमेंफँसे तबहातिमने सम्पूर्ण समाचार आद्योपान्त उनसे कहसुनाया और कहाकि मुझे केवल उसीकेलिजानेकी अभिलाषहै और और निमित्त मैंनेउससुन्दरीकेलिये इसअड़मरके हाथसे भोगीहैं सोतो न कहनेयोग्यहैं और नलिखने देखो ईश्वरने मुझऐसे निर्बलको ऐसेबल और बलदिया और यहबलसे भाग्यसे अपने गुरूके पास गया है परन्तु उससे क्या होसक्ता है जो ईश्वर चाहताहै तो उसको उसके गुरू समेत लाऊंगा यहसुनके उन्होंने कहाकि सहाराज कमलाक्ष बड़ामायावीहै और उससे भयमाना

बड़ी कठिनताहै हातिमने कहाकि जो तुम डरतेहो तो यहांबैठो मैं जाके उनदोनों शुरू खेलोंको देखलेता हूं यह सुनके वे बोले कि यह हमको उचितनहींहै कि आपको छोड़के हम यहांरहैं जो यह तुमसे जय पावेगा तो हमभी तुम्हारे साथ लौट आवेंगे और जहां चलोगे वहांतुम्हारेसंग चलेंगे क्योंकि यहभी तो हमको अब सजीव न रक्खेगा निदान हातिमने उनसबके साथ कमलाकपर्वत की राह ली थोड़ीदूर चलके वे सब बोले कि महाराज शामअहमर तो हम सबकोलेके एकही दिनमें कमलाक पर्वतपर जापहुंचताथा हातिम ने कहाकि यहसत्यहै यहमायावीथा सो अपनी मायाकेबलसे शीघ्र जाताथा तबवे बोले कि जो आप मायावी नहींहैं तो आपने ऐसे जादूगरसे कैसे जयपाई इतनेमें सरतकबोला कि रे मूर्खो तुमनहीं जानते येभी एकदिनमेंजाके उनदोनोंको जीतसक्तेहैं इनकेईश्वरही सहायकहैं मैंने भलीभांति परखलियाहै तबहातिमने कहाकि मैं इसआजम जानताहूं जहांयह पढ़ाजाताहै वहां मायाका प्रभाव नहींरहता देखो अपनी आंखोंसे देखोगे कि वे इसमंचके प्रभावसे आपसेआप जलजांयगे इसीतरह सब एक तालाबपर पहुंचे और उसीराहसे शामअहमरगयाथा सो उसमें भी जादूकरता गयाथा उसमें सबोंने एकसंग बिनाजाने पानीपिया तो पानीपीतेही सबके पेटोंसे रक्तकीधारछूटी और मशकके समान फूलगये हातिम उन-की यहदशा देखके बहुत घबड़ाया और शोचा कि हो न हो तो यहांभी शामअहमर जादूकरतागयाहै यहशोचके आप प्यासाही बैठारहा परपानी बूंद न पिया जब सबेराहुवा तो इसआजमपढ़-के उनकोफूंका तो पहलीबेरमें सूजन उतरगई दूसरीबेर उनकेपेटों से नीलापानी निकला और तीसरीबेर ज्योंकेत्यों होगये तबवे सब हातिमको सराहनेलगे तबहातिमने पूछाकि यहक्या भेदहै उन्होंने कहाकि महाराज शामअहमर इसतालाब परभी जादूकरगया है तब हातिम ने उसपरभी इसमआजम पढ़ा तो पहले तो ऊपर को उछला तिसपीछेउसकापानी हराहोगया औरफिरनीलाहोगया फिर छिनेकमें वहपानी यथापूर्वक होगया जबहातिमने जाना कि अबइस तालाबसे मायाकाप्रभाव जातारहा और निःकेवलहोगया तब थोड़ासाजल हातिमने पिया और उनसबसेभी कहाकि तुमभी थोड़ा २ जलपान करलेवो जिसमें तुम्हारी देहमें जोकुछ मायाका प्रभाव शेषहो सो भी निकलजाय तब वे पानी पीके कहनेलगे कि हे स्वामी अब इससब आपकी ओरसे शामअहमर और कमलाक

से लड़ैंगे ऐसी २ बातें कहते हुये कमलाककी ओर चले और जब शाम अहमर यहां से भागा तब सीधा भागा चला गया जाके कमलाक की ड्योढ़ी पै खड़ा हुआ यह समाचार द्वारपालोंने भीतर जाके कहा कि महाराज शामअहमर ऐसी दशा से कि न पावों में जूती न शीश पर टोपी और सुख सूखा हुवा अधीर द्वारपर खड़ा है यह सुनके कमलाकने भीतर बुलालिया और हृदय लगाके पूछा कि हे पुत्र तुझे ऐसी कौन कठिन विपत्ति पड़ी है जातूऐसा अधीर भागा आता है यह सुन शाम अहमर ने कहा कि हे गुरु देव एक हातिम नामक बड़ा मायावी मेरे पहाड़ पर आया है उसीने यह दशा मेरी करी है यह सुनके वह ज्वाला समान धधक उठा और कहनेलगा कि देख तेरे देखतेही उसकी राख तेरेसामने करदेता हूं यह कह मंच पढ़के अपने पर्वत के चारों ओर जो फूंकातो अग्निका ज्वाला चक्र समउठा तब उनमायावियोंने जो हातिम के साथथे बतायाकि इसजादू की अग्निसे हमको बचावो हातिम ने उनको धीर्य देके कहा कि तुम ईश्वर का स्मरण करो इतने में हातिम ने इस्म आजम पढ़के पर्वत की ओर जो फूकातो सम्पूर्ण अग्नि शांत होगई तिस पीछे उसने एक माया ऐसी करी कि पहाड़ के चारों ओर नदी दिखाई देने लगी और लहराती हुई इनकी ओर को उमड़ के चली तब उन मायावी साथियोंने कहा कि यह माया क्षतनद जो दिखाई देता है यह सुनके हातिम ने फिर मंच पढ़के फूका वह सब जल सूखगया इतने में उसने ऐसी माया करी कि दश २ बीस २ मनके पत्थरों का ऐसा मेह वर्षा कि वह पर्वत उन पत्थरों से बन्द होगया तबफिर हातिम ने इस्मआजम पढ़ा तो एक ऐसी वायु आई कि उसके बेगसे सम्पूर्ण पत्थर धानकीसीखील उड़गयेजबतक उसने एकऐसी मायाकरी कि वह पहाड़ दृष्टि से अलक्ष होगया तब हातिम वहां बैठके मंच का पाठ करनेलगा निदान वह भी माया मिटी कई दिनमें पर्वत दृष्टि आया तब हातिम अपने साथियों समेत उस पहाड़पर चढ़गया इनको देखके सब जादूगरलोग चिल्लानेलगे कि देखो यह तो कुशल पूर्वक यहां आपहुंचा यह सुनके वह अपनी सेना समेत शामअहमर को लेके उस आसमान पर जो उसने उसपहाड़से तीन हजार गज ऊंचा बनाया था चढ़ गया और जब हातिम वहां किसी को न देखकर उसनगरमें घुसा तो देखा कि शहर में परम रम्य बड़े २ मकान बाजार बहुत सुन्दर बने हैं और भांति भांति

के पदार्थ और अनौलिका रत्न और मेवा मिष्टान्न धरेहैंपरन्तु मनुष्य कहींदृष्टि नहींआता तबहातिमने पूछाकियहांके निवासी कहां गयेतब उन्होंने कहाकि वह सबोंका लेके उसी आसमान पर जो उसने माया छत रचाहै चढ़गया है तब हातिमने हँसके कहा कि ईश्वर ने ऐसे पदार्थ दिये हैं इनको भोजन करो और ईश्वर का धन्यवाद करो यह सुनके सभोंने भूखके मारे खाये सब के सब खातेही विकल होगये औरसबकी नासिका से रक्तटपकने लगा जब हातिम ने जानाकि वह चाण्डाल छली यहांभी माया करगया है तो हातिम ने पानी छक के सबको पिलादिया वे सब चंगे होगये तिस पीछे सब वस्तुओं परभी पानी छिड़क दियातब माया का सब प्रभाव जातारहा तब हातिम ने कहाकि अबयहां मायाका लवलेश भी नहीं है यह सुन सब आन्दसे खानेलगे और हातिम ने पूछाकि वह मायाकृत आसमान कहांहै उन्होंनेकहा कि इस पहाड़ से तीन कोस पर ऊंचाहै तब हातिम उस ओर को मुख करके इस्म आजम पढ़ने लगा तो थोड़ीदेर में वह आसमान भी टूट गिरा औरबहुतसे मायावी नष्टको प्राप्तहुये और कमलाक और शाम अहमर भी किसीओरको भागे तो हातिम उनके पीछेलगा निदान इसी घबड़ाहट में वे दोनों पहाड़सेगिर पड़े और चूर्ण होगये यह देखके हातिम बहुत हर्षित हो ईश्वर का धन्यवाद करके सरतक से कहने लगा कि मैंने तुझसे कहाथा कि जब कमलाक को मारूंगा तो तुझे उसकी ठौर बादशाह बनाऊंगा इस लियेमैं अब अपनी बातका प्रतिपाल करता हूं परंतु एक बातपर किईश्वरको एकहीमान और उसका आराधनकर किसी मनुष्य अथवाकिसी ईश्वर के जीवको न सतावे और रात दिन नीतरतरहाकर और जितनेऔर मायावीथे उनसे भीकहा कि तुमसब सरतकको अपना अधीश्वर जानो और परमेश्वर को भजो नहीं तो इसकेलिये अपनेफल भोग करोगे यह कहके हातिमने कहाकिमैं अबउस बादशाहजादीकेपास जाताहूं तुमयहां मिलके आनन्द से रहो यहसुनके उनसबने कहाकि हमारी यह अनुमति है कि आपके साथ चलें आगे जैसी आपकी अभिलाषाउसको हमको प्रतिपाल करना उचित है पर हातिमने उनसबको वहींछोड़ और आप मलका जरीपोस अर्थात् शाम अहमर की बेटीके पासकी राहली थोड़े दिनोंमें वहां जापहुंचा तो देखाकि नतो वह तालाब है न वह सुन्दरी है परन्तु एक शीश महल उस

तालाब की ठौर दृष्टिआता है और वहवृक्ष उसीभांति हराभरा बनाहै तब हातिम उसकी ड्यौढ़ीपर जा पहुंचा तो दासी बाहर निकली और हातिमको देखकेपूछा कि तू कौनहै हातिम ने कहा कि मैं वहीहूं जो तुम्हारे साथ इसवृक्षमें लटकाया अब तू जाके बादशाहज़ादी को मेरेआनेके समाचार दे वह यहसुन भीतरजा बादशाहज़ादी से कहनेलगी कि महारानी वही पुरुष जो हमारे साथ इसमायामें फँसाथा सो अब अच्छा होके आयाहै यहसुनके बादशाहज़ादी ने कहा कि कदाचित् वह कोहअहमर को गया था जोशामअहमर जादूगर के कुछ समाचार जानताहो तोकहे वहचेरी फिरआई और हातिम से बादशाहज़ादी की सुखागर आयपूछी तो हातिम ने कहा कि शाम अहमर नास्तीक था सो अपने गुरुसमेत मारागया और शेषबार्त्ता बादशाहज़ादी से कहूंगा उसने यहसमाचार जाके भीतरकहा तो यहसुनके बादशाहज़ादीने शिरनीचा करलिया तब उसदासीने कहाकि ऐसे पिता के मरने से काहेको इतनी उदास होती हो वह मायावी था कि जिसने हमसबको मायाके जालमें डालाथा भलाहुवा जो वहमरा यहसुनके बादशाहज़ादी ने हातिमको बुलवाके एक सुनहरी कुरसीपर बैठारा और अपने पिताका हाल पूछनेलगी हातिमने सब आद्योपान्त कह सुनाया और कहा कि मैंने केवल तेरी प्रीतिके कारण यह सब काम किया इसलिये अब तुझे भी उचितहै कि तू अपने स्वरूपके बाग़में मुझ विरही को बिहार करने की आज्ञादे यहसुनके उसने अपनी गर्दन नीचीकरली सहेलियों ने कहा कि अब तुम्हारी भाग्य उदयहुई जो अपने पिता मायावी के जालसे छूटी और इसयशी पुरुषके पालेपरी और हे प्यारी यहभी यमन देशका बादशाहहै इसलिये उस मायावी उपद्रवीका कुछशोक न करो इस युवा प्रवीण पुरुष के साथ बिवाहकरो यहसुनके वह भीतर उठके चलीगई और बिवाह की सामा होनेलगी निदान आठदिन तो नाचरंग रहा और नवीं रातको हातिम ने अपनी कुलरीति अनुसार बिवाहकिया और जब शैनागार में दोनोंजने बिहार करनेको गये तब रतिके समय हातिमको सुनीरशामीका स्मरण हुवा तो हातिम बादशाहज़ादी से अलग होकर शोचनेलगा कि हे हातिम जब दूसरे को आसरा देकर उसके काम को जाकर यहां भोगबिलास करै और वह तेरे आसरे में बैठाकुढ़े तो अन्तकेदिन क्या उत्तरदेगा निदान इसीशोचमें आके उदासबैठा

था तब बादशाहज़ादीने अपने मनमें शोचाकि मुझमें नजाने कौन सी बराई है जिससे हातिम ऐसे समय अलग हो बैठाहै तब उस सुन्दरीने हातिमसे पूछा कि हे प्राणप्यारे तेरेमनकी उदासीका क्या कारणहै हातिमने कहाकि हे प्यारी चन्द्रसूर्य्यमें चाहे दोष हो परतेरेमें कोई दोषनहीं परन्तु कारण इसका यहहै कि मुनीरशामी ज़ुल्नबानू की प्रीतिमें फँसाहै और उसने उससे सातप्रश्न पूछे वहदीन एकका भी उत्तर न देसका तब रोतापीटता मेरेदेश की ओर जानिकला वहां मैं अहेरकी आखेटमें आयाथा उसको अधीर रुदन करते देखके मैं उसके पहले ज़ुल्नबानू के प्रश्नोंका उत्तर देनेको उद्यत ज़ुआहूं सो ईश्वर की दयासे तीन प्रश्नोंकेतो उत्तर देचुकाहूं और यह चौथा प्रश्नहै जिसमेंमैंने यह कामकिया है और पहलेही मैं यह प्रण कर चुका हूं कि जबतक तेरे प्रश्नोंके उत्तर न देदूंगा तबतक मैं विषय भोगादिसे दूर रहूंगा इसलिये तुमसुझे बिदाकरो जिसमें अपना प्रण पूराकर तुम्हारेसाथभोग बिलाश करूं तब उसने कहा कि अच्छा फिर मुझे कहां छोड़ोगे क्योंकि पहलेतो मेरा पिता था सोतो तुमने मारडाला अब मेरी खबर कौनलेगा तब हातिमने कहा कि तुम यमनकोजावो वहां मेरा पिता बादशाह है तुम वहां आनन्द से रहोगी और अपना काम करके मैंभी थोड़ेदिनोंमें तुमसे आ मिलूंगा यहकह के हातिम ने पिताको पचलिखा कि हेतात यह बादशाहज़ादी आतीहै इसके साथमैंनेविवाह कियाहै आप इसको आनन्दपूर्वक आदर भावसे रखना और मैं थोड़ासा काम और है सोभीकरके आपके चरण कमलोंको देखूंगा यहपत्र बादशाहज़ादीको दिया वहतो अपनी सामा समेत यमन को सिधारी और हातिमने शहर खारजिम की राहली थोड़ेदिनोंमें ईश्वरकी दयासे वहांजा पहुंचा और वहां के निवासियों से पूछनेलगा कि यहां वह कौन है जो यह कहा करता है कि सत्यवादी सदासुखी उन्होंने उत्तर दिया कि यहां ऐसा तो कोई नहीं है परन्तु एकबूढ़ा है जिसने यह लिखके अपने द्वारपर चपका दियाहै और उसका मकानशहर खारजिम से नौकोस पर है निदान हातिम वहांभी तीन पहर में जा पहुंचा तो बड़ाभारी मकान देखा कि उसके द्वारपर यही लिखा है हातिमने द्वारपरसे पुकारा तो भीतर से सेवकलोगोंने बाहर निकल के हातिम से पूछा तुम कौन हो और कहां से आये और किसलिये आपका आगमन ज़ुआहै हातिमनेकहा

कि मैं शाहाबाद से आताहूं और यहां कुछ काम है उन्होंने जाकर अपने स्वामी से कहा उसने हातिम के बुलाने की आज्ञा दी वह पुरुष प्रत्यक्ष तो युवा दिखाई देता था परन्तु बड़ा वृद्ध था हातिम ने भीतर जाकर देखा तो एक मृगनद के ऊपर बैठा है हातिमने उससे दण्डवत् की उसने भी उठके हातिम को हृदय में लगालिया कुशल प्रश्नके उपरान्त पकवान मेवा मिष्टान्न और भांति २ के भोजन हातिम के आगेधरे हातिम ने भोजन करे तब उसने पूछा कि आजतक दो मनुष्यके सिवाय तीसरा नहींआया सो उनदोनों मेंसे एकतू है सो इसका हेतु मुझसे बता कि तू शाहाबादसे नाना भांतिकेकष्ट भोगतायहां काहेको आयाहै तबहातिम सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनीरशामी और हुस्नबानू का और जिस लिये आपगयाथा कहसुनाया तबउस वृद्धनेकहा कि अच्छाआज तो तू थकाहुआहै सोवे कलहमैं इसलिखेके समाचार कहसुनाऊंगा निदान रातकोतो हातिम रहा सबेरा होतेही पूछने लगा कि अबआप बतावें तबउसबूढ़ेने इसप्रकार कहनेका आरम्भ कियाकि इस शहर खारजिमको बसे सातसौवर्षहुये और मेरी उमरअब आठसौ वर्षकी है मैं उससमय भी ऐसाही था जैसा कि तूमुझे अब देखता है मैं पहले बड़ा जवारी था दिनरात जुवा खेलनेके सिवाय कोई कामनहीं करताथा एकदिन दैवयोगसे ऐसा हुआकि मेरे पास एक पैसाभी नरहा तब मैं चोरी करनेका बिचार करके बाहर निकल बिचारनेलगा कि किसी दीनदुखीके घरमें चोरीकरना उचितनहीं किन्तु बादशाहीघरमें चलके चोरी कीजिये और अमित धन लीजिये निदान कमन्दके द्वारा बादशाह के महल में गया और बादशाह को पहरुओं समेत सोते देखके बादशाह के गलेसे हीराका जड़ाऊतोड़ा उतारके फिर कमन्द के द्वारा उतर के एक बनकी ओर चलातो एक वृक्षकेनीचे देखा कि कईचोरबैठे चोरीकी वस्तु बांटतेहैं मैं जागया तो मुझको देखके वेपूछने लगेकि तू कौन और यहां काहेको आयाहै मैंने जैसाथा वैसा यथार्थ कह के वह हीरा का जड़ाऊ तोड़ा दिखाया तो वेसब देख इससेछीन लेनेको उठे इतने में उस बनमें एक ऐसा शब्दाघात हुआ कि सम्पूर्ण बन कांपने लगा वे चोरतो मारेडरके भाग गये और मैं अकेला वहां खड़ारहा तब एकमनुष्य मेरेपास आयके पूछनेलगा कि तू कौनहै मैंने जैसे पहले सच्चा २ हाल कहदिया था उसी भांति उसके भी सम्मुख कह दिया तब उसने प्रसन्न होके कहा कि तू

सत्य बोला है इसलिये सम्पूर्ण धन मैंने तुझीको दिया यह कहके मुझसे कहने लगा कि तू जो चोरीकरना छोड़देगा और जुवा खेलेगा तो तेरी आयु नौसौ वर्षकी होगी मैंने उस दिनसे चोरी करना और जुवा खेलना छोड़दिया और वहसम्पूर्ण धनलेके अपने घरको आया यहां मैंने एक बड़ा भारी मकान बनवाया यह देखकेमेरे परोसी ईर्षाबश मेरेशत्रु होगये और कोतवालसे कहने लगे कि कल्ह तोयह मारा२ फिरताथा कौड़ीकी तथानथी आज इसने इतनाधन कहांसेपायाजो ऐसाभारी महलबनवाके बैठाहै कोतवाल ने मुझेबुलाके पूछा मैंने उसके सन्मुखभी यथार्थही कह दिया यहसुनके कोतवाल मुझे बादशाहके पासलेगया बादशाहने जो मुझसेपूछा तोउसके भी सामने मैंने ज्योंकात्यों कहा बादशाह मेरीबातसुनकहनेलगाकियहबड़ासत्यबादीहै देखोइसनेप्राणोंका कुछभीडरनकिया औरनकिसीसे इतनीद्रव्यछिपाई और सत्यही मेरेभीसम्मुख कहदिया इसलिये इसकी सचाईके कारण मैंने इस का अपराधभी क्षमा किया और सम्पूर्णधन उसको छोड़ा और बहुतसा धन मुझे अपने कोषसे दिया मैं वह धनपाके बड़ा धनाढ्य होगया आजतक मेरे पास बहुत धन शेष है और बहुतसा खर्च भी कियाहै उसीदिन से मैंनेयह लिखके अपने द्वारपर लगाय दिया है कि सत्यबोली सदासुखी इसलिये मनुष्य को उचित है कि सदा सत्यबोले और इसको सादी नामक एकशीराज़ाका विद्वान् प्राचीन कालमें कहाहै सोभी पुष्ट करता है॥

दो० सत्यकहेहहिंहितू नहिंअसत्यसमपाप। मतबदाकोनहिंलख्यों सहतकहूंपरिताप॥

यहकहके हातिमसे पूछनेलगा कि तू कौनहै तबहातिमने कहा कि मैं यमन का शाहजादाहूं और नाममेरा हातिमहै औरमेरा पिता तयनाम करके उसदेशमें विख्यातहै यह सुनके वह दङ्गरहगया और मिलके हातिम का बड़ा सनोमान किया कई दिनतक उसकी मेज़बानीकरी तबहातिमने कहा कि अबमुझेआपदया करके बिदा कीजिये क्योंकि मुझेएक काम बड़ाभारी अवश्य है निदान उससे हातिम बिदाहो अपनी राहली एकदिन हातिम को मलका जरीनोश शामअफ़सर जादूगर की बेटीकी सूरत आई तब मनमें बिचारा कि उस मृगनयनी को देखता चलूं निदान यह मनमेंठान निज देश यमन की ओरचला और थोड़ेदिनोंमें यमनके निकट जा पहुंचा तब तालाबके ऊपर बड़े हर्षसे बैठगया तो देखा कि एक तोताका जोड़ा उस तालाब के किनारे एक वृक्षपरबैठा

हुआ बातें कर रहा था वहां हातिम भी उनकी बातें सुनने के लियेउसओरको कानलगाया और वह बात यह है कि उनमें से स्त्री ने कहा कि मुझे अकेले छोड़ के कहांजाता है नजा तब तोता बोला कि हे अज्ञ तू धर्म के काममें काहेको आंजीमारती है अंत के दिन तू मेरे काम न आवेगी जो तेरे पीछे भलाई करना छोड़दूं और तैंने कभी दूसियों के कुकर्म नहीं सुने हैं जो उनको कहूं तो कितेक ग्रन्थ होजायं तब भी पार न मिले परंतु तेरे चिताने केहेतु एक सूक्ष्मइतिहास कहताहूं कि एक दिन कोई बादशाह अहेर को गया वहां बहुतेरी आखेट करी पर कुछ हाथ न लगा इसी भांति फिरते फिरते अपनी सेना से बिछुड़ के एक बन में जा निकला तो वहां एक परम मनोहर रमणीय बाग़ दृष्टि पड़ा वह उस बाग़ के भीतर गया तो देखा कि एक बँगला अत्यन्त सुन्दर बनाहै और एकहौज पानीसे ऊपर तकभराहै और उसकापानी बहुत स्वच्छ देखके बादशाह का मन बहुत प्रसन्नहुआ तो उसके किनारे बैठके हाथसे पानी उछालनेलगाइतनेमें उसकेहाथमें एक जंजीर लगी उसने उसको पकड़ के खींचा तो एकसंदूक़ निकली जिसमें तालाबंद और तालीभी उसकेसाथहीथी बादशाहनेउस को खोलातो उसमें एक परम सुन्दरी चन्द्रमुखी दृष्टिपड़ी बादशाह देखतेही डरगया तबवह सुन्दरी बोली कि डरोमतमैंभी मनुष्यहूं यहकहके संदूक़के बाहर निकलआई और हाथमें मदिरा की सुराही और प्याला लियेहुये बादशाहके पासआबैठी और बादशाह से रतिमांगी बादशाह नेभी देखा कि स्त्री स्वरूपवान् और युवाहै इससे इनकारकरना उचितनहींहै तबउसके साथरतिकरी जबअपनी सेनाकी सुधिभई तबउठखड़ाहुआ और अपने साथसे मुँदरीउतारके उसेदी और कहाकि यहमैं तुझेचीन्हदिये जाताहूं जिसमें जोफिरकभी आगमन हो तो तू मुझे पहचानतो लेगी इसबात को सुनउसने हँसके एक थैली मुँदरियों से भरीहुई निकालके दिखाई और कहनेलगी कि मेरापति बणिकहै सोमुझे भ्रष्टहोनेके डरसे इसबनमें जहांमनुष्यकाबंशदिखाई नहींपड़ताहै तहां इस संदूक़में बन्दकर और मेरे भोजनों के लियेधर इसीपानीके हौजमें लटका जाताहै और आपदेश२ व्योपार करताहैसो इसी भांतिजो कोई सौदागर अथवा राजा बादशाह राहभूलके इस बाग़में आय हौजपरगया और उसने मुझे निकाला तोउसने मेरे साथ रतिकरी चलतीबेर एक मुँदरी उतारके मुझे चीन्ह दी

उसको मैंने धरलिया अबइतनी सुँदरीहोगइहैं कि इसमें मुझेपह-
चाननहीं है कि किसकी सुँदरी कौनहै तोतुमको मैं कौन भांति
चीन्होंगी यहसुनके बादशाह बहुत लज्जितहो उसको उसीसं-
दूक़में बन्दकरके अपनी सेनामें आमिला और मकान पर आके
सबराज पाट छोड़ योगीका भेषकर ईश्वरका भजन करनेलगासो
तू क्याखी नहीहै जो मुझेभले कामको इनकार करतीहै तो तूमेरे
किस काम आवेगी देख इस संसारमें एक हातिम सत्पुरुहै और
भलाई करनेको कमर बांधीहै सो भलेकाम को छोड़के अपनी
प्यारी मलका वारीपोश को देखने जाता है और मुनीरशामी
वहां इसके आसरेमें बैठाहै भलाहातिम उस स्त्रीसे कौनसी भलाई
देखने की अभिलाष किये जाताहै यह सुनके हातिमने अपने को
बहुतधिक्कारा औरईश्वरका धन्यवादकिया फिरमनमें कहनेलगा
कि यह उप देशमुझे ईश्वरहीने कियाहै और चटवहीं से शाहा-
बादको लौट पड़ाथोड़ेदिनोंमें शाहाबादमें पहुंचा वहां केमनुष्य
हातिम को पहिचानके हाथोंहाथ लेगये और हुस्नबानूने चिल-
मनके पास कुरसी बिछवादी आपभीतर से अपने प्रश्नका उत्तर
पूछनेलगी तबहातिमनेउस बूढ़ेकेसमाचारकहसुनाये तो हुस्नबानू
कहनेलगीसत्यहै इसमें कुछ झूंठनहींहै तिसपीछेहुस्नबानूने बहु-
त प्रकारके षटरस भोजन थारामें मंगवाके हातिमके आगेधरे तब
हातिमने कहाकि अबमैं अपने भाईके साथ भोजन करूंगा निदान
वहांसे हातिम सराय मेंआ मुनीरशामीसे मिला तब मुनीरशामी
हातिमकी बड़ी प्रशंसा करनेलगा और बारबार हृदयसे लग २
के मिला तिसपीछेदोनोंने साथबैठके भोजनकिये और सबवृत्तान्त
जो २ उसको राहमेंबीताथा कहसुनाया फिररातको सोये सबेरा
होतेही हातिम हुस्नबानूके पासजा कहनेलगा कि अबतू अपना
प्रश्नबता तब हुस्नबानू बोली कि हे हातिम यहसुनतीहूं कि एक
पर्बतसे शब्दसुनाई देताहै इसीसे उसकानाम शब्दभान पर्बतपड़ा
है और उसीकानाम कोहनिदाहै तू इसको शोधला कि वहशब्द
कौनबोलताहै और पहाड़के उसपारक्याहै यहसुनके हातिम वहां
सेबिदाहो सरायमें मुनीरशामीसे कहनेलगा कि अबमैं शब्दभान
पर्बतको शोधनेके लियेजाताहूं जोआयुर्बल बलवान्है तो थोड़ेदि-
नोंमें आताहूं और जो ईश्वरकी दयाहै तो कुछडरनहींहै॥

पांचवां प्रश्न हातिमके जाने और कोहनिदा अर्थात् शब्दभान
पर्वत को शोधलाने के विषय में॥

निदान हातिम देाचारबातें शिक्षायुत सुनीरशामी को सुनाय एकओरको बनकीराहली और जिसगांव नगरमें जाकेनिकसे उसके निवासियोंसे पूछे कि हेमित्रो तुमसेंमें जो कोई कोहनिदा की राहजानता हो तो मुझे दयाकरके बतादे यहसुनके वे कहैं कि हमारी इतनी आयुव्यतीत हुईहै हमने तो कभी उसकानाम भी नहींसुनाहै परन्तु हातिम केवल मनुसा के बल महीनोंकी राह काटता जाताथा इतनेमें एकशहरके निकट जापहुंचा तो देखाकि नगरके बाहर सब छोटेबड़े खड़ेहैं यह उन्हीकी ओरकोचला तो वे सब इसको देखके बुलानेलगे कि हे पथिक इसीओरकोआ हम तेरी बहुतराह देखतेथे भलाकिया तू इसओरको आया जब हातिम निकटगया तो देखाकि सब मनुष्य खड़ेहैं और एकमृतककी टिकटी धरीहै और एकठौर भांति २ के भोजन धरेहैं इसने पूछा कि यह कौन कारणहै कि तुमसबजने मृतकको आगेधर रुदनकर तेहो तब उनमेंसे एकनेकहाकि हमारे नगरकी यहरीतिहै कि जब कोई हमारे नगरमें मरताहै तब छोटेबड़े दुखीसुखी सब श्मशानमें आय भांति २ के भोजनधरके किसी पथिकका आसरा देखतेहैं जो वहआया तबउस मृतकको गाड़के वह सम्पूर्ण भोजन उस पथिक के आगे धरदेतेहैं जबवह पहले उसमेंसे भोजन करलेताहै तब हम सबजने भोजन करके नगरको जातेहैं सो आज इस मृतकको सात दिन भये किसी पथिक की राहदेख रहेथे इतनेमें तू आगया तब हातिम ने कहा कि तुम्हारे नगर की भलीरीतिहै जो कदाचित् कोई एकमासतक न आवे तो तुम क्या करोगे वह मृतक तो सड़जायगा यहसुनके उन्होंने कहाकि हां यहतोसत्यहै परन्तु सातवें दिन कोई न कोई आयही जाताहै जो कोई पन्द्रहदिन न आया तो सब भोजन तो स्त्रियोंको भेजदेतेहैं और हमसब लोग दिनभर व्रतकरतेहैं संध्यासमय कुछजलपान करलेतेहैं और जो कभी मास से अधिकहुवा तो हमसब उस मृतककोगाड़ अपने २ घर चलेजाते हैं और एकमहीनातक व्रतकर साँझको ईश्वरका आराधनकरके भोजन करतेहैं और उतनेदिनतक अपने सजातियोंमें भोजन बांटते हैं फिर कुछ द्रव्य उसमृतककी क़बरपरधरके ईश्वरकी स्तुति कर यथासामर्थ्य भिक्षुकोंको धनदेके शुद्धहोते हैं तब अपने २ काम में लगतेहैं निदान उसमृतकको क़बरके भीतर बिछौना बिछायके सुलादिया और सातबेर उसकी प्रदक्षिणा करके बाहर निकल आये फिरहातिमसे कहाकि प्रथम तुमभोजन करलेव तब हमसब

भोजन करेंगे तब हातिम ने भोजन किये फिर सबोंने भोजन किये और बचाखुचा भोजन अपने २ घर भेजदिया वह उनकी स्त्रियोंने खाया फिर वस्त्रपहनके नगरमें आये और उनमें जो अधीश्वरथा उसनेकहाकि जो तेरामनमाने तो कुछकाल हमारेनगरमें निवासकर हातिमनेकहा कि वऊत तो नहीं परन्तु तुम्हारी प्रसन्नता के लिये दोचारदिन रह सक्ताहूं निदान हातिम भी उनके साथ नगर में आया वहां उसके लिये एक मकान अलग खाली करवा दिया और न्योतेकीसामा अच्छी स्वरूपवान् दासियों समेतहातिम के मकान में भेजदी यहदेखके हातिम ने कहा कि यह भली रीतिहै जो ईश्वर मेरेकामोंसे मुझे छुटकारादे तो मैंभी इसीभांति पथिकोंकी पऊनाई करूं और वे दासी यह अभिलाष रखतीथीं कि हातिम उनकेसाथ भोगबिलास करै परन्तु हातिमने उनकी ओर आंखभी उठाके न देखा जब सातदिनबीते तो उनदासियों ने जायके अपने स्वामीसे हातिमके इन्द्रीजित होनेकी प्रशंसाकरी तबउस हाकिमने हातिम को अपने सम्मुखबुलाय के उसका बड़ा आदरकिया और बड़े सन्मानसे मसनदपर बैठाके कहनेलगा कि हे युवापुरुष जो तू मेरेनगर का निवास अंगीकार करे तो मैं तेरे साथ अपनी बेटी का बिवाह करदूं यहसुनके हातिम ने कहा कि मुझे एककाम बड़ाही आवश्यकहै नहीतो मैं तेरेही नगरमें रहता तब उसहाकिमने कहाकि जो हमको बतावो तो हमभी तुम्हारे साथचलके सहायताकरैं यहसुनके हातिमने उत्तरदिया कियहमैं नहीं चाहता कि मेरेसाथ कोई दुःखभोगे यहसुनके वहबोला कि अच्छा न ले चलै तो हमको उसका नामही बतादे तब हातिम ने सुनीरशामी और ऊसनबानूका सबवृत्तान्त कहसुनाया औरकहा कि उसके चार प्रश्न तो पूरेकर चुकाहूं अब पांचवां प्रश्न यहहै कि कोहनिदाकी खबरलादे सोछःमहीने इसकी ढोहमें बीतेहैं आज तक इसका कहींपता नहीं लगाहै सो जो तुमजानते हो तो मुझे राह और दिशा बताय देा मानों मेरे साथही चलचुके यह सुनके उसने कहा कि मैंने अपने प्राचीनोंसे सुनाहै कि वह पर्वत दक्षिण मेंहै और उसके बाईंओर एकशहर बड़ाभारी बसाहै वहां आज तक नतो किसीने मृतककी क़बरदेखीहै और नकिसीने किसीको मृतकेलिये रुदनकरते सुनाहै हातिमने कहा किमुझे उसी ओर जानाहै तबउस वृद्धपुरुषने कहा कि तू बताईऊई राहसेकैसे अपने ठौर पऊंचेगा हातिम ने उत्तर दिया कि जो कोई यहां लाया है

वही वहां भी पहुंचायदेगा यहसुनके उसने हातिमके आगे बहुत सीद्रव्यलेधरी उसमेंसे हातिमनेअपने राहकेयोग्यलेली और शेष दीनोंकोदेके दक्षिणकी राहली थोड़े दिनोंमें एकशहरके निकट पहुंचके देखाकि उसके आसपास कोई मृतककी क़बर नहींहै तब हातिमने बिचाराकि मेरीजानमेंतो यहीनगरदिखाईपड़ताहैयह शोचके भीतरगया तो एकने निवासियों मेंसे पूछा कि तू कहां से इस नगरमें आता है और कहां जानेका बिचार है तब हातिम ने कहाकि मैं शाहाबाद से आता हूं और कोहनिदा को जाता हूं यहसुनके वहबोलाकि कोहनिदा की राहयहां से बहुत दूर है तू वहां कैसे पहुंचेगा तब हातिम ने कहा कुछ संदेह की बात नहीं है जो मुझे यहांलाया है वही वहां भी पहुंचावेगा यह सुनकेउस नगर निवासीने कहाकि आजकेदिन दयाकरके मेरेही घरकी सागभाजी भोजन कर फिर मनमाने सो कीजियो उसके कहने से हातिम वहीं उतर पड़ा और वहां एक मनुष्य बहुत दिनोंसे रोग ग्रसित था उसदिन उसके सम्बन्धियों ने उसको बधकरके उसका मांसआपसमें बांटलिया सोईभाग इस मनुष्य ने जिसकेघरमें हातिम उतराथा बनायके एकगिलास में पानी और थारी में रोटी और आमिष वही मनुष्यलेके हातिमके आगेधरके कहनेलगा कि हे पथिक शीघ्र भोजन करले क्योंकि तूने ऐसा अपूर्व भोजन कभी न कियाहोगा तब हातिमने कहाकि मैंने सम्पूर्ण भक्ष्य पदार्थोंको भोजन कियाहै तू इसमें कौन ऐसी वस्तुलाया है जिससे तूने कहा कि कभीऐसा भोजन न कियाहोगा उसनेकहा अवश्य तूने सकल पदार्थ भोजन किये होंगे परंतु मनुष्यका मांसतो कभी न मिला होगा इसमें आजमैं तेरे लिये मनुष्यका मांस पकाके लायाहूं यह सुनके हातिम ने कहाकि धिक् है मुझे जो तेरे नगर में आया अरे निर्दयी चाण्डाल अबमैंने जाना कि तुम मनुष्य भक्षीहो और जो कोई तेरे नगरमें भूलाभटका पथिक बिदेशी आ निकलता है उसे तुम सब मिलके मार खाते हो तो मुझेभी तुमसे डरना उचित है यहसुनके वहबोला कि हम किसीपथिक बिदेशी को नहीं मारते परंतु यह हमारे नगरकीरीतिहै कि जो कोई बीमार होताहै तो उसके सम्बन्धी उसे बधकरतेहैं और अपने कुनबे वो गोतके लोगों में बांटके खालेतेहैं सो आज एक रोगी मनुष्य बधकियागया था सोमैं अपना भाग तेरे लिये रींधकेलायाहूं इसमें कुछदोष नहींहै तू आनन्द से भोजन कर और इसी से हमारे नगरके आसपास

मतकोंकी क़बर नहींहै यह सुनके हातिमउठा और यह कहता हुँआचलाकि धिक्है तुमको और तुम्हारी रीतिको औरमैंऐसा महा अपावन भोजन नहीं करताहूं तुम महाहत्यारेहो कि इसी भांति अमित मनुष्यों को बध करके खालिया होगा तुम महापापी हो तुम्हारे मुखदेखे से बड़ापातक लगताहै यह कहता हुवा एक बनकी राह ली तो देखा कि एकबाघ मारेभूख के बिकल है चलनेकी भी सामर्थ्य नहीं है तब हातिम ने एक मृग मारके उसे दिया और थोड़ासा आपभी ले अग्नि में भून के खाया जब बाघ आनन्दसे भोजनकरके बनमें चलागया तब हातिमभी अपनीराह लगा इसीभांति जबकिसी बनमें पहुंचताती मेवा फूल पत्ती अथवा अहेरकरके अपना पेट भरता निदान चलते २ एक नगर दृष्टिपड़ा वहांदेखा कि सब नगरनिवासी बाल वृद्ध स्त्री पुरुष एकचौगानमें अग्नि जलाये उसकेचारोंओर खड़े हैं हातिम जब उस ठौरगया तब उनसे पूछाकि हे मिचो तुम यहां इतनी लकड़ीजलाके काहे को खड़े हो और तुमकौन हो यहसुनके उन्होंनेकहाकि रे भिक्षुक तू अपनी राहले तुझे पूछनेसे कौन कामहै यहां कुछ भंडारा नहीं चढ़ाहै जो तुझे भोजन देदें हमारे सजातियों मेंसे एक मनुष्यमरगया है सो यहां उसके साथ उसकी स्त्री भी जलती है तब हातिमने पूछा कि इसमृतकको गाड़ते क्योंनहीं और इस सजीव स्त्रीको इसमृतकके साथ काहेको जलातेहो तब उन्होंनेकहा कि हमको मालूम होताहै तू इसदेशका निवासी नहींहै यहदेश हिन्दुस्तानहै यहां स्त्री आपही अपने पतिके साथ दग्ध होजाती है तब हातिमने कहा यहरीतितो भलीनहींहैकि सजीवको मृतकके साथ दग्ध करतेहो यहकहके उनसे आगेबढ़ा थोड़ीदूर चल एक गांवमें पहुंचा वहांएक मनुष्यसे पानीमांगा उसनेएक कटोरादूध और एक कटोरा मट्ठा मेरेआगे लाधरा और कहा कि जो तुझे भावे सो पीले तबपहिले तो हातिमने मट्ठाका कटोरापिया फिर दूधमांगा उसने थोड़ीसी शक्कर डालके मुझेदेके और कहा कि हे पथिक मेरेघरमें बांसीचावल पकायेधरेहैं जोतूकहै तो लेआऊं इस दूधकेसाथ खावेगा तो बड़ास्वाद पावेगा हातिमने कहा कि भलानेकी और पूछ २ अच्छा लेआवो तबवह हिंदू थोड़ासा भात ले आया हातिम ने खाया और रातको वहीं रहा सबेरा होतेही उसहिंदूकी भार्य्या मेरेपासआयके कहनेलगी कि कुछभोजन करले और दोचारदिन यहांरह जबराहकी श्रमसे पांवहलके होवें

तो कहींजाना यहसुनके हातिमने कहाकि मैंतो तुम्हारी इतनी ही दयाकेबोझसे दबगयाहूं कि तुमने मेरा इतना सनोमानकिया है यहसुनके वहस्त्री बोली कि हमसे तो तेरीकुछभी खातिरनहीं बनपड़ी जो लड़केबालोंकेलिये रोटीपानी नित्यहोतीहै सोई तेरे लियेभीलायदीथी हांजोतूदयाकरके हमारेघरपरहै तो हमभीतेरी महमानीकरैं निदान उनकाहेतु देखके हातिमने कहाकि अच्छा जो तुम्हारी इसीमें प्रसन्नताहै तो मैंरहूंगा तबउसने एकमकानमें बिछौनाबिछवादिया और अपनेघरमें हातिमके लिये भोजनबनानेको कहदिया जब भोजनकरने का समयपहुंचा तब वह खीर, पूरी, कचौरी, कढ़ी, फुलौरी, फुलका, कईप्रकार की दाल, तरकारी, बरा, भात, दूध, दही, सिखरन, गोझा, हिर्से, बाजरे की टिकिया, दुधवरिया, दही, बरा, रकौंछे, रसाजें और अनेक प्रकार के व्यञ्जन जिनकेनाम कहांतक बखानें लेके हातिमके पास आके कहनेलगा कितुम इसमेंसे कुछ थोड़ा बहुत भोजनकरो तो हमभी प्रसन्नहों जब हातिमने भोजन कियेतब बहुत चित्त प्रसन्न हुवा और बहुत सराहना करनेलगा क्योंकि वहतो मुसल्मानथा कभी ऐसेभोजन काहेको कियेथे तब कहनेलगा किहिन्दुस्तानतो परम रमणीय देश है और यहां सब अपूर्वही पदार्थ होते हैं पर केवल एकरीतियहां सजीवस्त्रीदग्धकरनेकीऐसीबुरीहै किजिससे मनुष्य निर्दय ठहरताहै यह सुनके उस हिंदूने कहा कि यहांस्त्री अपने पतिकेसाथ आपही जलतीहैं कोईउनको बरबश नहीं दग्ध करता जोतुम यहांरहोतो हमतुमको दिखा देंगे इतनेमें दैवयोग से एकबड़ा प्रतिष्ठित पुरुष रोगवश होके थोड़ेही दिनोंमें मरगया और उसकेचारस्त्रियांथींजब उसकीटिकठी निकली तब चारोंस्त्री शृंगार कर फूलों के हार गले में डार शीशके बार बिखेरके साथ चलीं और कुनबा के लोग सब पांउधर २ के समझाने लगे कितुम सब भांति भरी पूरी हो तुम्हें जलना उचित नहीं परन्तु उन्हों ने किसी की सीख न मानी तब हातिम उनसे कहने लगा कि हे सुन्दरियो तुम्हैंलाज नहींआती जोतुम कुलकानिछोड़ परपुरुषों के सम्मुख मुखखोले मृतकके साथ दग्धहोने को जातीहो यहसुन के वेहँसके कहने लगीं कि हेजवान हमतो अब मृतकहैं हमको तुझसे कुछ लाजनहीं देख वह कौनसा दिनथा कि इस मृतक के साथ भोग बिलास किया था और अब जोयह मरगया तोइसको छोड़के हमजीवें यहप्रीति रीति विपरीतिहै और इसके सिवाय

हमको जीतेजी कामाग्निमें जलना पड़ेगा उससे तो यही उत्तम है कि एकबेर अपने पतिके साथ दग्धहोने से सदाकी बिरहानल से बचों और कोजाने हमारेरणापेमें हमको कामचाण्डाल सतावे तो हम परपुरुष को देखेंतब हमारे मातापिता और सासु ससुर का पतिसमेत नाम धराजाय इसलिये ऐसेजीवन को धिक्कै निदान उन्होंने हातिमका भी कहानमाना जब चितामें अग्नि धरीतो उस चिताकी प्रदक्षिणा करके उसपर चढ़बैठीं तबकिसीने तोउस मृतकका शीश अपनी गोदमें धरा किसीने हाथ किसीने उसकेपांव और प्रसन्नता से बैठींतब हातिमने बिचाराकि कदाचित् जबअग्निका ज्वाला उठेगा तोउसकी गरमीपायभगेंगी सो कुछ न डरा वे आनन्द से बैठों २ उसके साथ जलके राखहोगईं हातिम यहदेखके घबराया और जब वे लोग वहांसे घरको आये तो हातिमसे उसनेकहा कि हेजवान तैंने देखा कि स्त्री अपने मन से दग्ध होतीहैं तब हातिमने कहा यह सत्यहै और प्रीतिकीभी यही रीतिहै कि अपने प्यारे के साथ आपभी जल जाय क्योंकि बिरहानल इसअग्निसे बिशेष उष्णहै फिर कई दिनपीछे हातिम ने कहाकि हेप्यारेमुझे कोहनिदा कोजानाहै सोतूअबमुझे बिदा कर यहसुनके उसचिंटूने कहाकि कोहनिदा यहांसे बहुतदूर है तू वहां कैसे पहुंचेगा तब हातिमने कहाकि ईश्वर बड़ा कौतुकी है जैसेमुझे यहां पहुंचायाहै उसी भांति वहमुझेवहांभी पहुंचाय देवेगा निदान वहां से बिदाहो देश २ पर्य्यटन करता उत्तर की ओर जानिकला तोएक नगरकेपास बहुत मनुष्योंकी भीड़दिखाईदी जो उनके पासगयातो उनसे पूछाकि यहां इस भीड़ होनेका क्या कारणहै तबवे कहनेलगे कि यहां एक सरदारकी बेटीमरगई है सोउसके पतिकोभी उसकेसाथ गाड़नेके बिचारमेंहैं वहअभी मानता नहीं है इसी से सब लोग इहां इकट्ठे हुयेहैं तब हातिम ने कहा कि मुझे अपने सरदारकेपास लेचलोमैं उससे कुछकहूंगा उनमेंसे एक उसको सरदारके पासलेगयातो हातिमनेकहाकिहे बुद्धिमान यह कैसी अनीतिहै कि मृतकके साथ सजीवको गड़ाते हो और वह गड़ने को प्रसन्न भी नहीं है भला कुछ तो ईश्वरसे डरो तब उसने कहाकि हे प्यारे हम उसको बरबश नहीं गाड़ते किन्तु वही अपने मुखसे प्रथम कहचुकाहै और अब अपने कहने काप्रतिपाल नहीं करता तुम सुनों कि हमारे देशमें यहभी तेरी भांति बिदेशीहै और हमारे देशकी यहरीति है किहमलोग वर

कन्या को बालवस्थामें नहीं ब्याहते जब वे अपनेआप एकदूसरेका इसप्रकार प्यारकरतेहैं किएकदूसरेकी बिरहमें बिकल होनेलगताहै उस समय अपनी प्रसन्नतासे दोनों बचनबन्द होतेहैं किहम दोनोंमेंसे जो चाहे सो मरे सजीव भी उस मृतकके साथ क़बर में गड़ेगा तब हम सबजने मिलके उनका बिवाह करदेते हैं जब यह आया तो थोड़ेही दिनों में हममें मिल गया और मेरी बेटी का प्यार करनेलगा तब हमने इसे यहां की रीतिसे सचेत कियातो यह हमारी रीति अनुसार बचन बन्द हुआ तब मैंने इसके साथ अपनी बेटी का बिवाह कर दिया अब तूही कह कि यह कैसा पुरुष है जो अपने बचन का प्रतिपाल नहीं करता तब हातिम ने कहाकि हे जवान तू क्यों नहीं अपने बचन का प्रतिपाल करताहै तब वह बोला कि हे पथिक तू भी इनमें मिलगया क्यों नहीं तू अपने देशकी रीति इनको बताता है हातिमने कहाकि मैं क्या कहूं तूतो पहिलेही अपनेसुखसे हार बैठाहै वह बोला कि चाहे जो होय मैंतो इसके साथ न गड़ूंगा जबहातिम ने देखा कि न तो यह मानता है और न ये बिनागाड़े छोड़ेंगे तब हातिम ने उससे अपनी यमन भाषामें कहाकि तू मानले और इसके साथ गड़जा जब रातिहोगी तो जैसे बनेगा तैसे मैं तुझे क़बर में से निकाल लेऊंगा उसने कहाकि मैंतेरे निकालनेतक कैसे बचूंगा तब हातिमने उनलोगोंसे कहाकि यह कहताहै कि हमारे देशकीसीजो क़बर बनावे तो इसके साथ गड़ूंगा यह सुनके वे सब बोले कि यह बात तो नगर के हाकिम के हाथहै जो वह चाहै सो करै तब उनको हातिम नगरके हाकिमके पास लेजायके कहनेलगा कि वह पुरुष कहताहै कि मेरे देशकीसी क़बर बनावै तो मैं इस मृतक के साथ गड़ूंगा हाकिमने पूछाकि तुम्हरे देशमें कैसी क़बर बनाई जाती है तब हातिम ने कहा कि हमारे देशमें ऐसी खोदी जाती है कि जिसमें दश बीस आदमी चारों ओर खड़े रहैं यह सुनकेहाकिम ने गर्दन नीची करली और थोड़ीदेर पीछे बोला कि अच्छा जो वह कहै सोईसही कैसेहूं तोगड़े तब वैसीही बड़ी क़बर खुदाई और उसमें उस जवानको उस मृतक स्त्री के साथधर ऊपरसे एक बड़ीभारी पत्थरकी शिलाधरदी और वहांसे हातिम सहितसब घरको चले आये तो वे हातिम को मकान पर लायके बहुतसनो मान किया रातको जबघरके लोग सोये तब हातिम अपने बिछौने से उठके उस क़बरके पास आया परन्तु वहांकी यहभी रीतिथी

कि तीन दिन तक उस मृतकके कुनबा के लोग रातदिन उसकी क़बरको रखाया करतेथे इसलिये हातिम तीनों रातों को खाली ही लौटआया जब तीसरे दिन सब लोग वहांसे घरको आये तब हातिम वहांगया और वह जवान हातिम को बड़ तेरेदुर्बचनकहे किउस पथिकने मुझेधोखादेके इस क़बर में बन्द करादिया जोमैं उसे ऐसाझूठा जानता तोकभी नबन्दहोता निदान ऐसी २ बातें कहके सोरहा तब हातिमने सिरहानेकी ओर से पुकारा कि हे जवान सोताहै कि जागताहै मैं तेरे निकालने को आयाहूं परन्तु वह न बोला तबतो हातिम को निश्चय होगई कि अब वह मर गया फिर दूसरी बार पुकारा तबभी न बोला तबहातिमने तीसरी बेर पुकारके कहा किहे जवान मैंतेरेनिकालने को आयाहूंजो जीताहै तो बोल नहींतो इसीमेंमरेगा मेराकुछदोष नहींहै इतने में वह बोल सुनके चौंक पड़ा और बोला कि तू कौन है जो मेरी क़बर पर पुकारताहै तब हातिमने कहा कि मैं वहीहूं जो तुझसे निकालनेको कहाथा यह कहके कमरसे कटार निकाल क़बर खोद उसेबाहर निकाल के कहा कि ले अब जिस ओर तेरा मन माने उसओर को चला जा तब उसने कहा कि मैं कैसे जाऊं मेरे पास तो कुछ खर्च नहींहै तब हातिमने कई दिरमेंअपनीखीसी सेनिकालके दिये वहतो अपनी राह लगा और हातिम नगर में आ सबेरे उनसे बिदा हो कहने लगा किमुझे कोहनिदाकोजाना है उन्होंने कहाकि कोह निदा यहां से थोड़ी ही दूरहै जावो परन्तु एक बातहै किथोड़ी दूर चलके एक दुराहा मिलैगा सो तुम दाहिनी ओर को राह लीजियो ईश्वर चाहे तो वहीं जाय खड़े होगे निदान हातिम उनसे बिदाहोके चलदिया और ग्यारहवें दिन उस दुराहे परजा पहुंचा वहां उसका कहना भूलगांई ओरकी राहली तोदो दिन पीछे क्या देखता है कि बनके जीव जन्तु सबभागे चले आतेहैं इसने जानाकि कोई जंगली जीव इनके पीछे पड़ाहै इसीसे सबभागे आतेहैं यह सोचके वृक्षके ऊपर चढ़गया तो क्या देखता है कि बड़े २ हाथी गैंड़ा आदि जन्तु भागे चले आतेहैं और उनके पीछे एकछोटा सा जीव जिसकी दीपक के समान आंखें जलती हैं और पूछ घुमाय के मूड़पर किये धाया चला आता है यह देखके हातिम सोचा कि यह कोई बड़ाही करालजीवहै जिसके डरसे ऐसे २ भारी जंतुतो जीव छुड़ाये भागे आते हैं मेरी कौन चलावै परंतु अपने मन को दृढ़करके हाथ में

दुधारा लेके बैठा तो दैवयोग से वहजीव उस वृक्षके नीचे आया और मनुष्य की बासपायके डकारा और ऊपरको उछला निकट-हीथा कि हातिमको पकड़के चीरडारे पर हातिमने ऐसादुधारा मारा कि उसके दोनों हाथ कटगये और पृथ्वी में गिरपड़ा तब मूतके अपनी पूछभिगो चारोंओरको फिरानेलगा तो जहां २उस के मूतकी बूंदेंपड़ीं तहां२आग लगगई जब हातिमने देखाकि दा-वावृक्षके पासआन पहुंचा तब कूदके एकसोतामें गिरा इतनेमें वह जंतु मरगया और आगभी बुझगई तबहातिम उससोतासे निकल केउसकेपास आया तो उसकेदांत दुधाराके समानथे वे उखाड़लिये और उसके नाक कान पूंछ काटके अपने चोणमें धरलिये फिरच-लते २ कईदिन पीछे एककोट दिखाई दिया कि जिसके बुर्जमानों आसमान से बातें करते हैं पर सूनसानहै जबउसकेभीतर गयातो देखा कि बड़े २ मकान धौरहरा खड़े हैं और चौपड़का बाज़ार जिसमें जो पदार्थचाहिये सो प्रत्येकदूकानपर धराहै पर मनुष्यका पुतरा भी नहीं दीखपड़ता यह देखके हातिम बहुत विस्मितहुआ फिर शोचनेलगा कि कदाचित् यहांकोई देव अथवा और कोई ऐसीबलाआईहै कि उसीके डरसे सबअपनी२दुकानें औरघरबार छोड़के भागगयेहैं यहीशोच बिचारमें आगेबढ़ा यहांतक कि बाद शाह के महलोंतक जापहुंचा तो केवल बादशाह तो अपने कुनबा समेतथा और उसकेदोचार भृत्यभी खिड़कियोंमें बैठेहुये दिखाई दियेहातिमको देखके एकनेकहाकि बहुतदिनोंमें यहएक पथिक इस शहरमें दिखाई दियाहै तब दूसरे ने कहा कि इस को यहां बुलावो यह सुनके एकने पुकारा उनकाबोलसुन हातिम एक खि-ड़कीके नीचे खड़ा होरहा तब बादशाहने उसको खिड़कीकीरा-हसे देखकेपूछा कि हे जवान तू कौन है कहांका निवासीहै और कहां जानेका विचार है हातिमने कहाकि यसनमेरी जन्मभूमिहै शाहाबादसे आताहूं और कोहनिदा को जाताहूं यहसुन बाद-शाहने कहाकि हेपथिक मैंनेसत्य२ यह बात जानीकि तुझे तेरी मृत्यु यहां लेआईहै अबतू अपनेको मृतकही जान और यह राह कोहनिदाकी नहींहै तूभूलाहै वहदाहिनी ओरकी राहथी सो तूउसकोछोड़केबांये हाथकी राहमेंचलाआया यहसुनके हातिम ने कहाकि जो ईश्वर ने यहां मुझे मरनेही को भेजाहै तो मैंभीतन मनसे प्रसन्नहूं परतु यहबता कि तू कौनहै और यह नगर क्यों उ-जाड़है तूयहां क्यों अकेला किलेमें पड़ा रहता है इसका क्या हेतु

है यह सुनके उसने उत्तर दिया कि मैं इस शहरका बादशाह हूं थोड़ेदिनों से यहांकोई ऐसाजन्तु आताहै कितनो उसकेसम्मुख सिंहखड़ा होताहै औरनहाथी भलामनुष्य कीतो क्या सामर्थ्यहै उसीके डरसे प्रजानगर निवासी भाग गयेहैं मैंइस कोटके भीतर अपने दशपांच सेवकोंसहित पड़ाहूं क्योंकि वह कभी कोटकेभीतर नहीं आया है तब हातिमने पूछाकि वहकौनहै देवहै किदैत्य है और कहां रहताहै बादशाहने कहाकि मैंनेतो उसे देखानहीं परन्तु सुनताहूं किवह कोहक़ाफ़में रहताहै और दिनप्रतियहां आय दोचार मनुष्योंको खायफिर अपनी ठौर लौटजाता है तब हातिमने कहाकि ईश्वरकी लीलाकोदेखनाचाहिये किमुझेराह भुलादी तो राहमें मुझसे भेंटहोगई फिर उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहके कहाकि एक ठौरबनमें मैंनेउसको माराहै यह सुनके बादशाह बहुत प्रसन्न हो हातिमको भीतरलेजाके मसनद पर बैठाल भांति २ केभोजन कराय बादशाहने कहाहेप्यारे मुझेइसकी निश्चय किसभांतिहो कि वह मारागया यह सुनके हातिमने उसके कान पूछ और दांत बादशाहके आगेधरे यह देखतेही बादशाह हातिम के हृदय में लगा बहुबार धन्य २ कहबड़ी प्रशंसा करनेलगा और अपनेनगर निवासियों और सेनाकेलोगोंकोपत्र लिखे किवहबलाय हमारे देशसे मिटगई अब आनन्दसे आयबसो फिर थोड़ेदिन पीछे हातिम वहांसे विदाहोनेके समय एक मनुष्य कोअपने साथले कोहनिदा की ओर चला कुछदूर चलके वह हातिमकोकोहनिदाकी राहदिखावहांसेअपनेघरकोलौटआया हातिमने कोहनिदाकी राहली थोड़ेदिनों में एक शहरमें जा पहुंचा वहां के निवासी उसको बादशाहके पासलेगये उसने हातिमसे पूछाकि तूकौनहै और कहांसेआताहै और कहां और किसलियेजाताहै हातिमने उत्तरदिया कि मुझेशाहबाद सेबरजख़ सौदागरकी बेटीने कोहनिदा की ख़बर लेनेको भेजा है सो यहां भांतिर के कष्ट भोगके पहुंचाहूं इसलिये जो आप मेंसे कोई जानता है तो उसका हाल मुझसे बतादेतो अत्यन्त इस पथिकपर दया होगी यहसुन उसने कहाकि हेभ्राता यहसमाचार ऐसा नहींहै जो तुझसे कोईकहै परन्तु जो तूयहां रहैगा तो आपही जानजायगा यह सुनके हातिम वहां रहने लगाऔर बादशाहके घरमें भोजन करनेलगा बहुधा बादशाह और आप एकही साथ भोजनकरेइसमें कुछकाल बीतातब एकदिन सौदोसौ आदमियों

केसाथ हातिम और बादशाह दोनों बैठे बातें कररहे थे इतने में अचानक एकशब्द सुनाईदिया कि शीघ्र आ २ यहसुनके उनमेंएक जवान पुरुष दौड़ा लोगों ने उसके कुनबा और सम्बन्धी लोगों से बताया कि उस मनुष्य को कोहनिदा से बुलाया है यहसुनके उसके सम्बन्धी दौड़े और उसको घेरलिया तो क्या देखते हैं कि उसका मुखरक्तरंग होरहाहैऔर पहाड़की ओर दौड़ाचलाही जाताहै जबहातिमने लोगोंसे पूछाकिइसमनुष्यको क्याहोगयाहै जो न किसीसे बोलता है और न कुछ कहताहै बावरोंकी भांति चलाही जाताहै तबलोगोंने कहाकि इसको कोहनिदासे बुलावा आया है यहसुनके हातिम ने मनमें कहा किसीने उसको बुलाया होगा यहशोचके हातिमने उसको पकड़लिया और पूछनेलगाकि हे भ्राता यह कैसी बात्तो है जोतू बिनबोले चाले हमसबको छोड़े जाताहै भलाकुछतो मुखसेबोल निदान हातिमने बहुतेरा मूड़पट-का पर उसने कुछनकहा हाथछुड़ाके भागा और पहाड़के नीचे जापहुंचा हातिमभी उसके पीछेही लगाचलागया इतनेमें एकसंग वहपहाड़ हातिमकी दृष्टिसे लोपहोगया केवलरंगेभये पत्थरउस-को दृष्टिपड़े फिरहातिम हारके सबकेसाथ लौटआया और यहां देखा कि उसका कोई सम्बन्धी उसकेलिये न रोया किन्तु सभोंने बड़ा आनन्द किया फिर अपना २ काम करनेलगे जब हातिम ने पूछा कि तुमको यहभी मालूमहुवा कि उसमनुष्य की कौन दशा हुई तब वे कहनेलगे कि वहां तू भी तो वर्तमान था जो हमने देखा सोई तैनेभीदेखाहै फिरहमसे काहेको पूछताहै यहसुनके हातिम उसमनुष्यके लिये आंसूभरके शोचकरनेलगा तबउन्होंने कहा कि यहहमारे देशकीरीति नहींहै कि कोई किसीकेलिये रोये अथवा शोककरै जोतुझको कुछदिन हमारेपास रहनाहै तोहमारीभांति तूभीरह नहीं निकालके गांवबाहर करैंगे यहसुनके हातिमने अपने आंसू पोछडाले परशोचमें बनारहै जब सबोंने हातिमको शोचवश देखातो कहाअबतकाहेको शोचकरताहै कोहनिदाकायहीहा-लहैजोतैंने देखाहै तबहातिमने कहा किमैंनेतो कुछनहीं देखा जो हुसनबानू मुझसेपूछेगी तोमैं क्याबताऊंगा निदान छःमासतक हा-तिम वहांरहा और इसीभांति पन्द्रहमनुष्य उसपहाड़की ओर को गये और जहांगये तहींरहे वहांसे कोई न आया जो वहांके समाचारकहै इतनेमें दैवयोगसे उनमेंभी एकमनुष्य हातिमनामक था और इसहातिम और उसके मध्य ऐसी मैत्री होगई थी कि

दूरजानेको तो कौनकहै एकक्षणमात्रभी देनों बिलगनहो होतेथे सो एकदिन सबलोगबैठे बातें कररहेथे कि भावी बलवान् इतनेमें शीघ्रआ यहशब्द सुनाईदिया यहसुनतेही वहदीनबावरेकी भांति उस पहाड़की ओर चला यह समाचार सुन उसकेहितू सम्बन्धी हातिमताई समेत वहांआये और चारोंओरसे घेरके खड़ेहुये तब हातिम निजमनमें शोचनेलगा कि एकतो मेरे और इसमनुष्य के बीचमैंची विशेषहै सो जाताही है वहां से बहुरनेका नहीं दूसरे यहांके निवासियोंसे शब्दभान पर्वतका कुछसन्देह निवर्तकभेदभी न विदितहुआ और उसविघ्न बिधाताका लिखाअमिटहै इसलिये जो ईश्वर करै सोहो अबतो इसका साथ न छोड़ूंगा बरण इसके साथ अवश्यही जाऊंगा यह निज मनमें ठान उसका हाथ पकड़ पहाड़ की ओर राह ली राहमें हातिम उससे बहुतेरा पूछे कि मित्र तेरे कौन पिशाचलगाहै जो बरबस खींचताहै कुछसुझेभी तो बतापरन्तु उसने इसका कुछभी उत्तर न दिया तबतो इसने झुंझ-ला के कहाकि भले आदमी देख कितेक दिनसे हम दोनों निशि बासर एकठौर रहतेहैं और परस्परकैसी मैचीहुई और इससमय बोलनाभी भारीहोगया यहकैसा मनुष्यत्वहै और क्यों तेराकण्ठ रुंधाहै और तेरा लेजानेहारा कौनहै और कहांजाता है उसने इसकी ओर को ध्यान भी न किया कि यह कौन और क्या कह रहा है और उलटे हातिम के हाथ से अपना हाथ छुड़ाने लगा हातिम ने बहुतेरा बलकिया पर उसने हाथ छुड़ाही लिया और कोहनिदा की ओर को चला परन्तु हातिम ने उसका पीछा न छोड़ा निदान दोनों आगे पीछे पहाड़के नीचे पहुंचे तब हातिम ने उचकके उसकी कमर पकड़ली और दोनों पहाड़के ऊपर चढ़ गये और जब कोटके निकट पहुंचे तब एक खिड़कीसे होके भीतर गये तोसबकी आंखोसे अलक्ष हुये तबसब लोग वहांसे हातिमका शोच करतेहुये लौटआये और नगरके अधीश्वरसे कहा किउसके साथ वह पथिक भी चलागया यहसुनके वहहाकिम क्रोधातुरहो के बोलाकि अरेमूर्खो आजतक कोई उस पहाड़ पर बिना बुलाये नहीं गयाहै तुमने उसकोक्यों छोड़दिया जोउसकेसाथ चलागया तब उन्होंने कहा कि हे अन्नदाता हमारा कोई अपराध नहीं है हमने तो अपनीसी बहुत करी परन्तु उसने एक न मानी और कहा कि यह मेरा मित्रहै मैं इसकासाथ न छोड़ूंगा और जोकुछ आपदा उसपर पड़ेगी उसकामैंभी भागीहूंगा ऐसी २ बातेंकरके

सबजने हातिमकेलिये शोचनेलगे अबकोटके समाचारसुनो कि जब वेदोनों भीतरगये तबउसकेभीतर एकशून्यमैदान हरीघाससेभरा दृष्टिपड़ा थोड़ीदूरचलके थोड़ीसीपृथ्वी बिनाघासके दिखाईपड़ी उसमें पांव धरतेही वहजवान गिरपड़ा तब हातिम ने चाहा कि उठावें परन्तु गिरतेही उसका बदन पीला होगया आंखें पथरा गईं और हाथपांव कड़ेहोगये यह देखहातिमको निश्चय होगया कि अब यह मरगया तब हातिम रोनेलगा इतने में धरती फटगई वहजवान उसमें घुसगया तबउसठौरभीहरी दूबहोगई यहदेखके हातिमने वहीपरमात्माका धन्यवादकियाऔरकहाकियहसंसार अनित्यहै इसीभांति सबको मरना सत्यहै तब हातिमने यहीमनमें आनी किमैंने कोहनिदा की बात जानीनिदान वहाँसे चलने की मनमेंठानी दिनभरफिरापर न तोउस खिड़कीको फिरदेखा और न कहींकोटका चिन्ह पाया इसी भांति सात दिन तक निरन्तर बिन अन्नजलफिराकिया बदनमें चलनेकीसामर्थ्यनरही तबशोचने लगा कि हे हातिम तेरीमृत्यु तुझे यहांलाई जो तू विना बुलाये कोटके भीतर आया अब नतो वह खिरकीहै और नकोटहै नवह शहर है यहीशोचता हुवा एकनदीके किनारे आपहुंचा तोदेखा कि वहनदी बड़ेवेगसे बहतीहै और कहींओर छोरनहीं दिखाई देता तबमनमें बिचारा कि इसकेपार कैसेउतरूं इतनेमें एकनौका उसकी ओरको आतीदृष्टिपड़ीतो जानाकि कोईकेवट लियेआता है जबनिकट आपहुंचोतोउसपर किसीकोन देखकर विस्मितहुवा पर ईश्वरका नाम लेके उसपर चढ़ा तो उसनौका के कोनेमें एक बखलपेटा हुवा दृष्टिपड़ा इसने उसको खोला तो दोरोटी और भूनी मछली निकलीं तब हातिमतो क्षुधावन्तथाही उसने भोजन करनेका अनुमानकिया परशोचा कि यह किसी दूसरेका भागहै मुझेइसका ग्रहणकरना अनुचितहै इतनेमें नदीसे एकमछलीने मूड़ निकालके कहाकि हे हातिम यहतेराही भागहै तू इसको खाले वहतो यहकहके जलकेभीतर चलीगई हातिमने वेरोटीखाईं और ईश्वरका धन्यवादकिया और वायुकेवेगसेएक किनारेपै जाउतरा तो कहने लगा कि अबचलके नगरमें उसपुरुषका समाचार वहां केनिवासियों से कहूं निदान हातिम को फिरते२ सात दिन बीते नतो कहींगांवका खोजमिला और न कहीं अन्नही मिला इसी शोचविचारमें चला जातथा कि अबक्या करूं इतनेमें उसको एक पर्वत दृष्टिपड़ा तीनदिनमें वहांजा पहुंचातो जिसपत्थरको उठाके

देखेवहीं रक्तवहता मिलेयह देखके कहनेलगा कि किससे पूछूं जो यहहालबतावै निदानपहाड़ पर चढ़नेलगा तो बारह दिनमेंउसके शिखरपर पहुंचा तो एक लम्बाचौड़ा मैदान दिखाईपड़ा और जितने वहां जीवजंतु खगमृग सबरक्त रंगदेखे तो भूख प्यास भूलके आगेबढ़ा और छःकोस तक मारामार चलागया तो एकरक्तनद लहरैं लेताहुआदृष्टिपड़ा और जितने जलचर जीव उसमें थे सोभीऐसे ही दृष्टि पड़े कि मानों रक्त संयुक्त मांसके लोथड़े हैं यह देख के अपनेमनमें कहने लगाकि किस प्रकारसे पार उतरूं यह शोचता हुवा किनारे चला कि कदाचित् कहीं उतरनेका ठौरमिले जहां भूखलगे तो अहेर करके खाता और प्यास के समय सुहरा सुखमें धरलेता इसीप्रकार चलते २ उसठौर पहुंचा कि उस रक्तनदीके सिवा न कहीं थल है न कहीं खग मृग जीव जंतु दृष्टि आता है केवल वहीमहानद चारोंओर जहांतक दृष्टिगोचरका विस्तारथा तहांतक उसी जलका विस्तार देखहातिमने शोचाकि इनने कष्टसे तो यहां घाटकी टाहमें पहुंचा अब निश्चयहुआ कियो मैं दशवर्ष भी फिरूंतोभी इसका आदि अन्त न मिलेगा यह ईश्वर की लीला है इस की थाह किसी की सामर्थ्य नहीं जो पावे परंतु जिस पर वह दयाकरे तो उसे सब प्रकार सुगम है अब ईश्वरही जो चाहे तो यहां से कुशलपूर्वक निकलूं नहीं मृत्युतो प्रकटहैही है अब मुझे तो अपने मरने का कुछ शोच नहींहै परन्तु मुनीरशामी मेरे आसरेमें रहा सत्यहै यहांसे कोई किसप्रकार हरूनबानूसे जाके समाचार कहै अब मैंने जाना कि जो कोई यहां आया सो इस माया के भँवर से निकल के बाहर न गया यह कहके फिरयों कहनेलगा कि मैंने तो कुछ अपनी इन्द्री सुखी करनेके लिये यहां का आना अंगीकार नहीं कियाबरञ्च बिरानेलिये उद्यतहुवाहूं इसलिये अब हे ईश्वर केवलतेरी दया दृष्टिका आसराहै और तेरे सिवायकिस से कहूं तुझीको जैसे बनै तैसे करना पड़ैगा हातिम इसी शोच बिचारमेंथा कि इतनेमें कोईवस्तु नदीमें दृष्टिवानहुई हातिम उस की ओर टकटका लगाये देखरहा था इसनेजानाकि यातो कोई जलजीव है अथवाकोई लक्कड़ जलके प्रवाहमें कहींसे बहा आताहै थोड़ीदेरमें निकट आईतो देखाकिनौ काहै तोईश्वर का नामलेके उसपर चढ़ लिया और रोटी और मांस यथापूर्वक उस में धरा पाया हातिमने उसको भोजन करलिया इतने में वह नौका मझधारके निकट पहुंची तो वायु वेग से चलनेलगी और नदीमें लहरें

उठने लगीं तब नौका उलट पुलट होने लगी हातिम मारे डरके सहम के उसके भीतर सो रहा तब और भी अधिक बड़ी २ लहरैं उठीं निदान ईश्वर २ कर सातवेंदिन नौका किनारेपर जापहुंची हातिम उतर के उसी के तीर २ चला और कहनेलगा कि कुछ भेद न खुला कि यहनौका कौनलाया और किसने ये रोटी भेजी इसीशोच बिचारमें सातदिन तक चलागया तब एक नदी श्वेतजल की बहतीजुई ऐसी दृष्टि पड़ी कि मानों किसी ने चांदी गला के बहाईहैयहदेख मारेप्यासके उसकेकिनारेजाके बायांहाथ उसमें छोड़ा तो चांदीकाहोगया उसने बहुतेरा उपाय किया पर किसी भांति बहनमिटा और भारीभी होगया तब हातिमने मनमें शोचा कि यह तो अपूर्व नदीहै जो इसमें डुब्बीमारता तो सम्पूर्ण शरीर चांदी का होजाता पर इतनी कसरकी बातहै कि मारे बोझके फिर चला न जायगा हार के किनारे बैठरहा और चारों ओर चकित चितवने लगा इतने में एक नौका उसी प्रकारसे दृष्टिवान् हुई हातिम ईश्वर का नाम ले के उसपर चढ़ लिया तो एक थार में तत्ताहलुवा उसमें धरामिला इसनेवह हलुवा खाया औरपांव फैलाय के उसी नाव में सो रहा कई दिन में नाव तटपर पहुंची हातिम उससे उतरके चला और बार २ अपने चांदीके हाथ को देखा करै इतनेमें एक पहाड़ दिखाई दिया वह ऐसालगे कियह निकटहै परन्तुथा एक महीनाकी राहपर हातिम उसकी ओर अहेर करता हुआ चला जब तीन दिन की राहपर वह पहाड़ रहगया तो लाल पीले हरे श्वेत अति शोभायमान पाषाण दृष्टि पड़े फिर थोड़ी दूर चला तो इलमास, लाल, जमुर्रद, हीरादि रत्न उसको ठौर२ पड़ेमिले जब हातिमको लोभने घेरा तोउसने बहुमौलिक उत्तम २ रत्न उठाय के मोट बांध निज मन में शोचने लगा कि जो ऐसेरत्न शहरमेंजायं तो वहां कोई इनका मोल न दे सकेगा इसी शोच बिचारमें थोड़ीहीदूरमें उनकेभारसे थककेएक ठौर बैठगया वहांबड़े २ रत्न तो रखलिये औरशेष उसीठौरछोड़ के आगे चला तो एक सोता मिला उसके किनारे बैठके हाथ मुह धोनेलगा इतने में जो अपने हाथ को देखा तो यथापूर्वक दिखाई दिया केवल नख साच चांदीके रहगये इतने में रात हुई हातिम वहीं रहा तीदो मनुष्य उसी सोतासे ऐसे निकले कि उनकेशीश तो मनुष्यों केसे और पांव हाथीके पावोंके सदृश और नख सिंह के समान यह देखके हातिम डरके खड़ा हुआ कि हे भगवन् यह

कौन आश्चर्यहै जो अब भागूं तो लाज लगतीहै और जोठहरूं तो जीवही जाताहै यह मनमें ठानके धनुषबाण उठाके एकतीरमारा तो एकने पकड़लिया ज्योंहीं दूसरातीर मारने को हुआ त्योंहीं उन्होंने दुहाई दी कि हे हातिम हम भी ईश्वर की सृष्टिमेंसे हैं तू हमको अपने प्राणके डरसे मारता है सो यह काम न कर हम कुछ तुझे सताने नहीं आये हैं यह सुनके हातिम धनुषबाण डार बैठके शोचने लगा कि इनको मुझसे कौन काम है जो मेरे पास आते हैं और तीर तो मेरा उन्होंने बीचही में पकड़ लिया अब दूसरा मारूं तो काहेको लगेगा इतनेमें वे निकट आके कहनेलगे कि हे हातिम तुझे लाज नहीं आई जो तैंनेरत्नों का लोभ किया तब हातिमने कहाकि मैंने कौन लोभ किया तो उन्होंने कहाकि उस बनमें से तू रत्न लायाहै और अभी तक तेरे पासहैं तब हातिमने कहा कि यह ईश्वर की सृष्टि अथाह है जो मैंने वहांसे रत्न लिये तो तुमको क्या कुछ तुम्हारे तो नहीहैं उन्होंने कहा कि यह सबसत्यहै पर वे रत्न मनुष्योंके लिये नहीहैं किन्तु परियोंकी जातिके लोगोंके निमित्तहैं तब हातिमनेकहा कि मैं तो आजतक यही सुनाकियाहूं कि मनुष्य सृष्टिमें सर्वोपरिहैं और इन्हींकेद्वारा सकल साधन सुलभ हैं पर आज तेरे कहने से यह मालूम होता है कि परी मनुष्यसे श्रेष्ठहैं और क्या मनुष्य इनरत्नोंके योग्यनहीं हैं जो पहरैं औरइनको काममें लावें मैंने तो केवलमनुष्योंके दिखाने के लिये उठालियेहैं जिसमें सब लोग देखके ईश्वर की माया को शिरनाय मायापति का धन्यवाद करैं कि देखो उसने कैसे२ अनुपम अमौल्य पदार्थ अपनी सृष्टिमें उत्पन्न कियेहैं यह सुनके उन्होंने कहा कि यह सत्यहै कि तुझे इनका लोभनहींहै परन्तु जो तू अपने देशको कुशल पूर्व्वक जाना चाहताहै तो इन रत्नोंसे हाथ उठा यहसुनके हातिमने सबखोलकेफेंकदिये कि लो तुम्हीं लेजाव परइतनीही शोचकी बातहै कि मैं इतनी दूरसे इनको वृथा बांध के कष्टसहता हुआ लेआया तुमने यहबड़ी अनीति कीहै कि मुझसे छीनलिये मैं कुछ चुराके नहीं लाया था तुमने मेरा परिश्रम निष्फल किया यहसुनके उन्होंनेकहा कि जो तू इनकेउठालानेका वेतन चाहताहै तो यह भी उचित नहींहै कि तू किसीका इतना धन बिना कहे उठाके अपनेपास रखछोड़ेऔरफिर उलटीमजूरी मांगे यह तैंने कहां की नीति बखानी यह सुनके हातिम ने गर्दन नीची करली और चुप बैठगया तब वे एक २ रत्न सब प्रकार का

जो सबसे अधिक दामका था देने लगे और कहा कि तुझे यही बख़्तहै हातिमने उनको लेलिया औरकहा कि हेहरिदासो मुझे राह बतादेव जिसमें अपने देशमें किसी भांति पहुंचूं यह सुनके वे कहने लगे हे जवान तू अब यही धन्यमान कि तू कुशलपूर्वक यहां पहुंचा नहींतो यहांसे आयके कोईलौटके नहींगया अबकुछ इतना संदेहनहींहै तेरीआयुर्बल बड़ी दिखाई पड़तीहै अब तुझे आगेएक तो जवाहिर का नद मिलेगा और दूसरा अग्निका जो तू इनसे कुशलपूर्वक पारहोजायगातोनिस्संदेह अपनेदेशमेंपहुंचजायगापर किसी वस्तुको देखके लोभ मत कीजियो नहीं तो अपने किये के फल पावेगा येतोइतनाकहके फिरउसी सोतामें उतरगये हातिमने रातभर तो वहीं बैठ ईश्वर २ कर रातकाटी सबेरा होतेही आगे बढ़ा तो कुछ दूरचलके एक नदी दृष्टिपड़ी उसका पानी चांदीके समानदेखा ज्योंत्यों करकेपारउतरगया थोड़ेदिनचलके उसेदूसरी नदी दृष्टिपड़ी यह कईदिनका प्यासाथा देखकेबहुत हर्षितहुआ जो उसके निकट पहुंचा तो देखा कि उसकी रेतीमें बराबरमोती बिछेहैं और प्रत्येक मोती अण्डेकी बराबर है और उनकीचमक के मारे आंखेंझिलमिलाईजातीथीं एकबेर तोमनमेंआई किइनमें से कुछमोतीउठावे परन्तु उनदेवोंकी शिक्षासुधिहुईतो फिरडरके मारेआंखें बन्दकरलीं और उसके तटपरबैठके जो देखा तोउसका पानी दूध और घीकेसमानहै यहतो प्यासाथाही भलीभांतितृप्त होके पानीपिया और उसको उतर करकेआगे बढ़ा तोदूरसेएक प्रकाश ऐसादृष्टिपड़ा कि मानों सोनेकापहाड़है निदान एकमास उपरान्त निकटपहुंचा तो सत्यही सोनेका पर्वत दिखाईपड़ा जो उसपर चढ़ा तो सबवृक्ष सोनेहीके फले फूले उसपर जगमगारहेहैं इसीभांति देखताहुआ तीन दिनतक चलागयातिसपीछे एकबड़ा लम्बा चौड़ा चौगान दृष्टिपड़ा और सम्पूर्ण पृथ्वी वहां की सोने ही की देखपड़ी उसके उपरान्त एक सोनेका महल दिखाईदिया उसका कपाट खुलापाके उसके भीतर चलागया तोदेखा कि एक बाग़ सुनहरे वृक्षोंका जगमगा रहाहै औरभांति२के मेवापकेझुये लगेहैं यहदेखके ईश्वरकीमायाको नमस्कार किया औरकुछमेवा तोड़के खाई फिर घूमता फिरता एक हौज़के किनारे जा पहुंचा उसका पानीऐसा स्वच्छथा कि मानों बिलौरका बिछौनाबिछाहै यह इसीशोच विचारमें था कि यह किसका बाग़है और इसका स्वामी कौनहै कि इतनेमें कईपरी आ केदृष्टिवान्हुईं और हातिम

को देख हँसकर बिस्मितहो कहनेलगीं कि यह मनुष्य यहांकहां से आया तब हातिम उनसे पूछनेलगा कि तुम कौनहो और यह बाग़ किसकाहै तब उन्होंने उत्तरदिया कि यह महलपरी नोश-लबकाहै इतनेमें वह आपही आपझुंची हातिम उसको देखतेही मर्छित होगया तो वह हातिमके सिरहाने खड़ीहोके कहनेलगी किकोई शीघ्र गुलाबलाके इसके मुखकोसींचे अनुसासनके साथही एक बरांगना दौड़ी आई और हातिमका मुख गुलाब से सींचा जब इसकी मूर्छा जागी तब वह तो जाके एक जड़ाऊ सिंहासन पर जाबैठी औरएक सोनेकी जड़ाऊ कुरसीपर हातिमको बैठा-लके पूछनेलगी हे जवान सत्यबता तू कौनहै और कहांसे आताहै और यहां किसकार्यको आयाहै तब हातिमने अपना संपूर्ण वृत्ता-न्त आद्योपान्त कहके पूछा कि इस ठौरका क्या नामहै और इस बाग़का स्वामी कौनहै और तू कौनहै तब परी नोशलबने उत्तर दिया कि इस पहाड़कानाम कोहक़ारीहै और यह मकान शाह-पाल बादशाहका है और उसकी एक बेटी आसानामकहै उसी की दासियों मेंसे मैंभी एक हूं सातवेंदिनके पीछे मेरी बारी सेवा करनेकी आतीहै तब एक दिनको मैं उसकी सेवाको जाती हूं और इस पहाड़ का सम्बन्ध कोह क़ाफसे है और यह जोउंचाई बड़ी दूरपर दृष्टिआतीहै सो उसीकाकोटहै निदान उसने हातिम को चार दिनतक पाहुनराखके भांति २ के षटरस व्यञ्जन हातिम कोखिलाये तब पांचवेंदिन उसने कहाकि यह ठौर तुम्हारे रहने के योग्य नहींहै इसलिये अब तुम्हें उचितहै कि दयाकरके विदा हूजिये हातिम वहांसे बिदाहोके दशबीस दिनतो पहाड़ही प-हाड़चला फिर एक बनमें जाके देखा कि एक नदी जिसका पानी गलेहुये सोनेके समान लहरें लेरहाहै यह पार उतरने के शोचमें उसके किनारे बैठगया इतनेमें एक सुनहरी नौका दूरसे दृष्टिवान् हुई थोड़ीदेरमें हातिमके पास आपहुंची हातिम उसपै चढ़लिया तो उसमें एक थालीमें तत्काल का बनाहुआ हलुवा धरा देखा हातिमने बड़े हर्षसे उसको भोजनकिया और ईश्वरकी दयासे नदीपार हुआ और सात दिन तक निरन्तर मार्गमें ऐसे २ आ-श्चर्य देखे कि प्रथम ऐसे नहीं देखेथे निदान आठवें दिन पत्थरोंमें आपहुंचा परन्तु सब पत्थर ऐसे जलतेथे कि मानो आगसे निका-लेहैं हातिम दोचार कदमचला फिर मारे उष्णताके न चलागया और प्यासके मारे ओष्ठ सूखनेलगे शरीर झुलसने लगा अन्तको

व्याकुल होके लोटनेलगा और मरनेके निकट पहुंचा त्योंहीं वही दोनों देव आ प्रगटहुये और शीतपानीसे हातिमका मुख सींचके उठालिया जब हातिमको चेतहुवा तो उन्हीं दोनोंको देखा तब हातिमने उनकीबड़ी प्रशंसाकरके कहा कि मित्रो भले समयआके सहायताकरी अब मुझे बतावो कियह उष्णता काहेकीहै उन्हों-नेकहा आगेअग्निका महानदहै उसीकी ज्वालासे ये पत्थरऔर पृथ्वी उष्ण होरहीहै तब हातिमने पूछा कि हेमित्रो मैं कहांहोके जाऊं जो इस अग्नि से बचूं तब उन्होंने कहा पंथ दिखाना तो हमारा काम नहींहै परएक यह सुहरा तुझे देतेहैं तू इसको मुख में धरले अग्नितुझे जलसमान शीतललगेगी परजब उसपार पहुंचे तबइस सुहराको मुखमेंसे निकालके फेंकदीजियो वे तो यहसिखाय हातिमके सामनेसे अदृष्ट हुये और सबेरा होतेही हातिम आगे को बढ़ातो क्या देखताहै कि अग्निकी ज्वालाऐसी उठीहुईहै कि मानो आकाशको छुआ चाहतीहै तब हातिम मारेडरके कभीतो धरतीदेखे औरकभी आकाश इतनेमें एकनौका आगेआई हातिम अपने मनमें सोचाकि अबजानबूझके अग्निमें कूदनाहै परन्तु क्या कीजिये राह यहीहै निदान ईश्वर का नामलेके नौकापर सवार हुवा और मुखमें वह सुहरा तो रक्खेही था जब नावपर बैठा तो रोटी तरकारी धरी मिली इसने उस भोजन को खालिया और अपनी आंखें बन्दकरके उसी नौकामें बैठरहा कभीखोले भी तो फिर झटसे बन्दकरले इतनेमेंनौका बीचधारामें आयके चक्कीकी भांति घूमनेलगी तबहातिमको निश्चयहोगया कि अबप्राण किसी भांति नहीं बचसक्ते मारेडरके अपनीआंखें बन्दकरके एक कोनेमें पड़रहा निदान तीनदिन पीछे नौका किनारेपर आपहुंची तब हातिमने आंखेंखोलीं तो नतो वहअग्निका नदहै और न नौका है किन्तु एकयमन कासा जंगलदिखलाईदिया तब हातिमने वह सुहरा फेंकदिया और अपने मनमें बहुत हर्षवन्तहुवा थोड़ीदूर चलके एक किसानसे पूछाकि यह कहांका देशहै तो वह हातिमकी ओर बिना बोलेचाले टकटकीबांधके देखनेलगा तबहातिमने पूछा कि हे प्यारे तू बधिर तो नहींहै जो मेरी ओरको देखताहै और उत्तर नहीं देता यहसुनके उसनेकहा कि मुझेतो तुम हातिम की अनुहार दिखाई देते हो तब हातिमने पूछा कि तू मुझे क्या जाने उसनेकहा कि यहदेश यमनहै और हातिम हमारा शाहजादा है और उसकापिता तय यहांका बादशाह है परन्तु शाहजादे को

सातवर्षहुये कि यहांसे निकलगयाहै इस अन्तरमें उसके समाचार मलका जर्रीपोश से मिलेथे सो सुनके सबके मनको ढाढ़स बँधा था और अब तो उसके कुनबे का बहुत बुराहाल होरहाहै यहांतक कि सब विधातासे मृत्युमांगतेहैं और मलका का तो ऐसा हालहै कि कोजाने उससे मिले या न मिले यह सुनके हातिमने कहा कि थोड़ेदिन हुये तुम्हारा शाहज़ादा मुझे मिलाथा वह कुशलपूर्वक है तुममेरीओरसे उसके गांवमेंजाकेसबसे कहदीजियो कि हातिम आनन्द पूर्वक शाहाबादकी ओर गयाहै फिर हातिमने कहा कि हे मनुष्य मैं प्यासा हूं थोड़ासा पानीला वह दौड़के एक कटोरा दूधका लेआया हातिमने बड़ेहर्षसे पीलिया और मनमें यहकहता कि बहुतदिनोंसे अपनेदेशका दूधपियाहै फिर शाहाबादकी ओर चला थोड़ेदिनोंमें शाहाबादमें आपहुंचा हातिमके आनेके समाचार हुस्नबानू ने सुने उसने तत्कालही बुलाया और आप पर्देके भीतरबैठी और हातिमकीकुर्सी चिलमनके बाहर बिछवादी तब हातिमसे पूछनेलगी कि हातिम अब मुझे कोहनिदा का भेदबता उससमय हातिमने अपना आद्योपान्त कहसुनाया तो हुस्नबानू ने कहा कि हातिम तू सत्यकहता है परन्तु मुझे कोई चिन्ह मेरे सन्तोषार्थदिखा तब हातिमने कहा कि यहमेरा वामकर सम्पूर्ण चांदीका होगयाथा परन्तु पीछेमैंने किसी उच्छिष्ट सोताके जल में जो धोया तो हाथतो अपने स्वाभाविक रंगका होगया परन्तु नख इसके अभीतक चांदीकेबनेहैं और जबमैं सोनेकीनदी परआया तो पानीपीनेसे चारदांत स्वर्णके होगये हैं और ये रत्नवहांके मेरे पास वर्तमान हैं हुस्नबानूने देखेतो देखतेही हातिमको बारम्बार धन्य कहा और पृथक् २ कह प्रशंसा करनेलगी फिर भांति २ के व्यंजन हातिम के आगे धरे हातिम ने कहा कि यहसब मेरे साथ भेजिये मैं मुनीरशामीके साथ भोजनकरूंगा वहांसे हातिम उठके सरायमेंमुनीरशामीकेपासआय कण्ठसोंलग दोनोंजनेमिले और एकसाथबैठके भोजनकिये और सम्पूर्ण व्यवस्था मुनीरशामीसे कहीं तिसपीछे शयनको फिर कईदिनपीछे स्नानकर अच्छे २ वस्त्र पहिन हुस्नबानूके पासगया द्वारपालोंने भीतरजनाया हुस्नबानू ने भीतर बुलाया तब हातिम ने पूछा कि हे हुस्नबानू अब तू कुछ प्रश्नबता तब हुस्नबानूने कहाकि एकमोती मेरेपासहै उसका जोड़ामिलादे हातिमनेकहा मुझेदिखादे तो मैंभी उसको देखलूं हुस्नबानूने वहमोती हातिमको दिखाया तब हातिमनेदेखा कि सत्य

ही जलमुर्गी के अंडेकी बराबरहै फिर हातिमने कहा कि इसकी आकृति मुझे दे तो इसके समान ढूंढूंगा हुस्नबानू ने दूसरा मोती उसके समान चांदी का बनवादिया हातिम उसको ले विदा हो मुनीरशामीके पास सरायमेंआय कहनेलगा कि भ्राता अबइतना बड़ामोती मांगतीहै मैं यही कहताहूं कि हे भगवन् कौन समुद्र में ऐसामोती उत्पन्न होताहै तब मुनीरशामीनेकहा कि ठौरका पता पूछलीजियो कि कहां यह मोती उत्पन्न होता है यहसुनके हातिमने कहा कि हे भ्राता वहां मेरा परमेश्वर मुझे पहुंचादेगा जिसने सब कठिनता को सरल किया है वही इसको भी सिद्ध करैगा मैंतो ईश्वरकेभरोसेके सिवा किसीसे सहायतानहींमांगता तब मुनीरशामी ने कहा कि भाई धन्य है तुझे और तेरे साहस को अबकुछ दिनयहांआराम कर तिसपीछेकहींजाइयो यहसुन के हातिमने कहा किजब भाई हमीको काम करनाहै तो विलम्ब का कारण कौन निदान हातिम मुनीरशामी से विदाहोके जल-मुर्गीके अंडे के समानमोती की खोजमें निकला ॥

छठा प्रश्न हातिमके जाने और जलमुर्गी के अण्डा समान मोतीलाने के विषय में ॥

जब हातिम शाहाबाद से निकला तो पांचकोस पर जाके एक पत्थर की शिलाके ऊपर बैठके शोचनेलगा कि हे भगवन् इतना बड़ा मोती किस समुद्र में मिलेगा जो तूही अपनी कृपाकटाक्ष से बतावेतो यह अद्वैत मोती हाथ आवे नहीं मुझेतो सामर्थ्य नहीं है इतनेमें संध्या हुई तो एक जोड़ा नातिका नामक सतरंगे पक्षीका जिसका स्थान कहरमानद के तटपर था उसदिन दैवयोगसे वहां एकवृक्षपर बसेरालियाथा उनमेंसे मादाबोली कि यद्यपियहां हमारे खानेकी वस्तु नाना प्रकार की हैं तद्यपि हमको तो यहां के जलवायु भले नहीं लगते सो मेरा तो विचार सवेरे उड़चलनेका है तब नर बोला कि मेरा विचार यहां कुछ काल बितानेका था पर तेरी मनुहारके लिये सवेरे जन्मभूमिको उड़चलूंगा यहकहथोड़ी देरचुपरहे फिरमादा बोली कि वहकौन मनुष्य है जोगर्दन नवाये किसीशोच में बैठाहै तब नर ने कहा कि यह यमनका शाहजादा हातिम है इस ठौर शोचमें बैठाहै क्याकरै यहदीनसत्पुरुषहै और परमार्थ के ऊपर कमर कस उद्यत हुआ है यह कुछ अपने लिये नहीं किन्तु परायेलिये जलमुर्गीके अण्डाकी समान मोतीकीटोह में निकलाहै मादानेकहा कि यहक्या करैगा तब नरने कहाकिएक मुनीरशामी नामक खारजिमका शाहजादा एक हुस्नबानूनामक

बरजख सौदागर की बेटीकी प्रीतिके फन्दमें खगइव फँसाहै और उस कुटिलने सात प्रश्नकिये सो नतो उस शाहजादे बिरहीमें यह सामर्थ्य है कि उसके प्रश्नोंके उत्तरदें और न उसेछोड़ा चाहताहै क्योंकि वहतो उस मृगनयनी के स्वरूप सागरकी मीनहो रहाहै भलामीन बिन जल कैसेजीवे तथा उसकीभी दशाजान, सोई एक दिन रोदन करता बनमें फिरता था और यह हातिम वीरेशउस बनमें अहेर की आखेट में वहांभी फिरता २ आनिकला औरउस को रोतेदेख इसके कोमल चित्तमें उस बिरही पर अतिदयाआई तबउसने पूछनेसे अपनी बिरहका सम्पूर्ण वृत्तान्त इससेकहा इसने उसकी आपदा अपनेमाथे ओढ़ी और उसके पलटे प्रश्नोंके उत्तर देने को उद्यत हुआ सो उस सुन्दरी के पांच प्रश्नोंके उत्तर तो दे चुका है अब छठा प्रश्नयही है कि इतनाबड़ा मोती लादे इसलिये यहदीन इस वृक्षके नीचे इसी शोचमें बैठाहै कि कहां जाऊंजहां यहमोती पाऊं और सत्यहै कि बिनदेखे कौनसी पंथको जावेऔर ऐसामोती कैसेमिले परन्तु जोप्यारी तू कहैतो मैं इसकोराहदिखादूं तबउसकी मादाने कहाकि भलाइससे क्याउत्तमहैकि पशुहो मनुष्यसबोंपरिके साथ भलाईकरै निदान वहपुरुष अपनीमादाकी मति पाय इस प्रकार कहने लगा कि इस मोती की उत्पत्ति प्राचीन कालमें सुनते हैं कि कहरमा नदी के तट पर तीस वर्ष पहले पक्षी अण्डे देते थे सोई मोती होते थे उनमेंसे एक उमशाहके हाथ लगा और उसके पास बहुत खजाना था और एक बड़ा नगर उसने बसायाथा सोतो उजड़गयाऔर खजाना उसका अबदुस्नबानू को मिलाहै और उसी खजाने में वह मोती निकला है निदान जब जमजा कहरमानी मरातो उसका देश किसी दूसरे के हाथमें आया तो उसकी स्त्री गर्भिणी भागके बनमें जापड़ी तो पहर दिनरहे कहरमानदीके किनारेजानिकली और उसीसमय मसऊद सौदागरभी अपनीनौकापर चढ़ा जलविहार करताहुआ उसओर आनिकला उसस्त्रीने कहा कि मुझ अनाथकोभी नौका पर बैठाले तब मसऊद सौदागरने दयालु होके अपनी नौकापर चढ़ायके उससे वृत्तान्त पूछातो उसने अपना आद्योपान्त वृत्तांत सुनाया तब मसऊद सौदागर ने उसको अपनी धर्म्मपुत्री बनाया थोड़े दिनपीछे उसने बालक जना तो उसीका नाम बरजख धरा इतनेमें मसऊद सौदागर मरा वह लड़का उसकी जगह मालिक हुआ और उसीकी द्रव्यसेलाखों सिपाही नौकर रक्खेरहाऔर

कई हजार गांवथे उनको अपने अधीन रक्खेरहा फिरधीरे २ वहां का बादशाह होगया उसकी मृत्युके उपरान्त सुलेमान बादशाह हुआ उन्होंने कोहकाफ़ औरउसके आसपासके प्रदेशऔरलाल समुद्र कहरमा सोने औरअग्निकेनद समेत जितनी धरातलकोह काफ़ सम्बंधीथी सो सम्पूर्ण देश, देव, परी, जानावी आदि जितने मनुष्य पीड़क हैं उनके बसनेकोदी और उनकी सीमा बांधिदी जिस्में मनुष्योंको नसतावें इसलिये अब उन द्वीपों औरशहरों में वही बसतेहैं निदान धीरे २ वहमोती छुश्याम परी लाल कुलाह को मिलाया और अबमाहवार सुलेमानी जो मनुष्य और परीका मिश्रित पुत्रहै उसके पास एकमोती बरजखके द्वीपमेंहै और उसके एकपुत्री चन्द्रमा कपोत, केहरी, मृगा, और शुकादिको लजावन हारीहै सो उसकाविवाह उसीकेसाथ करैगा जाकोई उसमोतीके उत्पन्न होनेकी सम्पूर्ण व्यवस्था उससेकहैगा निदान उसकायहप्रण सुनके अगणित परीजाद उसकेपास गये और कोई उसमोती की उत्पत्तिकोन बतासका सबअपनासा मुखलेके निज २ ग्रामकोसिधारे और वहभी बड़ाविद्वानहै क्योंकि सम्पूर्ण प्राचीन ग्रन्थउसी के हाथलगे उनकेद्वारा उसने उसमोतीके उत्पन्नहोने के समाचार जानेहैं और उन पक्षियोंको उससमयसे सुलेमान की आज्ञानहीं है किकिसी ठौर अण्डादें इसलिये अबउसप्रकारका मोती नहीं उत्पन्न होताबरणइसबातके बिदितकरनेकीभीआज्ञानहींहै परंतु मैंने इसको परखार्थदेखके इससे कहाहै और अबनिश्चयहै कि इस की अभिलाषपूरी होय यहसुनके उसस्त्रीने कहाकि इस दीनकी पहुंच कहरमानद तक कैसैहोगी क्योंकि वहांसेदेवोंकी सीमाहै और नानाभांति के प्रतिबंधहैं यह सुनके पुरुषने कहा कि जो यह आयुषवानहै तो इसके पहुंचने में कोई सन्देह नहींहै परन्तु तत्कालतो इसे उचित है किहमारे पंख अपने पासरक्खे जबयह देवों कीसीमा में पहुंचेगा तब इसको एकअथाह बन मिलेगा उससमय हमारे लालपंख जलाके उसकी राखजलमें घोरके अपने शरीरपर लेपनकरले उसकीगन्धिसे सबजीवजन्तु भागजायंगे और यहनिधड़क चला जायगा और इसका स्वरूप भी देव कासा हो जायगा और जब यह बरजखके द्वीपकी सीमापर पहुंचेतब श्वेतपंख अपनी देहपर लेपनकरै जबस्नान करैगा तब फिर ज्योंकात्यों होजायगा पर वहांकेनिवासीइसेमाहयार सुलेमानी बादशाह के निकट धर लेजायंगे तब वह अपनी प्रार्थना करै निश्चयहै किवह मोतीही के

उत्पन्नहोने के समाचार पूछे इसलिये इसेउचितहै कियह मेरीसम्पूर्ण सुखागर का स्मरण रक्खे और उसके सम्मुख जाके कहै वह अपने बचनका धनीहै अपनी पुची मोतीसमेत विवाहदेगा तब स्त्री बोलीकि इसको हमारे पंख कैसे मिलें यह सुनके पुरुषने अपनेपंख फटकारे तो कितनेही पंखवृक्षकेनीचे गिरपड़े हातिमने बटोर लिये तबस्त्रीने पूछाकि तैंनेयह कैसेजाना कियहइसकामके लिये आयाहै और इतनी बत्तातैंने कैसे स्मरणरक्खी उसने उत्तरदिया किजितने हमारे सजातीय पुरुषहैं वेसृष्टिका सम्पूर्ण वृत्तान्त जानते हैं इतने मेंभोर होगया वे पक्षीतो उड़गये और हातिम भी उठखड़ाहुआ और एकओरकी राहली कितेकदिन पीछे एकवृक्षके नीचेरात्रि को सोरहाथा तो इतनेमें बहुतसे जीव पुकारनेलगे कि हाय हाय कोई ऐसा सामर्थी नहीं है जो हमारी सहायता करै यह सुनके हातिम उसओर को दौड़ा तोदेखा किएक लोखड़ी अपनाशिर पृथ्वीपर देदेमारती है और चिल्लारहीहै हातिमने बड़ीदयालुता सेपूछाकितुझे किसनेदुःखदिया है जो ऐसी अधीरहो बिलापकर रहीहै तब वह बोली कि धन्यहै तेरेसाहसको जोतू मुझअनाथकी पुकार सुनकेआया मेरादुःख यहहै कि एकबधिक मेरेपतिकोबच्चों समेत पकड़लेगयाहै सोमैं उन्हींके बिछोहसे दुखीहोरहीहूंऔर चारोंओर पुकार करतीहूं कोई नहींसुनता परन्तु एक तूआया है सो देखूं तू क्याकरताहै क्योंकि मनुष्य अपने सजातियोंही का पक्षीहोगा तब हातिमने कहा कि तू यह क्याकहतीहै सब मनुष्य एकही से नहीं होते जो मनुष्य दूसरों को दुःखदेनेमें कुछलाभदेखतेहैं तोउनको दूसरोंके दुःखसे कौनकामहै उनचाएडालोंनेयही अपनी जीविका का द्वारा नियत कियाहै सोतू मुझसे इसका कुछ सन्देह नकर मुझेबतादे कि तेरे पतिको बच्चोंसमेत कौन लेगयाहै तब लोखड़ीने कहा कि यहांसे छःसातकोस पर एक बधिक रहता है सोनजानें उसकोहमसे कौनसीशत्रुता होगईहै जो हमारेपीछे पड़ाहैतब हातिम ने कहा तू मेरे साथ चलके गांव की राहबतादे तो मैं जैसे बनेगा तैसे तेरे पति को बच्चों समेत छुड़ा लाऊंगा तब लोखड़ीने कहा किमैं तेरे साथ तो चलूं पर मुझे यही डर है कि ऐसा नहोकि मेरीभी बँदरिया कीसीदशाहो तो फिर कुछनहो तब हातिमनेपूछा कि उसकी कौन दशा हुई सो बता यह सुनके उसनेकहाकि किसी समय का यह समाचारहै कि एक बँदरिया ने एक गढ़ेमें बच्चे जने वे बच्चे अपने पिता के साथ उस गढ़ेमें बैठे थे

और कहींसे बधिक फिरता२ आनिकला और घात लगा के उस बंदरके बच्चोंसमेत पकड़ लिया और नगरमें जाकर किसी धनिक के हाथ बेचलिया वह बँदरिया दीन पुकारती हुई उस नगर के ठाकुरके पासगई उस ठाकुरने पूछा कि इसको किसने सताया है किसीने कहा इसके बच्चों को इसके पति समेत वह बधिक पकड़ लायाहै तबउसने कहाकि जाकेअभी उसबधिकसे कहोकि इसके बच्चों कोछोड़दे वह बँदरियाउस मनुष्यकेसाथ २ चली वह मनुष्य उस बधिकके पास पहुंचा तो उस मनुष्यने बधिकको बुलाया और उसीके परोस वह बधिक भी रहता था इतने में बोल सुन बधिक बाहर निकलआया और वह भी कहनेलगा कि इस बँदरियाको किसने सतायाहै तब वह बधिक बोला कि आज कई दिनकीबात है कि मैंने इसके बच्चे आपके हाथ बेचेहैं जो आपको दया आतीहै तो छोड़ दीजिये और उनका मोल मुझसे फेरलीजिये उसने कहाकि अब तो मैं उनसे अपना मन बहलाताहूं कोईउपाय और करो जिसमें इसका संतोष होजाय तब बधिकने कहा कि फिर इसको भी उनके साथ मिला दीजिये निदान उसको भी फँसाके उन्हींके साथ बन्दकिया जब गांवके ठाकुरने सुना कि उसकोभी पकड़ लिया तब उसने आज्ञादी कि उस बँदरियाको उसके पति और बच्चों समेत लेआओ जबउसके पासलेगये तो उसने उनबच्चों को तो कहा कि मेरेयहां छोड़जा और इन दोनों स्त्री पुरुषोंको तुम लेजावो परिणाम यह हुआ कि वह बँदरिया तो अपनेबच्चों के शोकमें मरी और बंदर अपनी स्त्री के शोकमें मरा हेजावन यह मनुष्य की अनीति और कठोरता तैंने सुनी अब तूही बता कि तेरे कहने की मुझे कैसे प्रतीतिपरै और यह कैसे निश्चय हो कि तू मेरे साथ भलाई करेगा तब हातिमने उसका सब प्रकारसमाधान किया औरकहा कि तूमेरी ओरसे निश्चिन्त रह जैसेबनेगा तैसे तेरे पति और पुत्रोंको छुड़ालाऊंगा निदान बहुतकहे सुनेसे लोखड़ी हातिम के साथ हुई और नगर की राहली जब नगरके निकट पहुंची तबहातिमने कहा कि तू यहां किसीझालीमें घुसके बैठरह मैं तेरे पतिको बच्चों समेत लाताहूं फिर हातिम रात को तो वहांहीरहा सबेरा होतेही नगरमें बधिक के द्वारपर आ पुकारा वह बोलके साथही बाहर निकला और हातिम से पूछा हे जवान तू तो कोई विदेशी सा लगता है तेरा कौन ऐसा काम है जो इतने सबेरेमेरे द्वारपर आयाहै हातिमने कहा कि मैं रोगी

हूं सो वैद्योंने कहाहै कि जो तू तत्काल की मारीहुई लोखड़ी के रक्त को अपने शरीरमें मले तो तेरा रोग शांति हो इसलिये तेरे द्वारपर आया हूं कि तू बहुधा लोखड़ी और स्यारों की अहेर कियाकरता है जो कोई लोखड़ी तेरे घर हो तो मुझे दे और उनकामोल मुझसे ले ले उसने उत्तर दिया कि जै चाहे तै ले मैंने सातलोखड़ी पकड़ी हैं चाहे जीती ले और चाहे मृतक ले हातिम नेकहा मुझे सब जीती देदे यह सुनके सब लोखड़ियोंको हातिम ने प्रत्येक लोखड़ी का मोल एक एक रुपया दिया तो वह बहुत प्रसन्न हुवा हातिम उनको बन में लाया वहां लाके उनके हाथ हाथ पांव खोलदिये बच्चे तो अपनी माता के पास जा बैठे और लोखड़ा वहीं बैठारहा थोड़ी देर में लोखड़ी अपने बच्चोंको प्यार करके अपने पति के पास आके शिर पीटने लगी और रोनेलगी तब हातिम ने पूछा कि अब तू काहे को रोदन करती है लोखड़ी ने कहा कि मैं तो आजसे अनाथ होगई शीश का छत्र उतरगया तब हातिम ने कहा कि काहे को उदास होती है इसकी इतनी ही आयुर्बल थी नहीं तो बच्चा दूध के फीहा सोता बचै और यह जवान मरजाय यह सुनके लोखड़ी बोली कि अभी इसकीऔषधिहो तो न मरे क्योंकि यह तो मेरी विरह में ऐसा हीन होगयाहै तब हातिम ने पूछा कि अच्छा बता तो कौन औषधि इस समय चाहिये लोखड़ीने कहा कि जो मनुष्यका तत्ता २ रक्त इसके मुखमें छोड़ाजाय तो अभी चंगा होजावे तब हातिमने कहा कि पशुके लिये मनुष्यको बध करना महा दोषहै अच्छा जो तुझे रक्तही चाहिये तो बता कहां का रक्त चाहिये उसने कहा कि इससे कुछ प्रयोजननहीं जाहे जहां काहो परहोतत्कालहीका तब हातिमने बाण निकालके अपने बायेंकरकी नाड़ीमे छेदा उससे रक्त की धारा चली हातिमने कहा ले जितना तुझे चाहिये उतना ले वह अपने पति को हातिम के पास लेआई हातिम उसके मुख में रक्त छोड़नेलगा जब उसका पेट भरगया तो वह ज्यों का त्योंपुष्ट होगया तब हातिम ने अपने हाथ में पट्टी बांधी और कहा कि हे लोखड़ी अब तू मुझ से प्रसन्न हुई वह दौड़के हातिम के चरणों में पड़ी और बहु प्रकार प्रशंसा करके कहनेलगी कि मनुष्यों में एक तुझे बात का धनी देखा निदान हातिम उससे बिदाहो अपनी राहलगा जहां कहीं क्षुधावन्त होता तो बनफल खाता और तृषावन्त होता तो नदी तालमें जलपान करता एक दिन

चलते २ ऐसे बनमें जा पहुंचा कि जहां जलका नाम नहीं और धूपसे गरमी ऐसी हुई कि हातिम व्याकुल होगया और मारे तृषाके चारोंओर जल खोजनेलगा इतनेमें कोई श्वेत झलकी दृष्टि पड़ी तोहातिमको जलका आभासहुआ वह उस ओरको लपका जब निकटगयातो देखाकि एक महा अजगरसमान श्वेत सर्प डुँडुरी बांधे बैठा है हातिम देखतेही सहम गया और दबे पांव उलटाही फिरा तब वह सर्पबोला कि हे यमननिवासी काहेको फिराजाता है तब हातिमने कहाकि मैं तृषावश जल खोजता फिरता था इतने में तेरी श्वेत झलकी देख मुझे जलका आभास हुआ था अब लौटा जाताहूं तब उस सर्पने कहाकि तुमको वहांही सकल पदार्थ मिल जायंगे आओ मेरेसाथ चले आओ यह सुनके हातिम एकतोसांप के बोलनेही से आश्चर्य में था दूसरे अपने साथ चलने को जोउसने कहातो हातिम ठिठुकि रहा जब उसने जाना कियह डरता है तब वह सांपबोला कितुम निधड़क चलेआओ तब हातिम उसके साथ २ चलागया तो थोड़ीदूर चलके एक बाग़में जा पहुंचा उसके भीतर विचबिचि के स्थानों में बिछौने बिछेहुये और उस बाग़में एक हौजके किनारे एक बँगला में बहुत खच्छ बिछौने बिछाये हुयेथे उसमें जाके हातिम से कहा कि तुम यहांबैठो मैं एक क्षणमें आताहूं यह कहके उस हौजके भीतर घुसगया थोड़ीदेरमें कईदास रत्नोंके थार सिरपै धरेहुये उसी हौज से निकले और हातिम के आगे धरके कहने लगे कियह हमारे खामीने तुम्हारी भेंटभेजीहै सोआप इसे अंगीकार कीजिये हातिम ने कहाकियह मेरे किसीकाम के नहीं हैं अकेला इनको लेके कहां जाऊंगा इतनेमें कई परीजात सिरपै रत्नोंके थार धरेहुवे उसी जलसे निकले और आके थार उसके आगे धरदिये हातिम ने कहा कि इनकी भी मुझे कुछचाह नहीं है फिर कई परीज़ाद गंगा यमुनी थारोंमें रत्नभरे सुनहरे पत्तरों से ढापे हुये निकले तब हातिम ने कहाकि पाऊंगा तो यहां बैठाहै परन्तु स्थानेश कहांहै इतने में एक जवान पुरुष विद्याधरों के समान चालीस परीज़ादों को अपने साथ लिये उसी हौजसे निकला हातिम यह देख बहुत बिस्मितहुआ कि यह दिव्य स्वरूप कहां से प्रकट हुआ यह देख के हातिम उठखड़ा हुआ उसने हातिम का हाथ पकड़ मसनद पर बैठाला और पूछनेलगा कि तूनेमुझेपहचाना हातिमनेकहा कि जो पहले देखता तो पहिचान लेता तब वह हँसके कहनेलगा कि मैं वहीहूं

जों तुझे यहां लाया यह सुनके हातिम ने कहा कि हेप्यारे प्रथम तो तेरा स्वरूप सर्पका था और अब मनुष्यका स्वरूप कैसे होगया तब उसने कहा कि यह भेद भोजन करने उपरान्त खुल जायगा उसके पीछे भोजन भांति २ के आये दोनों जने भोजन करनेलगे तब हातिम अपने मनमें विचार करनेलगा कि ऐसे खाद की रसोई मैंने कभी नहीं खाई है कि तो एक बेर कोहनिदा के ऊपर परी नोशलब के साथ भोजन किये थे कितो आज यहां इससे हो न हो तो यहभी परीज़ादों मेंसे होगा इतने में जब भोजनकर चुके तब अतर सूंघनेके लिये आया तो हातिम ने सूंघा तो अत्यन्त मनप्रसन्नहुआ और कहने लगाकि हे ईश्वर तैंने इनको ऐसेपदार्थ दियेहैं कि जो मनुष्यों को स्वप्न में भीदुर्लभ हैं तेरी लीला तूही जानता है फिर हातिमनेपूछा कि अबमुझे बताओ कि पहिलेतुम सांपके स्वरूपमेंथे और अबमनुष्यका स्वरूपधारण कियेहो इसका क्या कारण है तब उसने कहा कि मैं परियों के बंश मेंसे हूं और मेरा नाम मशमसशाह है एक दिन का यह वृत्तान्त है कि सुलेमान के समय मैं अपना उपवन देखता फिरता था इतनेमें मेरेमन में यह चिन्ता हुई कि मनुष्य के निवास के ठौर परमरम्य मनोहर हैं इस लिये अपनीसेनासाथ लेकेजाऊं और वहांके राजाओं को जीतके वह सम्पूर्ण प्रदेश अपने बश करूं यह शोचके निजगृह में आ अपने सैनपों को बुलाके कहा किसब सजगहो और सेना को सजो निदान उनको आज्ञादी और मैं रातको शयनागार में जाके सोरहा जो सबेरे उठा तो अपने को सेना समेत सर्प के शरीर में पाया उस दिन तो मैं यथा जल बिन मीन तड़पा किया सांझसमय रोदनकरनेलगा और परमेश्वरकी प्रार्थना करकेकहा कि हे भगवान अब कभीचित्तमें ऐसी अभिलाष नकरूंगा तब मेरी सेना को स्वाभाविक स्वरूप मिला पर पंख किसी के न हुये तब फिर मैंने परमेश्वर से प्रार्थना की तो यह शब्द सुनाईपड़ा किजो कोईएकबेर बचनबन्द होके फिर उसका प्रतिपालन नहीं करता है और अपने ईश की आज्ञा उलंघन करता है उसको यही दण्ड है यह शब्द बहुत दिनोंतक निरन्तर सुनाईपड़ा किया एक दिन फिर मैंने ईश्वरके आगे बहुत प्रकार आधीनता प्रकटकरी तो यह आकाश बाणी हुई कि थोड़े दिन बीते तीस बर्ष की अवस्था का एक हातिम नामक यमन का निवासी इस बनमें आवेगा तू उसकी सेवा तन मन से कीजियो प्रथम उसके दर्शनोंसेही अपने

स्वाभाविक स्वरूप को प्राप्त होगा और जब वह तुम्हारेलिये ईश्वर से प्रार्थना करैगा तो तुम सदा मान अपने पूर्व स्वरूप को लिये रहोगे इसी लिये मैंने तेरी सेवा तनमनसे करीहै अब जो तू हमारे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर तब हातिम ने पूछा कि प्रथम तुम मुझे वह बात तो बताओ जिसके न मानने से तुम्हारी यह दशा हुई है तब उसने कहा हमने सुलेमानके सामने इस बात परबचनबन्द हुये थे किहम अथवा कोई हमारे बंशमें से कभी मनुष्यों को दुःखनदेगा अथवा जो उनकादेश कोष लेनेका चित्तमें अनुमान भीकरैं तोहम ईश्वर की क्रोधाग्नि में परैं उसदिन से हमारे स्वजातियोंने किसी मनुष्य को नहीं सताया केवल मेरेही मन में यह सङ्कल्प हुआ जिसका फलपाया तब हातिम ने स्नान कर नवीन वस्त्रधारण किये और उसका अपराध क्षमा होने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करी उसकी प्रार्थना अंगीकारहुई और यद्यपिवह यहूदीथा परंतुवह परमात्मा को अनादि अद्वैत जानता था और उसने मरती बेर अपने कुटुम्बके लोगोंको बुलाके कहाकि हमारी जाति के मनुष्य सदानास्तीकभावको लियेरहेहैं अबमैं तुमकोउपदेश करताहूं कि भविष्यकालमें एक आखिरुज्जमानामकदूतहोगा और वह यमन धर्मका प्रचारकरैगा यहबात तुममेरीसत्यहीमानों उससमय उनसेदण्डवत् कहकेकहियोकिहातिमके लिये ईश्वरसे बिन्नापन करै तब उन्होंने पूंछाकि उससमय तुम्हारा संदेश कहने केलिये हमी रहैंगेकिकोई हमारेबंशमेंसेरहैगा तबहातिमने कहा कि उससमय हमारे बंशमें एक लड़की रहैगी निदान जब वह पायक उत्पन्न हुआ तोसम्पूर्ण यहूदियोंको पकड़के कहा सबसे कहो कि यमन अर्थात् महम्मद का धर्म अंगीकार करो नहीं तो बधकिये जावोगे इतनेमें एकलड़की उनमेंथी उसने कहाकि तुममेरी ओरसे हरि दूतसे जाकेकहोकि एकलड़की इसयूथमें हातिमके बंशमेंसे है यह सुनतेही उसपायकने कहाकि अच्छा उसलड़कीको छोड़देक्योंकि वह एक दाताका बंशहै तबउसके नौकरोंने कहाकि तू अपने घरको जा तू बिन्दसेछूटी यहसुनके वहलड़की बोली की यहबात हातिमके बंश के बिपरीत है कि अपने सजातियों को छोंड़जाऊं जो इनकीगतिसो मेरीगति तबफिर लोगोंने जाकेकहाकि वहतो कहती है किमैं अपने सजातियोंको छोंड़के नजाऊंगी तोआज्ञा हुई कि अच्छाहातिम एक दानी मनुष्यथा उसके शीलसे हमने सबको छोड़दिया जब उसलड़कीने छुट्टीपाई तब उसको हातिम

के उपदेश का अस्मरण हुआ तो उसने कहा कि मुझे उस पायक के पासलेचलो जब उसके पासगईतो हातिमका संदेश कहा और मुसल्मान होगई यहीकारणथा कि हातिमकी याचना इसपरी जादके लियेपूरी हुई क्योंकि एकदिन एकपायक ईश्वरसे हातिम केलिये याचना करैगा निदानसम्पूर्णसेना सपक्षहुई और बादशा हभी अपनेस्वाभाविक स्वरूपमें वनारहा तबउसने हातिमसेपूंछा कि तुमयहां काहेको आयेहो और कहांजानेका अनुमानकिया है हातिमने कहाकि मैं शाहाबादसे आताहूं और बरजखके टापू को जाऊंग तिसपीछे हातिमने वहचांदीकामोती निकालके दि-खायाकि इसलियेमैं वहांजाताहूं तबउसने कहाकि सत्यहै इसके जोड़ेका मोती वहांहै परवह एकबातका प्रणकियेहै कि जोकोई उसमोतीके उत्पन्नहोनेके समाचारकहै उसीको इसमोती समेत अपनी बेटीदेगा परंतु वहांतेरा पहुंचना कठिनहै क्योंकि बड़े बड़े कराल देव राहमेंमनुष्यभक्षी रहतेहैं तब हातिमने काहाकि अब तो जो चाहेसोहोय मुझेजाना अवश्य है यहसुनके उसने कहाकि अच्छामैंभी तेरी सहायता करूंगा फिर कितेक परीजादोंको बु-लायके कहाकि देखो इसने हमको कैसेदुःखसे छुड़ायाहै इसलिये तुम्हैंभीउचितहै कि तुमभी इसकी सेवाकरो उन्होंने कहाकिजो आज्ञाहो बादशाहने कहाकि इसको बरजखके टापूमें पहुंचा दो यह सुनकेसभोंने गर्दन नीचीकरली थोड़ी देरमें बोले कि माहा-राजके जीवकी भय वहांकीराह ऐसी बिकटहै कि वहांके देवहमें सजीव नछोड़ेंगे और हमारीतो कौनजानेजोआपजानेकोविचार करैं तोभलीभांति रणभूमिजागेगी तबबादशाहने कहाकिहेवीरो किसी प्रकार तो इसको वहांपहुंचावो तब सातपरीजादोंनेकमर कसके प्रार्थना करीकि हम इसको वहां पहुंचावेंगे परंतु पीछे से हमारी सहायता की सुधिलिये रहियो निदान हातिम को एक उड़न खटोलापर बैठारा और दो परीजादोंने उसको निज शीश पै धरा और शेष साथ २ चले तीनदिनतक रातदिन चलेगये चौथे दिनभूख प्याससे व्याकुलहो एकवृक्ष के नीचे उड़नखटोला उता-रके चाहाकि यहांकुछ जलपान करलें तोचलें यहसोचके दो परी-जादोंको हातिमके पास छोड़के शेष अपने खानेपीने की टोहको निकले इतनेमें कितनेही देववहां अहेरकी आखेटमें आय निकले और इनको देख के इनपर टूटे तो परीजादों ने कई देवों को तो मारा पर दोजनेकहांतक लड़ें उन्होंने एकको तो मारा और एक

को हातिम समेत अपने बादशाहके पास धरलेगये और कहाकि यहलोग हमको हमारी सीमाके भीतर मिलेहैं देवोंके सरदारने पूछा कि इस मनुष्यको कहां से लायाहै और कहां लेजायगा यह सुनपरीज़ाद कहनेलगा कि यहमनुष्य शमसशाह का बड़ामित्र है उसने बरजख़के टापूको हमारेसाथ भेजाहै यह सुनके उसने कहा कि वह तो कितेक दिनबीते कि लोप होगया अबकहांसे उत्पन्न हुआ अच्छा इसमनुष्यको परीज़ाद समेत उस कुआं में बन्दकरो भोजन करनेके उपरान्त इसको खाजाऊंगा अनुशासनके साथही उसको हातिम समेत कुआंमें बन्दकिया और जबवहांवे परीज़ाद आये तो देखाकि हातिम और परीज़ाद नहींहैं फिर निकटआके देखें तो एकपरीज़ाद और कई देवमरे परेहैं परंतु एकदेवके कुछ खास चलती है तब उन्हों ने उसके मुखमें जल छोड़ा तो चैतन्य हुआ तब वे परीज़ाद पूछने लगे कि तेरे घायल होने का क्या हेतुहै उसने कहा कियहां दो परीज़ाद एक मनुष्य को लियेबैठे थे हम अहेर करते हुये आनिकले परीज़ादों से और देवोंसे युद्ध होनेलगा उनमेंसे एक परीज़ादने हमकोमारा और वहभीमारा गया और एक परीज़ाद उस मनुष्य समेत पकड़ के बादशाहके पास गया यह सुनके परीज़ादों ने उसको उठालिया और अपने बादशाह के सम्मुख आके सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा यह सुनके शमस शाह बहुत क्रोधातुर हो सेनपों को सेना सजने की आज्ञादी और देवोंके ऊपर चढ़चला जब उनकी सीमापर पहुंचा तबपूछा कि मुकरनिसि कहां है जावो तीसहज़ार परीज़ाद जाके जहां वह हो मेरेपास पकड़ लावो आज्ञापातेही तीसहज़ारपरीज़ाद उठदौड़े और उसको एक बनमें अहेर करता हुआ कितेक साथियों समेत पकड़ा जब बादशाह के सम्मुख लाये तो बादशाहने कहा कि रे मूढ़ तू हमको ऐसा भूल गयाकि तेरे नेत्रोंमेंतनक भी डरन रहा और यह न सोचा कि जो मैं बादशाह के किसी इष्ट मित्रको सताऊंगा तो सजीव न बचूंगा अच्छा जोहुआसो हुआ उस मनुष्यको परीज़ाद समेत ला इसीमें तेरी कुशल है यह सुनके उसने कहा कि उस मनुष्य को तो उसी समय खागया यहसुनके बादशाहको बड़ाक्रोधहुआ औरकहा कि रे हतभाग्यचाण्डाल तुझको सुलेमान ने आज्ञा दी थी कि मनुष्यों को न सताना उसका तैंने उलंघन करडाला यह सुनके उस देवने कहा कि उनको आनि केवल उन्हीं तकथी यह सुन के वह और भी अधिक

क्रोधातुरहोकर आज्ञादी कि लकड़ी इकठौरी करो और उसमें इसको साथियों समेत दग्ध करदो फिर थोड़ीसी देर मेंबाद-शाहने कहा किअभी कुछनहीं बिगड़ाहै मैं उस मनुष्यको अधिक प्यार करताहूं जो तूमुझे देदेगा तो अभीछोड़दूंगा जब उसदेवने किसी भांति अपना बचाव न देखा तब बादशाह से कहा कि जो तुम सुलेमान की आनि करके कहो किमैं मनुष्य के प्रानपै कुछ न कहूंगा तो अभी मँगवा देताहूं तब बादशाह ने कहा कि जो तू मनुष्यको परीज़ाद समेत देगा तो मैं तेरा अपराध क्षमा करदूंगा इस बातके साक्षी मेरे तेरे बीच हज़रत सुलेमान हैं यह सुन्तेही उस देवने अपने नौकरों को आज्ञादी कि उस कुआं में दोनों बन्दहैं सो लेआओ निदान आज्ञापातेही देवोंने हातिम समेत परीज़ाद को बादशाह के पास लाय खड़ाकिया बादशाहने हा-तिम को तो अपने सिंहासन पर बैठाला और आज्ञादी कि इस लकड़ियों के ढेरमें अग्नि लगाके इस चाण्डाल को छोड़दो जिसमें सदाका झगड़ा मिटजाय तब उस देवने कहा कि हे बादशाह तैंने तो सुलेमानकी आनिकरके मुझे धोखा दिया बादशाहने कहाकि तैंने तो ईश्वरको धोखादियाजो मैंने तेरेसाथ छलकिया तोकौन आश्चर्य की बातकी निदान सुकरनिसिको जो देवों का यूथपथा उसके साथियों समेत दग्ध करके वहांका राज्य अपने भाईको सौंपा तब हातिम ने पूछा कि अब बतावो तुम्हारी क्या अनुमति है यह सुनके हातिम न कहा कि जो प्रथम से थी सोईअब है तब बादशाह ने कई प्राचीन परीज़ादों को बुला के हातिम के साथ किया और उन परीज़ादों ने उसीभांति उड़नखटोला पैहातिम को चढ़ाय अपनी राहली रातदिन चलते २ सोलहवें दिन उस पहाड़ पर पहुंचे कि जहां तूमान नामक एक परीज़ाद बरजखी द्वीपके बादशाह की बेटीके बिरहमें रोयरहा था इतनेमें अचानक रोनेका शब्द हातिम के कान में पड़ा तो हातिम ने कहा कि हे मित्रो यहां कौन ऐसा दुःखी रोदन कररहाहै इसको शोधना चाहिये यह कहके हातिम उठखड़ा हुआ और उसी ओर को चला तो थोड़ीदूर चलके देखा कि एक सुन्दर युवा परीज़ादबैठा नीचेको शिरकिये रोयरहाहै हातिम ने पूछा कि तू कौनहैऔर यहां काहेको रोयरहा है यह सुनके उसने आंखेंखोलके जो देखा तो एक मनुष्य खड़ाहै उसने पूछा कितू कैसे और कहां आया है हातिम ने कहाकि जल मुर्गीके अण्डा को बराबर मोती खोजता

यहां आया हूं सो मैंने बरजख़ के टापूके बादशाह के यहां ऐसा मोती सुना है इसलिये वहां जाताहूं यह सुनके वह हँसपड़ा और कहने लगा किउस मोतीका पानातो तुझे बड़ुत कठिन है क्योंकि वह प्रश्न ऐसा करता है कि जिसका उत्तर हम परीज़ाद होकेतो देही नहीं सकेहैं भला तूतो मनुष्य है तब हातिम ने कहा कि यह ईश्वराधीन है परन्तु अपने समाचार बता कि तेरे दुखी होने का क्या हेतु है तब उसने कहा कि मैं उसी की बेटी के बिरह में रोता हूं और मेरानाम शाहज़ाद महरावर है और मेरा पिता माहरूर नामक तूमान के टापूका बादशाह है अब एक दिनका यह वृत्तान्त है कि सभा में एकने उसकी बेटी की स्वरूप की प्रशंशा कीमैं सुनतेही आपेमें न रहा और वहांसे बरजख़के टापू को गया बादशाह को संदेशा भेजा उसनेमुझे बुलायके सभाकेमध्य बड़े आदरसे बैठाला और वहमोती मँगाय के मेरे आगेधरा और उस मोतीके उत्पन्नहोने का वृत्तान्त पूछातो मुझसे कुछकहते सुनते न बना तब मुझे सभाके बाहर किया जिस समय मैं वहां से निकला तो वहचन्द्र मुखी जिसके मिलने की अभिलाष करके घर से गया था कोठेपर खड़ी थी अचानक मेरी आंख उसके ऊपर पड़ी तोठग समान होगया और चित्तबुद्धिठिकाने न रही परंतु बसकुछ नहीं था गिरता पड़ता इसपर्बत तक आया और लाजके मारे अपने देश कोभी जानेको मनन माना इसीठौर रातदिन रोदन करते कटता है यहसुनके हातिम बोलाकि अबतू निश्चिन्तरह मोती मैं लेलूंगा और मोतीवाली सुन्दरी तुझेदूंगा और मैं उसमोती की उत्पत्ति का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानताहूं यह सुनके वह परीज़ाद बोला कि मुझे तू सत्य कैसे मालूमहो तब हातिम ने कहा कि हे भ्राता वह मोती सीपीसे नहीं उत्पन्न हुआहै और पहिले उसटापूमें मनुष्य ही रहते थे चल उठखड़ाहो वह हातिमको कुछ सच्चासा जान के उठ खड़ाहुआ तब हातिम उनचारों देवोंसे पूंछने लगाकि तुमदो मनुष्योंका भार उठालोगे उन्होंने कहाकि दोनहींजो चारहोंगे तौ भी कुछ सन्देह नहीं निदान दोनों उड़न खटोलापर बैठे देव उड़े राह में महाकाल नामक देव की फुलवाड़ी की ओर होके निकले वहवहां बैठाया अचानक उसकी दृष्टि उड़न खटोला पर पड़ी देखतेही अनुचरोंको आज्ञादीकि परीज़ादों समेत इसउड़न खटोलेको लेआवो अनुशासन पातेही देवदौड़े और उनको धरलाये तब महाकाल ने पूछाकि तुम कहांसे आतेहो और इस मनुष्यको

कहांसे लातेहो और कहांलेजावोगे उन्होंने कहा हम शमसशाह केदेशसे लियेआतेहैं और बरफ़ाख़के टापूकोलेजायंगे महाकालनेकहा कि शमसशाह कोतो लोपहुये बहुतकाल व्यतीत हुये और उसके देशमें सर्प बसतेहैं उन्होंने उत्तर दिया कि यहबात सत्यहै हमसब सर्प होगये थेपरंतु इस मनुष्यने ईश्वरसे प्रार्थनाकरी इससे फिर बादशाह भी अपने स्वरूपको प्राप्तहुवा और हम सभोंके भी पंख निकलआये फिर उसने पूंछा कि यह परीज़ाद कौन है यह सुनके वह आपही बोला कि तू मुझे भूलगया मैं शाहज़ादा महरावर महरूरबादशाह का बेटाहूं यह सुनके उसने कहा किहेशाहज़ादे तुझसे तोमैं कुछनहीं कहसकता क्योंकि तू सुलेमान परीज़ाद के वंशमें है परन्तु तुझसे और मनुष्यसे कौन सम्बन्ध यह कहके खटोलापर से हातिम को खींचलिया तब महरावर ने कहाकि हेदेव जोसुलेमानसे बचन बंदहुयेथे कि मनुष्यपीड़ा नकरैंगे सोभूलगया तब उसने उत्तर दियाकि अब सुलेमान कहांहै जोहम उसके बचनकोमानें और इतने दिनपीछे यह एकमनुष्य मिलाहै अबतो तनक जिह्वा का खादलूंगा जबशाहज़ादे महरावर ने देखाकि यह न छोंड़ेगा तो शाहज़ादे ने कहा कि हे देव यहमेरा बहुतप्यारा है इसकोछोंड़दे इसके बदलेमुझसेदशमनुष्यलेले यहसुनके उसनेकहा किअच्छा पहले लादो तबइसे लेजावो शाहज़ादे ने कहा कि अच्छा इसको कोई दुःख न होनेपावे तबएकबागमें हातिमको रक्खा और शाहज़ादा चारों परीज़ादों समेत तीनदिनकी अवधबदके महाकाल से बिदाहुये और बनमें एकठौर बैठके बिचारने लगे कि जो सेना लानेके लियेचलें तोदेरहोगी और अवधबीतनेपर वहचाएडाल हातिमको दुखदेगा इसलिये यहीअनुमति ठीक देखनेमें आतीहै कि जबसब पहरुवा सोजावें तोहातिमको रातको चुरालेभागें रातभर में साठसत्तर कोस निकल जांयेंगे फिरहमको कौनपावेगा निदान यहीशोचके घातलगाये बैठेरहे और यहां देवोंनेशोचा कि शाहज़ादा और परीज़ाद मनुष्यको कुछचुरालेही नहींजायंगे और इस के कुछ पंखभी नहींहैं जो उड़जायगा यह शोचके कुछलोग अहेर करके लाये और उनको भूनके भोजनकिया और मदिरापान कर सबके सबद्वार कपाटमें तालादेके सोरहे तब परीज़ादों ने हातिम को उड़नखटोला परबैठालके अपनी राहली और दिननिकलते२ उसबागसे सौ कोसपै जापहुंचे वहांएक ठौर उतरके कुछ कलेऊ किया फिरअपनी राहली इसीभांति बैठते उठते चलेजातेथे और

यहांयह पहरवा जानतेथेकि हातिमतो बंदहै इसलियेआप निश्चिन्त रहतेथे जबअवधि के तीनदिन व्यतीतहुये तब महाकालने कहा कि अबउस मनुष्यकोलाओ जबदेवोंने जाकेदेखा तो वहां हातिम कोनपाया तब आयके प्रार्थनाकर कहाकि महाराज वहां तो वह मनुष्यनहींहै तबमहाकालने क्रोधकरके कहाकि निस्संदेह उसको तुम्हींने भक्षणकिया है अबदेखो तुम्हें क्या दण्डदेता हूं यहकहके देवोंको आज्ञादी किइनको भलीभांति पीटो तब वे प्रार्थना करने लगे कि महाराज योंतो आपके हमआधीन हैं और आप स्वाधीन हैं चाहेमारो चाहेछोड़ो परंतुहम सुलेमानको साक्षी देकेप्रार्थना करते हैं कि हमको कुछ नहींमालूम कि वह भीतर से कहां गया अब आगे के समाचार सुनो कि जब हातिम परीज़ादों समेत कहरमान सागरके ऊपर पहुंचातो वहांदैवयोग से महाकालका एकदेव बरजख़के टापूमें गयाथा ज्योंहीं इनको देखा तो पहचान के उतर पड़ा और चाहा कि हातिम का हाथ पकड़ के उतार लेवें त्योंहीं महरावर शाहज़ादेने एकऐसा खड्ग मारा कि उसका हाथ बदन से अलग होगया तब उसने कहा कि अच्छा तुम ने मनुष्य के लिये मुझे खड्गसे माराहै अबमैं यहांके देवोंकी सहाय लाताहूं शाहज़ादेने पूछाकि तू कहांका निवासीहै उसनेकहाकि मैं महाकाल का सेवक हूं यहसुनके शाहज़ादे महरावरने कहा कि जा तू महाकालसे यह सन्देश कह दीजियो कि मैं इस मनुष्य को लिये जाताहूं और फिरतीबार उसकेदेश कोष और नगरको मटिया मेट करूंगा यहसुनके वह देव तो महाकाल की ओर को उड़ा और वे परीज़ाद हातिमको लेके उस ओर को चले इतनेमें एक बनके निकट जा पहुंचे तब कहने लगे कि अब हमारी सीमा नहींहै इसलिये हमको बिदाकरो तब शाहज़ादे महरावरनेकहा कि हे जवान मैं तेरेसाथ और छोरतक रहूंगा यह सुनके हातिम उतरपड़ा और उन चारोंको बिदाकिया तब हातिमने शाहज़ादेसे कहाकि यहमैं नहीं चाहता कि मेरे साथतुझे कष्टहो परन्तु इतना पूछताहूं कि इस विकट बनको कैसे पारकरेंगे तब महरावरने कहाकि अब आगे तो परीज़ादभी देवोंके मारेनहीं जासक्ते क्योंकि वे तो जीवहीके बाधकहैं किसलिये कि एक बेर देवों और परीज़ादोंमें बड़ा युद्धहुवाहै उससमयसे बड़ी शत्रुता होगईहै तब हातिमने कहाकि जो मैं यहां देवका स्वरूप धारणकरूं तो तू कैसे संग चलेगा यह सुनके वह बोला कि जो तू देव बन के चलेगा तो मैं

वायुमण्डलमें होके उड़ूंगा जहां तू रहेगा वहां मैंभीउतरपड़ूंगा तब हातिम ने उस पक्षी के लाये पंख जलाय पानीमें घोर अपने शरीरमें लगाया त्योंहीं देवका स्वरूप होगया और बनके सकल जीव जन्तु उसको देख भागने लगे निदान हातिम दिनभर चलता और संध्या समय दोनों एकठौर होजाते एकदिन महरावर ने पूछाकि यहपंखकौनपक्षीकेहैं हातिमने कहाकि जिसने मुझेमोती की उत्पत्ति बताईहै उसीके पंखहैं और कहाकि जबशाहाबादसे चलातो मैं नीचीगर्दनकिये बड़ेशोचमें एकवृक्षके नीचेबैठाशोचता था कि हे भगवान् इतनाबड़ा मोतीकौन समुद्रमें होताहै और मैं कैसेपाऊंगा इतनेमें उसीवृक्षपै जहांमैं बैठाथा एकअतिही शोभायमान पक्षीकाजोड़ा बैठा था सो पहिले तो वे उसबनके वायुजल के विषय में बातें करते रहे फिर कहरमान् सागर का कुछ हाल कहके मेरा वृत्तान्त पूछा तब उनमें से पुरुषने मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्त और मोतीके उत्पन्न होने और इस बादशाहको मिलनेका सब वृत्तान्त अपनी भार्य्याको कहसुनाया सोमैं माहयार सुलेमानी के सम्मुख कहूंगा और सम्पूर्ण वृत्तान्त हातिम ने उसके सम्मुख इस डर से नहीं कहाकि जो मैं इससे कहूं और यह आगे जाके अपना काम करके चलाजावे और मैं निराशही रहजाऊं तो यह सम्पूर्ण परिश्रम वृथाहीहो निदान इतनी बातके सुन्नेसे महरावर को ढाढसबँधा और जाना कि इसकी सहायतासे मेरा भी काम निकल जायगा फिर दोनोंने अपनी २ राहली रातको दोनों एक ठौर रहते और सबेरे हातिमतो अपनी राह पैदल पृथ्वीपर चलता और महरावर आकाशकी मार्गवायुमें उड़ता एकदिनका यह वृत्तान्तहै कि एक ठौर दोनोंजनेसो रहेथे इतनेमें मलूकसाज का एक देव उस ओर आ निकला तो देखा कि एक परीज़ाद औरएकदेव दोनों पास २ सोरहे हैं उसने यह देख अपने दूसरे सजातीबुलाये उन्होंमेंसे एकने कहाकि इनको अपने बादशाहके पास ले चलें तब किसीनेकहाकि किसीठौरके विदेशी यहां रात को सोरहे हैं इन्होंने कुछ हमारा बिगाड़ नहीं किया है अपने कामको जातेहैं किसीको दुःखदेना भलीबात नहींहै परन्तु परीज़ाद जागता था उनकी सब बातें सुनाकिया जबतक एकने कहा कि इनको जगावो मालूम तो ऐसे होते हैं कि मानो बरजख़ के देशकेहैं दूसरेने कहाअच्छा वहींके सही फिरतुमसे क्या प्रयोजनहै तीसरेने उत्तरदिया कि बादशाह आज पूंछताथा कि बर-

अखूके टापूके बादशाहकी कुछ कुशल बज़्त दिनों से नहीं मिली और तू नेक नहीं डरता जो ऐसी बात कहता है भला जोबादशाहसे कोई जाकरकहै कि उस ठौर किसी देशके परीज़ाद और एक देव आयेथे सो आपसे किसीने नहीं कहा तब हमारा और तेरा कौन हालहोगा निदान उनदोनों को देवोंने जगाया तब हातिमने उनसे कहाकि तुमने हमको क्यों जगाया देवोंनेकहाकि तुम कौन हो और कहांसे आतेहो और कहां जावोगे हातिमने कहा कि तुम नहीं जानते कि शमसशाह प्रकट ज़ुआ और एक मनुष्यके कारण देवों को दग्ध करदिया और उसदेश को अपने आधीनकिया सोउस मनुष्य को तुम भी ढूंढ़के अपने बादशाहके पासले जावो फिरपूछाकि यह परीज़ाद कौन है हातिमने उत्तर दियाकियहीपरीज़ाद तू मानकं टापूकाहै संदेशालेको जाताहै तब उनदेवोंने कहाकि तुम चैन से सोवो हम उस मनुष्य को खोजने जाते हैं येतो उस ओरको चले इन्होंने उठके अपनी राहली तीन दिन पीछे कहरमान् सागर के किनारे जापहुंचे तब महरावरने कहाकि यही कहरमान् सागरहै तो हातिमने सत्य २ भांति २ के जलचर और वरण २ के नभचर देखे कि जिनके देखनेसे ईश्वर की लीलाका स्मरण होताथा फिर हातिमने पूछा कि इस सागर के पार किसभांतिजायंगे महरावरने कहा जा शीघगामी परीज़ाद हैं सोभी सातदिन में नहीं नांघसक्ते और मेरी भी सामर्थ्यनहीं है और तेरीतो कौन कहै परन्तु तू यहां ठहर मैंजाके शमशान परीज़ादोंकेबादशाहसे दरियाई घोड़ालेआऊं हातिमने कहाकि बज़्तशुभ निदान महरावर रातबसे शमशानके पास पहुंचा उसने कुशल प्रश्नके उपरान्त पूछाकि आपके आगमन का कौन हेतु है महरावरने कहा किमैं आपसे दो घोड़े यांचने आयाहूं तब बादशाहने कहाकि मैंतुझे चीन्हताहूं तू मानदेशका शाहज़ादाहै यह तोबताकि तेरे अकेले आनेका क्या कारणहै महरावरने कहा कि यहसत्यहै परमेरे ऊपर एकआपदा आनपड़ी है इसीसेमैं आपके पास आया हूं यह सुनके शमशान उठके मिला और अपनी घुड़सारमें लेगया और कहने लगा किजो घोड़े आपको भलेलगें सो लेलो वहांसे उसने दो घोड़ेलिये और क्षणमात्रमें हातिमके पास आय पहुँचा और हातिमसे कहाकि उठो सवार हो और बाग़ इसकी ढीली मत कीजियो ऊपरको उठायेरहियो निदानदोनों ने अपनी राहली कईदिन पीछे भूखे प्यासे बज़्त बिकल ज़ुये तब

महरावरने कहा थोड़ीसी मेवा और सुराहीमें मेरेपास पानी है जो चाहोतो तुम कुछ जलपानकरलो हातिमने दोचार दानेमेवा के खाके दोघूंट पानी पिया और फिर सँभल बैठा कईदिन पीछे किनारा दृष्टिपड़ा तब महरावरने कहाकि अब घोड़ाको बाग़ ढीलीकरो जिसमें पृथ्वीपर आवें हातिमने कहा कि मैंने सुनाहै कि बरजख़का टापू जलके मध्यमें है यह सुनके महरावरने जवाब दिया कि इसकी सीमा यहींसेहै और तुमयह मतजानों कि हम कहरमान् सागरके पार होगयेहैं अभी ऐसे २ कईऔर टापूइस में बसेहैं तब हातिमने पूँछा कि यहांसे वह शहर कितनी दूर है महरावरने कहाकि यहांसे अभी दशदिनकी राहपरहै यह सुन हातिमने कहाकि फिर क्योंबैठेहो चलते क्योंनहींहो तब उसने कहाकिमैं एक बात कहूं जो तुम मानों हातिम ने कहामैं तनमन से मानूंगा तब उसनेकहाकि मेरादेश यहांसे बहुतनिकटहै जोतुम कहोतो मैंजाके अपनी कुछ सेना लेआऊं हातिमने कहा कि हम को साहयार सुलेमानी से कुछ लड़ना तो हैही नहीं जो सेना साथ ले चलैं तब उसने कहाकि इससे मेरा कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु यहकि जो हमदीन मलीनकी भांति चलैं तोदीन को कौन पूँछताहै और जोऐसेठाट से चलेंगे तो हमारे पहुँचनेसे पहलेही उसको हमारे समाचार विदित होंगे फिर हातिमने कहाकि मैं अकेला कहांरहूंगा शाहजादेने कहाकि यहां कहीं दुःखदाईका नामभी नहींहै चाहेजहां आनन्दसेरहो तबहातिमने कहा कि फिरक्यों बिलम्ब करते हो अब सिधारो यहसुन बादशाह जादा तो अपनी बाट लगा और हातिमने श्वेत पंख निकालके जलाया और पानीमें घोलके उसकी राख अपनी देहमें मली ज्योंकात्यों स्वरूप होगया फिर धनुष बाण लेके अहेरको निकला और एक बारासिंगा मारलाया उसका मांस भूनके भक्षण कर सोरहाइसी प्रकार कईदिन व्यतीत हुये एकदिन हातिम अहेर को गया तो वहां एकबाग दृष्टि पड़ा हातिम उसका कपाट खुलापाके भीतर गयातो नाना भांतिके वृक्ष फलोंसे लदेहुये देख उसकी रम्यता पर चित्त लोभगया और बहुत प्रसन्न हुआ वरण उसी बागका निवास अंगीकार किया और घोड़ा दिनभर सागर के तटपर चराकरता और संध्या समय फिर उसी बागमें आ रहता इसी भांति एक अठवारा बीता और जब यहां महरावर अपने देशमें पहुंचा तो सब चीन्ह २ बहुत हर्षित हुये और सबसे मिलता

भेंटता हुआ अपने माता पिता के पास पहुंचा इसने दण्डवत् करी और उन्होंने हृदयमें लगा पूछा कि तू तो घरसे सेनादि के साथ में गयाथा फिर न जानेकहां रहगया सेनाके लोगोंने सारीपृथ्वी खोजमारी जब न मिला तो हारके लौटआये अब बता तेरीअभिलाष पूरीहुई और तुझे माहयारकी पुत्रीमिली यहसुनके वह गर्दन नीची करके कहने लगा कि जो मैंने आपकी आज्ञा कान न करी सोफल मुझे विधाता ने भलीभांति दिया कि कितेकदिन तो रोतेहीबीते और जो २ दुःख मैंने भोगेहैं सो परमात्मा किसीशत्रु को भी न दिखावे मैंतो अपने प्राणोंसे भी हाथ धोये बैठाथा इतने में एक यमन निवासी हातिम नामक उस मोतीके खोजमें आपहुंचा जब उससे मैंने अपनी व्यथाकही तो वहवचन बन्दहुवाकि जबमैं वहमोतीलूंगा तब उसकीबेटी तुझेदूंगा यहसुनके उसकी माता हँसने लगी कितेरी अज्ञता बालकों कीसी अभीतक नहीं गई कि अब परीज़ाद उसका वृत्तान्त कुछ जानतेही नहीं हैं तो भला मनुष्य कैसे जानेगा उस दीन में इतनी सामर्थ्य कहां है तब उसने कहाकिवह ऐसावैसा नहींहै यमनका शाहज़ादाहै वह बुद्धिमानी में परी और जिनों से भी अधिक है और उसको एक पक्षी ने पता दिया है और जो कुछ माहयार सुलेमानी ने मुझसे कहा सोउसनेभी मेरे सामने कहदिया और मुझे निश्चयहोगया है कि वह ठीक २ वृत्तान्त मोतीकी उत्पत्ति का जानता है और मैं उसको बरजख़ के टापूके पासछोड़ आयाहूं और वह तो एक अपूर्व मनुष्य है कि देव परी और जिन्नादि कीभी भाषा जानता है तब उसने पूछा कि तूतो अब काहेको आयाहै महरावरने कहा कि मेरी अभिलाष है कि सेना साथलेके बादशाहों के समान माहयार के नगर में जाऊं यह सुनके उसके पिताने कई सहस्र परीज़ाद उसके साथ कर राजसी ठाट से भेजा वह अपनी अवधि पर हातिम के पास आपहुंचा और हातिम को लेके अपनी सेनामें आया फिर भांति २ के व्यंजन बने हातिम सहित महरावर ने भोजन किये रातका समय नाच रंगमें काटा सवेरा होतेहीसेना को कूचकी आज्ञादी जब माहयार के नगर के निकट पहुंचे तो माहयार ने सेना के समाचार सुन एक सेनपके साथ बहुतसी सेना भेजी और आज्ञादी कि आगे न बढ़ने पावें जब महरावर ने एक परीज़ाद सभा चातुर बुद्धिमान को यह सन्देशा देके भेजा कि हम युद्ध करने की इच्छासे नहीं किन्तु बादशाह से मिलनेकी अभि-

लाएसे आये हैं यह सुनके सेनप ने बादशाह को समाचार का पत्र भेजा बादशाहने आज्ञादी कि उनकोबड़े आदरसे लेआवो और नगरके निकट एकठौर सेनाको उतारदो निदान सेनपके साथ २ कितेक सभासदोंको सायलेके नगरमेंगये वहां इनके रहने को एक सुथरा स्थान खालीकरदिया तब माहयार ने मछरावरसे पूछाकि अब आपकेआनेका क्या हेतुहै यह सुनके मछरावर ने उत्तरदिया कि हातिम नाम यमन के शाहज़ादे को आपके दर्शनोंकी बहुत अभिलाषथी सोमैं उसकोलेके आयाहूं फिर माहयारने पहलेतो मछमानी करी तिसपीछे हातिमको अपने सम्मुख बुलवाके पूछा कि आपके आने का क्या हेतुहै तब हातिमने वह चांदीकामोती देके कहा कि इतनेबड़े मोतीके खोजमें आपके बिभूति स्थानतक आयपहुंचा हूं सो आप दयाकरके दें तो मेरीअभिलाष पूरीहो माहयार सुलेमानीने कहाकिजो तू उसकी उत्पत्ति का वृत्तान्त मेरे सामने कहै तो मैं उस मोती समेत अपनी बेटी तुझे देदूंगा हातिम ने कहा कि मुझे तो केवल मोती ही चाहिये और अपनी पुत्री का आपको अख़तियार है चाहे जिसको देव तब माहयार सुलेमानीने कहाकि पहिले मैं तुझे मोती समेतसौंपदूं फिर जिसको तेरामन माने उसे दीजियो तब हातिम ने कहाकि मछरावरकोभी बुलवालेव बादशाहने सन्देशाभेजा सुनतेही वहसभा में आया बड़े सन्मान से मिल के आसन दिया और हातिम ने सम्पूर्ण उस पक्षी की सुखागर बादशाह के सम्मुख कह सुनाई बादशाह ने सुनतेही गर्दन नीची करली और भीतरजाके मोती हातिम के सन्मुख रख आज्ञादी कि लड़की को व्याह कपड़े पहिनाके सभामें लाओ जब वह सभामें आई तो हातिमने कहा कि यह मेरीबहिन की ठौर है अब आपको उचितहै किइसका बिवाह मछरावर शाहज़ादेके साथ करदेव तब बादशाहनेअपनी कुलरीत अनुसार अपनी पुत्री का बिवाह मछरावर शाहज़ादेके साथ कर दान मान से पूर्ण कर बिदाकिया जब कहरमान सागर के तटपर पहुंचे तब हातिमने कहाकि अब भाई तुम अपने देशको सिधारो और मैं अपनी राह लेताहूं यह सुनके मछरावर नेकहा कि यहतो बहुत अनुचित है कि मैं तो ऐसे ठाट बाटसे अपने घर को जाऊं और तुझेऐसे कष्टमें छोड़ जाऊं मेरीतो यह अभिलाष है कि तुझे शमस शाह के पास पहुंचा के अपने घर को जाऊं निदान यह कह सेनाको पार उतरने की आज्ञादी और आप

और हातिम उन दोनों घोड़ों पर सवार हुये कई दिनमें पार उतर के एक बनमें डेरे दियेयह समाचार देवोंको मिलाकि परीज़ादों की सेना आय पहुंची तब वेभी अपनी सेनालेके राह घेर के पड़े तो महरावर ने एक दूतको यह कहके भेजा कि हमतोसुलेमान के बंशकेहैं और शमसशाह के मिलने को जातेहैं कुछ तुमसे युद्ध करने को नहीं आये हैं तब उन्होंने भी कहा कि हमको भी युद्ध करने की इच्छा नहीं है केवल आपके दर्शनों को आयेहैं यह सुनके बादशाहने उनके अधिपति को बुलायके भोजनकराये और बरण२की मदिरा पान करायके बिदाकिया और आपभीअपनी राहलगे थोड़ेदिनों में देवोंकी सीमा से निकले तो यह समाचार शमसशाह को पहुंचा कि हातिम और महरावर मेरे मिलनेको आये हैं यह सुनके आगे आयके मिला और एक बाग़में ले जाके सेनाको उतारा और महरावरसे कहने लगा कि तैंने हातिमको कुशल पूर्वक मुझसे मिलाया इसका पलटा कोई नहीं मैंतो इसके शोचमें निशि दिन व्याकुल रहा करता था निदान चालीस दिन तक पहुनाई रही इकतालीसवें दिन महरावरने बिदा मांगी तब हातिम शमसशाहने बिदा किया उसने तो अपने देशकी राह ली तब शमसशाहने हातिमसे कहा कि हे हातिम तैंने राहमें बहुत कष्टसहेहैं अब तुझे मैं तेरे देशमें एकदिन रातकेअन्तरमें पहुंचाऊंगा तब हातिमने कहा कि मुझे अपने देश से कुछ काम नहींहै अभी मुझे शाहाबाद को जाना है यह सुनके बादशाह ने परीज़ादों को आज्ञादी कि उड़नखटोला पर बैठालके शीघपहुंचावो निदान परीज़ाद खटोला पर बैठाल हातिमको लेउड़े और रात दिन के अन्तरमें शाहाबाद के निकट पहुंचे तबहातिमने अपनी पहुंचका पत्रउनको लिखदिया और आप नगरमें पैठा यह समाचार हुस्नबानूको पहुंचा किवहमनुष्य कुशलपूर्वक आयपहुंचा यहसुनके हुस्नबानूने हातिमको अपनेपासबुलाया और चिलमनके बाहरकुर्सी परबैठालके पूछनेलगी तब पहिलेतो उसनेबटुवासे मोती निकालके सबको दिखाय फिर बटुवामें धरलिया फिरसम्पूर्ण वृत्तान्त हुस्नबानू से कहा और मोतीदेके सरायमें मुनीरशामी के पासआ के कहने लगा कि अबकुछ घबड़ाहट की बातनहींहै अब केवल एक प्रश्न और रहाहै सोभी ईश्वरचाहाताहै तो पूराकरके तेरीप्यारी को तुझसे मिलाताहूं यहसुनके मुनीरशामी हातिमके चरणपरसने लगा हातिमने उसको हृदयमें लगालिया और फिर सात दिन

तकतो पन्थ श्रम निवारण करनेकेलिये ठहरारहा और आठवेंदिन हुस्नबानूके पास जाके पूछा कि अबतू सातवां प्रश्न बता हुस्नबानू ने कहाकि हम्माम बादगिरदकी ख़बरलेआ कि हम्माम तो स्नान करनेका स्थानहै उसकोबायुकेसाथ चक्कीके समान फिरनेसे कौन प्रयोजनहै और जोवह बायुमेंफिरताहै तोमनुष्य उसमेंस्नान क्योंकर करतेहैं इसको शोधके वहांकेसमाचर मुझसेकह तब हातिमनेपूछा कि भलायहतो जानतीहै कि वहकहां और किसदिशामेंहै हुस्नबानूने कहाकि मैं केवल इतनाही जानतीहूं कि वह दक्षिण और पश्चिमके कोण अर्थात्नैऋत्यमें है और यह नहीं जानती कि किस देशमेंहै यहसुन हातिम हुस्नबानूसे बिदाहो सरायमें आया और मुनीरशामी को बहुप्रकार ढाढस बंधाकेकहा कि अबकीबेर लौट के तेरीप्यारीसे मिलाय मैंभी अपने भारसे हलकाहोजाउंगा निदान ऐसी २ बतें कर मुनीरशामी से बिदाहुआ॥

सातवांप्रश्न हम्मामबाद गिर्दकी ख़बरलाने और मुनीरशामी के साथ हुस्नबानूका विवाह होने और हातिम को निज गृहमें जाने के विषय में॥

जब हातिम शहरसे बाहर निकला तब एक ओर बनकी राह ली और कईदिनमें एक नगरकेनिकट जापहुंचा तो देखाकि एक कुएंके ऊपर बड़ी भीरलगीहै हातिमने पूछाकि इस कुआंपर भीड़ होनेका क्या कारणहै किसीने कहा कि कई दिन से इस नगर के बादशाहका पुत्र बावलाहोगयाथा सोआज इसकुआंमें गिरपड़ाहै बहुतेरा उसको कांटोंसे टटोलतेहैं परंतु कहीं उसका पता नहीं मिलता और कोईइसमें अपनेप्राणोंकी बाधासेनहीं धसता किकहीं कोई अजगर इसमें होतो उसेभी खाजाय इतनेमें उसके माता पिता आये और इसप्रकार बिलाप करनेलगेकि उनका रुदनसुन के मारे दुःखके दुःखी छाती दरकउठी और धीरजभी अधीरहो के भागखड़ा हुआ औरउनके रोनेसे ऐसेआंसूबहे कि धारा बहने लगी और पशुपक्षी उड़भागे बनकानिवास अंगीकारकिया बहुत कहांतक कहूं कि उनका बिलाप सुन मनुष्यकी तो कौनचलावे जो न पसीजै यह निजनयनकी देखीबातहै कि उसकी आहके धुआंसे पाषाण पसीज उठै निदान हातिम उनके पासजाके उनके सन्तोषार्थ कहने लगा कि भावी बलवान है जो कुछ बिधाता चाहता है सो होताहै इसलिये सन्तोष करना उचितहै देखो बुद्धिमानों ने कहाहैकि मनुष्यको उचितहै कि नतो अधिकदुःखमें घबड़ावे और न अधिक सुखमें बहुत हर्षकरै किन्तु बुद्धिमान दोनों को समान

जानचित्तको अडोल रखते हैं यह सुन बादशाहने उत्तर दिया कि हेजवान तू सत्यकहताहै और हमभी भली भांति समझतेहैं तद्यपि मनको सन्तोष नहींहोता जाउसकी लोथही हमको देखनेकोमिले तो उसी को देखलेते भला मनको सन्तोष तो होजाता इसीलिये सबसे कहहारे और हजारों रुपया देनेको कहते हैं पर कोई हमारी इसव्यथाका भागीनहीं होताजो इसकुआंसे हमारे पुत्र की लोथको निकाले यह सुनके हातिमने कहाकि मैं अपना शीश अपनी हथेली परधरे फिरताहूं और निशिदिन यही अभिलाषहै कि मेरा तनधन किसीके स्वार्थलगे अबमैं तुम्हारे पुत्रकी लोथ कुआंसे निकालनेकोधसताहूंतुम मेरेआनेतक यहीं बैठेरहो उन्होंने कहा जबतकतू न आवेगा तबतकहम यहांसेपांव न टारेंगे निदानहातिम एक महीनेकी अवधि बदके कूपगतहुआ और जबनीचे जाकेआंखें खोली तो वहांकुआंहै न जलहै किन्तु एक सम धरातल पटपरसा दृष्टिपड़ा थोड़ीदूर चलके परमरम्य मनोहर बाग़देखा औरकिवाड़ खुलेदेखके उसके भीतरगया तोदेखा कि कितेक परीज़ाद एक ठौर इकट्ठे हैं और एक युवापुरुष सुन्दरस्वरूपवान एकरत्नजडित सिंहासन परबैठा है हातिमएक ठौरघने वृक्षोंमें खड़ाहोके देखने लगा इतनेमें परीज़ादोंकी निगाह हातिमके ऊपरपड़ी तोउन्होंनेकहाकि यहमनुष्य कहांसेआया यहसमाचार अपनी अधीश्वरी से कहाकि एकमनुष्य वृक्षों में छिपा खड़ाहैवह उसजवानके पास आके पूछनेलगी कि एक मनुष्य तुम्हारा सजाती और आया है जोतुम कहो तोउसेभी बुलालावें यह सुनके उसने कहा बहुतशुभ मुझे भी अपनी जाति के मनुष्यों से बड़ा प्रीति है तब उस परी ने अपने साथियों में से दोतीन को भेजा कि उसको बड़े सन्मानसे ले आओ निदान हातिम को वहां लेगये जब सिंहासन के पास पहुंचा तब परी और वह जवान दोनों उठ खड़ेहुये और बड़ेआदर से उसको बैठाला और भोजन कराने के उपरान्त पूछा कि तुम कौनहो और कहां जाते हो और क्या नाम है और कौन ठांव है जहांके निवासी हो हातिमने कहाकि मेरानाम हातिम है मैं यमन का निवासी शाहाबाद से आता हूं दैव योगसे इस कुएं पर आनिकला जबमैंने बहुतभीड़ देखी तो दोचारोंसे समाचार मिले पर तेरे माता पिताकी व्यथा मुझसे नहीं सही गईजब उनके पासगया तो वे कहनेलगे किकोई हमाराऐसा हितूनहीजो हमारे पुत्रकीलोथ इसमेंसेनिकाले यहसुनकेमैं इसकुएंमें कूदपड़ा

तोयहां आपऊंचा अबमैं यहतो नहीं जानता कि उनका पुत्र तूही है कि और कोई है पर एक मनुष्य देखताहूं यह सुनके वह जवान बोला किहे भाता जो दोनों पुरुष उस कुएंपर रोतेछोड़ आयाहै मैं उन्हींका पुत्र हूं एकदिन उस कुआं पर मैं आनिकला तो इस चन्द्रमुखीकी झलक विद्युच्छटाके समान देखतेही बावला बनके उस कुआंपर बैठरहा और यह दिनप्रति जाय२मुझे अपनामुख दिखा आती एकदिन निराशहोकेकुआंमें कूदपड़ा निदान गिरते परते यहां आ पहुंचा इसने मेरीदशा देख दया करके विरहताप को शान्ति किया अब दिनरात आनन्द से भोगविलास करते हैं यह सुनके हातिमने कहाकि बड़ेशोचकीबातहै धिक्कार तेरेऐसेसुखको है कि तूतोऐसे सुखचैनसेरहे और तेरेविरहमें मातापिता निराश होकेजीव खोतेहैं तब उसजवानने कहा कि मेरातो अबजाना इस मृगनयनी के हाथहै जोयह छुट्टीदे तो उनको धीर्यदेके फिरआऊं यह सुनकेहातिम उसपरीसे कहनेलगा कि हे सुन्दरी यह नीति और दयाके विपरीतहै कि इसके मातापिता महादुःखमें विलाप कर२अपना जीव खोते हैं इसलिये इसको दोतीनदिनकी छुट्टीदे जिसमें अपने मातापिताको धीर्य्यदेके फिरआवै यहसुन वहहँसके बोली कि मैंने इसको कब रोकाहै यह आपही नहीं जाता यह सदा स्वाधीन है जहां मन माने तहांजावे तब हातिम ने कहा ले उठ अब तो परी ने तुझे आज्ञा दी यह सुन के उसने कहा कि यह आज्ञानहीं किन्तु व्यंगहै हां प्रसन्नयुत विदाहोना तो यहहै कि यह मुझसे यों वचनबन्दहो कि तू निस्सदेह अपने मातापिता के पासजा मैं तेरेपास अठवारे में दोतीनबार आया करूंगी और तुझे अपने मन से न भुलाऊंगी यह सुनके हातिम ने गर्दन नीची करली और कुछेक देरमें बोला कि हे सुन्दरी इसपै दयालुहोके जो यह कहता है सो मानले तब तो वह त्योरी चढ़ाके बांकेपनसे बोली कि हमारी जात मेंयह रीत नहीं है मैं उसके विपरीत कैसे करूं बस अधिक लाड़मेरे सामने मत करो मुझे चिकनी बातभली नहीं लगती तब हातिम ने कहा कि जोतुम इसपै दयाकरोतोमैं कुछ प्रार्थना करूं मैंने उस प्रदेशकी परियोंको देखा सुनाहै और बहुधा उनका मेरा साथभी हुआ है उन्होंने अपने विरहीलोगों पर ऐसी दया करी है कि जिसका कुछ हिसाब नहीं और तुम कहती हो कि हमारी जातमें यहरीतनहीं है मैं इसबातको कैसे मानूं मनुष्य तो निरदयीभी होजाता है पर परीवाद अपनी बात

को भलीभांति निबाहतीहैं यहसुनके उसने मुंहफेरके कहा कियह झूठाहै मुझे मनसे नहीं मानता यहतो केवल तेरी बनावट है यह सुनके वहजवान बोला कि इस बुद्धिकी बलिहारीहै मैंने कैसीव्यथा भोगीहै कितेरे लियेकुआंमेंपड़ा राजपाट छोड़ा मातापिता हितू सम्बन्धी त्याग नानाप्रकार के दुःखभोगता यहां आया तिसपैभी मैं गाहक न ठहरा इस समय यही कहावत स्मरण होतीहै कि पत्नीका तो घात हुआ और अहेरिया ने कुछ खादही नपाया यह सुनके वह कुटिल बोली कि यह वृथाबाद काहेको करता है मैं जब जानूं तू मुझे चाहता है कि जो मैं कहूं सो माने यहसुन वह चट खड़ा होगया और बोलाकि अब विलम्ब काहेको करती है शीघ्र कह तब उसने एक कड़ाहमेंघी गरमकराया औरकहाकिजो मुझे चाहता है तो इसकड़ाहमें कूद वह जवान निधड़क कूदने को चलाज्योंहीं निकट पहुंचा त्योंहीं वह परीदौरके उसके गलेमें लिपटगई और कहनेलगी कितेरीप्रीति निश्चलहै अबमैंभी तेरीचेरी हूं जो कहेसो करूं फिरबड़ा हर्षकिया और नाचराग रंगमेंएक मास व्यतीत हुआ और यहां कुएंपर जोलोग बैठेथे सोदिनगिन रहेथे जब तीसदिन होगये तबवे कहनेलगे कि जो बहआया भी न आया तोउठके अपने २ कामों में लगें फिर हातिम उठखड़ाहुआ और कहनेलगा किमुझे दूसरी आवश्यकता है इसलिये जोतैंनेकहा है उसका प्रतिपाल कर और परीसे कहा कि देख अपने बचन का प्रतिपाल करना और जो तुम सुलेमान को साक्षी दो तो मुझेनिश्चयहो तब परीने सुलेमानकी आन करी और परियों को आज्ञा दी कि इन दोनों जवानों को कुआं पर पहुंचाओ उन्होंने एकही उड़ानमें दोनों को कुआंके मुहरे पर बैठाल दिया सबलोग देखके बहुत हर्षित हुये और उसके माता पिता दौड़के हातिमके चरण परसने लगे निदान सबके सब प्रसन्नयुत नगर में आये तो नगर में आनँद बधाये बजने लगे चौदहदिन तक हातिम की पहुनाईकरी और राग रंग की बड़ी धूम मची रही और वह परी भी अपने बचन का प्रतिपाल करनेलगी तब हातिमने कहा धन्यहै तेरे रूप वो शीलको और नीति भी यहीहै कि स्वरूपवान को शील नहीं तो रूप वृथाहै तथा बिन लाजकेनेम निदान पन्द्रहवें दिन हातिम वहांसे बिदा हुआ और एक बनकी राहली कई दिन उपरान्त उसको एक नगर दृष्टि पड़ा और उसके परकोटा के बाहर एक वृद्ध पुरुष खड़ा देखा तो उसने हातिमको सलामकिया हातिमने

भी कहा सलाम २ है शीलवान् वृद्ध सलाम तब उसने हातिम से कहा हेपथिक जोआजकी रात मेरेधामको चलकरपवित्र करै तो मैं अपने को धन्यमानूं हातिमने कहा कि नेकी और पूछ २ निदान हातिम को वह अपने घरलाया और बड़े आदर सन्मान से भोजन कराने के पीछे पूछा कि हे जवान तू कौनहै और कहां से आता है और कहां को जावेगा हातिमने कहा कि मैं यमन का निवासीहूं और हातिम मेरा नामहै और मैं हम्माम बादगिर्द को सोधनेजाताहूं यह सुन उसने गर्दननीची करली और थोड़ी देर में बोला कि हे प्यारे कौन तेरा शत्रुहै जिसने तुझे ऐसीठौर भेजा जो कोई वहां गया सो नहीं फिरा उसका कुछ चिन्ह नहीं जो कोई वहां जाने की अभिलाष करै सो पहलेयहीं मृतकस्नान करले क्योंकि वह यमनपुरी से घाट नहींहै औरउसकी सीमापर शहरकता शहरके बादशाहने एक चौकी बैठारदीहै कि जोकोई वहां जावे उसको पहले मेरे पास लेआवो न जाने उसको वध करताहै अथवा छोड़ देता है आज तक किसीने वहांके समाचार नहीं कहे तब हातिमने कहा कि हुस्नबानू सौदागर बची परमुनीरशामी शाहजादा आशिकहुआहै और अपना घर द्वारछोड़ के उस नगर की सरामें पड़ाहै और केवल उसके साथ सुखक्रीड़ा करने की अभिलाष से अभी तक जीताहै औरउस कुटिलने सात प्रश्न कियेहैं सो उसकेबदलेमें मैं प्रश्नोंके उत्तर देनेको उद्यतहुआहूं सो परमेश्वर की कृपा से छः प्रश्नोंके उत्तर भी देचुकाहूं और सातवां प्रश्न यहीहै कि हम्मामबादगिर्द को सोध लादे अबदेखूं चतुर विधाता मुझे कौन कौतुक दिखाताहै यह सुनके उस वृद्ध ने कहा कि धन्यहै तू और तेरे माता पिता जो परायेपीछे इतनी विपत्ति भोगता फिरताहै परन्तु अब तू यहां से लौट जा क्योंकि वह माया का प्रपंचहै वह किसी की बुद्धिमें नहीं आता तब हातिमने कहाकि मुझसेयह तो न होगा कि उसकेसम्मुख झूठबोलूं और जीव जाने के डरसे लौट जाऊं तो परमेश्वरके आगे क्या उत्तरदूंगा तब फिर वह वृद्ध बोला कि हेजवानमेरीशिक्षानमानेगा तो पछतावेगा जैसेएक दादुरने अपने स्वजातियों कीबात न मानी तो पीछे पश्चात्ताप करनापड़ा यहसुनके हातिमने उसकावृत्तान्त पूछा तब वह वृद्ध इस प्रकार कहने लगा कि शाम के देशान्तर में एक नदी में दादुर बसतेथे एक दिन उनमेंसे एकने कहा कि मन में ऐसे आती है कि कहीं विदेश को चला चाहिये और किसी

दूसरी नदीमें जाकर रहैं क्योंकि देशाटन में ऐसे लाभहैं कि दीन धनाढ्य होजातेहैं और निज देशमें किसी भांति धनकी संचय नहीं होती और बिनाहाथ पांवडुलाये सुखमें भोजनभी नहीं जाते यह सुनके उसके सजाती बोले कि रेमूर्ख यह अनुमान जो तैंने किया है सो चित्त से उड़ादे नहीं तो सुख नहीं किन्तु दुःखही पावेगा निदान उसने एक न मानी अपनेकुनबा को साथलेके वहांसे चलदिया और यद्यपि जलचरोंको थलमें चलतेबड़्डत कठिनता होती है तद्यपि वह बड़े हर्षसे उछल कूदके चलाजाताथा चलते २ एक सोताके ऊपर जापड़ुंचा उससोतामें एकसर्प रहताथा उसने उस सोताके सब मेढक बीनखायेथे इस समय में कई दिनका भूखा था ज्योंही इसको देखा त्योंही इन पर तीर समान टूटा और प्रत्येक को बीन२ उदरमें धरलिया वही एक जैसेतैसे वहांसे भागबचा और अपने पूर्वस्थान में आया तब वह तो दीन मलीन मारे विपति के अपने पुंच कलचोंके शोक में बैठा था और उसके सजाती उसका उपहासकरतेथे कि रेमूर्खतैंने हमाराकहना न माना अपनेहठका फलपाया बनाबनाया घरमाटीमें मिलाया वहशिरनीचा कियेघरे के समान सबकी सुनताथा किसीको उत्तरनदेता किंतु अपनेकिये पै आपहीपश्चात्तापकी अग्निमेंऔटरहाथा सो ईजवानजोकोई किसी हितूकी बात नहीं कान करता वह अन्तमेंपछिताताहै यह सुनके हातिमने कहाकि यह सत्यहै और तुमतो मेरेही हितकी कहतेहो परन्तु जबईश्वरकी राहमें कटि कसिचुका तोउसे मरने जीने का कुछ बिचार नहीं करनाचाहिये केवल बिधाताके लिखेपै आरूढ़ होना उचितहै इसलिये मैंने तो यह कर्म अंगीकार किया है और उसके पलटे कामकरने को उद्यत हुआहूं अब मुख फेरना उचितनहीं जोकरैसो ईश्वर अवतूमुझे शहरकतां कीराह दयाकर के दिखायदे जब उसने इसका निज अनुष्ठान हम्माम बादगिर्द के जानेहीका लखा तो शहरके बाहर आयके उससे कहनेलगा कि यहांसे तूदाहिनी ओरको राहले बड़्डतसे नगरगावोंके उपरान्त एक पहाड़ मिलेगा वहां बड़्डतसी विपत्ति और नाना प्रकारकी भयसे बचेगा तोफिर एक बड़ा बिकट बन मिलेगा वहां ईश्वर की लीलादेखेगा थोड़ीदूरचलके एक दुराहा मिलेगा वहांसेबायें ओर कीराहपर आरूढ़हूजियो सीधाशहरकतां में जापहुंचेगा यद्यपि दाहिनी ओरकी पन्थसे जल्दी पहुंचेगा परन्तु अधिक भयानक है तब हातिमने कहाकि भावी बलवान्है बिनाम्रत्यु कोई मारता

नहींहै फिर क्यों सीधीराह छोड़के टेढ़ीराह चलूं यह सुनके उस वृद्ध ने कहाकि प्राचीनोंने इसप्रकार कहाहै कि फेरकाशोच तज के सीधीपन्थ चलिये और रांडकी का संग मतकरिये यद्यपि वह वारांगणाके समान हो और यह प्रसिद्ध है कि बिना मृत्युकोई मरता नहींतद्यपि जानके गरलका संग्रह न कर और जो तू मेरी बात कान न करैगा तो पछितायगा निदान हातिम उससे बिदा-ह्वआतो थोड़ेदिनोंमें एकशहर दृष्टिपड़ा देखाकि एक जगहलोग बैठेहैं और राजसी सामा वर्त्तमानहै और प्रत्येक जमाव के पास नगारे बजरहेहैं यहदेख हातिमने पूछाकि हेमित्रो सत्यकहो यहां किसीके घर विवाहहै यहसुनके उनलोगोंने उत्तरदिया कि इस शहरकी रीतिहै कि वर्षवेंदिन बादशाह आदि सम्पूर्ण नगर नि-वासी अपनी २ पुत्रियोंको दुलहिनिके समान शृंगार करके तम्बु-ओंमें बैठारदेतेहैं तब बनमेंसे एकसर्पआताहै सो मनुष्यका स्वरूप धारण करके सब तम्बुओंमें देखता फिरता है जिसे मन मानता है उसे लेजाता है इसलिये हम मारे डरके लाजछोड़ के नगारे बज-वातेहैं औरविवाहकीसी सामाकरक्खीहै सबकेमनमेंयही धड़का है कि देखेंकिसकीबेटी मनमानतीहै औरसंध्यासमय अवश्यआके किसीको लेजायगा यह सुनके हातिमने शोचाकि यह कर्म केवल जिन्नका है फिर कहा कि हे मित्रो तुमको तो उसने बड़ा दुःख दिया उन्होंने कहाकि क्या करैं हमारा कोई वश नहीं चलता और ऐसा कोई ईश्वरका प्यारा नहीं जो हमको इस महाशोक से निवारणकरै तब हातिम बोलाकि जो ईश्वर चाहे तो आजही इस महादोषसे तुम्हेंबचाताहूं यहसमाचार उन्होंने अपने बाद-शाह से कहे उसने हाथों हाथ हातिम को बुलवाया और एक कुर्सीपर बैठालके पूछा कि हे जवान तुझे मालूमहुआ कि यह क्या महा आपदाहै हातिमने कहा किमुझे भली भांति विदित हुआ कि यह जिन्नहै और जब इनको उपद्रव करना होताहै तो सुपंथ छोड़कर कुपंथचलतेहैं यह सुनके बादशाह बोला कि जो यह जिन्न तेरेहाथसे मारागया तो इसका पलटा तो कुछनहीं परन्तु जीते-जी तुम्हारा ऋणिया रहूंगा हातिमने कहा कि मैंने तो ईश्वरकी राह में कटि कसीहै जोकाम करताहूं सो परमात्मा को सौंपता हूं जो तुम्हाराभी कामकरूंगा तो तुम्हारे ऊपरभी मेरा कुछ येह-सान नहींहै परन्तु इतनाहीहै किजोमैं कहूं सो मानो बादशाह ने कहा जो तूकहै सो हम सब तनमन से करने को उद्यतहैं तू बता

हातिमने कहा कि जब वह आयके किसी लड़कीको मांगे तोतुम उससे इतनाही कहोकि आपको लड़की देनेमें हमबख़ुत प्रसन्नहैं परन्तु थोड़े दिनोंसे हमारा स्वामीआयाहै इसलिये बिनउसकी आज्ञा हम कुछ काम नहींकरते और जो करैं तो क्षणमात्रमें हमारे देशकोष को मटियामेट करदेगा सो तुम उससे याचनाकरो निदान हातिम को अपनी सभा में दिन भर बैठारक्खा जब सांझ हुई तब उसके आनेके समाचार प्रकटहुये कि एक शब्दाघातहोता आताहै इतनेमें एक भूधराकार सर्प आता दृष्टिपड़ा और जो वृक्षादि उसकेछातीके नीचेपड़े सोकचरके चूर्णहोतेजातेहैं निदान जब निकट पहुंचा तब ऐसीपूछ थरथराई कि सबकी गर्दन नीची होगई और वह लोटपोटके सुंदर युवापुरुषका स्वरूप धारण कर लिया तब सबोंने आगेबढ़के लिया और बादशाहके तम्बूमें आबैठा थोड़ीदेरपीछेउठा और कहनेलगा किमुझेअपनीलड़की दिखावो तब बादशाह साथहोलिया औरसबकी पुचीदिखाई तिसकेपीछे बादशाह कीबेटीके तम्बूमें आया और उसकी बेटीको अंगीकार किया औरबादशाहके पास आबैठा कहा कितुम मुझेअपनीपुची देदो बादशाह ने कहा किअबथोड़े दिनोंसे हमारा स्वामी आया है हम उसीके आधीनहैं जोवह कहताहै सोई करते हैं इस लिये आप उसीसे याचनाकरैं यहसुनके वह बोलाअब तक वह कहांथा अच्छा बुलावो निदान हातिम उसके पास आया उसने पूछाकि आज तक तो तू इस शहर में नहीं था और अब इनको काहेको बहका के इनका देश उजड़वाया चाहता है हातिम ने कहा कि जबमैं यहां न था तबतक तेरा कहाकिया अब इस देश का स्वामी मैं हुआहूं इसलिये जो कोई मेरे प्राचीनों की रीति अंगीकार करै उसको हम बेटी देते हैं उसने कहाकि अच्छा जो रीति हो सो बतादो हातिम ने कहा कि एक मोहरा मेरे पासहैपहिलेतो मैं उसको घिसके पिलाता हूं उसने मारे अभिमान के कहा कि अच्छा घिसवावो,हातिमने रीछकी बेटीवाला मोहरा घिसपानी में दिया उसने पियातो जिनोंकी सम्पूर्ण विद्याभूल गया तब फिर उसने कहा कि और अब कौन रीति है हातिम ने कहा कि एक मटकीमें बैठो और हम उसपैढकनाधरदेंतुमउससे निकल आवो और जो न निकल सको तो उस समय शहस्र लाल और एक सहस्र इलमास और जलमुर्गीके अण्डासमान मोती उससे शुनहगारी लें उसने कहाकि ला मटकी भी लेआ निदान हातिम ने

मटकी मँगवाई और कहाकि इसमें बैठो उसने मारे अभिमानके वैसाही किया हातिमने उसे ढकना से बन्दकिया और इस्मआ-जम पढ़ा तो उसके प्रभाव से वह ढकना पहाड़ के समान होगया बज़्तेरा उसने बलकिया पर वह ढकना न उठा तब हातिमनेउस मटकी के चारों ओर लकड़ी धर अग्नि लगवा दी तब वह जिन चिल्लाया कि मैं जला मैं जला जब वह भलीभांति जलगया तबहा-तिम ने उसे पृथ्वी में खोदके गड़वा दिया और कहा अबआनन्द से अपने२ घरको जावो यहदेख बादशाह बज़्त प्रसन्नहुआ और बज़्त सी द्रव्य उसके आगे लेरक्खी हातिम ने कहा यहमेरेकिसी कामकी नहीं है जो तुम्हारा मनमाने तो दीनोंको बांटदो बा-दशाह ने उसी समय सब द्रव्य भिक्षुकों को बांटदी और तीन दिन पीछे हातिम वहांसे बिदाहुआ कईदिन पीछे उस पहाड़ के पास जा पहुंचा जिसका नाम उस बूढ़ेने बताया था थोड़ीदेर सुस्ताके उसपैचढ़ा जब उसको पारकियो तो एक बनमें जापहुंचा तो अनेक प्रकारके अपूर्व पदार्थदेखे और बनफलखाते और पानी पीते उसके भी पारगया तब एक दुराहा मिला वहां सोचनेलगा कि उसबूढ़ने कहाथा बाईंओर की राहलेना सोउसकी बताई राहपर चलना चाहिये जब थोड़ीदूर बाईं ओरको राहमें चला तबमनमें सोचाकि जो इस राहसे चलातो वहांकी अपूर्व वस्तु न दिखाई पड़ैंगी इसलिये उसी राहसे चलना चाहिये जो ईश्वर सहाय हुआतो राह निःकंटक होजायगी यह सोचके दाहिनी ओरको फिर लौट आया जबथोड़ी दूर चलातो बबूरों का बन ऐसा मिलाकि मारे कांटों के कहीं सुईधरने की ठौर नहीं मारे कांटोंके सम्पूर्ण शरीर छेदगया बस्त्र टुकड़े २ होगये हातिम अपने मनमें पछिताने लगा कि उस बूढ़ेने सत्य कहाथा और यह नहीं मालूम कि आगे कोई और आपदा है निदान ज्योंत्यों करकेउ-सके पार गयातो छिपकलियोंके बनमें गया वहां क्या देखताहै कि गीदर लोखड़ीस्यारके समानछिपकली मनुष्य कीगन्ध पाकेधाईं हातिम को यह निश्चय होगया कि येअब अवश्यखाय जायंगी यह सोचके बज़्त व्याकुलहुआ औरशरीर शिथिल होगया तबदाहि-नी ओरसे एक पुरुष प्रगट होके कहने लगा किहे हातिम धीर्य्य धर पहिले तैंने उस बृद्धकी बात न मानी अन्त को यह कष्ट देखा हातिम ने कहाकि अबतो अपराधहुआ तब उस पुरुष नेकहाकि जो सुहरा तुझे रीछकी बेटीने दिया है उसको पृथ्वीमें छोड़ दे

हातिम ने वैसाही किया उसके छोड़तेही प्रथम तो धरती काली हुई फिर हरी हुई तिस पीछे लालके होतेही वे सब आपस में लड़मरीं तब हातिमने मुहरा उठायलिया और आगे बढ़ा तो एक धरातल अजदहात अर्थात् एक प्रकार की धातुका मिला जिसके कणके प्रावोंमें पारहुये जातेथे निदान बड़ेकष्टसे पारगया तो देखा कि पांव चलनी हो रहेहैं तब हातिमने जानाकि अब कोई विपतिनहीं है तो उठके आगेबढ़ा त्योंहीं मनुष्य की गन्धपाके कुक्कुट के समान ऊंचे और थारीके समान चौड़े बिच्छू धाये यहदेख हातिम कीसुधिबुधि सबजातीरही शरीर शिथिल होगया तब फिर वही पुरुष प्रकट होके कहनेलगा कि हातिम वही मुहरा धरती में छोड़दे हातिमके ऐसेहाथपैर फूलगये किमुहराभी न खुलसका तबउसने अपने हाथ मुहरा खोलके हातिम के हाथमें देके कहा कि इसे पृथ्वीपर छोड़दे और ईश्वरकी लीलादेखले जब हातिम ने धरती परडाला तो छिपकलियों के बनकीभांति धरती रंगबदलने लगी और जब रक्त रंग होगई तब सब बिच्छू आपस में लड़ने लगे तीनि दिनके अनन्तर में सब काटिमरे फिर हातिम ने अपना मुहरा उठाय लिया और अपनी राहली थोड़े दिनों में एक शहर में जा पहुंचा तो वहांके निवासियों ने हातिम को विदेशी देखके पूछाकि तू कौनसी राहसे आयाहै हातिम ने कहाकि मैं तो दाहिने हाथको राहसे आयाहूं तब उन्होंने पूछाकि तू छिपकली बिच्छू बबूलादि के कांटोंसे कैसे बचा उसने कहाकि वे सब मरगये केवल अब बबूरकेकांटे और अजदहातके कण रहगये हैं और सबप्रकार यहराह निःकण्टक होगई है यहसुनके व्योपारी लोगोंने सोचा कि उसराहसे बहुतदिनों में पहुंचते हैं इसलिये इसीराहसे चलना चाहिये निदान सबव्योपारी उसीराहसे चलदिये यह समाचार बादशाहके पासगये कि एक पथिक इसराहसे आयाहै उसके कहने से सबव्योपारी भी इसी राहसे गये हैं बादशाहने यहसुनके सिपाही उनकी रक्षाके लियेभेजे कि जावो देखआओ जोराह निःकण्टक होगई हो तो व्योपारी इसी राहसे बहुत आयाजाया करैं तो शहरकी आबादीबढ़ेगी और हातिम को अपने सम्मुख बुलाके कहाकि हेपथिक तैंने पन्थमें बहुतसा कष्ट भोगाहै अबकुछ दिनहमारे पासरह थोड़ेदिनमें पंथका श्रममिटा के जहां मनमाने तहांजाना परंतु मुख्य अभिप्राय उसका यहथा कि जो यह सत्यकहताहै तबतो भली भलाहै नहींतो इसको शूली

दूंगा और कितेक सिपाही उसके देखनेके लिये कि जिसमें कहीं चलानजाय नियतकिये जब सौदागर लोग उसराहसे गयेतो पीछे २ बादशाही सिपाही उनके पीछेलगेरहे जबवे कुशल पूर्वक अपने २ नगरोंमे पहुंचे तब उन्होंने लौटके बादशाहसे कहाकि यहपथिक जो कुछ कहता है सत्यहै अबइस पंथमें कोई कण्टक नहीं रहा है तब बादशाहने चारोंओरको पत्रभेजे कि बांहराह अब निःकण्टक होगई है जिसका मनमाने सो आवे जावे और हातिम की बड़ी प्रतिष्ठा कर बहुत आधीनता से अपने अपराध की क्षमा मांगने लगा और हातिमके आगेबहुत सम्पदारक्खी तब हातिमने पूंछा कि जिसदिनसे मैं आपके शहरमें अयाहूं उस दिनसे बड़े चैनसे रहाहूं पर यही नहीं मालूम कि तुम क्षमा किसलिये यांचतेहो तब बादशाहने कहाकि तुम नहींजानते किमैंने तुम्हारे पीछे मनुष्य लगा रक्खेथे किजोयह कहीं जाया चहेतो जाने न पावे क्योंकि इसबातके झूठ ठहरने पै तुमको नगरके बाहर शूलीदेता जिसमें कोई फेरऐसी बात न कहै यहसुनके बादशाहसे हातिमने कहा कि धन्यहै हेबादशाह ऐसीही नीतिहै ईश्वर आपके देशकोषकी वृद्धिकरे और सदाआपके शत्रु निर्बलरहैं और जो सम्पदा आपने मेरे आगेधरीहै सोमेरे कामकी नहींहै क्योंकि मेरेपास कोईभार वाटभी नहीं यहसुनके बादशाह ने कहा कि इसका कुछ सन्देह नहीं मैं तुम्हारी जन्म भूमितक तुम्हैं पहुंचादूंगा तब हातिम ने कहाकि अभीकोई आवश्यक कामहै जबतक वह न होजायगा तब तक जानातो दूर है अपनी जन्मभूमि की ओर मुखभी न करूंगा तब बादशाहने कहाकि वह कौन काम है हमको भी बतावोतो कुछपै कुछ हम भी सहायता करैंगे हातिम ने कहा कि मैं केवल ईश्वर की सहायताके सिवायकिसी मनुष्यकीसहायता नहींचाहता जो आपमुझे शहरकतां कीराह बतादीजिये तोमानो आपने मेरी सहायताही की तब बादशाह ने पूंछाकि तेरा वहां क्या कामहै हातिमने उत्तर दियाकि मुझेहम्माम बादगिर्दको सोधनाहै यहसुनके बादशाहने कहाकि हेप्यारे इसअनुमानको चित्त में नलावो क्योंकि वहांसे आजतक कोई कुशलपूर्वक नहीं फिराहै निदान बहुतेरा कहा परंतु हातिमने एक न मानी फेर हार के बादशाहने कितेक आदमी हातिमके साथकिये औरहातिमको विदाकिया हातिमने शहरसे निकलके अपनी राहलीऔर थोड़े दिनोंमें एकठौर पहुंचा तो राहदिखानेवाले बोलेकिअबहमारी

सीमा यहांहीं तक थी यहांसे आगे सहरकतां की सीमा है यहांसे हमकोविदाकरो हातिमनेउनको विदाकिया और आप आगे बढ़ा जब शहर कतांके पासपहुंचा तब वहांके निवासी पूंछने लगे कि हे जवान तू कौनसीराहसे आयाहै हातिमनेकहा कि मैं तो दाहनी ओरकी राहसे आयाहूं यद्यपि उसमें बहुत कण्टकथे पर अब ईश्वरने अपनी दयासे निःकण्टक किया यह सुनके वे बहुत प्रसन्नहुये हातिम शहरमें घुसा औरसरायमें जा उतरा एक दिन दशमोती और दोलाल अनमोलके लेके बादशाहसे मिलनेको गया जब राजद्वार पर पहुंचा तब चोपदारने बादशाहसे प्रार्थनाकी कि एक किसी अन्य देशका निवासी व्योपारी अति शुद्ध स्वरूप बुद्धिमान् आपके दर्शनोंको आयाहै बादशाहने आज्ञादी कि शीघ्रलाओ जब सम्मुखगया तब बादशाहोंकी रीतिअनुसार दण्डवत्कर और वे रत्नभेंटदिये बादशाह देखके बहुत प्रसन्नहुवा और योग्य आसन बैठने कोदिया और कुशलप्रश्न के उपरान्त उसके समाचार पूंछे हातिमने कहाकि बहुतकालसे मैं सौदागरी करताहूं परंतु अब संसारअसार जानउस ओरसे मनको निवृत्ति किया और बादशाहोंके दर्शन करना अंगीकारकिया और यहां अपका यश और कीर्ति ऐसीसुनी किमन बरबशखींच लायाकि ऐसेसतोगुणी नीतिरत प्रजापालकके दर्शन अघनाशक होतेहैं और लोकपरलोक में सुख और बड़ाईका लूटना है बादशाह उसकी ऐसी मीठी नम्रताकी बातें सुनके बहुतही प्रसन्न होके कहने लगा कि हेप्यारे जो कुछ काल हमारे नगर में रहे तो हमभी तेरे सत्संग का सुख लूटें हातिमने कहा यद्यपि हमऐसे लोगोंका दोचार दिनभी एक ठौर रहना अनुचितहै तद्यपि ऐसे नीतिरत बादशाहकी दया देख मुझे सब प्रकार शुभदायकहै और मैंने आपकी आज्ञा अपनेशीश परधरीफिर बादशाहने पूछा कितुम कहांउतरेहोहातिमने कहा कि सरायमें यह सुन बादशाहने आज्ञादी कि इस जवानके लिये एक शुद्ध स्थान नियत करो और रसोईं कर्त्ता से कहो कि दोनों समय सात२ थारभोजनोंके इसके स्थानपर भेजाकरैं और सेवक इस पुरुषकीसेवा करनेको नियत रहैं फिर हातिमसे कहाकि हेजवान कहांसे उठआ और दिन प्रति हमारी सभामें आय२ अपने मधुर बचन सुनाय २ हमारे चित्तको प्रसन्न किया कर निदान हातिम को बादशाहकी सभामें रहते छः मासबीते अंतको हारस बादशाह ऐसा हातिम की चाल भांति बात चीत और रूप शीलऔर

गुण पर लोभा कि क्षण मात्रभी उससे जो बिलगहोतो व्याकुलहो-
नेलगे और बादशाह उसको तन मनसे चाहने लगा और बहुधा
अपने सभासदोंसे उसकी प्रसंशाभीकरै औरवेभीउसके प्रतिउत्तर
में कहते कि सत्यहै महाराज ऐसा बुद्धिमान् पुरुष काहेकोमिलता
है जब हातिम ने एक दिन बादशाह को बहुत प्रसन्न देखा तब
फिर भेंट आगेधर खड़ाहोरहा तो बादशाहने कहाकि हेजवान
मैं तो तेरावैसेहीतनमनसे चेराहोरहाहूं तूकाहेको बारम्बार ल-
ज्जितकरताहै और मैं तुझसे इसलिये अधिक लज्जितहूं कि इतने
दिनोंसे तू मेरी सभामें वर्त्तमानहै परतैंने कुछयाचना नकरी परन्तु
अबमेरी यही अभिलाषहै कितू मुझसे याचना कर और मैं जोतू
मांगेगा सोई निस्संदेह दूंगा और यहदेशभी तेराही है जिसका
चाहेतिसको देदे औरजोचाहे सोअपनाकरले औरजिस राजकी
पुरुषको चाहेअपना आज्ञा कारी करले यह बादशाह की बात
सुनके हातिमने प्रार्थनाकरी कि मुझे आपकी दयासे सकललौकि-
क पदार्थ सुलभहैं और महाराजके राज्य और जीवकी सदा जय
और वृद्धिहो मेरे मन की सकल भावना ईश्वर ने पूरी करी पर
एकही अभिलाष मनमें शेषहै तिसकेबिन पूरीहुयेमरन समय भी
पश्चात्तापसे हृदय दहेगा यह सुनके बादशाहनेपूछा कि वह ऐसी
कौन अभिलाषहै जातू चाहे तो अपनी पुरीकाभी तुझेदूं और
देशकोषकी तो कौन बात है यहसुन हातिम ने गर्दननीची करके
कहाकिहेमहाराज वहमेरी बहिन समानहै मेरीता अभिलाषही
अन्यहै और उसके प्रकट न करनेका यहकारणहै कि मैं कहूं और
आप न मानेंतो सभामध्य मुझेलज्जित होनापड़ै बादशाहने कहा
कि मेरेतो मेरी स्त्री के सिवाय कोई पदार्थ तुझको अदेय नहींहै
हातिमने कहाकि जो आप बचन बन्दहोके मुझसे याचना करने
को कहैं तो मैं प्रार्थना करूं बादशाह ने कहाकि जो मांगेगा सो
पावेगा इसमें कुछ सन्देह न कर शोच तजके मांग हातिमने कहा
कि मेरी अभिलाष हम्मामबादगिर्दके देखनेकी ओरहै जो आप
की आज्ञापाऊंतो उसेदेख मनकी भावना पूरीकर पुनिआयचरण
शीशनाऊं यह सुनके बादशाहने गर्दन नीची करली और कुछ न
बोला यहदेख हातिमने प्रार्थना करीकि ऐसे काहेको शोचगत
आप होतेहैं मैं सबप्रकार आपका अनुचरहूं जो आज्ञाहोगी उ-
सका भलीभांति प्रतिपाल करूंगा तब बादशाहने उत्तर दियाकि
मेरेशोचवश होनेके कईकारणहैं एकतो यह कि मैंने प्रणकियाहै

कि किसीको यहां न जानेदूंगा दूसरे यह कि तुझसा युवासुशील स्वरूपवान् नहींआया सो भी जीव देनेको जाता है तीसरे यह है कि तुझेमें अधिक प्यार करताहूं जो तुझे जानेदूं तो तेरीबिरहमें दुखीहूंगा पांचवेंजो तुझे न जानेदूं तो मेरा प्रण जाताहै कितुझसे प्रथम बचन बद्ध होचुकाहूं और अबतुझे न जानेदूं तो बचन पलट ठहरूं तो प्रतीति जातीरहे इससे राज प्रबंध में उपद्रव होने लगें तब हातिमने कहाकि आप किसी प्रकार का सन्देह न कीजिये ईश्वर चाहेतो एक तुच्छकालमें वहांसे आनन्द पूर्वक फिर आय चरण देखता हूं आप शोचविचार तज आज्ञा दीजिये क्योंकि मैं किसीभांति ठहर भी नहीं सक्ता क्योंकि शाहजादा मुनीरशामी हुस्नबानू बरजख़ सौदागरकी बेटीपर मोहित हुआ है और उस कुटिलाने सातप्रश्नकियेहैं सो नतो उसबिरहीमें सामर्थ्य उत्तरदेने की ठहरी और न उस सुन्दरी के बिरह में धीर्य्य धरसकता है निदान उसकोदुःखमें व्याकुलदेखउसके बदले मैंउत्तरदेनेको उद्यत हुआसो उनमेंसे छः प्रश्नका उत्तर तो दे चुकाहूं अब केवल यही प्रश्नहै कि हम्मामबाद गिर्दको शोधिआओ यहसुनके बादशाह ने कहाकि धन्यहै तुझको और तेरेमाता पिताको कि दूसरेकेलि-ये कष्ट उठाता है और अपनेको सजीव मतक जानलिया क्योंकि आजतक कोई वहां से नहीं फिरा बड़तेकुंवर सौदागरबचाआदि बहांगये परवहांसे कोईभजीव न फिरा इससे निश्चयहुआकिउस सुन्दरीने भेजाहै परन्तु अब बहतो बताकित कहांका निवासीहै और तेरानामक्याहै हातिमनेकहा कि मैंतबकापुचहातिम यमन का निवासी हूं यहसुन बादशाहने उठकेहृदयमें लगालियाऔर कहा कि सत्यही तेरेभाग्य से राज्यका चिन्ह प्रकट है और तेरी कीर्ति विदित है और दिनप्रति तू विख्यात होगा तेरी उपमा दीजायगीअब जोकोई उत्पन्न होगासो तेराद्वितीयगिनाजायगा यहकहके अपने मंत्रीको आज्ञादी कि हम्माम बादगिर्दके द्वार-पालक को पत्रलिखो और हातिम को हृदयलगा कितेक मनुष्य उसके साथकरविदाकिया हातिम तोशहरकेबाहर निकलाऔर बादशाह हातिमके शोचमें सभासे उठ महलमें गया पन्द्रहदिन पीछे हातिम को हम्माम बादगिर्द दृष्टि आया तो पूछा कि यह कोटहै अथवा कोई पहाड़ है उन्होंने कहा कि यह हम्माम का कपाटहै देखनेमें तो निकट लखाई परताहै परन्तु अभी सात दिनके चलनेसे मिलेगा अब सातवें दिन वहां पहुंचा तो वहांबड़ी

सेना देखी तब हातिम ने पूछा कि यह सेना किसकीहै साथियों ने कहा कि यह द्वारपालक की है निदान सेनाके भीतर गयातो वहां उन साथियों के बहुत से सम्बन्धी और इष्ट मित्र थे सभों से मिले तो वे पूछने लगे कि तुम्हारे आने का क्या हेतु है उन्होंने उत्तर दिया कि बादशाहने इस यमनी पुरुषके साथ भेजाहै और द्वारपालक को एक पत्र भी लिखाहै निदान हातिम उस पत्र को लेके द्वारपालकके तम्बूमें गया दण्डवत् करके वहपत्र उसकोदिया उसने पत्र शीश पर चढ़ाया और बादशाह की दया दृष्टि देखके हातिमको हृदय में लगा लिया और पत्रको खोल के पढ़ा तो उसमें यह लिखाथा कि इसको मैंने बचन दियाहै सो इसेहम्माम के भीतर जानेकी आज्ञा दो परन्तु पहिले इसको यथा सामर्थ्य समझाय के फेर दो तो मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूंगा द्वारपालक ने हातिमको बहुतभांति समझाया पर एक न मानी तब उसनेबादशाहको अपनी ओरसे लिखाकि यहनहीं मानता और मैंअपनी सी बहुत कह करचुका जबबादशाहके पास यह पत्रपहुंचातबअपना मूड़धुना और उसके प्रति उत्तरमें लिखाकि जो वहनहीं मानता तो मत रोको जो वहपत्र बादशाहके पाससे फेर आनपहुंचा तो भी उसने हातिमको बहुतसमझाया पर पत्थरमें जोंकनलगी तब हातिमको हम्मामके द्वारपर लेगया तो हातिमने उसके द्वार पर यह लिखा देखा कि यह माया गृह क्योसुर्स बादशाह के समयमें बनाहै और बहुत काल तक इसका चिन्ह वर्तमान रहेगा और जो कोई इसमायागृहमें आवेगा सोसजीव न जायगा किंतु इसीमेंभूखा प्यासा भरमता फिराकरैगा और जो कुछ उसकी आयुबलके श्वासों की संख्याहोगी सो एकबाग़में जाके मेवाखाके पूरी करैगा परन्तु इस मायागृहसे किसीभांति न निकलेगा जब हातिमने यह लिखा देखा तो फिरने का विचारकिया परन्तुमन में सोचा कि बाहर का वृत्तान्त तो जाना पर जब वह भीतरका समाचार पूछेगी तब कौन उत्तर दूंगा इसलिये भीतर चलना अवश्यहै निदान द्वार पालकने कपाटखोलदिया औरहातिमभीतर धसा तो दश बारह कदमसेअधिक न गया होगा कि इतनेमेंपीछे फिरकेदेखा तो न वे मनुष्य दिखाईदिये न फाटकका चिन्हमिला हातिमने बहुतेराचाहा कि द्वारढूंढ़के बाहरनिकलें पर न मिला तब हातिमने मनमें सोचा कि हम्माम का तो केवल बहाना था परन्तुयह मृत्यु थी क्योंकि पांव धरतेही यमपरी में आ पहुंचा

निदान भवचक्रासा चारों ओर देखताहुआ आगे बढ़ा तो थोड़ी दूरमें एक मनुष्य दिखाई पड़ा हातिम ने जाना कि यहां अब मनुष्य की बस गति होगी जब निकटपहुंचा तो उस मायाकृतस्वरूप ने अपनी कांखसे दर्पण निकालके हातिमको दिया हातिमनेपूछा कि क्यात् नाई है जो दर्पण दिखाताहै उसने उत्तर दिया कि महाराज मैं इसी स्नानगृहका नाई हूं जो कोई मुझे दिखाईपड़ा तो उसको स्नानगृहमें लेजाके स्नानकराय उसकीअमखोय उससे कुछ पारितोषिक का आशावान् होताहूं जो आप प्रसन्न होंतो यहां से निकटहीहै स्नानकीजिये और पन्थ का श्रम दूर करिये आपकी दयासे मुझे भी कुछ भाग्यअनुकूल मिलरहेगा हातिमने पूछा कि वहां तूही अकेलाहै अथवा और भी कोई तेरासाथीहै उसने उत्तर दिया कि यहां हैं तो अनेक परन्तु आज तो मेरी ही बारीहै तबहातिमने कहाकि अच्छा मैंभी बहुतश्रमितहूं औरवायु के बेग से पन्थ की धूर उड़के शरीरपै पड़ी है तिससे चित्त बहुत व्याकुलहै इसलिये स्नानकर स्वच्छ वस्त्रधारणकरूं निदानआगे२ नाई पीछे २ हातिम जब दो तीनकोस के लग भग पहुंचा तबएक मठ दृष्टि पड़ा वह नाई उस स्नानगृह के भीतर गया तो हातिम को भी बुलाया और ज्योंहीं हातिम भीतर धसा त्योंहीं उसके पट अनायास बन्द होगये परन्तु दृष्टि आते थे फिर इसी अभिलाषसे आगे बढ़ा कि फिरती बार खोलके निकस जाऊंगा फिर धीरे २ वह नाई उस फौज परलेगया और हातिमसे कहनेलगा कि आप वस्त्र उतारके जलमें धसिये तो मैं ऊपर से पानी छोड़के शरीर का मैल छुड़ाऊं निदान हातिम कपड़ा उतारके जलमें उतरा और वह नाई एक गंगायमुनी गडुवे से हातिम के बदन पर उष्ण जल छोड़ने लगा ज्योंहीं हातिमन तीसरा लोटा छोड़ातैसे हीएक शब्दाघात हुआ और अंधकार छायगया थोड़ीदेरमें जो अंधकार मिटा तो क्या देखताहै कि न तो वह नाई है न फौजहै न वह मकान है केवल एक मठ है फिर थोड़ीही देरमें वहां ऐसा पानी बढ़ने लगा कि क्षण भरमें पानी पोंडरी तक होगया तबतो हातिम घबड़ाके चारोंओर फिरने लगा इतनी देरमें घुटनोंके ऊपर पानी पहुंचा तो हातिम शोचने लगा कि ऐसी शीघ्र पानी की बाढ़है तो किसभांति यहांसेमैं बाहर निकलूंगा फिरहातिम चारोंओर दौड़ा फिरा पर द्वार कहीं न मिला इतनेमें पानीडुबाऊं होगया हातिम पैरनेलगा और मनमें शोचनेलगा कि यहां

से न निकलने का यही कारण है कि लोग पैरते २ थक जाते हैं अन्तको मरजाते हैं और यही दशा मुझे अपनीभी मालूम होती है क्योंकि कोई द्वारा निकसने का दृष्टि नहीं आता और हारस बादशाह इसीसे नहीं आने देताथा हाय २ अकाल मृत्यु हुईफिर मनको समझाने लगा कि अभी इतना काहेको घबड़ाना चाहिये क्योंकि दाता की नौका पहाड़ पर चढ़ती है और तैंनेतो कुछ अपने विषय भोगको तो यह काम कियाही नहीं है केवल और के लिये है और परस्वार्थ की राहमें मरना भी शुभ है ऐसी बातोंसे मनको समझा रहाथा कि ऐसा थका कि बस अब बूड़ा इतने में मठसे पानी टकराने लगा और एक जंजीर दृष्टिपड़ी हातिम ने आधार जानके उसको पकड़ लिया कि भला क्षण भाच तो सुखा लूं फिर पहलीही भांति एक शब्दाघात हुआ और हातिमउस मठके बाहर होगया औरअपनेको एक पटपरसी धरती परखड़ा देखा तो यह चारोंओर देख भाल के आगे बढ़ातो एकशोभायुत स्थान चमकता दृष्टिपड़ा तब इसने जानाकि यहांकोई गांव है जब और आगेचला तो एकबाग दृष्टि पड़ा उसका द्वार खुला देखके भीतर गया जब फिरके देखा तो उस के द्वारका चिन्ह भी न दिखाई पड़ा तो सोचनेलगा कि इतनी विपत्ति भोगी तबभी माया गृहके बाहर न हुआ अन्तको हारके एक मकान की ओर चला तो राहमें अनेक प्रकार के मेवोंसे वृक्षलदेखे मिले यह भारेभूख के मेवातोड़ २ के खानेलगा पर पेटमें कुछभी न मालूमहुआ यहां तक कि सैकरों मन मेवाखाया पर फिर भूखा का भूखारहा फिर मेवा खाताहुआ बारहदरीके पास जाके देखातो बहुत से मनुष्य लुंग चढ़ाये नंगे खड़े हैं परन्तु सब पत्थर के हैं यह कौतुक देखके बहुत विस्मित हो निज मनमें सोचने लगा कि यह क्या आश्चर्य है और इसका भेद कैसे जानूं इतने में एक तोता बोला कि हे जवान काहेको खड़ाहै जो यहां आया है उसने अपना जीव खोया है यह सुनके हातिम ने ऊपर को देखा तो एक तोता पींजरा में बैठाहै और एकताक़में यहलिखाहै कि हे मनुष्य जो इसस्नानगृह में आया है सो बहुरि के सजीव नहीं गया है एक दिन यहांबादशाह क्योमुर्स अहेर करता हुआ आ निकला तो इस बन में उसको एक इलमास पड़ामिला जबउसको तौलाया तो सातसौ सकाकुल की बराबर हुआ तब अपने सभासदोंसे पूछा किइसका जोड़ा कहीं मिलसक्ताहै उन्होंने उत्तर दिया कि महाराज ऐसा

रत्नतो जबसे सृष्टि हुई है तबसे न सुना है न देखा है यह सुनकेसोचा कि इसको ऐसी ठौर धरूं जिसे कोई न पावे यह विचारके उसने यही मायामय स्नानगृह रचा और वह हीरा इस तोताको निगलाय के इस मकान में लटकायदिया और इस रत्नजटित कुर्सीपर धनुष बाण इस प्रयोजन से धरदिया कि जो कोई इस मायागृहमें आयके फिर जानेका विचार करै तो एकबाण इस तोताके शीशमें मारे और जो लगजावे तो वह उसी समय इसमायागृहके बाहर निकलजावै और वह हीरा उसीको मिलेगा और जो चूका तो पाषाणका होजायगा यह पढ़के हातिमने उन पाषाणकी मूर्तोंको ओर देखके कहाकि हे हातिम जो तू तीर नहीं मारता है तो भी इसी में घूम२के मरजायगा इससेतो यही उत्तमहै कि इन्हीं मूर्तों में तूभी मिल जा और कोई यत्नतो बाहर निकलनेका अब नहींहै ईश्वर करै सो हो अबतू धनुषबाण ले यहसोचके धनुषबाणउठा शर संधान तोताके लगाया तो तोता तो अलग होगया तीर पींजरा की छतिमेंलगा तिसपीछे तोता फिर अपनीठौरपर आबैठा और हातिम घुटनोंतक पत्थरका होगया तब वहतोता बोलाकि हे जवान यहांसे जा यहस्थान तेरेयोग्य नहींहै और हातिम धनुषतीर समेत सौकदमपीछे उछलके खड़ाहुआ और ऐसे भारी पांवहोगये कि उठनहीं सकेथे यहदशा देखके हातिम आंखों में आंसू भर सोचनेलगाकि हेहातिम इतनीविपत्ति भोगकेतो यहांआया और यहांभी तेरी यह दशाहुई इससे उचितयही है कि एकबाण और मार और तूभी इन्हीं मूर्तोंमें मिल जा यह विचार के दूसरा बाण मारा पर वहभी न लगा और हातिम कटितक पाषाणका होगया औरआपहीआप उछलकेदोसौकदमपर जाखड़ाहुआ फिरतोता ने यही कहा कि हेजवान तू जा यह ठौर तेरेयोग्य नहींहै तब तो हातिम रोदन करके कहने लगा कि मुझसा हतभाग्य कोई नहीं यह कह हाय मार कहनेलगा कि रे हातिम अब केवल एक बाण और रहगया है और अपना मरना आंखों से न देखना चाहिये इसलिये आंख मूंद यहबाण भी ईश्वरके भरोसेपै मार ईश्वरेच्छा ऐसे दुःख सेतो मरना सुखहै यही सोच तोताको ताक आंख मूंद परमेश्वरका नाम लेके बाणको छोड़ा तो तोता के लगा वह लगतेही पींजराके बाहर मृतक हो गिरपड़ा इतनेमें आंधी आई मेघ तड़पनेलगे बिजुली चमकनेलगी अन्धकार ऐसा होगयाकि हाथों हाथ न सूझने लगा और बड़ा कोलाहल मचा उस समय हातिम

को निश्चयहुआ कि अबसंपूर्ण शरीर पाषाणका होगया थोड़ी देर में जब यह सब उपद्रवशान्त हुआ तो हातिमने आंख खोली तो न तो बाग़ है न तोता है न मकान दृष्टिपड़ा केवल वह हीरा तारासा चमक रहाहै और जितनी पाषाणकी मर्त्तियांथींसोसब मनुष्यके स्वरूप होगये हातिम ने दौरके वह हीरा उठाय लिया उन सभोंने पूछा कि तुम यहां कैसे सजीव बचे हातिम ने सम्पूर्ण वृत्तान्त उनका कहसुनाया तब वे हातिमकेपैरछूके कहनेलगे कि अब हम तुम्हारे होचुके निदान हातिम उनको साथ लेके शहर कतां की ओरचला थोड़ीदूर चलकेवही द्वार दृष्टि पड़ा फिर हातिम द्वारपाल के पासआया उसने बड़े आदरसे हातिमको लिया और बहुतसी प्रशंसा करके वहांका वृत्तान्त पूछा हातिमने सम्पूर्ण वृत्तान्त कहसुनाया कईदिन पीछे वहांसे शहरकतां में आया बादशाह ने हातिमको अपनी बराबर सिंहासन पर बैठाया और सब हाल पूछा हातिम ने ज्यों का त्यों कहसुनाया औरवह हीरा बादशाहके आगे धरा कि यहआपकी भेंटहै पर इतनाहै कि एक बेर हुस्नबानूको दिखालें तबफिर आपके पासभेजदूंगा और येजो पुरुष मेरेसाथ हैं सोइनमेंसे बहुतसे बादशाह और सौदागरों के पुत्रहैं सोआप दयाकर इनको एक २ कड़ोर रुपया देकेयथायोग्य इनकी सभा ठीक करदीजिये जिसमें आनन्द पूर्वक अपने देशमें पहुंच के आपके गुणगावें बादशाह ने हातिम के कहनेके अनुसार किया और बहुतसीसेना और द्रव्य हातिम के साथकरके बिदा किया थोड़ेदिनोंमें हातिम शाहाबादमें आपहुंचा यह समाचार हुस्नबानूको मिले कि वह पुरुष बड़ी धूमधाम से कुशल पूर्वकआय पहुंचा हुस्नबानूने प्रतिहारोंके हाथ सन्देशादिया कि आपदया कर प्रथम इसी ओर को आइये हातिम पहले हुस्नबानू के द्वार परगयाउसने यथा पूर्वक कुर्सी बिछवा आपचिलमनके भीतरबैठी औरहातिमसे हम्माम बादगिर्द का वृत्तान्तपूछनेलगी हातिमने सबआद्योपान्त कहसुनाया और वह हीरा उसके सम्मुख रक्खा वह देख के बिस्मित हुई और चुपकी होरही तब हातिम ने कहा कि मैं तो तेरेकहने का प्रतिपाल कर तेरेप्रश्नोंके उत्तरदिये अब उचितहै कि तू भी अपने बचनका प्रतिपालकर तब हुस्नबानू धीरेसे बोली कि अबमैं तो तेरी होचुकी चाहे तूअपनीकरकेराख चाहे किसीको देदे तब हातिमने कहा कि मैंने कुछ अपने लिये यह परिश्रम नहींकिया वरन सत्य२ सुनीरशामीके लिये इसलिये

वह जो तेरी विरहानल में जलता है अब उसको अपना चन्द्रानन दिखाय के ठंढाकर और उसको अपना पतिमान यह सुनके हुस्नबानू बोली कि तुम मेरे पिता की ठौर हो जो वह मेरे पतिहोने के योग्य होय तो कुछ सन्देह नहींहै आपका कहामेरे शिर माथे पर है हातिमने फिर सुनीरशामी को सन्देशा भेजा कि तुम राजसी वस्त्र आभूषण धारण करके शीघ्र आवो वह सुनतेही तुरन्त कपड़ा पहन के हातिम के पास जा पहुंचा हातिम ने दूसरे रत्न जटित सिंहासन पर बैठारा तब हुस्नबानू ने जो चिलमन से झांक के देखा तो मुख देखतेही चन्द्रचकोरका लेखा होगया औरलज्जा वश आंखेंनीचेकिये दूसरे घरमेंचलीगई तब हातिमभी सुनीरशामी को लेके सराय में आया सबेरा होतेही हुस्नबानू ने एक बड़ा मकान खालीकिया तिसमें हातिम सुनीरशामी को लेकेआय विराजा और द्वारपै अनँदबधाये बाजनेलगे तिसपीछे हर्षमण्डली और नृत्यादिकी सामाहुई फिर कितेकदिन पीछे शुभ मुहूर्त बिचारके लगन आई और सब मकानोंमें पाटम्बर बिछौना बिछाय सकल गली दुलहा दुलहिनके मकानसे अरगजासेसिंचाईं और दुलहाके घरसेलेके दुलहिन के मंडफतक कपूरके कवल लगवाय आतशबाजी की टट्टी गड़वादी और जब आधीरात बीती तो सुनीरशामी बड़ी धूमधाम से ब्याहने कोचढ़ा तो बरातकी शोभाको कहांतक कोई बखानकरै निदान बड़े उत्तम घोड़ेपरसुनीरशामी सवारहो माथे पर मोतियोंकी झालरदार मौरधरके चला और आगे २ बरांगनोंके यूथ तख्तों के ऊपर नृत्य करते जातेथे और महताबी हथफूल अनार फुलझरी दुपहरी धूरि गोलादि तमाशे छूटतेथे कि जिनके आगे चन्द्रमाका प्रकाश मलीन होगया और सितारों की चमक से रजनी दिन समान लगने लगी और नाना बरणके स्वांगतमाशे जिनको देखतेही बने कविकी बुद्धि इतनी कहां जो उसको कहै और कन्याके घरकी सामा और बिभूतिको तुमसे कहांतक कहूं कि वहांसे कईगुणा अधिकथी जब दूलह निकट पहुंचा तो लोग अगवानी लेनेको आये और दूलह को हाथोंहाथ लेजायके मसनद पर बैठारा जिसके दाहिनी ओर हातिम भी बड़े हर्षसे बैठा तिस पीछे सकल बराती यथा योग्य बैठे निदान क़ाज़ी ने आयके बिवाह कराया तिसपीछे दूलहको दुलहिनके मण्डफको कितेक बूढ़ीबड़ी देवमनातीलेगईं वहां वरदुलहिनको एक आसनपै बैठाला तब सुनीरशामीने हुस्नबानूका घूंघट खोलके जो देखा तो एक

संगमूर्छाआई तत्कालदासी गुलाबलेके मुखपै छिड़कनेलगीं थोड़ी देरमें मुनीरशामीको चेतऊषा तोबारम्बार हातिमको धन्य२ कह परमेश्वरको दण्डवत्करी और जो रीतिभांति बड़ाकरनीथी सो कर दुलहिनको डोलामें चढ़ाय बड़ी धूमधामसे अनँद बधाये बज-वाता अपने विभूति स्थान में आय विराजा चार दिनतक तो हारका सुखभी न देखा पांचवेंदिन घरसे बाहर निकल हातिमके चरण परनेलगा उसने मुनीरशामी को हृदयमें लगा बहुत २ आ-शीर्वाद देके विदामांगी तो मुनीरशामी ने हातिम से बहुत कह सुनके चारपांचदिन और पहुनाई करी तब हातिम ने मुसकराके कहाकि भाई यहतोन्याय भलानहींहै देखो अपनीसीदशा सबकी जानें यह व्यंग सुन मुनीरशामी ने हातिम को विदा किया वह आनन्दसे यमनकी ओरचला जब थोड़ेदिनोंमें नगरके निकटपहुंं-चा तब बादशाह अर्थात् हातिमके पिताने संचीको आगेलेने भेजा बहुबड़ी प्रतिष्ठासे हातिमको बादशाहके सम्मुख लेआया हातिम ने अपने पिताके चरणछुये बादशाहनेउठके हृदयमेंलगालिया तिस पीछे महलमेंगया वहांजा माताकोप्रणामकिया उसने भी हातिम को हृदयमें लगा कलेजा ठंढा किया महलमें आनन्दमयी होगई नगरमें घर २आनन्दबधाये बाजनेलगे बादशाहने सबको यथोचित दानमानसे परिपूर्णकिया और नयेसिरेसे मलकाजरीपोशके वि-वाहका आनन्द मण्डल रचा तिसपीछे बादशाह अपनी सभामें जाकेबैठा तो अपने सभासदोंसे कहनेलगा कि सृष्टिमेंऐसेभीमनुष्य हैं जो अपना सुखचैन छोड़ परायेलिये दुःखसहैं और सत्य भीयों-हीहै और वेहीलोक परलोक दोनोंमें भलेहैं ऐसी २ दोचारबातें कह हातिम को राज्य सौंप अपनीसमाधिलगा ईश्वरका भजनकर नेलगे निदान दशवर्ष सात मास नौ दिनमें हातिमके सात पर्यटन समाप्त हुये और मुनीरशामी की अभिलाष पूरीहुई देखो न तो हातिमताई रहा न मुनीरशामी ही रहा केवल कहावत रहगई॥

दो० हातिम रह्यो न तय रह्यो रह्यो गांव नहिं ठाम।
सुख सम्पति कछु नहिं रह्यो रह्यो जगत में नाम॥
सो० रवि मरीचि का तोय तिमि जग झूठो जानिये।
उत्तम पुरुष सोय जाको यश जगमें रह्यो॥

इति॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	ज्ञानमाला	वैद्य जीवन	मुहूर्त्त चिन्तामणि स-
योग वाशिष्ठ	गोपी चंदभरतरी	औषधि संग्रहकल्प-	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड स-
ज्ञानलक्ष्मी मृतबोधिनी	कथा श्रीगंगाजी	सप्तती	मुहूर्त्त दीपक
सांख्यतत्व कौमुदी	अवधयात्रा	अमृत सागर बड़ा व छो	वृहज्जातक स-
काव्य	भरतरी गीत	वैद्य मनोत्सव	जातकालंकार
सूर सागर	दानलीलाकंसलीला	दिल्लगान	जातकाभरण
कृष्ण सागर	दोहावली रत्नावली	**ज्योतिष भाषा**	होरा मकरन्द
विश्राम सागर	गौ करसी माहात्म्य	जातक चन्द्रिका	**संस्कृत उर्दू टीका**
प्रेम सागर	श्रीगोपाल सहस्रनाम	जगत कालंकार	मनुस्मृति
ब्रज विलास बड़ा व छो	कथा सत्य नारायण स	दैवज्ञा भरण	विष्णु हारीत
कृष्णा त्रिया	हनुमान बाहुक	ज्ञान स्वरोदय	महिम्नस्तोत्र
विनय मुक्तावली	जनक पच्चीसी	रमल सार	व्रतार्क
अनेकार्थ	हरिहर सगुण निर्गुण	रमल नीरत्न	याज्ञ वल्क्य स्मृति
छन्दोर्णव पिंगल	पद्मावली	इन्द्रजाल	**संस्कृत भाषा टी-**
रस राज	वनयात्रा	**संस्कृत की पुस्तकें**	अमर कोष तीनों कांड
मत्स्यई मूल तथा स-	कायस्थ वंशी निर्णय	लघु कौमुदी	याज्ञ वल्क्य स्मृति
सभा विलास	विहार वृन्दावन	सिद्धान्त चन्द्रिका	सन्ध्या पद्धति
तुलसी प्राप्यर्थ प्र-	समर विहार वृन्दावन	भाषातत्व प्रकाश	व्रतार्क
श्रृङ्गार श्रृङ्गी	कल्प भाष्य	पंच महायज्ञ	भगवद्गीता टी- ह- वं-
प्रेम रत्न	**दरसी**	निर्णय सिन्धु	भगवद्गीता टी- श्री-
युगल विलास	अक्षरावली	संग्रह शिरोमणि	गीत गोविन्द
चित्र चन्द्रिका	स्वयम्बोध	भगवद्गीता पञ्चरत्न	कथा सत्य नारायण
बारह मासा बलदेव प्र	ज्ञान चालीसी	दुर्गा पाठ मूल तथा स-	परमार्थ सार
मनोहर लहरी	दोहावली	विष्णु भागवत	पाराशरी सटीक
रामा लहरी	बाला बोध	यमद्वितिया	पाराशरी सटीक
यमुना लहरी	विद्यार्थी की प्रथम पु-	अपराध भंजन स्तोत्र	शीघ्र बोध सटीक
जगद विनोद	किताब जन्त्री	कायस्थ कुल भास्कर	लघु जातक
शृंगार बत्तीसी	शशिनाथ काम धेनु	कायस्थ धर्म निरूपण	षट पञ्चाशिका
राम	लीलावती	तथा होरा	सामुद्रिक
राम प्रकाश	सदवारियों की पु- ४भा	मथुरा सभा	गरुड़ पुराण
लावनी	**वैद्यक भाषा**	**ज्योतिष**	राम विवाहोत्सव
सुनफ़ कौतुक	निघण्ट	मुहूर्त्त गणपति	सन्ध्या वैश्व-
शनिश्चर की कथा	अमर विनोद	मुहूर्त्त चक्र दीपिका	दी

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सरिश्तेतालीम की पुस्तकें संस्कृत	इतिहासतिमिरनाशक १भाग २व ३भाग	पहाड़ बरतन कैथी	ऐक्ट नाल्युकेशन्स: क रूज़ अवध २४सन् १८७० ई०
ऋजुपाठ १भा-२व३ धात्वर्थावि	अवधदेशीय भूगोल	तथा क़बूलियत	ऐक्ट चौपायों का महा-रबलत बेजा १ सन् १८७७ ई०
नागरी कैथी	इंग्लिस्तान का इतिहास	रजिस्टर दाखिल ख़ा-	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबि- ता फ़ौजदारी १० सन् १८७२ ई०
वर्णमाला कैथी १भा- व २भाग	हिंदीपत्रिका	रिज तुलबा मदर्सा	ऐक्ट माल गुज़ारी मग- रबी व शिमाली १९ सन् १८७३ ई०
तथा कैथी फ़ारसी नागरी	बालाभूषण	रजिस्टर हाज़िरी पाठ- शाला	नरमीम मजमूआ ज़ा- बिता फ़ौजदारी ११ स- न् १८७४ ई०
इरफ़ेमुफ़रदात	पद्यसंग्रह	**क़ानून कैथी**	नक़लवीके क़ायदे
अक्षरारम्भ	भाषाकाव्यसंग्रह	पटवारियों के क़ायदे	सवाल व जवाब पुलि स
वर्णप्रकाशिका १भा- तथा २ भाग	कवित्तरत्नाकर १भाग तथा २भाग	**उर्दू कैथी महाजनी**	अवधरुहेल खंड रेल वे का दस्तूरुल अमल
सूरजपुर की कहानी	मंगलकोष	टिकट के लाइसन्स का	
धर्म्मसिंह वृत्तान्त	संकप्रकाश	ऐक्ट २सन् १८७८ ई०	**किताबें जो छप रही हैं उन के नाम नीचे लिखे हैं**
शिक्षावली	गणितप्रकाश १भाग	**नागरी**	
शिशुबोध	तथा २भा-३व४	ऐक्ट लगान मगरबी व शिमाली १० सन् १८५८ ई०	संगीत प्रह्लादलहरी
यत्नहितैषिणी	गणितक्रिया	इंडियन पिनल कोर्ट	क्षेत्रव्यवहारिक तत्व २ भाग
पत्रदीपिका	क्षेत्रप्रकाश	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौ- जदारी ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	बाल्मीकरामायण- वार्त्तिक
विद्याचक्र	क्षेत्रचन्द्रिका २भाग	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन् १८६६ ई०	भविष्योत्तरपुराण भा-
विद्यांकुर	सकीलदायरा	ऐक्ट स्टाम्प १ सन् १८६२ ई०	**इति**
पदार्थविद्यासार	रेखागणित १भाग तथा २भाग	ऐक्ट स्टाम्प अदालत २६ सन् १८६७ ई०	
पदार्थज्ञानविटप	बीजगणित १भाग	मजमूआ ऐक्ट अवध लगान २९ सन् १८६८ ईसवी	
भोजप्रबन्धसार	रामायण तुलसीकृत	पुलादारी २६ सन् १८६६ ईसवी वग़ैरह	
राजनीति	बालकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता बेजा- त १८ सन् १८६८ ई- सवी	
भाषालघुव्याकरण १भाग तथा २भाग	अयोध्याकाण्ड		
भाषातत्वदीपिका	आरण्यकाण्ड		
भाषाचन्द्रोदय	किष्किन्धाकाण्ड		
भूगोलतत्व	सुन्दरकाण्ड		
भूगोलदर्पण	लंकाकाण्ड		
	उत्तरकाण्ड		
	गुटका १भा-२व३		
	हिदायतनामा मुदर्रि- सान्		
	पशुचिकित्सा		